

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट

अंक संख्या 18



भारतीय रिज़र्व बैंक
दिसंबर 2018

© भारतीय रिज़र्व बैंक

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के उद्धरण की अनुमति है, बशर्ते स्रोत को दर्शाया जाए।

यह प्रकाशन इंटरनेट <http://www.rbi.org.in> पर भी उपलब्ध है।

इस रिपोर्ट के फीडबैक fsu@rbi.org.in को भेजें।

वित्तीय स्थिरता इकाई, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई 400001 द्वारा प्रकाशित तथा जयंत प्रिंटरी, 352/54, गिरगाँव रोड, मुरलीधर कम्पाउंड, ठाकुरद्वार पोस्ट ऑफिस के पास, मुंबई – 400002 द्वारा अभिकल्पित एवं मुद्रित।

आमुख

विध्वंसकारी व्यापारिक संघर्ष की संभावना से निस्तेज पड़ गए वैश्विक आर्थिक परिदृश्यों में उल्लेखनीय रूप से नरमी आई है, यद्यपि इस समय प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में मंदी का हलका जोखिम भी प्रतीत हो रहा है। सन 2018 के अंतिम भाग में वैश्विक वित्तीय बाजारों के परिचलन उनके अपने जोखिम आकलनों की शिफ्टिंग को वैश्विक संवृद्धि की तरफ को दिखाते हैं। आगे देखें तो वैश्विक व्यापार और निवेश नियमों का विशुद्धतम और व्यापार में दोनों पक्षों के लिए लाभदायक सौदों की तरफ ले जा सकता है।

स्वदेश में देखें तो यद्यपि 2018-19 की दूसरी तिमाही में जीडीपी की संवृद्धि 7.1 प्रतिशत पर रही जो बाजार की प्रत्याशाओं से कम रही, तथापि कच्चे तेल की कीमतों में हाल ही में हुई गिरावट के साथ सकल स्थायी पूँजी निरूपण में आई उछाल से आगे चलकर सुस्थिर संवृद्धि रहेगी।

दबाव की लंबी अवधि के बाद बैंकिंग क्षेत्र भी बहाली के रास्ते पर प्रतीत हो रहा है क्योंकि बेमेल आस्तियों का बोझ कम हुआ है; सितंबर 2015 के बाद सकल एनपीए में पहली बार छमाही-गिरावट और प्रावधान कवरेज अनुपात में सुधार सकारात्मक संकेतों के रूप में रहे। दबाव-परीक्षण परिणामों से प्रकट होता है कि एनपीए अनुपात में और भी सुधार होगा, यद्यपि इसका वर्तमान स्तर अभी भी सामान्य से ऊपर ही बना हुआ है। सरकारी क्षेत्र के बैंकों में आस्तिक के बेमेलपन के बढ़े हुए परिज्ञान द्वारा विन्यस्त महत्वपूर्ण लागतों के बावजूद प्रतीत होता है कि यह क्रेडिट आकलन में अत्यधिक अनुशासन, बाजार जोखिम के प्रति उच्चतर संवेदनशीलता और परिचालनगत जोखिमों के बेहतर मूल्यांकन करने की दिशा में ले गया है।

इन भागीदारों द्वारा किए गए अपरिमित प्रयास के लिए अभिशासन और निगरानी व्यवस्था का सहारा भी अपेक्षित है जिसके समर्थन में कमजोर पीएसबी का पुनर्पूँजीकरण भी किया जाए। अत्यधिक अपेक्षित क्रेडिट अनुशासन को मजबूत बनाने हेतु दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता ने संस्थागत रूप से मौजूद अंतराल को भर दिया है। हालांकि कुछ संकल्प अभी भी परिकल्पित समय सीमा से पीछे चल रहे हैं। इस क्रेडिट पाइपलाइन को बाधारहित बनाने में बेमेल आस्तियों के समयबद्ध समाधान को लंबा रास्ता तय करना है। इस प्रकार अर्थव्यवस्था में आबंटन संबंधी दक्षता का सुधार होगा।

क्रेडिट मध्यस्थता के बैंकों से हटकर गैर-बैंकों की तरफ हुई शिफ्ट ने कार्पोरेट क्षेत्र को वित्तीय लिखतों का विविधतापूर्ण चयन प्रदान कर दिया है। बाजार-मध्यस्थता वाले ऐसे क्रेडिट प्रवाहों के लिए सूचनापरक और प्रतिसादी क्रेडिट रेटिंग फ्रेमवर्क के साथ-साथ समुचित मूल्यांकन व्यवस्था के रूप में प्रबल समर्थक अवसंरचना की अपेक्षा रहती है। इन दोनों ही क्षेत्रों में भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने अभी हाल ही में महत्वपूर्ण उपाय किए हैं। इसी प्रकार गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों में हाल ही की गतिविधियों ने जोखिम उठाने में अधिकाधिक विवेकशील होने की जरूरत को रेखांकित किया है। अत्यधिक क्रेडिट बढ़ोतरी को फिर से संतुलित करने की विशेष तौर पर जरूरत है, खासकर तब जब अल्पकालीन वित्तपोषण किया गया हो, चाहे यह क्षेत्रकीय हो या समग्र रूप से हो, और स्थायित्व में बढ़ोतरी नहीं कर रहा हो। वित्तीय संगुटों की निगरानी हेतु फ्रेमवर्क पर भी करीबी ध्यान देना अपेक्षित है।

यद्यपि भारत जैसी उदीयमान अर्थव्यवस्था की संवृद्धि संबंधी जरूरतों को समर्थन देने में बैंकों और गैर-बैंकों की भूमिका सर्वमान्य है तथापि जोखिम प्रबंधन की अनवरत, विवेकशील और प्रबल परिपाटी पर जोर बना रहना चाहिए।

वैश्विक और स्वदेशी दोनों ही में सामने आ रही गतिविधियों में से कुछ और उनके साथ जुड़े जोखिमों को वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के इस 18वें अंक में दिया गया है। दबाव परीक्षण और प्रदूषक प्रभावों के विश्लेषण के माध्यम से प्रणालीगत प्रतिकार का आकलन भी रिपोर्ट में किया गया है ताकि सामने आ रही कमजोरियों पर ध्यान और वित्तीय स्थिरता संबंधी चिंताओं के आकलन में मदद की जा सके।

शक्तिकांत दास

गवर्नर

31 दिसंबर 2018

विषय-सूची

	पृष्ठ सं.
आमुख	
चयनित संक्षिप्ताक्षरों की सूची	i-ii
विहंगावलोकन	1
अध्याय I : समष्टि-वित्तीय जोखिम	3-17
वैश्विक अर्थव्यवस्था	3
घरेलू समष्टि वित्तीय गतिविधियां	10
अध्याय II : वित्तीय संस्थाएं: सुदृढ़ता और समुत्थानशक्ति	18-53
अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक	18
कार्यनिष्पादन	18
जोखिम	24
समुत्थानशक्ति – दबाव परीक्षण	25
अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक	34
कार्यनिष्पादन	34
समुत्थानशक्ति – दबाव परीक्षण	35
गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों	35
कार्यनिष्पादन	35
समुत्थानशक्ति – दबाव परीक्षण	37
वित्तीय मध्यस्थों का सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) में	
एक्सपोजर - एक तुलनात्मक विश्लेषण	37
वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क	42
अध्याय III : वित्तीय क्षेत्र: विनियमन एवं गतिविधियां	54-83
अंतरराष्ट्रीय और घरेलू गतिविधियां	54
अन्य गतिविधियां, बाजार प्रथाएँ और पर्यवेक्षी मुद्दे	67
अनुबंध 1: सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण	84
अनुबंध 2: कार्यप्रणालियां	88

बॉक्सों की सूची

1.1	क्या यह अलग समय है? यूएस दर वृद्धि चक्र के कॉरपोरेट स्प्रेड में जोखिम रहित वक्र और गतिविधियां	5
2.1	पीसीए बैंक: संक्रामकता विश्लेषण का उपयोग करके उनके प्रणालीगत पदचिह्न में परिवर्तन का अनुमान	52
3.1	वित्तीय संगुट – पहचान एवं निगरानी – एक गहन अवलोकन	57
3.2	म्यूच्युअल फंडों द्वारा चलनिधि जोखिम प्रबंधन का फ्रेमवर्क	68
3.3	पर्यवेक्षी प्रौद्योगिकी की ओर अग्रसर	74
3.4	जोखिम संस्कृति	80

चार्ट की सूची

1.1	विश्व आर्थिक संवृद्धि दर	3
1.2	जेपी मॉर्गन ग्लोबल पीएमआई	3
1.3	ब्लूमबर्ग वित्तीय स्थिति सूचकांक	4
1.4	अमरीकी स्थिर आय आपूर्ति	4
1.5	लाईबॉर-ओआईएस स्प्रेड	6
1.6	वित्तीय आस्तियों का निवल अधिग्रहण – जापान और यूरो क्षेत्र	6
1.7	यूरो और जेपीवाई की आधार मुद्राओं में 10 वर्षीय यूएस खजाना निवल हेज्ड प्रतिलाभ	7
1.8	वर्षीय परस्पर मुद्रा लेनदेन आधार का विकास	7
1.9	वैश्विक व्यापार मात्रा में माह-दर-माह परिवर्तन	7
1.10	यूएस – व्यापार तनावों में वास्तविक जीडीपी का विचलन	8
1.11	चीन – व्यापार तनावों में वास्तविक जीडीपी का विचलन	8
1.12	ब्लूमबर्ग पण्य सूचकांक	8
1.13	यूएस उच्च प्रतिफल बॉन्ड सूचकांक तथा अस्थिरता सूचकांक	9
1.14	यूएस गैर-वित्तीय कॉरपोरेट बकाया ऋण	9
1.15	यूएस ट्रेजरी में ईएम निवेश ग्रेड स्प्रेड	9
1.16	यूएस डॉलर सूचकांक की तुलना में ईएम मुद्रा का प्रदर्शन	10
1.17	कुल राष्ट्रीय आय	10
1.18	चालू खाता और मर्चेडाइज़ व्यापार घाटा	11
1.19	मर्चेडाइज़ आयात वृद्धि के संघटक	12
1.20	भारतीय इक्विटी का सापेक्षित मूल्यांकन	12
1.21	एफपीआई प्रवाह	12
1.22	एफपीआई के प्रवाह - उभरते हुए बाजार	13
1.23	VIX और विदेशी विनिमय ऑप्शन उतार-चढ़ाव	13
1.24	वाणिज्यिक क्षेत्र को संसाधनों का प्रवाह	13
1.25	म्यूच्युअल फंड संसाधन संग्रहण (मासिक)	14

	पृष्ठ सं.
1.26 भिन्न-भिन्न निवेशक विन्यास – डेट फंड	15
1.27 भिन्न-भिन्न निवेशक विन्यास – चलनिधि/ मुद्रा बाजार फंड	15
1.28 अंतर-बैंक जमा दर में उतार-चढ़ाव	15
1.29 आवास बाजार की गतिविधियां	17
1.30 अनबिके मकानों की तुलना में बिके आवास का अनुपात और लॉन्च-टू-सेल्स अनुपात	17
2.1 निष्पादन के चुनिंदा संकेतक	19
2.2 चुनिंदा आस्ति गुणवत्ता संकेतक	21
2.3 क्षेत्रवार आस्ति गुणवत्ता संकेतक	22
2.4 बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा आस्ति गुणवत्ता संकेतक	23
2.5 बैंकिंग स्थिरता संकेतक	24
2.6 बैंकिंग स्थिरता मानचित्र	24
2.7 समष्टि-आर्थिक परिदृश्य परिकल्पनाएं	25
2.8 एससीबी के जीएनपीए अनुपात का अनुमान	25
2.9 सीआरएआर का पूर्वानुमान	26
2.10 सीईटी 1 पूंजी अनुपात का पूर्वानुमान	27
2.11 ऋण जोखिम - आघात और प्रभाव	28
2.12 बैंकों का सीआरएआर-वार वितरण	28
2.13 सीआरएआर में बदलाव का विस्तार	28
2.14 ऋण संकेंद्रीकरण जोखिम: व्यक्तिगत उधारकर्ता - दबावग्रस्त अग्रिम	29
2.15 ऋण संकेंद्रीकरण जोखिम: व्यक्तिगत उधारकर्ता - एक्सपोजर	29
2.16 एएफएस पोर्टफोलियो का अवधिवार वितरण	31
2.17 एचएफटी पोर्टफोलियो का अवधिवार वितरण	32
2.18 इक्विटी कीमत जोखिम	33
2.19 चलनिधि जोखिम: आघात और नगदी स्टॉक पर प्रभाव	33
2.20 कुल डेरिवेटिव पोर्टफोलियो का एमटीएम – चुनिंदा बैंक – सितंबर 2018	34
2.21 दबाव परीक्षण – चुनिंदा बैंकों के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर आघातों का प्रभाव	34
2.22 एनबीएफसी क्षेत्र के चुनिंदा अनुपात	36
2.23 एमएसएमई ऋणों के 1-वर्ष की अवधि में चूक की संभावना	37
2.24 दीर्घावधि रेटिंग (2007-17) के लिए चूक के प्रति क्रिसिल 1 वर्षीय औसत संक्रमण दर	38
2.25 एमएसएमई ऋणों का रेटिंग वितरण	38
2.26 एमएसएमई क्षेत्र का ऋण एक्सपोजर (₹ ट्रिलियन में)	38
2.27 बाजार हिस्सेदारी में सापेक्ष उतार-चढ़ाव : बाजार हिस्सेदारी का पीएसबी से पीवीबी और एनबीएफसी की ओर स्थानांतरण	39
2.28 सापेक्षी एक्सपोजर के अनुसार सूक्ष्म और एसएमई क्षेत्र में एनपीए प्रोफाइल	39
2.29 ऋणदाता-प्रकार के अनुसार एनपीए प्रोफाइल	39
2.30 ऋणदाताओं के बीच वर्तमान संविभाग का रेटिंग वितरण : मार्च 2018	40

2.31	द्विपक्षीय एक्सपोजर	42
2.32	वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क प्लान- सितंबर 2018	43
2.33	संस्थाओं की निवल प्राप्त्य (+) / देय राशियाँ (-)	44
2.34	अंतर बैंक बाजार	44
2.35	विभिन्न बैंक समूहों की अंतर बैंक बाजार में हिस्सेदारी	44
2.36	निधि आधारित अंतर बैंक की संरचना	45
2.37	भारतीय बैंकिंग प्रणाली की नेटवर्क संरचना (एससीबी+एसयूसीबी) – सितंबर 2018	46
2.38	बैंकिंग प्रणाली (सीबी) के संबद्धता आँकड़े	46
2.39	आस्ति प्रबंधन कंपनियों की सकल प्राप्त्य राशियाँ	47
2.40	बीमा कंपनियों की सकल प्राप्त्य राशियाँ	47
2.41	एनबीएफसी की सकल प्राप्त्य राशियाँ	48
2.42	एचएफसी द्वारा सकल देय राशियाँ	48
2.43	सीपी बाजार	49
2.44	सीपी – अभिदत्त (धनात्मक) / निर्गत (ऋणात्मक)	49
2.45	प्रतिनिधिक संक्रामक प्लॉट - बैंक की विफलता का प्रभाव	50
2.46	शोधन क्षमता हानि	51
2.47	चलनिधि हानि	51
2.48	बैंक डिफॉल्ट की संख्या	51
2.49	समष्टि आर्थिक झटकों के बाद संक्रामकता का प्रभाव (शोधन क्षमता संक्रामकता)	53
3.1	आंतरिक जोखिम मॉडल के प्रयोग द्वारा प्रवृत्त पूंजी पर्याप्तता में परिवर्तनीयता: 32 प्रमुख वित्तीय संस्थाएं	55
3.2	आंतरिक मॉडल एवं मानकीकृत अप्रोच के आधार पर जोखिम भारों की तुलना: 32 प्रमुख वित्तीय संस्थाएं	55
3.3	एनसीएलटी में वित्तीय दावों की वसूली दरें (सितंबर 2018 तक)	62
3.4	एसआईपी की संख्या में वृद्धि (संख्या, मिलियन में)	68
3.5	रेटिंग कार्य के अनुसार सूचीबद्ध कंपनियों के ऋण निर्गमनोम का प्रतिशत	70
3.6	प्राइमरी मार्केट में जुटाई गई पूंजी	71
3.7	कार्पोरेट बॉण्ड के श्रेणीवार जारीकर्ता और अभिदाता	71
3.8	भारतीय और अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी सूचकों की गतिविधियाँ	72
3.9	अखिल भारतीय डेरिवेटिव्स टर्नओवर (फ्यूचर्स व विकल्प) में उत्पादन क्षेत्र के अनुसार हिस्सेदारी	73
3.10	बैंकिंग क्षेत्र में रिपोर्ट किए गए धोखाधड़ी के मामले (शामिल राशि \geq ₹0.1 मिलियन)	77
3.11	समग्र रूप से रिपोर्ट की गई धोखाधड़ी की राशि में बैंक समूहों की सापेक्ष हिस्सेदारी (शामिल राशि \geq ₹0.1 मिलियन)	77
3.12	रिपोर्ट किए गए कुल धोखाधड़ी में से श्रेणीवार धोखाधड़ी का अंश (शामिल राशि \geq ₹0.1 मिलियन) (जून 2017 से सितंबर 2018)	78
3.13	रिपोर्ट किए गए अग्रिम संबंधी धोखाधड़ी (शामिल राशि \geq ₹0.1 मिलियन)	78
3.14	प्रमुख बैंक समूहों के परिचालन जोखिम हेतु जोखिम-भारित आस्तियाँ तथा रिपोर्ट किए गए धोखाधड़ी में संबंधित अंश (वित्त वर्ष 2014-15 से वित्त वर्ष 2017-18)	79

सारणियों की सूची

2.1	ऋण संकेंद्रीकरण जोखिम: समूह उधारकर्ता – एक्सपोजर	30
2.2	उप-क्षेत्रीय आघातों के कारण जीएनपीए में वृद्धि-सितंबर 2018	30
2.3	उप-क्षेत्रीय आघातों को सहन करने में नाकाम रहने वाले बैंकों की संख्या	30
2.4	प्रणालीगत सीआरएआर में (आधार अंकों) गिरावट (घटते क्रम में)	31
2.5	ब्याज दर जोखिम- बैंक समूह- आघात और प्रभाव	32
2.6	एनबीएफसी क्षेत्र का सकल तुलन पत्र : वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि	35
2.7	एनबीएफसी क्षेत्र के चुनिंदा अनुपात	36
2.8	ऋणदाताओं में क्रेडिट स्पेक्ट्रम के बीच वृद्धिशील एमएसएमई उधारकर्ताओं का वितरण	40
2.9	ऋणदाताओं के बीच सीएमआर 7-10 क्षेत्र में आस्ति अर्जन का अनुपात	40
2.10	₹50 मिलियन से < के समग्र एक्सपोजर वाले खातों का वृद्धिशील एक्सपोजर: मार्च 2016-मार्च 2017	41
2.11	₹50 मिलियन से < के समग्र एक्सपोजर वाले खातों का वृद्धिशील एक्सपोजर: मार्च 2017-मार्च 2018	41
2.12	वित्तीय वर्ष के भीतर नए अर्जन में एनपीए स्लिपेज : वित्तीय वर्ष 2016-17	41
2.13	वित्तीय वर्ष के भीतर नए अर्जन में एनपीए स्लिपेज : वित्तीय वर्ष 2017-18	41
2.14	अंतर क्षेत्र आस्तियां और देयताएँ – सितंबर 2018 (₹ बिलियन)	43
3.1	अंशदाता संख्या में वृद्धि 60	60
3.2	एयूएम वृद्धि 60	60
3.3	कॉर्पोरेट शोधन अक्षमता समाधान प्रक्रियाएँ (सीआईआरपी) – कॉर्पोरेट देनदारों की संख्या 61	61
3.4	कॉर्पोरेट दिवालियापन समाधान प्रक्रिया (सीआईआरपी) का आरंभ 61	61
3.5	परिसमापन में समाप्त होने वाले कॉर्पोरेट देनदारों का वितरण 61	61
3.6	प्रमुख विनियामकीय पहल (जून-2018-नवंबर 2018)	62
3.7	निधियों के प्रवाह की प्रवृत्ति (₹ बिलियन)	67
3.8	पिछले 5 वित्तीय वर्षों तथा वित्तीय वर्ष 2018-19 की पहली छमाही के दौरान रिपोर्ट किए गए धोखाधड़ी के मामले (शामिल राशि >= ₹0.1 मिलियन)	76

चयनित संक्षिप्ताक्षरों की सूची

एए	न्यायनिर्णयन प्राधिकारी	ईसीबी	यूरोपीय केंद्रीय बैंक
एईआर	वार्षिक आर्थिक रिपोर्ट	ईसीबी	बाह्य वाणिज्यिक उधार
एई	उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	ईसीएल	प्रत्याशित क्रेडिट ऋण
एएफएस	बिक्री हेतु उपलब्ध	ईएफई	पात्र विदेशी संस्थाएं
एआईएफआई	अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं	ईएमडीई	उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं
एएमसी	आस्ति प्रबंधन कंपनियां	ईएम	उभरते बाजार
एएमएफआई	भारतीय पारस्परिक निधि संघ	ईओएनआईए	यूरो एकदिवसीय सूचकांक औसत
एपीआई	अटल पेंशन योजना	ईआरडी	प्रभावी राजस्व घाटा
एएसआईसी	आस्ट्रेलियन सिक्युरिटीज़ एंड इन्वेस्टमेंट कमीशन	ईएसटीईआर	यूरो अल्पावधिक दर
बीसीबीएस	बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति	ईयूआरआईबीओआर	यूरो अंतर-बैंक प्रस्तावित दर
बीआईएफआर	औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड	एएएलएलसीआर	चलनिधि कवरेज अनुपात हेतु चलनिधि पाने की सुविधा
बीआईएस	अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक	एफबी	विदेशी बैंक
बीओआई	बैंक ऑफ इटली	एफसी	वित्तीय संगुट
बीएसआई	बैंकिंग स्थिरता संकेतक	एफसीए	फाइनेंशियल कन्डक्ट एथॉरिटी ऑफ यूके
सीडी	कॉर्पोरेट देनदार	एफसीआई	वित्तीय स्थिति सूचकांक
सीडी	जमा प्रमाणपत्र	एफडीआई	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश
सीईआरटी-फिन	वित्तीय क्षेत्र में कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम	एफआईएनसीओएन	वित्तीय संगुट विवरणियां
सीईटी	सामान्य इक्विटी टियर	एफएमआईस	वित्तीय बाजार अवसंरचनाएं
सीएफडी	डिफरन्स करार	एफपीआई	विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक
सीआईआरपी	कॉर्पोरेट शोधन-अक्षमता समाधान प्रक्रिया	एफआरबीएम	राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंध
सीएमआर	सिबिल एमएसएमई बैंक	एफआरटीबी	व्यापार बही की मूलभूत समीक्षा
सीपी	वाणिज्यिक पत्र	एफएसबी	वित्तीय स्थिरता बोर्ड
सीआरए	क्रेडिट रेटिंग एजेंसियां	एफएसडीसी	वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद्
सीआरएआर	जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात	जीडीपी	सकल घरेलू उत्पाद
सीआरआईएलसी	बड़े ऋणों की जानकारी की केंद्रीय रिपोर्टिंग	जीएनपीए	सकल अनर्जक आस्तियां
डीएनबी	दि नीदरलैंड बैंक	जीवीए	योजित सकल मूल्य
डीएसआईआई	घरेलू प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बीमाकर्ता	एचएफसी	आवास वित्त कंपनियां
ईबीपीटी	प्रावधान और कर पूर्व अर्जन	एचएफटी	ट्रेडिंग के लिए धारित
		एचक्यूएलए	उच्च गुणवत्ता वाली चलनिधिगत आस्तियां
		एचवाई	अधिक उपज

आईबीबीआई	भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड	एनपीए	अनर्जक आस्ति
आईबीओआर	अंतर-बैंक प्रस्तावित दरें	एनपीएस	राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली
आईसीआर	बीमा दावा हानि अनुपात	एनएसएफआर	निवल स्थायी निधियन अनुपात
आईएफआरएस	अंतरराष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग मानक	एनटीबी	बैंक को नवागत
इंड एस	भारतीय लेखांकन मानक	ओसी	परिचालनगत लेनदार
आईओएससीओ	इंटरनैशनल ऑर्गनाइजेशन ऑफ सिक्यूरिटीज़ कमीशन	ओई	परिचालनगत व्यय
आईआरएसी	आय निर्धारण और आस्ति वर्गीकरण	ओएमओ	खुले बाज़ार के परिचालन
आईआरडीएआई	भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण	ओओआई	अन्य परिचालनगत आय
आईआरएफ	अंतर- विनियामकीय मंच	पीसीए	त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई
आईआरएस	ब्याज दर स्वैप	पीसीई	आंशिक क्रेडिट वृद्धि
एलसीआर	चलनिधि कवरेज अनुपात	पीसीआर	प्रावधान कवरेज अनुपात
एमबीए	सहायता संघ/ बहु बैंकिंग व्यवस्था	पीएफआरडीए	पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण
एमएफ	म्यूचुअल फंड	पीएफ	पेंशन निधियां
एमएचपी	न्यूनतम धारिता अवधि	पीवीबी	निजी क्षेत्र के बैंक
एमएमएमएफ	मुद्रा बाज़ार म्यूचुअल फंड	क्यूई	मात्रात्मक सुलभता
एमआरसी	कोर निपटान गारंटी निधि हेतु अपेक्षित न्यूनतम कोष	आरबीसी	जोखिम आधारित पूंजी
एमआरआर	न्यूनतम प्रतिधारण अपेक्षा	आरओए	आस्तियों पर प्रतिलाभ
एमएसएफ	सीमांत स्थायी सुविधा	आरओई	इक्वटी पर प्रतिलाभ
एमएसएमई	सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम	आरएसए	पुनर्रचित मानक अग्रिम
एमटीएम	बाज़ार भाव पर दर्शाना	आरडब्ल्यूए	जोखिम भारित आस्तियां
एनएवी	निवल आस्ति मूल्य	एससीबी	अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक
एनबीएफसी	गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां	सेबी	भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
एनबीएफसी-डी	गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां – जमाराशि स्वीकारने वाली	एसआईआई	प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बीमाकर्ता
एनबीएफसी-एनडी-एसआई	गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां – गैर-जमाराशि स्वीकारने वाली – प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण	एसआईपी	प्रणालीगत निवेश योजनाएं
एनडीटीएल	निवल मांग और मीयादी देयताएं	एसएलए	सेवा स्तरीय करार
एनआईएम	निवल ब्याज मार्जिन	एसएलआर	सांविधिक चलनिधि अनुपात
एनएनपीए	निवल अनर्जक आस्तियां	एसएमए	विशेष उल्लेख वाला खाता
		एसएमएसी	द्वितीयक बाज़ार परामर्शदात्री समिति
		एसओएफआर	प्रतिभूत एकदिवसीय वित्तीयन दर
		एसओएनआईए	स्टर्लिंग एकदिवसीय सूचकांक औसत
		एसएसबी	मानक-निर्धारक निकाय
		एसयूसीबी	अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक
		टीईआर	कुल व्यय अनुपात
		डब्ल्यूईओ	विश्व आर्थिक परिदृश्य

विहगावलोकन

समष्टि-वित्तीय जोखिम

वैश्विक अर्थव्यवस्था और बाजार

2018 और 2019 के लिए वैश्विक संवृद्धि परिदृश्य स्थिर बना हुआ है, हालांकि अंतर्निहित अधोगामी जोखिम बढ़ गए हैं। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) में सतत मौद्रिक नीति सामान्यीकरण और वैश्विक व्यापार व्यवस्था से भी उभरते बाजारों (ईएम) में पूंजी-प्रवाह पर प्रतिकूल असर और ईएम ब्याज दरों एवं कॉर्पोरेट लाभांतरों (स्प्रेड) पर उर्ध्वगामी दबाव पड़ सकता है। इस दौरान, यूएस शेल तेल की अत्यधिक आपूर्ति, चीनी मांग संबंधी अनिश्चितता और ईरान से तेल आपूर्ति की चिंताओं में उम्मीद से ज्यादा नरमी के कारण पण्यों, खासकर तेल की कीमतें कम हुई हैं।

घरेलू अर्थव्यवस्था और बाजार

घरेलू मोर्चे पर, दूसरी तिमाही : 2018-19 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में थोड़ी गिरावट दिखायी दी है, जबकि मुद्रास्फीति नियंत्रित रही है। वित्तीय स्थिरता हेतु राजकोषीय समेकन महत्वपूर्ण है क्योंकि वैश्विक वित्तीय स्थितियाँ प्रतिकूल हुई हैं। निविष्टि लागतों को बढ़ाती तेल की कीमतों का असर भारत के व्यापार की शर्तों पर संभावी निहितार्थ समेत अनिश्चित बना हुआ है। घरेलू वित्तीय बाजारों में, ऋण मध्यस्थता में संरचनात्मक परिवर्तन और बैंकों और गैर-बैंकों के बीच विकसित होती अंतरसंबद्धता बृहत्तर सतर्कता की मांग करती हैं।

वित्तीय संस्थाएं: सुदृढ़ता और समुत्थानशीलता

अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) की ऋण-संवृद्धि मुख्यतः निजी क्षेत्र के बैंकों (पीवीबी) के कारण सितंबर, 2018 में बेहतर हुई है। बैंकों की आस्ति-गुणवत्ता में सुधार हुआ है और एससीबी का सकल अनर्जक आस्ति (जीएनपीए) अनुपात मार्च, 2018 के 11.5 प्रतिशत से घटकर सितंबर, 2018 में 10.8 प्रतिशत हो गया है। उद्योग विश्लेषण दर्शाता है कि खनन, खाद्य प्रसंस्करण और निर्माण क्षेत्रों में दबाव बढ़ रहा है।

आधाररेखा परिदृश्य के अंतर्गत, जीएनपीए अनुपात सितंबर, 2018 के 10.8 प्रतिशत से घटकर मार्च, 2019 में 10.3 प्रतिशत हो सकता है। संवेदनशीलता विश्लेषण इंगित करता है कि यदि पूंजी का अंतःप्रवाह नहीं होता और बैंक अपने कार्यनिष्पादन नहीं सुधारते तो त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई के तहत सभी सार्वजनिक बैंकों समेत 18 एससीबी 2एसडी आघात के अंतर्गत जीएनपीए अनुपात की तुलना में अपेक्षित सीआरएआर बनाए रखने में विफल होंगे।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के पोर्टफोलियो का विश्लेषण दर्शाता है कि एमएसएमई खंड में पीएसबी का कार्यनिष्पादन अन्य मध्यस्थों, नामतः निजी क्षेत्र के बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) की तुलना में पीछे है। यह अंतर्निहित और फलीभूत-दोनों प्रकार के ऋण जोखिम के मामले में है, जो ऋण आकलन कौशल को और बेहतर बनाने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

सितंबर 2017-सितंबर 2018 की अवधि के लिए वित्तीय नेटवर्क संरचना के विश्लेषण से पता चलता है कि अंतर-बैंक बाजार में संकुचन आया है और निधि जुटाने के लिए आस्ति-प्रबंधन कंपनियों-म्यूचुअल फंड (एमसी-एमएफ) के साथ और उधार देने के लिए एनबीएफसी/हाउसिंग फ़ाइनेंस कंपनियों (एचएफसी) के साथ बैंक-लिंगेज बढ़ा है। बैंकिंग क्षेत्र के लिए संक्रामकता विश्लेषण दो विभिन्न दृष्टिकोणों से किया गया है। पहला, जिसमें पीएसबी की अंतर्निहित राष्ट्रिक गारंटी पर विचार किया जाता है (चूक का कोई मामला नहीं) और दूसरा, जिसमें पीएसबी के चूक उत्प्रेरक (डिफाल्ट ट्रिगर्स) पीवीबी जैसे हैं। इन दोनों दृष्टिकोणों के परिणामों में महत्वपूर्ण अंतर से अंतर्निहित राष्ट्रिक गारंटी का समर्थन नहीं रहने पर पीएसबी चूकों के कारण हुए दिवाला/चलनिधि घाटों के संभावित विस्तार का पता चलता है।

वित्तीय क्षेत्र: विनियमन और उसमें हुई प्रगति

वैश्विक वित्तीय संकट (जीएफसी) के बाद, बैंक पूंजी व्यवस्था में प्रणालीगत समुत्थानशीलता बढ़ी हुई प्रतीत होती है। वैश्विक वित्तीय बाजार में, लीबोर-पश्चात व्यवस्था में अंतरण का कार्य

भी प्रगति पर है। घरेलू मोर्चे पर, रिज़र्व बैंक ने सरकारी प्रतिभूति (जी-सेक) और रेपो बाजार को और अधिक गहन करने के लिए कई नीतिगत उपाय शुरू किए हैं। पूंजी बाजार में, म्यूचुअल फंड में प्रणालीगत निवेश योजना (सिप) के माध्यम से निवेश एक अच्छा विकल्प है। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने डेरिवेटिव वर्ग, म्यूचुअल फंड और पण्य डेरिवेटिव बाजार के एकीकरण और निगरानी को और अधिक सुदृढ़ करने और इसके साथ-साथ क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों (सीआरए) के खुलासा एवं पारदर्शिता मानदंडों और उन्नत करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

दिवाला और शोधन-अक्षमता व्यवस्था, जो 2016 में प्रभावी हुई, कॉर्पोरेट कर्जदार के दिवाला समाधान के लिए एक बाजार-चालित, समयबद्ध प्रक्रिया उपलब्ध करा रही है, जिससे वित्तीय संस्थाओं को अपने तुलनपत्रों को दुरुस्त करने में मदद मिल रही है। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि यह मौजूदा ऋण-संस्कृति और अनुशासन में आमूलचूल बदलाव लाने में सहायता कर रही है। पीएफआरडीए लगातार अधिक से अधिक नागरिकों को पेंशन दायरे में ला रहा है। प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण घरेलू

बीमाकर्ताओं (डीएसआईआई) की पहचान की प्रक्रिया के आरंभ होने, जोखिम-आधारित पूंजी (आरबीसी) के क्रियान्वयन और सीईआरटी-फिन के परिचालन से, आईआरडीएआई बीमा क्षेत्र की समुत्थानशीलता को सुदृढ़ करने का प्रयास कर रहा है। फिनटेक और सुपटेक के साथ कार्य-व्यवहार बढ़ रहे हैं। विनियामक के लिए चुनौती यह है कि कार्यक्षमता और जोखिम-शमन के विवेकपूर्ण उपायों के बीच एक संतुलन बिठाया जाए ताकि फिनटेक द्वारा मिल रहे अवसरों को भुनाने में वह सक्षम हो सके।

प्रणालीगत जोखिमों का मूल्यांकन

सर्वेक्षण के नतीजों के मुताबिक, वित्तीय बाजार जोखिमों को, वित्तीय प्रणाली को वैश्विक जोखिमों के रूप में प्रभावित करने वाली उच्च-जोखिम श्रेणी में रखा गया है, जबकि समष्टि-आर्थिक दशाओं और संस्थागत स्थितियों के बारे में जोखिम धारणा को वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करने वाले मध्यम-जोखिम के रूप में देखा गया है। संस्थागत जोखिमों में, बैंकों की आस्ति-गुणवत्ता में गिरावट, अतिरिक्त पूंजी आवश्यकता-जन्य जोखिम और साइबर जोखिम लगातार उच्च जोखिम कारक बने रहेंगे।

अध्याय I

समष्टि-वित्तीय जोखिम

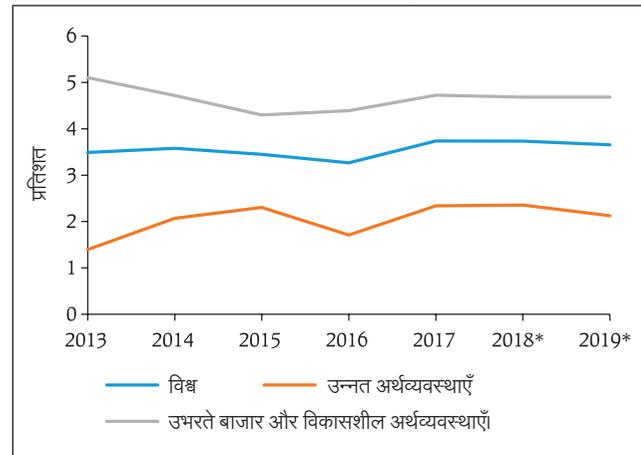
2018 और 2019 के लिए वैश्विक संवृद्धि परिदृश्य स्थिर बना हुआ है, हालांकि अंतर्निहित अधोगामी जोखिम बढ़ गए हैं। अमरीका में नीतिगत दरों में ऊर्ध्वगामी रुझान और इसके साथ-साथ अमरीकी राजकोषों की अधिक आपूर्ति से उभरते बाजारों (ईएम) में पूंजी-प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और ब्याज दरों और कॉर्पोरेट लाभांतरों (स्प्रेड) पर यह ऊर्ध्वगामी दबाव डालेगा। इस दौरान, अमरीकी शेल तेल की अत्यधिक आपूर्ति, चीनी मांग संबंधी अनिश्चितता और ईरान से तेल आपूर्ति की चिंताओं में उम्मीद से ज्यादा नरमी के कारण पण्यों, खासकर तेल की कीमतें कम हुई हैं। घरेलू वित्तीय बाजारों में, ऋण मध्यस्थता में संरचनात्मक परिवर्तन और बैंकों और गैर-बैंकों के बीच विकसित होती अंतरसंबद्धता बृहत्तर सतर्कता की मांग करती हैं।

वैश्विक अर्थव्यवस्था

1.1 2018 और 2019 के लिए वैश्विक संवृद्धि 2017 स्तर के 3.7 प्रतिशत पर बने रहने का अनुमान¹ है (चार्ट 1.1), हालांकि विस्तार कम संतुलित हो गया है और पिछली वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (एफएसआर) के प्रकाशन के बाद से वैश्विक संवृद्धि के लिए अधोगामी जोखिम बढ़ गए हैं। वैश्विक पीएमआई² (चार्ट 1.2), जो अब भी विस्तारकारी है, गतिविधियों के मंद पड़ने की ओर भी संकेत करता है। व्यापार-द्वंद्व, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (ईई) में मुद्रास्फीति-जोखिम और उनकी मौद्रिक नीतियों और केंद्रीय बैंकों के तुलनपत्रों का सामान्यीकरण जोखिम के मुख्य चालक हैं। तथापि, अनुमान है कि ईई 2018 में 2.4 प्रतिशत (2017 की तुलना में अपेक्षाकृत तीव्रतर दर) और 2019 में 2.1 प्रतिशत की दर से वृद्धि करेंगे, वहीं उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ (ईएमडीई) 2018 और 2019³ दोनों में 4.7 प्रतिशत की सतत दर से बढ़ती रहेगी। हालांकि परवर्ती वर्ष सुदृढ़तर डॉलर, वैश्विक व्यापार मोर्चे पर उभरती गतिकी और भू-राजनैतिक जोखिमों के प्रति संवेदनशील बने रहेंगे।

1.2 इस दौरान, ईई की वित्तीय स्थितियाँ सख्त हुई हैं क्योंकि उनकी मौद्रिक नीति व्यवस्थाएं सामान्यीकरण की ओर अग्रसर हैं। अमरीका की वित्तीय स्थितियों (चार्ट 1.3) में हालिया सख्ती मुख्यतः इक्विटी बाजारों में तेज उतार-चढ़ाव

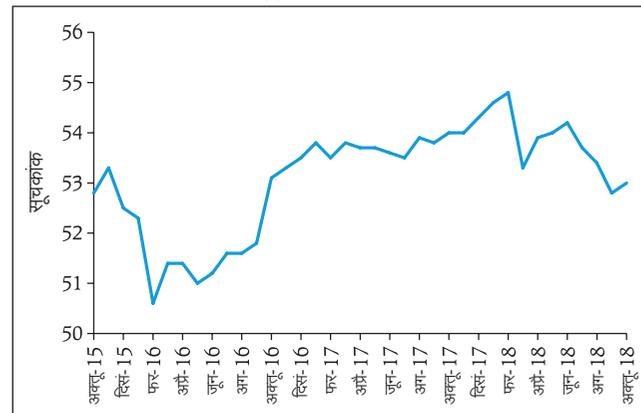
चार्ट 1.1: विश्व आर्थिक संवृद्धि दर



*: अनुमान

स्रोत: वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक, आईएमएफ

चार्ट 1.2: जेपी मॉर्गन ग्लोबल पीएमआई (डिफ्यूजन इंडेक्स, ऋतुनुसार समायोजित, 50 से ऊपर=विस्तार)



स्रोत: ब्लूमबर्ग

¹ वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक, अक्टूबर 2018, अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक कोष।

² क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्रों के स्वास्थ्य का संकेतक है।

³ वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक, अक्टूबर 2018, अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक कोष।

और निवेश श्रेणी के ऋण लाभांतरों (क्रेडिट स्प्रेड्स) में सीमांत फैलाव से संचालित है। दिसंबर, 2018 में फेड दर में हालिया वृद्धि के बाद, ताजा वित्तीय स्थिति सूचकांक (एफसीआई) के अनुसार अमरीका में सकल नीति व्यवस्था काफी सख्त हो गई प्रतीत होती है, जिसके कारण 2019 की मध्यान दर वृद्धि के पूर्वानुमान को तीन से घटाकर दो कर दिया गया है। यूरोप की वित्तीय स्थितियाँ ब्रिटेन और इटली में हुई प्रगतियों के कारण संकीर्ण बनी हुई है। बैंक ऑफ जापान (बीओआई) के संकेत यह इंगित करते हैं कि यह अपनी मात्रात्मक सहजता (क्वांटिटेटिव ईजिंग) पर पुनर्विचार करेगा, हालांकि अब तक मुद्रा बाजार की प्रतिक्रिया शांत बनी हुई है।

1.3 अतः, अंतर्निहित वैश्विक समष्टि-वित्तीय स्थितियाँ और इनके साथ-साथ भू-राजनैतिक अनिश्चितता ने ईएमडीई के प्रभाव-विस्तारक जोखिम (स्पिलओवर रिस्क) को बहुत हद तक बढ़ा दिया है।

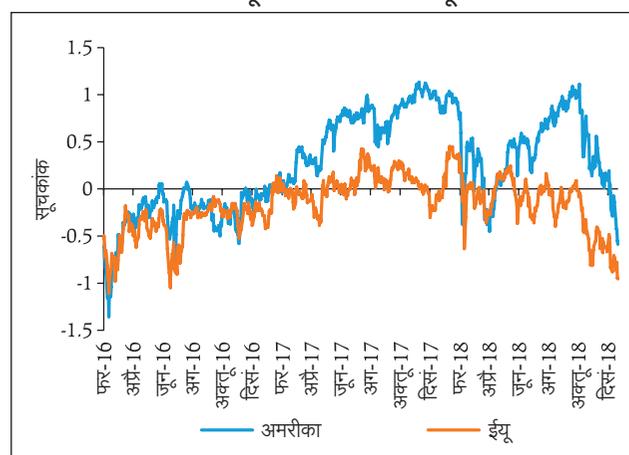
प्रभाव-विस्तारक जोखिम (स्पिलओवर रिस्क) को चार आयामों में देखा जाता है:

- i. सुरक्षित आस्तियों की आपूर्ति
- ii. संरक्षणवादी व्यापार नीतियाँ
- iii. पण्य बाजार का व्यवहार, और
- iv. पूंजी प्रवाह की दिशा

(i) सुरक्षित आस्तियों की आपूर्ति

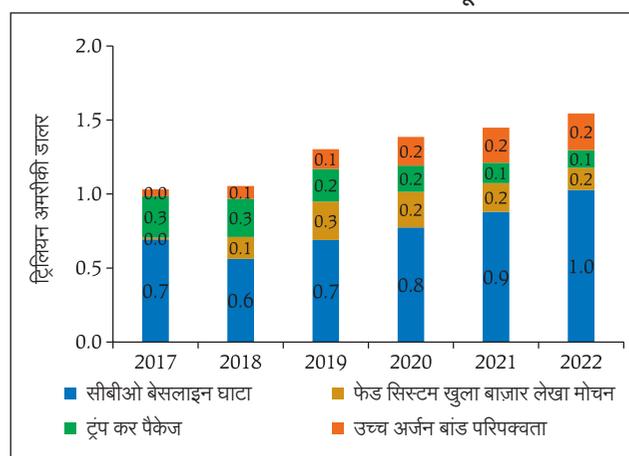
1.4 अमरीका में कर-कटौतियों से 10 वर्षों में अमरीकी बजट घाटे में 1.5 ट्रिलियन डॉलर (यूएसडी) का इजाफा होने का अनुमान है (चार्ट 1.4)। अमरीकी फेडरल रिज़र्व (एफ़ईडी) के संकुचित होते तुलन-पत्र के साथ-साथ, बढ़ी हुई उधारी अपेक्षाएं बाजार के लिए एक महत्वपूर्ण निकटवर्ती (नियर-टर्म) जोखिम हो सकती हैं। वैश्विक मौद्रिक नीति के सतत सामान्यीकरण के कारण यूएसडी-नामित सुरक्षित आस्तियों की आपूर्ति में अच्छी-खासी वृद्धि होने की संभावना और इसके साथ-साथ, उच्च प्रतिफल और निवेश श्रेणियों में एक सुदृढ़ अमरीकी स्थिर आय निर्गम से ट्रेजरी दरों के बढ़ने, कॉर्पोरेट स्प्रेड के अधिक होने और अमरीकी डॉलर पर असर पड़ने के जोखिम हैं। बढ़ती यूएस फेडरल फंड दरों के आस्ति मूल्य निर्धारण (असेट प्राइसिंग) निहितार्थों संबंधी कुछेक मुद्दों को बॉक्स 1.1 में विश्लेषित किया गया है।

चार्ट 1.3: ब्लूमबर्ग वित्तीय स्थिति सूचकांक



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.4: अमरीकी स्थिर आय आपूर्ति

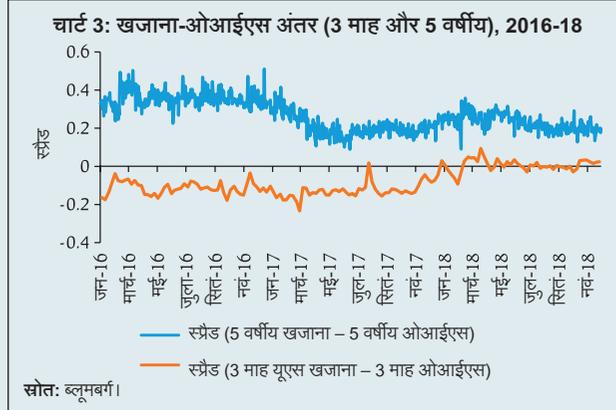


स्रोत: फेडरल रिज़र्व बैंक ऑफ न्यूयॉर्क, कॉंग्रेसनल बजट कार्यालय और ब्लूमबर्ग।

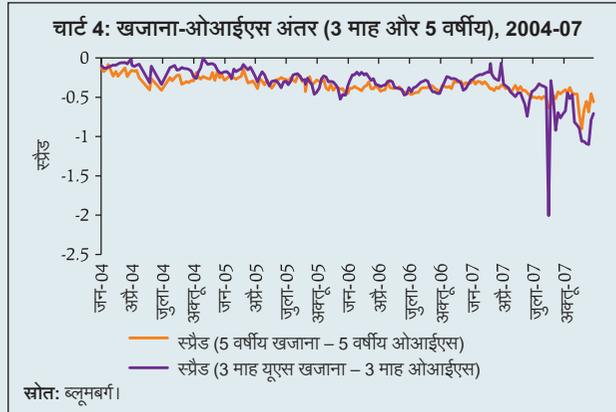
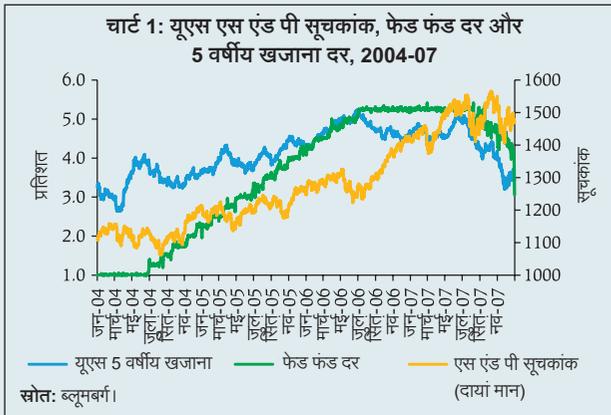
बॉक्स 1.1: क्या यह अलग समय है? यूएस दर वृद्धि चक्र के कॉरपोरेट स्प्रेड में जोखिम रहित वक्र और गतिविधियां

यूएस फेडरल निधि दर की गतिविधियों और यूएस खजाना मीयादी-संरचना पर इनके परिणामात्मक प्रभावों ने वैश्विक ब्याज दरों को प्रभावित किया है। यह चर्चा वर्ष 2004-07 के दौरान यूएस फेडरल निधि दर के बढ़ने के प्रभावों और मौजूदा प्रभावों, विशेष रूप से यूएस खजाना मीयादी-संरचना और कॉरपोरेट स्प्रेड से संबंधित, का तुलनात्मक अध्ययन करती है।

चार्ट 1 व 2 से वर्ष 2004-07 और 2016-18 में यूएस फेडरल निधि (फेड फंड) दर, एस एंड पी सूचकांक और 5 वर्षीय खजाना प्रतिफल, के क्रमिक विकास का पता चलता है। जैसा कि देखा जा सकता है 2004-07 के दौरान 5 वर्षीय यूएस खजाना प्रतिफल का अंतर फेड फंड दर से कम था जबकि कभी-कभी वह ओवरनाइट फेड फंड दर से भी कम था लेकिन इसके ठीक विपरीत 5 वर्षीय यूएस खजाना प्रतिफल में 2016-18 में लगातार और कई बार महत्वपूर्ण तेजी रही। चार्ट 3 से 05 वर्षीय व 3 माह के खजाना और ओआईएस प्रतिलाभों का अंतर ज्ञात होता है। दोनों ही जोखिम रहित हैं, ओआईएस संरचना द्वारा (केंद्रीकृत समाशोधन और दिवस समाप्ति पर संपार्श्विक अंतरण के माध्यम से) और यूएस खजाना (यूएसटी) परिभाषा की वजह से। जैसा कि चार्ट 3 की प्रवृत्ति में देखा जा सकता है 3 माह का स्प्रेड सितंबर 2017 से शून्य की तरफ ऊपर की ओर खिसक गया है जबकि 5 वर्षीय



स्प्रेड लगातार सकारात्मक बना रहा। स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि वर्ष 2004-07 के विपरीत वर्तमान में यूएसटी-ओआईएस अंतर संभवतः यूएसटी की भविष्य में की जाने वाली आपूर्ति की ओर इशारा कर रहा है जोकि यूएस के संरचनात्मक बजट घाटे से प्रेरित है हालांकि उक्त सकारात्मक स्प्रेड को बनाए रखने में समस्या है और वह यह है कि उक्त स्प्रेड मध्यस्थीय होते हैं और यदि उन्हें परिपक्वता तक धारण किया जाए तो उक्त मध्यस्थता में थोड़ा जोखिम भी होता है। दीर्घावधि में स्प्रेड का सकारात्मक अंतर हालिया कर सुधारों को पहले ही दर्शाता है। दीर्घावधिक यूएस खजानों के स्प्रेड के उक्त व्यापक रूप का कारपोरेट निधीयन दरों पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि हालिया कारपोरेट निर्गमों में से अधिकांश जोखिम रहित स्वैप वक्र के बजाय यूएस खजाना वक्र के सापेक्ष बेंचमार्क किए जा रहे हैं।

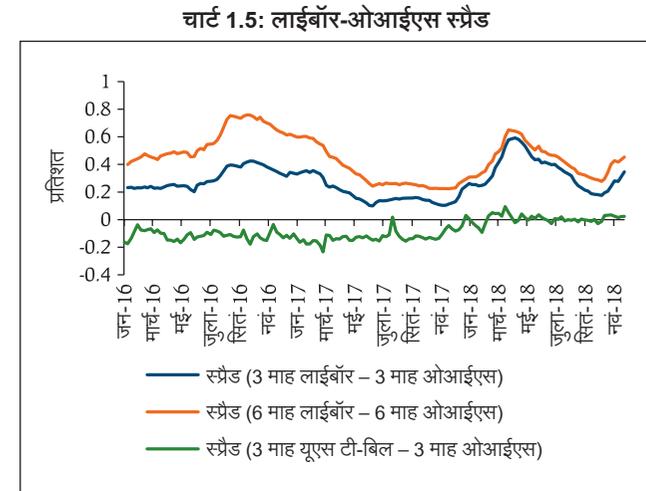


चार्ट 5, 3 वर्षीय और 5 वर्षीय सीडीएस स्प्रेड के क्रमिक विकास को दर्शाता है जिसे संबंधित सूचकांकों में देखा जा सकता है। जैसा कि चार्ट में देखा जा सकता है दोनों ही सूचकांकों में स्प्रेड में गिरावट की प्रवृत्ति, जो फेड ब्याज दरों (दिसंबर 2015) में वृद्धि के समनुरूप थी, दिसंबर 2017 में पलट गई और पुनः अमेरिकी कर (जारी...)

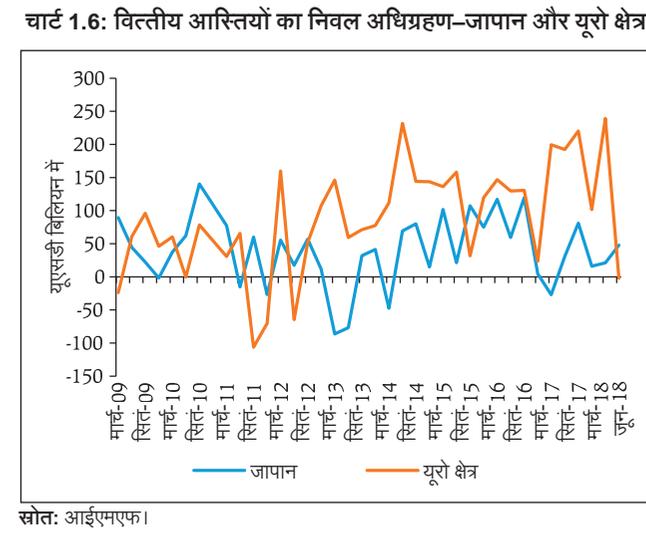


सुधारों के लगभग समनुरूप हो गईं। हालांकि 2018 में कारपोरेट स्प्रेड की गतिविधियों में कोई स्पष्ट प्रवृत्ति नहीं देखी गई, तथापि उसमें उल्लेखनीय अस्थिरता थी। क्रेडिट स्प्रेड गतिविधियों को आमतौर पर अर्थव्यवस्था के प्रति-चक्रीय के रूप में देखा जाता है। हालांकि सीडीएस स्प्रेड में हुए हालिया बदलाव बिना किसी विशिष्ट प्रवृत्ति के हैं, यदि ये बढ़त बनाए रखते हैं और यूएस खजाना वक्र से अलग एक वैकल्पिक कृत्रिम जोखिम-रहित वक्र का विकास संभवतः वर्तमान दर वृद्धि चक्र की दो विशिष्ट विशेषताएं हैं जिसका वैश्विक कारपोरेट उधारी दरों और वैश्विक मौद्रिक नीति के लिए उल्लेखनीय निहितार्थ है।

1.5 यूएसडी मुद्रा बाजार दरें यूएस मौद्रिक नीति के संचरण को प्रभावित करती हैं जिसका असर समूचे विश्व पर पड़ता है; इसके मद्देजनजर 3 माह और 6 माह का लाईबॉर ओआईएस आधार का फैलाव महत्वपूर्ण बन जाता है। टी-बिल-ओआईएस आधार की प्रवृत्ति कुछ समय से स्थिर रही है (चार्ट 1.5), ओआईएस-आधार लाईबॉर के फैलाव से संभवतः असुरक्षित निधीयन में मांग-आपूर्ति का असंतुलन पैदा हो सकता है। यूएस फेडरल रिज़र्व⁴ द्वारा हाल ही में जारी किए गए आंकड़ों से पता चलता है कि समग्र वाणिज्यिक पत्र (सीपी) बकाया, जो अगस्त-सितंबर 2018 में घट रहा था, अक्टूबर 2018 में मामूली रूप से बढ़ गया। अंतर्निहित कारणों के बावजूद लाईबॉर की उक्त विशेष प्रकृति की गतिविधियों का उभरते बाजारों के बैंकों और कारपोरेटों के लिए यूएसडी निधीयन की लागतों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।



1.6 अन्य प्रमुख बैंकों को देखा जाए तो यूरोपीय केंद्रीय बैंकों (ईसीबी) और बीओजे के मात्रात्मक सहजता (क्यूई) कार्यक्रमों ने संभवतः यूएसडी जोखिम रहित ब्याज दरों और कारपोरेट स्प्रेड को अभी तक कम रखा है, हालांकि ईसीबी द्वारा अपने क्यूई को दिसंबर 2018 तक हटा लेने से और इसी तरह का इरादा बीओजे का होने से वैश्विक चलनिधि पूल प्रभावित होने की संभावना है क्योंकि 2010 से यूरोप और जापान के आस्ति प्रबंधकों द्वारा महत्वपूर्ण विदेशी परिसंपत्तियों का अधिग्रहण किया जाता रहा है (चार्ट 1.6) जिसमें अब कमी देखी जा रही



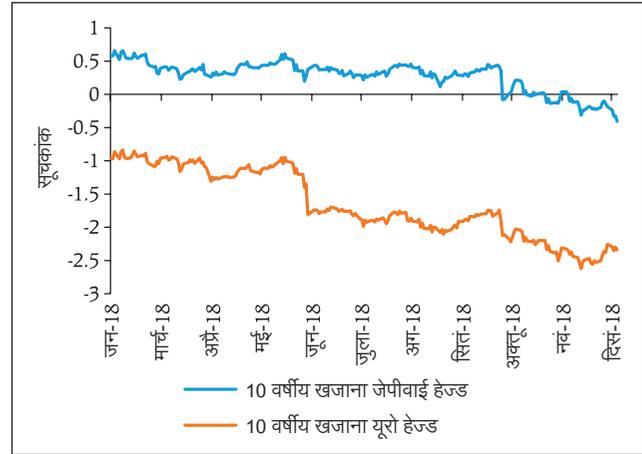
⁴ <https://www.federalreserve.gov/releases/cp/outstanding.htm> पर उपलब्ध।

है। निवल हेज्ड प्रतिलाभों में गिरावट की प्रवृत्ति से भी यूएसडी निवेशों में कमी आई है (चार्ट 1.7)। अंततः यूरो और जापानी येन (जेपीवाई) दोनों में ही यूएसडी के साथ पारस्परिक मुद्रा लेनदेन आधार में सुधार (चार्ट 1.8) भी यूरो/ जेपीवाई अधिवासी निधियों के प्रति सीमित चाह का संभावित संकेत है।

(ii) सरंक्षणवादी व्यापार नीतियां

1.7 वैश्विक व्यापार की वृद्धि (चार्ट 1.9) से ज्ञात होता है कि यूएस और चीन के बीच जारी व्यापार तनाव से व्यापार की मात्रा पर अभी तक उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ा है। वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक (डब्ल्यूईओ) ने इस व्यापार संघर्ष के अपने काल्पनिक प्रभाव के संघातों का उल्लेख करते हुए कहा है कि अभी तक लगाए गए शुल्क कम परंतु प्रभावी हैं और लागतों का खामियाजा अमेरिका और चीन को भुगतना पड़ रहा है। डब्ल्यूईओ के अनुसार यदि अमेरिका चीन के अतिरिक्त 276 बिलियन के आयात पर 25 प्रतिशत शुल्क लगाता है और यदि इसी तरह चीन भी 25 प्रतिशत का जवाबी शुल्क लगाता है तो ये लागतें लगभग दोगुनी हो जाएंगी। डब्ल्यूईओ का सिमुलेशन कुछ देशों के लिए अल्पकालिक लाभ प्रदर्शित करता है क्योंकि अमेरिका और चीन से उच्च कीमतों के आयात उक्त देशों के

चार्ट 1.7: यूरो और जेपीवाई की आधार मुद्राओं में 10 वर्षीय यूएस खजाना निवल हेज्ड प्रतिलाभ



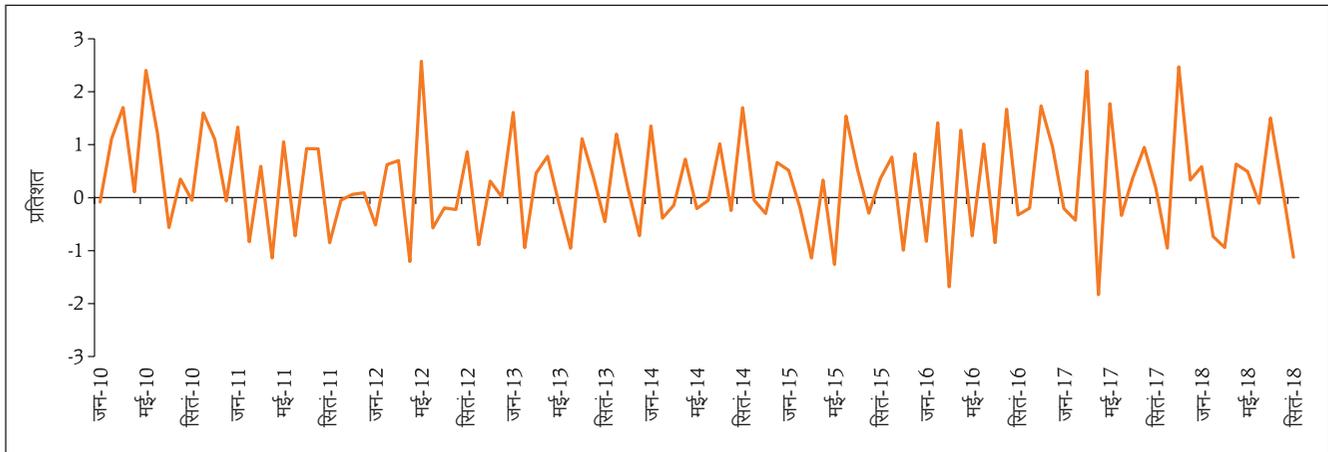
स्रोत: ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.8: 1 वर्षीय परस्पर मुद्रा लेनदेन आधार का विकास



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.9: वैश्विक व्यापार मात्रा में माह-दर-माह परिवर्तन



स्रोत: सीपीबी, नीदरलैंड।

निर्यातों से प्रतिस्थापित कर दिए जाएंगे, उक्त लाभ कुछ अवधि तक ही मिलेंगे (चार्ट 1.10 और 1.11)।

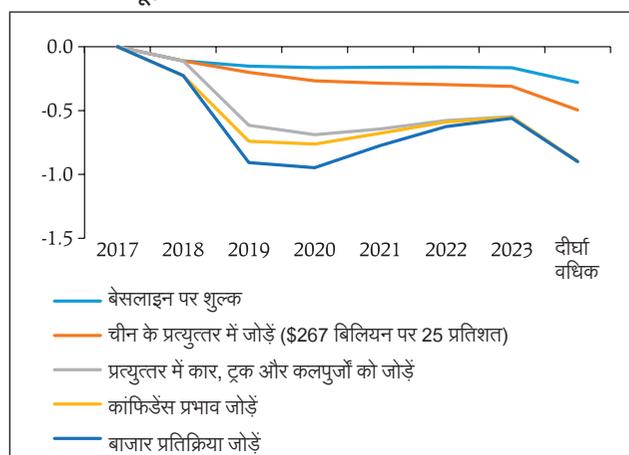
(iii) पण्य बाजार का व्यवहार

1.8 वैश्विक मांग की अपेक्षाओं और वेनेजुएला व ईरान से पूर्वानुमानित बाधित आपूर्ति से प्रेरित 2018 की तीसरी और चौथी तिमाही में ऊर्जा क्षेत्र में पूर्ववर्ती बढ़त संबंधी दृष्टिकोण ने स्पष्ट रूप से निराशाजनक झलक प्रस्तुत की है। कच्चे तेल में तीसरी तिमाही के पहले का लाभ फिर से दिखाई देने लगा क्योंकि अमेरिका द्वारा ईरान पर लगाए गए प्रतिबंध पूर्वानुमानों के विपरीत कम सख्त साबित हुए और अमेरिका द्वारा कच्चे तेल का उत्पादन अपेक्षा के प्रतिकूल तेजी से बढ़ रहा है। अमेरिकी कच्चे तेल के स्टॉक में तेजी से हुई बढ़ोत्तरी से पता चलता है कि तेल बाजार में आपूर्ति आवश्यकता से अधिक है। हालांकि बेस धातु क्षेत्र में व्यापार तनावों और मजबूत चीनी मांग में विलंबित अनिश्चतता के प्रभाव अभी भी दिख रहे हैं (चार्ट 1.12)

(iv) पूंजी प्रवाह की दिशा

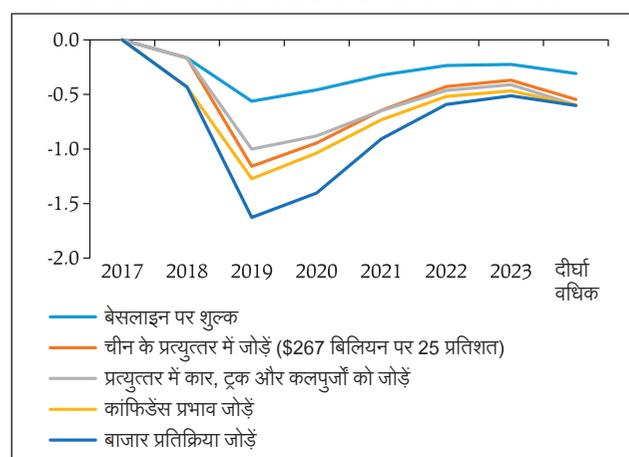
1.9 हाल ही में अस्थिरता में अचानक आई तेजी के मद्देनजर जोखिम के पुनर्मूल्यान ने जोखिम क्रेडिट को वास्तविक रूप से

चार्ट 1.10: यूएस – व्यापार तनावों में वास्तविक जीडीपी का विचलन



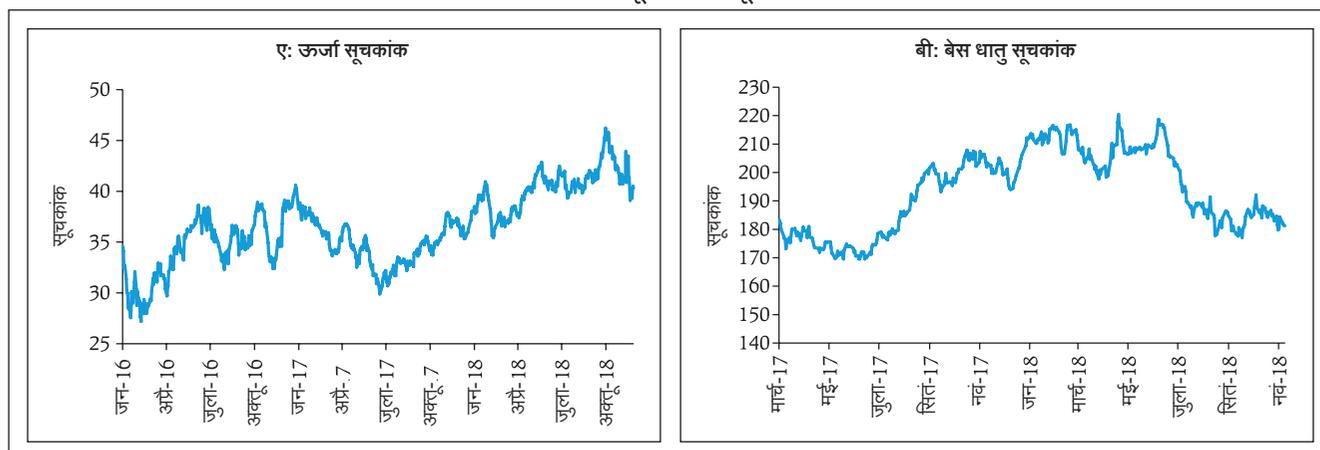
स्रोत : डब्ल्यूईओ, आईएमएफ।

चार्ट 1.11: चीन – व्यापार तनावों में वास्तविक जीडीपी का विचलन



स्रोत : डब्ल्यूईओ, आईएमएफ।

चार्ट 1.12: ब्लूमबर्ग पण्य सूचकांक

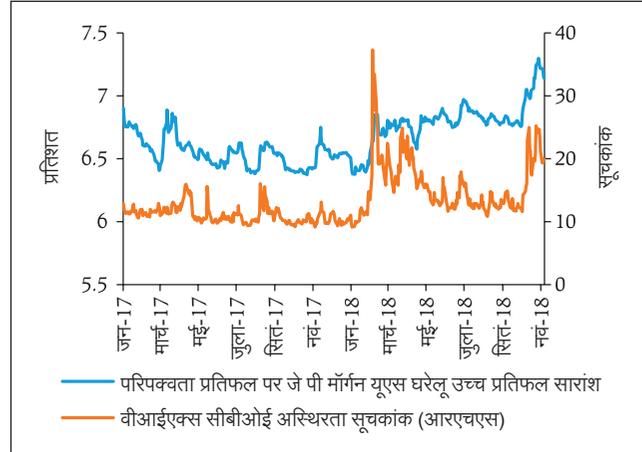


स्रोत: ब्लूमबर्ग।

प्रभावित किया है (चार्ट 1.13)। VIX सूचकांक के साथ-साथ उच्च प्रतिफल बॉन्ड सूचकांक में आंशिक वापसी के बावजूद उच्च प्रतिफल (एचवाई) क्षेत्र में यह पुनर्मूल्यन विशेष रूप से यूएस कॉरपोरेट बैलेंस शीट की सामान्य लिवरेज्ड स्थिति के साथ फेडरल रिजर्व के पूर्व प्रमुख जेनेट येलेन⁵ द्वारा व्यक्त चिंताओं के संदर्भ में प्रासंगिक है (चार्ट 1.14)। इसी समय पर उभरते बाज़ार की निवेश ग्रेड क्रेडिट की भी पुनः रेटिंग हुई है। इसका असर उभरते बाज़ार कॉरपोरेट के क्रेडिट कीमत-निर्धारण पर पड़ता है तथा इसी वजह से उभरते बाज़ारों में ऋण का प्रवाह होता है (चार्ट 1.15)। ब्रेक्सिट अथवा यूरो क्षेत्र में बढ़ती शासकीय ऋण की चिंताओं के चलते जोखिम वाली उभरती बाज़ार आस्तियों से तेजी से पीछे हटना वित्तीय बाज़ारों के लिए निकट अवधि में सबसे बड़ा जोखिम है।

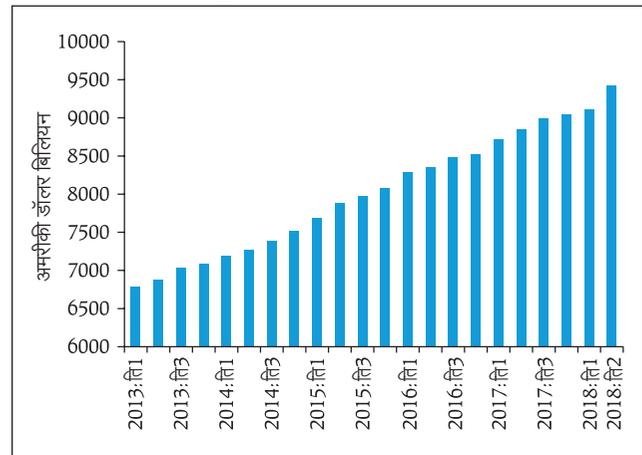
1.10 इसके अलावा, उभरते बाज़ार की अर्थव्यवस्थाओं की मुद्रा का विकास भी इन बाज़ारों में ऋण के प्रवाह को प्रभावित करता है। जहां उभरते बाज़ार के मुद्रा सूचकांक तथा डॉलर सूचकांक में गिरावट लगभग एक जैसी है, वहीं 2018 में उभरते

चार्ट 1.13: यूएस उच्च प्रतिफल बॉन्ड सूचकांक तथा अस्थिरता सूचकांक



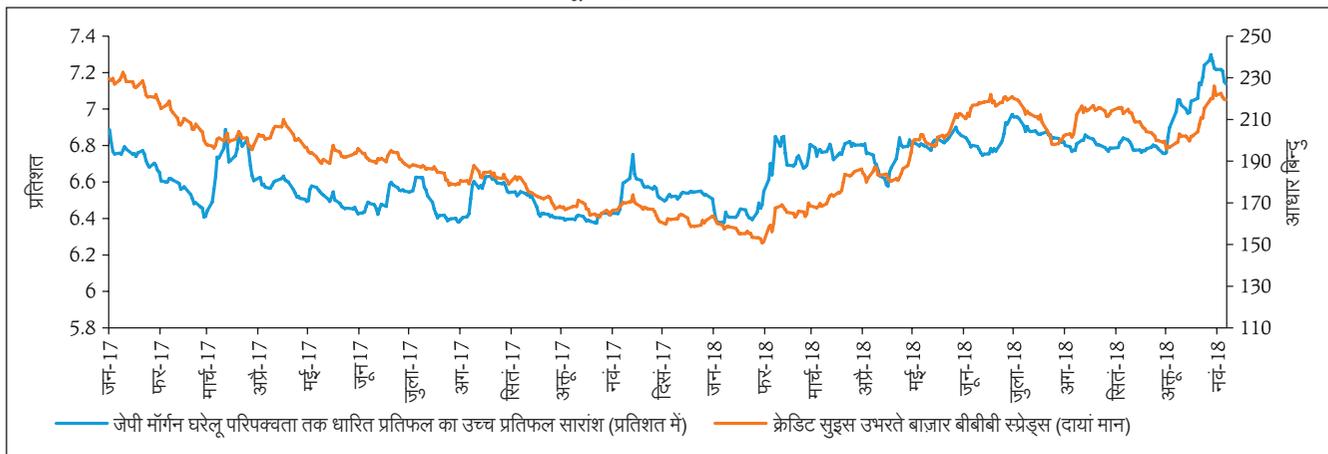
स्रोत: जे पी मॉर्गन⁶ & ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.14: यूएस गैर-वित्तीय कॉरपोरेट बकाया ऋण



स्रोत: यूएस फेडरल रिजर्व।

चार्ट 1.15: यूएस ट्रेजरी में ईएम निवेश ग्रेड स्प्रेड



स्रोत: जेपी मॉर्गन और ब्लूमबर्ग।

⁵ 31 अक्टूबर 2018 के Financial Times के संपादकीय बोर्ड की समीक्षा।

⁶ सूचना भरोसेमंद स्रोत से प्राप्त की गई है किंतु जेपी मॉर्गन उसकी पूर्णता की अपेक्षा नहीं करता है। सूचकांक के इस्तेमाल की अनुमति ली गई है। सूचकांक को जेपी मॉर्गन की पूर्व लिखित अनुमोदन के बिना कॉपी, इस्तेमाल या वितरण नहीं किया जाए। इस पूरे दस्तावेज़ में जेपी मॉर्गन से संबंधित संदर्भ में सभी स्थान पर स्वीकार्यता लागू होगी। कॉर्पोराइट 201 (8) जेपी मॉर्गन चैस एंड कंपनी। सर्वाधिकार सुरक्षित है।

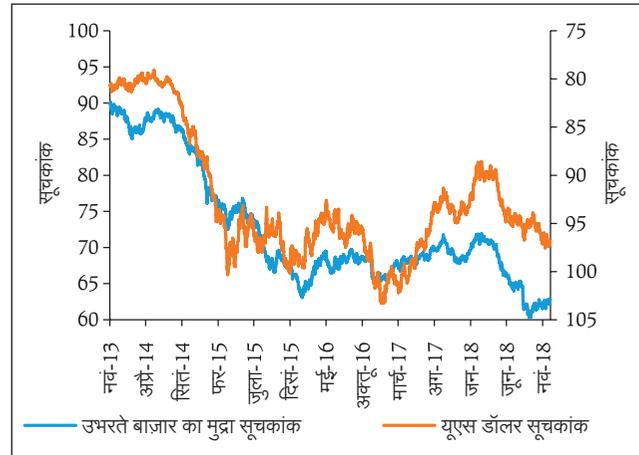
बाज़ारों का मूल्यहास अधिक रहा है (चार्ट 1.16)। जहां मात्रात्मक सुगमता (क्यूई) से संबंधित उपायों की वापसी के बारे में ईसीबी के संकेत ने अमरीकी डॉलर सूचकांक में उछाल ला दिया है, वहीं यूरो क्षेत्र के जीडीपी आंकड़ों में आई हालिया कमी के चलते बाज़ार की अटकलों ने फिर से यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि 2019 के अंत में यूरो ब्याज दर में सुधार तथा पुनः लाभ की स्थिति पैदा होगी या नहीं। बैंक ऑफ जापान (बीओजे) द्वारा हाल ही में जारी वित्तीय प्रणाली रिपोर्ट दर्शाती है कि उदार वित्तीय नीति ने जहां एक ओर आर्थिक विस्तार का समर्थन किया है वहीं दूसरी ओर निकट भविष्य के साथ-साथ कुछ हद तक लंबी अवधि के दृष्टिकोण से नकारात्मक जोखिम को भी कम किया है, यदि जापान की अर्थव्यवस्था की संवृद्धि संभावना में वृद्धि नहीं होती है तो हाल की वित्तीय गतिविधियां तुलनपत्र के समायोजन पर दबाव बना सकती हैं तथा इस तरह भविष्य में होने वाले नकारात्मक आघात की स्थिति में अर्थव्यवस्था में गिरावट बढ़ सकती है। जबकि इस प्रकार के विचार अभी तक चल रही समायोजनकारी वित्तीय नीति के एक आधारभूत पुनर्मूल्यांकन व्यवस्था की ओर इशारा नहीं करते हैं, यह उन लागत पर कुछ हद तक पुनर्विचार करती है जिसे कार्यक्रम प्रेरित कर रहे हैं, हालांकि इस प्रकार के पुनर्मूल्यांकन के लिए मुद्रा बाज़ार ने अभी तक कोई ठोस प्रतिक्रिया नहीं दी है। उभरते बाज़ार के क्रेडिट स्प्रेड में सामान्य विस्तार तथा जोखिम उठाने की अस्थिर प्रवृत्ति का सामना ईएम को सतत करना पड़ेगा क्योंकि अमरीकी बजट घाटे में वृद्धि होती जा रही है तथा उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के मौद्रिक प्रोत्साहन घटता जा रहा है।

घरेलू समष्टि वित्तीय गतिविधियां

क. संवृद्धि के प्रति जोखिम

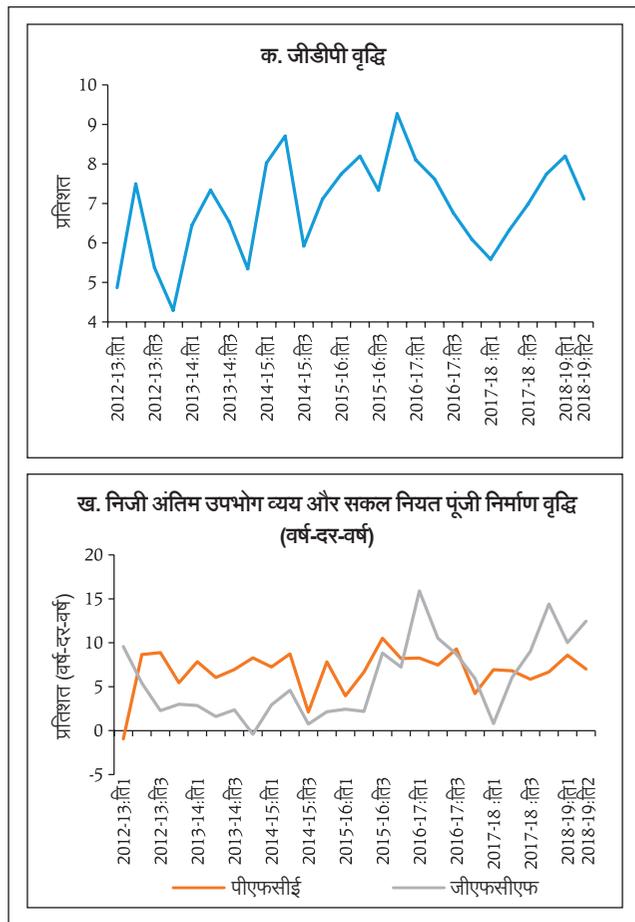
1.11 घरेलू स्तर पर, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि वर्ष-दर-वर्ष 2018-19 की प्रथम तिमाही की 8.2 प्रतिशत से कम होकर 2018-19 की दूसरी तिमाही में 7.1 प्रतिशत हो गई जो कि निजी खपत में नरमी के कारण थी (चार्ट 1.17ए तथा बी)। आपूर्ति के मामले में, आधार कीमतों पर योजित सकल मूल्य (जीवीए) में वृद्धि 2018-19 की दूसरी तिमाही में 6.9 प्रतिशत तक कम हो गई जो कि कृषि तथा औद्योगिक गतिविधियों में नरमी को दर्शाती है।

चार्ट 1.16: यूएस डॉलर सूचकांक की तुलना में ईएम मुद्रा का प्रदर्शन



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.17: कुल राष्ट्रीय आय



स्रोत: केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ)।

ख. राजकोषीय शेष

1.12 वित्त मंत्री ने 2018-19 के अपने बजट भाषण में ऋण नियम को अपनाने तथा केन्द्रीय सरकार के ऋण को जीडीपी अनुपात के 40 प्रतिशत तक लाने के संबंध में बनी राजकोषीय सुधार तथा बजट प्रबंधन समिति की सिफारिशों को स्वीकार करने का प्रस्ताव दिया था। सरकार ने प्रमुख परिचालनगत मानदंड के रूप में राजकोषीय घाटे के लक्ष्य के इस्तेमाल की सिफारिश को भी स्वीकार किया है। हालांकि, राजकोषीय दायित्व तथा बजट प्रबंधन अधिनियम (एफ़आरबीएम) की प्रस्तावित नई व्यवस्था के अनुसार सकल राजकोषीय घाटे को जीडीपी अनुपात के 3.0 प्रतिशत तक लाने का लक्ष्य 2020-21 तक स्थगित किया गया है। इसके अलावा, सरकार ने मामले के अनुसार लक्ष्य में ढील देने अथवा सख्ती बरतने को भी सुनिश्चित करने के लिए 'बचाव और उछाल संबंधी खंड' को शामिल करते हुए अच्छी तरह परिभाषित किया है। सरकार ने राजस्व लेखा (आरडी) के साथ-साथ प्रभावी राजस्व घाटे (ईआरडी) ⁷ के संबंध में घाटे के लक्ष्य को छोड़ देने का निर्णय लिया है।

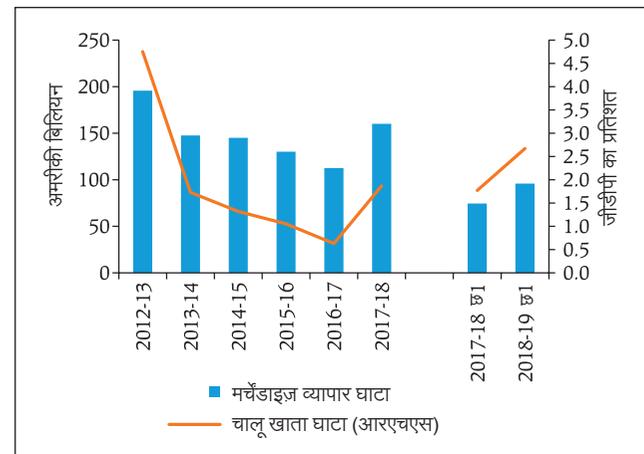
1.13 राजकोषीय घाटे को क्रमिक रूप से 2014-15 में जीडीपी के 4.1 प्रतिशत से 2015-16 में 3.9 प्रतिशत तथा इसके बाद 2017-18 में 3.5 प्रतिशत पर लाया गया। चूंकि राजकोषीय अनुशासन विशेष रूप से रेटिंग एजेंसियों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, यह देखते हुए कि समान रेटिंग प्राप्त देशों में भारत अपेक्षाकृत उच्च ऋण और उच्चतर घाटे वाला देश बना हुआ है, सरकार ने 2018-19 में राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को 3.3 प्रतिशत पर लाने के लिए कदम उठाए हैं।

ग. बाह्य शेष

क. चालू खाता

1.14 सकल घरेलू उत्पाद के मुकाबले चालू खाता घाटा (सीएडी) 2012-13 में जीडीपी के 4.8 प्रतिशत तक खतरनाक तरीके से बढ़ने के बाद 2016-17 में बारह वर्ष के निम्न स्तर तक आ गया (चार्ट 1.18)। जीडीपी की दोनों समग्र तथा प्रतिशत के रूप में पण्य व्यापार घाटे में गिरावट ने चालू खाता पर दबाव को कम कर दिया। हालांकि, पण्य व्यापार घाटा में गिरावट के चलते 2017-18 में चालू खाता घाटा चार वर्ष में सबसे अधिक हो गया। बढ़ते व्यापार घाटे के कारण चालू खाता घाटा 2017-

चार्ट 1.18: चालू खाता और मर्चेडाइज़ व्यापार घाटा



स्रोत: आरबीआई।

18 की पहली छमाही के 1.8 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2018-19 की प्रथम छमाही में जीडीपी के 2.7 प्रतिशत तक हो गया। अप्रैल 2018 से अक्टूबर 2018 की अवधि के दौरान के पण्य व्यापार आंकड़ा आयात के प्रमुख घटकों में कुछ हद तक पुनः वृद्धि को दर्शाते हैं जो कि 2017-18 के सापेक्ष घरेलू मांग में कुछ वृद्धि को दर्शाती है (चार्ट 1.19)। आगे चलकर, अमरीका तथा चीन के बीच चल रहे व्यापार संबंधी विवाद जिसका वैश्विक

⁷ प्रभावी राजस्व घाटा (ईआरडी) राजस्व घाटा (आरडी) तथा पूंजी आस्ति के निर्माण के लिए दिए गए अनुदान के बीच का अंतर है।

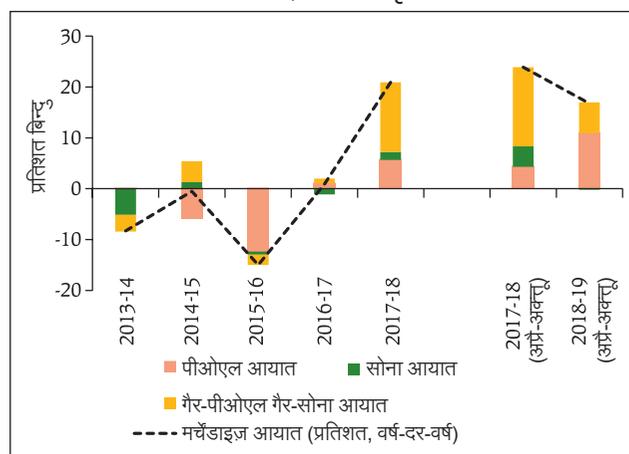
व्यापार प्रवाह पर अभी तक सीमित प्रभाव हुआ है, का प्रमुख जोखिम बना हुआ है। इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों के प्रति जो परिदृश्य बना हुआ है उसने इनपुट कीमतों को बढ़ा दिया है और जो अनिश्चितता बनी हुई है, जिसका भारत के व्यापार संबंधों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है और वर्ष 2018-19 की पहली छमाही में और भी खराब हो गया है।

ख. पूंजी खाता

1.15 भारतीय इक्विटी के तुलनात्मक मूल्यांकन बनाम भारत के समकक्ष उभरते बाजारों की इक्विटी से पता चलता है कि के परस्पर मूल्यांकन की तुलना में उनके समकक्ष उभरते बाजार में वायदा पी/ई मल्टीपल में कुछ बढ़त दिखाई दी है (1.20)। वैश्विक चलनिधि का धीरे-धीरे सामान्यीकरण तथा जोखिम वाली आस्तियों की पुनः रेटिंग से संकेत मिलता है कि उपार्जन परिदृश्य तथा घरेलू प्रवाह के साथ-साथ विदेशी निवेशक प्रवाह भी मूल्यांकन के स्तर को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

1.16 अप्रैल से नवंबर 2018 के दौरान भारतीय इक्विटी तथा ऋण बाजार दोनों से एफपीआई द्वारा पर्याप्त बहिर्वाह देखा गया। अक्तूबर के दौरान बिकवाली तेज रही, जब एफपीआई द्वारा पिछले 10 वर्षों के दौरान एक माह में 3.9 अमरीकी डॉलर की सबसे अधिक बिक्री की गई। यह बिकवाली सितंबर में 1.5 बिलियन अमरीकी डॉलर के विदेशी फोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) बहिर्वाह के कारण थी (चार्ट 1.21)।

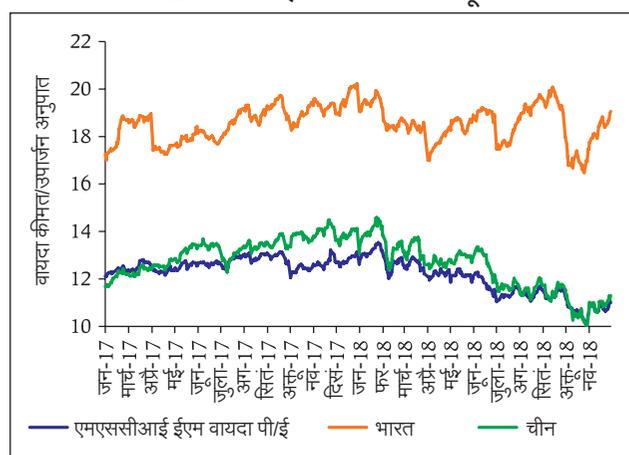
चार्ट 1.19: मर्चेडाइज़ आयात वृद्धि के संघटक



पीओएल: पेट्रोलियम, ऑयल तथा लुब्रिकेंट।

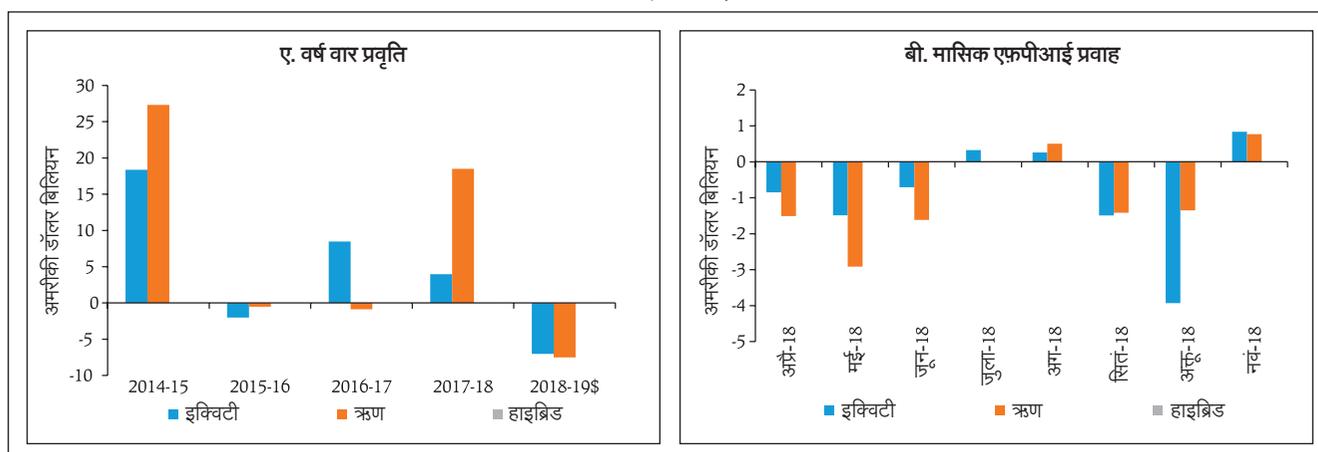
स्रोत: डीजीसीआई&एस तथा पेट्रोलियम योजना तथा विश्लेषण कक्ष।

चार्ट 1.20: भारतीय इक्विटी का सापेक्षित मूल्यांकन



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

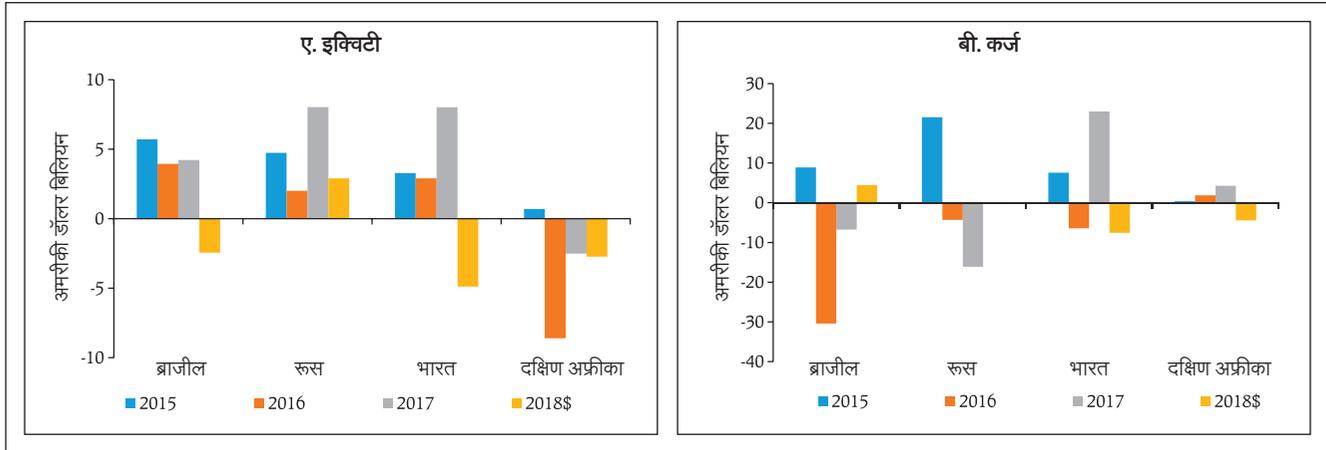
चार्ट 1.21: एफपीआई प्रवाह



नोट: '\$' नवंबर 2018 तक के आंकड़े।

स्रोत: भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी)।

चार्ट 1.22: एफपीआई के प्रवाह - उभरते हुए बाजार



\$: डेटा नवंबर 2018 तक के हैं।

स्रोत : ब्लूमबर्ग।

तुलनात्मक रूप में, इक्विटी प्रवाह के मामले में भारत का निष्पादन मुख्यतः रूस तथा ब्राजील की तुलना में अपेक्षाओं से कम है (चार्ट 1.22)। एफडीआई संबंधी नीतियों में उदारिकरण के साथ-साथ व्यवसाय करने की सुगमता में सुधार अधिक अंतर्वाह को आकर्षित करने में सक्षम है। वर्तमान बाजार कीमतों पर आधारित जीडीपी के 6.5 प्रतिशत पर बाह्य वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) के बकाया स्टॉक के लिए नियम-आधारित गतिक सीमा होने के संबंध में रिजर्व बैंक द्वारा हाल में की गई नीतिगत घोषणा कॉर्पोरेट तुलन-पत्र में विदेशी मुद्रा देयताओं के संचयन को सीमित करेगी एवं इससे वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा मिलेगा।

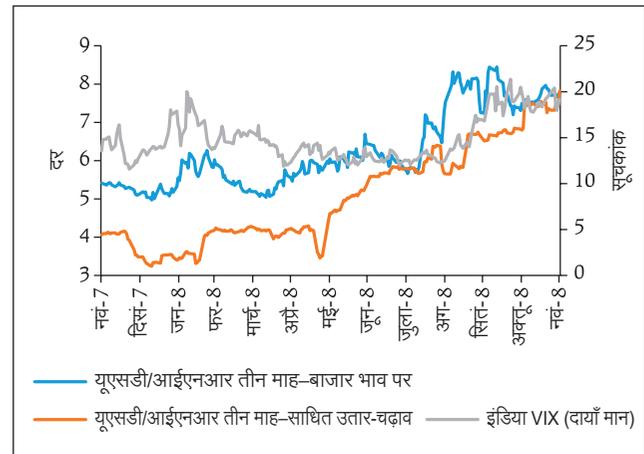
डी. वित्तीय बाजार

1.17 इंडिया VIX में देखी गई हाल की अस्थिरता को विदेशी विनिमय (एफएक्स) के निहित उतार-चढ़ाव अनुमान सहित एफएक्स साधित उतार-चढ़ाव अनुमान में प्रतिबिम्बित किया गया था। जबकि एफएक्स निहित उतार-चढ़ाव अनुमान एवं इंडिया VIX में कोई विशिष्ट आगे बढ़ जाने या पीछे रह जाने जैसा संबंध नहीं है, मौजूदा वित्तीय वर्ष⁸ में बाजार के सभी तीन मापदंड अपने निचले स्तर से काफी ऊपर हैं (चार्ट 1.23)।

म्यूचुअल फंड द्वारा क्रेडिट मध्यस्थता तथा उभरते हुए कुछ मुद्दे

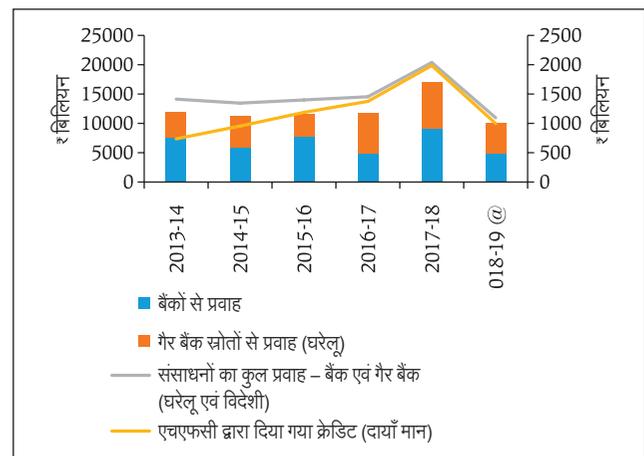
1.18 चार्ट 1.24 द्वारा पिछले 5 वर्षों में वाणिज्यिक क्षेत्र को संसाधनों के प्रवाह को दर्शाया गया है। वर्ष 2016-17 में गिरावट के बाद, सूचित किए गए क्रेडिट के प्रवाह में बैंकों की

चार्ट 1.23: VIX और विदेशी विनिमय ऑप्शन उतार-चढ़ाव



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.24: वाणिज्यिक क्षेत्र को संसाधनों का प्रवाह



@: मध्य नवंबर 2018 तक विभिन्न तारीखों के लिए समेकित

स्रोत: आरबीआई

⁸ अप्रैल 2018- मार्च 2019

हिस्सेदारी वर्ष 2017-18 में तेजी से बढ़ी है जिसका कारण संभवतः वित्तीय वर्ष के दौरान सरकारी क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) का बड़ी मात्रा में पुनः पूंजीकरण था। वर्ष 2017-18 के दौरान सूचित की गई क्रेडिट (घरेलू) में गैर-बैंक स्रोतों में देखी गई वृद्धि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सरकारी गैर-बैंकिंग वित्तीय मध्यवर्ती संस्थाओं के बढ़े हुए डेटा कवरेज के कारण था। वर्ष 2018-19 (मध्य नवंबर तक) के दौरान, घरेलू बैंक और गैर-बैंक स्रोतों के सापेक्षिक अनुपात का मिलान लगभग समान रूप से किया गया था। घरेलू गैर-बैंक स्रोतों से संसाधनों के प्रवाह के मामले में, कुल ऋण प्रवाह (घरेलू स्रोतों से) में आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) द्वारा प्रदान किए गए निवल ऋण का हिस्सा वर्ष 2013-14 के 6.2 प्रतिशत की तुलना में लगभग दुगुना होकर वर्ष 2017-18 में 11.7 प्रतिशत हो गया। वाणिज्यिक क्षेत्र को ऋण के कुल प्रवाह में विदेशी संसाधनों का हिस्सा अवलोकन अवधि के दौरान मुख्य तौर पर 16-19 प्रतिशत के बीच था जिसमें प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का प्रमुख योगदान था।

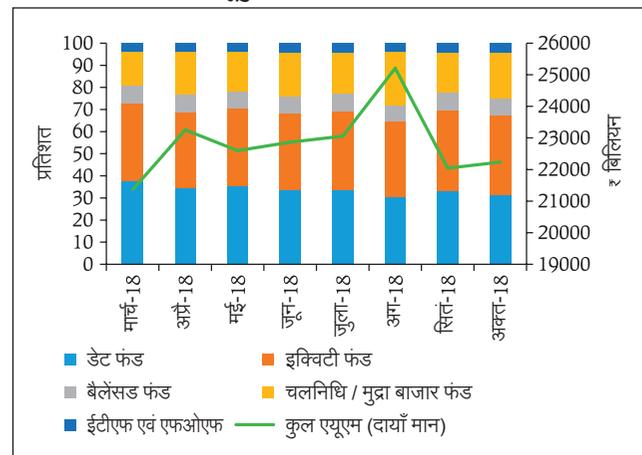
1.19 म्यूचुअल फंड (एमएफ) ने पहले रेखांकित गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थीकरण के पुनरुत्थान में एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। तथापि, आईएल और एफएस चूक के मद्देनजर हाल के प्रकरण ने बाजार की अंतर-मध्यस्थता पर आधारित इस ऋण प्रावधानीकरण संरचना से संबंधित कतिपय मुद्दों को रेखांकित किया जिससे संबंधित व्याख्या को मोटे तौर पर निम्नानुसार विभाजित किया जा सकता है:

- ए) एमएफ की ऋण मध्यस्थीकरण की प्रकृति तथा आईएल एंड एफएस के मामले में घटना से उत्प्रेरित अव्यवस्था;
- बी) मुद्रा बाजार दरों पर विशिष्ट फोकस सहित एमएफ अव्यवस्था का कीमत से संबंधित प्रभाव;
- सी) बैंकों और म्यूचुअल फंड में कॉर्पोरेट निर्गमों का उचित मूल्य; तथा
- डी) एमएफ पोर्टफोलियो में क्रेडिट संकेंद्रण और संभाव्य व्यवहारगत निहितार्थ।

ए) एमएफ की ऋण मध्यस्थीकरण की प्रकृति तथा आईएल एंड एफएस के मामले में घटना से उत्प्रेरित अव्यवस्था

1.20 लगभग ₹ 900 बिलियन के कुल कर्ज में से आईएल एंड एफएस समूह एक्सपोजर का लगभग ₹ 65 बिलियन म्यूचुअल फंड के पास है। म्यूचुअल फंड ने पास-श्रू के माध्यम से चूक

चार्ट 1.25: म्यूचुअल फंड संसाधन संग्रहण (मासिक)



स्रोत: भारतीय पारस्परिक निधि संघ (एएमएफआई)।

जोखिम को निवेशकों के पाले में डाल दिया है। चार्ट 1.25 आस्तियों की प्रकृति पर आधारित निधियों में वृद्धि और उनके सापेक्षिक आकार का पता लगाता है। जैसा कि चार्ट में स्पष्ट है, कर्ज तथा चलनिधि/ मुद्रा बाजार निधियों के पास प्रमुख हिस्सा है जो कि अधिकतर स्थिर रहा है तथा सितंबर 2018 की स्थिति के अनुसार इसका एयूएम में 51 प्रतिशत हिस्सा है। चार्ट 1.26 तथा 1.27 में दर्शाए गए ऋण एवं चलनिधि/मुद्रा बाजार निधियों का भिन्न-भिन्न निवेशक विश्लेषण यह बताता है कि उच्च निवल मालियत वाले व्यक्ति/कॉर्पोरेट/बैंक तथा वित्तीय संस्थाओं के पास डेट फंड (सितंबर 2018 में) के कुल कोष का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा है, जबकि चलनिधि/ मुद्रा बाजार निधियों के लिए समान समूह का हिस्सा 95 प्रतिशत से अधिक था। कर्ज और चलनिधि/ मुद्रा बाजार निधियों में निवेशक प्रोफाइल के ठीक विपरीत, इक्विटी फंड में खुदरा निवेशकों का हिस्सा 50 प्रतिशत है।

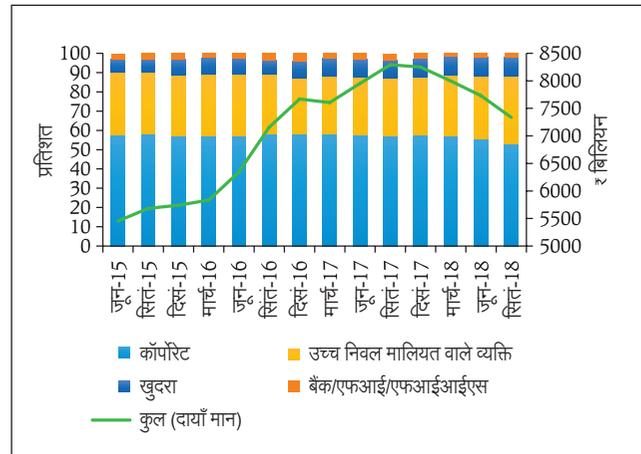
बी) मुद्रा बाजार दरों पर विशिष्ट फोकस के साथ ऋण अव्यवस्था का कीमत से संबंधित प्रभाव

1.21 मुद्रा बाजार चलनिधि से उत्प्रेरित विशेष प्रकार के जोखिम को रेखांकित करने वाली त्रैमासिक अंतर-बैंक दर और त्रैमासिक ओआईएस के बीच स्प्रेड ने सितंबर 2018 (चार्ट 1.28) से बढ़ोतरी दर्शाया है। तथापि, वैसी वृद्धि चलनिधि कवरेज अनुपात के लिए चलनिधि प्राप्त करने की सुविधा (एफएलएलसीआर) तथा इस अवधि के दौरान किए गए खुले बाजार के परिचालन (ओएमओ) में बढ़ोतरी का सूचक है। गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थ संस्थाओं को बड़ी मात्रा में दी गई निश्चित ऋण व्यवस्था से संभावित गिरावट की पृष्ठभूमि के कारण चलनिधि की जमाखोरी के लिए बैंकों के संभावित निवारक प्रयोजन के कारण मुद्रा बाजार की दरों पर प्रभाव बढ़ गया है।

सी) बैंकों और म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो में कॉर्पोरेट निर्गमों का उचित मूल्य – कुछ उभरते मुद्दे

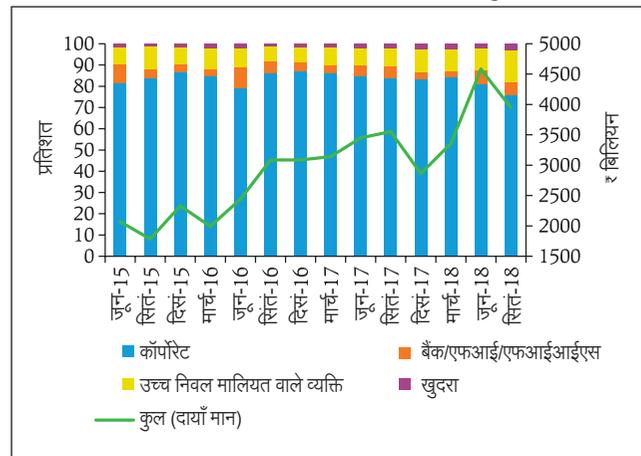
1.22 क्रेडिट लिखतों के मूल्य निर्धारण की दो शर्तें हैं – एक अंतरपणन मुक्त शासकीय कीमत निर्धारण वक्र तथा परिपक्वता-काल एवं रेटिंग के प्रति पारदर्शी कॉर्पोरेट स्प्रेड। तथापि, कॉर्पोरेट बॉण्ड बुक के लिए मौजूदा मूल्य निर्धारण ढांचा बेंचमार्क बनाने संबंधी मुद्दों एवं मूल्य निर्धारण के तरीकों के मामले में कमजोर पड़ता दिख रहा है। अंतर्निहित परिसंपत्तियों का उचित और

चार्ट 1.26 : भिन्न-भिन्न निवेशक विन्यास – डेट फंड



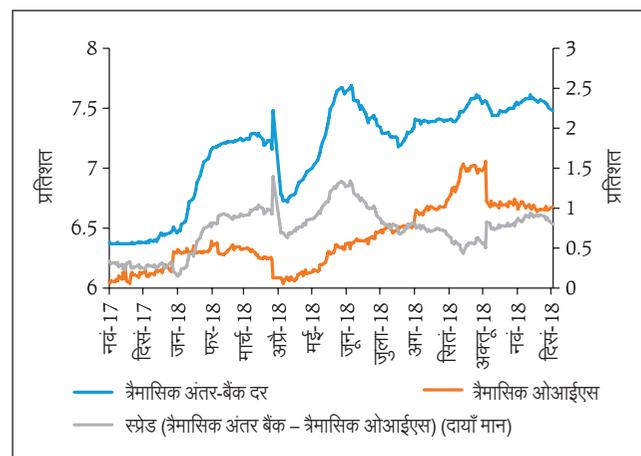
स्रोत : एएमएफआई।

चार्ट 1.27 : भिन्न-भिन्न निवेशक विन्यास – चलनिधि/ मुद्रा बाजार फंड



स्रोत : एएमएफआई।

चार्ट 1.28 : अंतर-बैंक जमा दर में उतार-चढ़ाव



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

विनिमेय मूल्य नहीं दर्शाने वाले कॉर्पोरेट बॉण्ड के पोर्टफोलियो के दो निहितार्थ हैं: - (i) यह अंतर्निहित बाध्यताधारियों की सुदृढ़ता के लिए बैरोमीटर के रूप में काम करने में विफल रहता है (ii) इससे बाकी बाजार पर बाहरी प्रभाव डाला जाना संभावित है जब मूल्य निर्धारण में विसंगतियां सामने आती हैं और निवेशक सुरक्षित रूप से निकल जाना पसंद करते हैं। इसके अलावा, प्राथमिक बाजार कीमत निर्धारण एवं समकक्ष प्रतिभूतियों को वहन करने की आंतरिक लागत के बीच फासला अंतर्निहित प्रतिभूतियों में व्यापार करने हेतु एक अवप्रेरक के रूप में कार्य कर सकता है जिसके परिणामस्वरूप कीमत निर्धारण के मामले में नकारात्मक प्रतिपुष्टि पाश की स्थिति पैदा होगी। कर्ज/मुद्रा बाजार म्यूचुअल फंड के एयूएम में वृद्धि से पता चलता है कि गैर-चलनिधीय कॉर्पोरेट बॉण्ड बाजार में म्यूचुअल फंड द्वारा किया गया मूल्य निर्धारण कुल मिलाकर बाजार का प्रतिनिधित्व करता है। इस तरह के उचित मूल्यांकन के अभाव में म्यूचुअल फंड के अंतिम निवेशकों, जिसमें बैंक, संस्थाएं एचएनआई एवं कॉर्पोरेट ट्रेजरी शामिल हैं, ने यूनिट 64 के समान म्यूचुअल फंड का अंतरपणन किया होता। सेबी विनियमों ने उचित मूल्य निर्धारण की जिम्मेदारी म्यूचुअल फंड को दी है। इसने अंतर्निहित प्रतिभूतियों पर आधारित म्यूचुअल फंड स्कीम का पुनः परिभाषित वर्गीकरण किया है एवं प्रत्येक वर्ग में परिपक्वता संबंधी प्रतिबंध लगा दिया है। चलनिधि जोखिमों के प्रबंधन के लिए म्यूचुअल फंड को निकास प्रभार एवं शोधन के तरीकों को लागू करने के लिए अधिकृत किया गया है। जब कर्ज कॉर्पोरेट संरचना का एक महत्वपूर्ण एवं बढ़ता हुआ भाग बन जाता है जो चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर) को लागू करने सहित बैंकिंग मध्यस्थों पर निवल स्थायी निधीयन अनुपात (एनएसएफआर) को लागू किए जाने की प्रत्याशा से अंशतः प्रेरित है, तब कॉर्पोरेट बॉण्ड के मूल्य निर्धारण के लिए उचित बेंचमार्क बनाने के मामले में कमियों के निस्तारण के लिए कॉर्पोरेट बॉण्ड बाजार को मजबूत बनाना आवश्यक है।

1.23 इस संबंध में रिजर्व बैंक ने 2018-19 के लिए मौद्रिक नीति समिति की पांचवीं द्विमासिक बैठक के बाद के विकासात्मक और नियामक नीतियों पर अपने वक्तव्य में ये प्रस्ताव प्रस्तुत किया है कि 1 अप्रैल, 2019 से बैंकों द्वारा सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों

को दिये गए सभी चालू दर ऋण एवं नयी चालू दर पर दिये गए व्यक्तिगत अथवा खुदरा ऋण की कीमत बाहरी बेंचमार्क पर आधारित होगी। इसके अतिरिक्त, मूल संस्था/ समूह/ सरकार की ओर से प्राप्त सहायता सहित चलनिधि दोनों के मामले में क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों (सीआरए) के लिए हाल ही में बढ़ाए गए प्रकटीकरण मानदंडों के कारण बाध्यताधारी के संबंध में निकट भविष्य की वैसी अतिसंवेदनशीलताओं का अधिक सटीक प्रदर्शन होगा एवं इससे संबंधित आस्ति कीमतों के मामले में वैसी अतिसंवेदनशीलताएं प्रतिबिम्बित होंगी।

डी) एमएफ पोर्टफोलियो में क्रेडिट संकेंद्रण और संभाव्य व्यवहारगत निहितार्थ

1.24 ब्याज दर का रुख मंद रहने की स्थिति में स्प्रेड उत्पादों के प्रति एक्सपोजर सहित सरकारी प्रतिभूतियों की धारिता एवं शासकीय वक्र पर एक्सपोजर को बदलने के संबंध में म्यूचुअल फंड के प्रचक्रिय व्यवहार, अंतर्निहित पोर्टफोलियो की चलनिधि के लिए स्पष्ट निहितार्थ सहित, के संबंध में एफएसआर⁹ के पिछले अंक में टिप्पणी की गई है। किसी पोर्टफोलियो में एक्सपोजर का संकेंद्रण बाजार की स्थिरता को प्रभावित करता है। समान क्रेडिट के संकेंद्रित पोर्टफोलियो की तुलना में विविध पोर्टफोलियो कम जोखिम वाला होगा। म्यूचुअल फंड में विविध पोर्टफोलियो बनाने के लिए सेबी ने विभिन्न रक्षोपाय किया है। सेबी विनियमन ने म्यूचुअल फंड पर एकल जारीकर्ता सीमा, समूह एक्सपोजर सीमा एवं क्षेत्रगत एक्सपोजर सीमा तय किया है। म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो को विविध बनाए रखने के लिए इन सीमाओं को लगातार संशोधित किया जाता है। जारीकर्ता के स्तर पर विविधीकरण सुनिश्चित करने के लिए जारीकर्ता पर निवेशक स्तरीय संकेंद्रण सीमा पर विचार करना उचित होगा। मुद्रा बाजार एवं चलनिधि फंड में चलनिधि में सुधार के लिए मूल्य निर्धारण तथा परिपक्वता संबंधी सीमाएं लगाए जाने के मामले में सेबी द्वारा विचार किया जा रहा है। एक अनिवार्य चलनिधि सीमा तय किए जाने पर भी उनके द्वारा विचार किया जाए। इस संबंध में गैर-बैंकिंग वित्तीय क्षेत्र में एक प्रभावी एएलएम व्यवस्था भी प्रणालीगत समुत्थान शक्ति को बढ़ाएगी।

1.25 वित्तीय बाजारों के मजबूत और व्यापक बनने से उनके बीच अंतर-संबद्धता और संभावित संक्रामकता के कारण कुछ

⁹ जून 2018 की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, पैरा 1.21-22.

अपरिहार्य दुष्प्रभाव भी उत्पन्न होते हैं। अतएव यह जरूरी हो जाता है कि विनियामकों के बीच पहले से बेहतर समन्वय बनाया जाए ताकि उनके बीच विनियामकीय अंतरों या समझ तथा वास्तविक सूचनापरक विषमताओं के परिणामस्वरूप संभावित विनियामकीय निवाचन अवसरों की पहचान की जा सके। दूसरी ओर, बाजार विकास और निवेशकों एवं ऋण अनुशासन का अपेक्षित स्तर और व्यापक दृष्टिकोण के बीच का संतुलन अंतर-पीढ़ीगत समानता और स्थिर एवं टिकाऊ वित्तीय प्रणाली को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

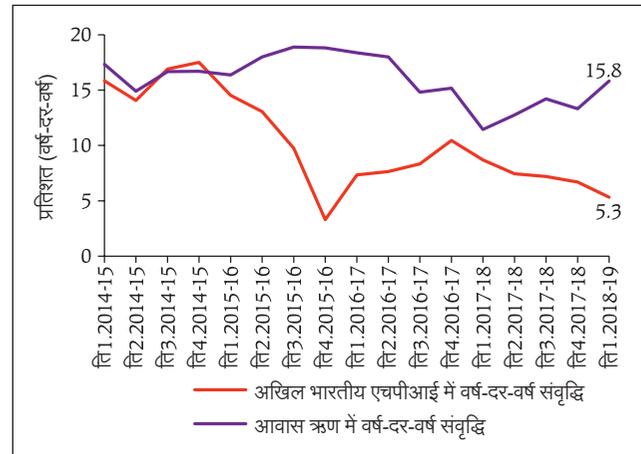
आवास बाजार

1.26 बैंक उधारी दरों (चार्ट 1.29) के अनुकूल होने और आवास ऋण संवृद्धि में तेजी होने के बावजूद पिछली पांच तिमाहियों में आवास कीमतों में सुस्ती रही है। सुस्त मांग स्थिति के कारण अनबिके घरों की संख्या बढ़ने से कीमतों में धीरे-धीरे सुधार हुआ है। हांलाकि 2018-19 की पहली तिमाही में आवास बिक्री में बढ़ोतरी हुई जिससे अनबिके आवासों की संख्या में कमी आई और इससे प्रमुख शहरों के आवास बिक्री अनुपात की सूची में सुधार हुआ (चार्ट 1.30)। जीएसटी और रेरा¹⁰ को लागू करने में आए व्यवधानों के स्थिरीकरण के परिणामस्वरूप उपभोक्ता भावनाओं के बेहतर होने के बावजूद नई योजनाओं को आरंभ करने में आया उछाल, किफायती आवास उपलब्ध कराने की अधिकांश सरकारी योजनाओं की वजह से हुआ है।

प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण¹¹

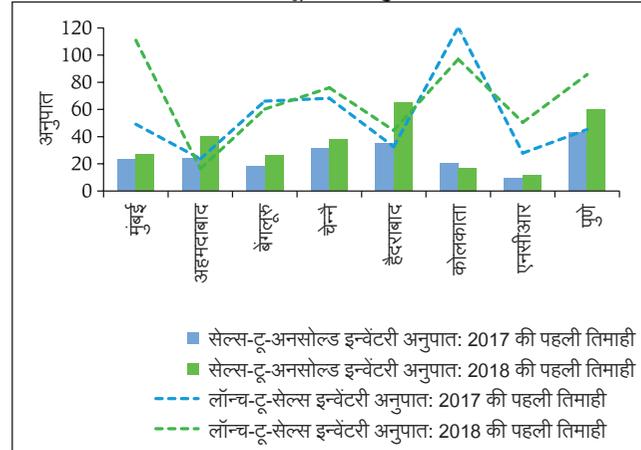
1.27 हालिया प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) में प्रतिभागियों ने वित्तीय बाजार जोखिमों को, वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करने वाले उच्च जोखिम श्रेणी का माना है जबकि वैश्विक जोखिमों, व्यापक आर्थिक स्थितियों और संस्थागत स्थिति के बारे में जोखिम अवधारणा को वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करने वाले मध्यम जोखिम के रूप में माना जाता है। लगभग 50 प्रतिशत प्रत्यर्थी यह मानते हैं कि अगले एक साल में दिवालियापन और शोधन अक्षमता प्रक्रिया के स्थिरीकरण के कारण घरेलू बैंकिंग क्षेत्र की संभावनाओं में मामूली सुधार होगा।

चार्ट 1.29: आवास बाजार की गतिविधियां



स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक।

चार्ट 1.30: अनबिके मकानों की तुलना में बिके आवास का अनुपात और लॉन्च-टू-सेल्स अनुपात



स्रोत: नाइट फ्रैंक।

¹⁰ जीएसटी: वस्तु एवं सेवा कर; रेरा: रियल स्टेट विनियामक प्राधिकारी

¹¹ प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) के जरिए दस प्रमुख पैमानों पर वर्तमान में वित्तीय प्रणाली के सामने आने वाले प्रमुख जोखिमों पर विशेषज्ञों के दृष्टिकोण का पता लगाया जाता है। विशेषज्ञों में वित्तीय मध्यवर्ती संस्थाओं के बाजार प्रतिभागी, शिक्षाविद और रेटिंग एजेंसियां शामिल हैं। यह सर्वेक्षण अर्धवार्षिक आधार पर किया जाता है और वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट में इसे रिपोर्ट किया जाता है। इस सर्वेक्षण के विस्तृत विश्लेषण के लिए अनुबंध 1 देखें।

अध्याय II

वित्तीय संस्थाएं: सुदृढ़ता और समुत्थानशक्ति

मुख्यतः निजी क्षेत्र के बैंकों (पीवीबी) (22.5 प्रतिशत वर्ष-दर-वर्ष) की वजह से सितंबर 2018 में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) की ऋण संवृद्धि (13.1 प्रतिशत वर्ष-दर-वर्ष) में सुधार हुआ। जीएनपीए अनुपात मार्च 2018 में 11.5 प्रतिशत से गिरकर सितंबर 2018 में 10.8 प्रतिशत हो गया और उसी अवधि में वार्षिक गिरावट अनुपात 7.6 प्रतिशत से गिरकर 4.1 प्रतिशत पर आ गयी जिसकी वजह से अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) के आस्ति गुणवत्ता में सुधार नजर आ रहा है। विभिन्न पुनर्संरचनात्मक योजनाओं के बंद होने की वजह से दबावग्रस्त अग्रिम अनुपात धीरे-धीरे जीएनपीए अनुपात में परिवर्तित हो रहा है। तथापि क्षेत्रवार विश्लेषण में खनन, खाद्य प्रसंस्करण और विनिर्माण क्षेत्रों में उच्च दबाव देखने को मिलता है।

आधारभूत परिदृश्य के तहत अनुमानित जीएनपीए अनुपात सितंबर 2018 के 10.8 प्रतिशत से गिरकर मार्च 2019 में 10.3 प्रतिशत हो सकता है। संवेदनशीलता विश्लेषण यह दर्शाता है कि त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई (पीसीए-पीएसबी) के अंतर्गत आने वाले सरकारी क्षेत्र के सभी बैंकों सहित 18 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (एससीबी), जीएनपीए अनुपात के 2 एसडी शॉक के तहत अपेक्षित सीआरएआर को बनाए रखने में असफल हो सकते हैं।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के पोर्टफोलियो का विश्लेषण दर्शाता है कि अंतर्निहित और वास्तविक दोनों ही मामलों में ऋण जोखिम के संदर्भ में एमएसएमई सेक्टर में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक का निष्पादन अन्य मध्यस्थों (निजी बैंकों और गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) की तुलना में पीछे है। गुणवत्ता की दृष्टि से पीसीए-पीएसबी के वृद्धिशील क्रेडिट पोर्टफोलियो का अनर्जक आस्तियों (एनपीए) में रूपांतरण की दर वित्तीय वर्ष 2016-17 की तुलना में वित्तीय वर्ष 2017-18 में गिरावट का रुख दर्शा रही है, अन्य वित्तीय मध्यस्थों की तुलना में अभी भी यह दर काफी बड़ी है।

सितंबर 2017-सितंबर 2018 की अवधि के लिए वित्तीय नेटवर्क संरचना का विश्लेषण यह बतलाता है कि अंतर-बैंक बाजार सिकुड़ रहा है और धन जुटाने के लिए आस्ति प्रबंधन कंपनियों-म्युचुअल फंडों (एमसी-एमएफ) और उधार देने के लिए एनबीएफसी/हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों (एचएफसी) के साथ बैंक लिंकेज बढ़ रहे हैं। एएमसी की प्राप्ति और एनबीएफसी/एचएफसी के भुगतान के लिए लिखत-वार डाटा दर्शाता है कि दीर्घअवधि लिखतों के मुकाबले अल्पावधि लिखतों वाणिज्यिक पेपर (सीपी) और जमा प्रमाणपत्र (सीडी) की ओर एक बदलाव का रुख नजर आ रहा है।

बैंकिंग क्षेत्र के लिए संक्रामक विश्लेषण दो अलग दृष्टिकोण को लेकर किया गया - एक जिसमें पीएसबी की निहित शासकीय गारंटी (कोई डिफॉल्ट मामला नहीं) को ध्यान में रखा जाता है और दूसरा जिसमें पीएसबी के लिए डिफाल्ट ट्रिगर पीवीबी के समान होता है। इन दो दृष्टिकोणों के परिणामों के बीच के महत्वपूर्ण अंतर से यह समझा जा सकता है कि अंतर्निहित शासकीय समर्थन के अभाव में पीएसबी द्वारा चूक के परिणामस्वरूप शोधन क्षमता एवं चलनिधि की हानि में संभाव्य वृद्धि हो सकती है।

खंड I

अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक¹

2.1 इस खंड में परिदृश्यों और एकल-घटक संवेदनशीलता विश्लेषण² के माध्यम से समष्टि-दबाव परीक्षणों का उपयोग करते हुए अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों(एससीबी) की सुदृढ़ता एवं लचीलेपन पर मोटे तौर पर दो उप-शीर्षकों i) निष्पादन, और ii) समुत्थानशीलता के तहत चर्चा की गई है।

कार्यनिष्पादन

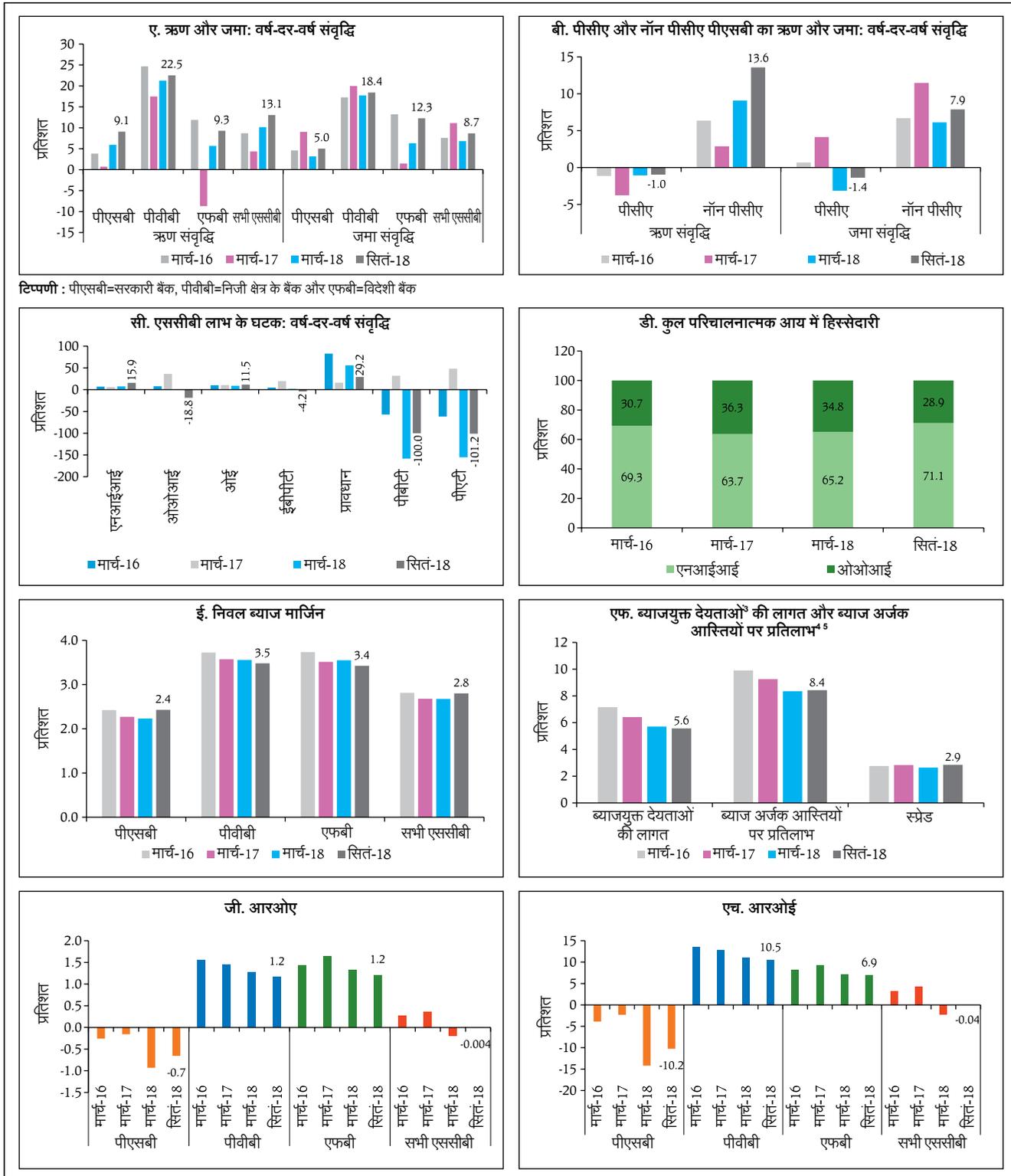
2.2 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की ऋण-संवृद्धि ने, सभी बैंक समूहों में, मार्च और सितंबर 2018 के बीच वर्ष-दर-वर्ष

आधार पर जोर पकड़ा और यह मुख्यतः निजी क्षेत्र के बैंकों द्वारा (मार्च 2018 में 21.3 प्रतिशत से सितंबर 2018 में 22.5 प्रतिशत) (चार्ट 2.1 ए) की वजह से हुआ। निजी क्षेत्र के बैंकों के जमा में 18.4 प्रतिशत की ठोस वृद्धि बनी रही। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के कार्य निष्पादन में समग्र सुधार देखने को मिला, ऋण संवृद्धि मार्च 2018 के 5.9 प्रतिशत से सितंबर 2018 में 9.1 प्रतिशत पर पहुँच गई और उसी अवधि में जमा संवृद्धि 3.2 प्रतिशत से 5 प्रतिशत पर पहुँच गई। हालांकि, पीसीए और नॉन पीसीए पीसीबी के बीच अंतर आगे और भी बढ़ गया; जबकि नॉन पीसीए पीएसबी की ऋण संवृद्धि मार्च 2018

¹ इस अध्याय में किया गया विश्लेषण 12 दिसंबर 2018 को उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के आधार पर किया गया है, जो अंतिम है।

² विश्लेषण रिजर्व बैंक के पर्यवेक्षी विवरणों पर आधारित है जिसमें अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के बड़े उधारकर्ताओं के आंकड़ों को छोड़कर केवल घरेलू परिचालनों को शामिल किया गया है। बड़े उधारकर्ताओं के आंकड़े बैंक के वैश्विक परिचालन पर आधारित हैं। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक और विदेशी बैंक शामिल हैं।

चार्ट 2.1: निष्पादन के चुनिंदा संकेतक (जारी.....)

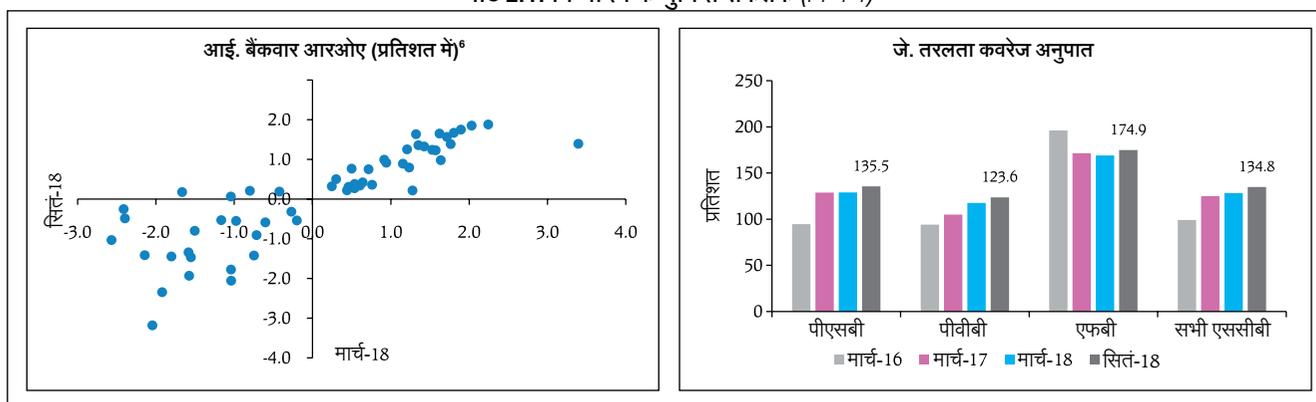


³ ब्याजयुक्त देयताओं की लागत ब्याज व्यय और औसत ब्याजयुक्त देयताओं के बीच के अनुपात के रूप में परिकलित की गई है।

⁴ ब्याज अर्जक आस्तियों का प्रतिफल ब्याज आय और औसत ब्याजयुक्त आय आस्तियों के बीच के अनुपात के रूप में परिकलित की गई है।

⁵ स्प्रेड को ब्याज अर्जक आस्तियों पर प्रतिफल और ब्याजयुक्त देयताओं में अंतर के रूप में परिकलित किया गया है।

चार्ट 2.1: निष्पादन के चुनिंदा संकेतक (निष्कर्ष)



स्रोत : भारतीय रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियां।

के 9.1 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2018 में 13.6 प्रतिशत और इसी अवधि में जमा संवृद्धि 6.1 प्रतिशत से बढ़कर 7.9 प्रतिशत हो गई। पीसीए- पीएसबी में ऋण और जमा दोनों में नकारात्मक वृद्धि देखी गई (चार्ट 2.1 बी)।

2.3 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के निवल आय (एनआईआई) संवृद्धि में मार्च 2018 की तुलना में सितंबर 2018 में सुधार हुआ जबकि अन्य परिचालन आय (ओओआई) में गिरावट आई। परिचालन खर्चों (ओई) में उच्चतर संवृद्धि के साथ-साथ इसकी वजह से प्रावधानों और कर (ईबीपीटी) से पहले की कमाई में कमी आई। तथापि मार्च और सितंबर 2018 के बीच प्रावधानों⁷ में संवृद्धि कम थी।

2.4 मार्च 2018 की तुलना में सितंबर 2018 में कुल परिचालन आय में एनआईआई की मात्रा में सुधार हुआ (चार्ट 2.1डी)। दिलचस्प बात यह है कि पीएसबी के कारण अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन में सुधार हुआ। एनआईआई में उच्चतर संवृद्धि ने पीएसबी के एनआईएम में सुधार हुआ लेकिन फिर भी वह पीवीबी और एफबी से कम है।

2.5 एससीबी के लाभप्रदता अनुपात पर असर जारी रहा। हांलाकि अनुपातों में मार्च 2018 के स्तर से सुधार हुआ है। वैयक्तिक तौर पर 55 एससीबी के सैंपल में से 24 बैंकों ने मार्च 2018 की तुलना में सितंबर 2018 में अपनी आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) में सुधार लाने में सफलता पाई। दूसरी ओर अभी तक अपनी लाभप्रदता बनाए रखने में सक्षम निजी

क्षेत्र के बैंकों की लाभप्रदता औसत में गिरावट आई। सैंपल में शामिल 19 पीवीबी में से 8 के आरओए में मार्च 2018 की तुलना में सितंबर 2018 में सुधार हुआ है।

2.6 पीएसबी और पीवीबी के लिए चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर), जिसका उद्देश्य संभावित तरलता व्यवधानों के समय बैंकों को अल्पकालिक समुत्थानशक्ति प्रदान करने का है; में सितंबर 2018 में सुधार आया। पीएसबी पीवीबी की तुलना में बेहतर एलसीआर रखने में सक्षम है (चार्ट 2.1 जे)।

आस्ति गुणवत्ता और पूंजी पर्याप्तता

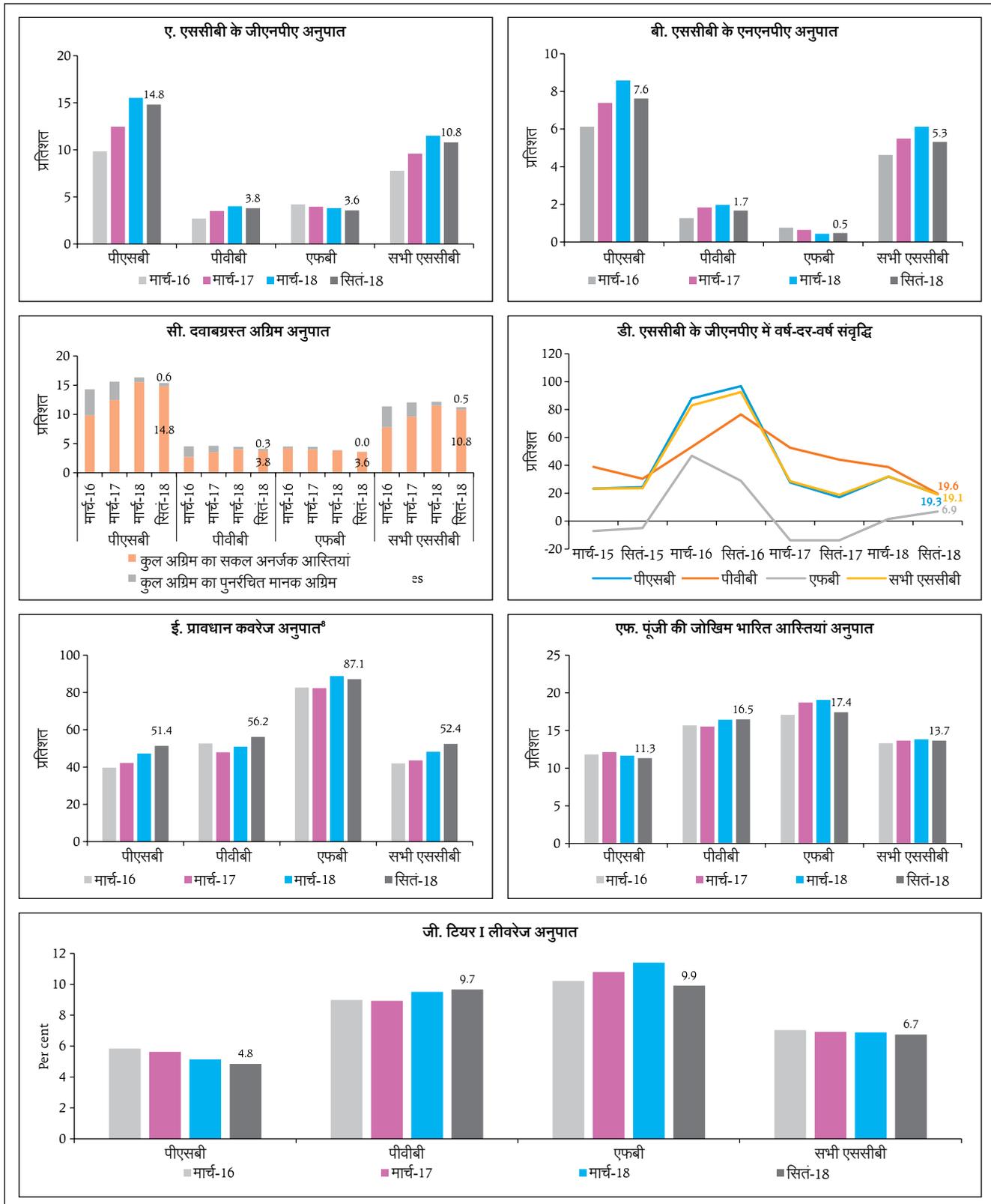
2.7 आस्ति गुणवत्ता में सुधार देखा गया और एससीबी की सकल अनर्जक आस्तियों (जीएनपीए) का औसत मार्च 2018 के 11.5 प्रतिशत से घटकर सितंबर 2018 में 10.8 प्रतिशत हो गया। इस अवधि के दौरान उनकी निवल अनर्जक आस्तियों (एनएनपीए) के औसत में भी गिरावट देखी गई (चार्ट 2.2 ए और 2.2 बी)। आस्ति गुणवत्ता समीक्षा (एक्यूआर) के आरंभ होने पहले वित्तीय वर्ष की समाप्ति के समय और मार्च 2015 के बाद पहली बार बिगड़े हुए परिसंपत्ति भार से संभावित वसूली के संकेतों से सरकारी और निजी दोनों बैंकों के जीएनपीए औसत में अर्धवार्षिकी गिरावट देखी गई।

2.8 फरवरी 2018 में विभिन्न पुनर्गठन योजनाओं को हटा लिए जाने के बाद सितंबर 2018 में पुनर्चित मानक अग्रिम (आरएसए) अनुपात में लगातार गिरावट आई और वह 0.5 प्रतिशत हो गया है। इससे पुनर्गठित अग्रिमों के एनपीए में परिवर्तित होने के वृद्धिपरक संकेत दिखाई दिए। यहां तक कि

⁶ 55 एससीबी के नमूने।

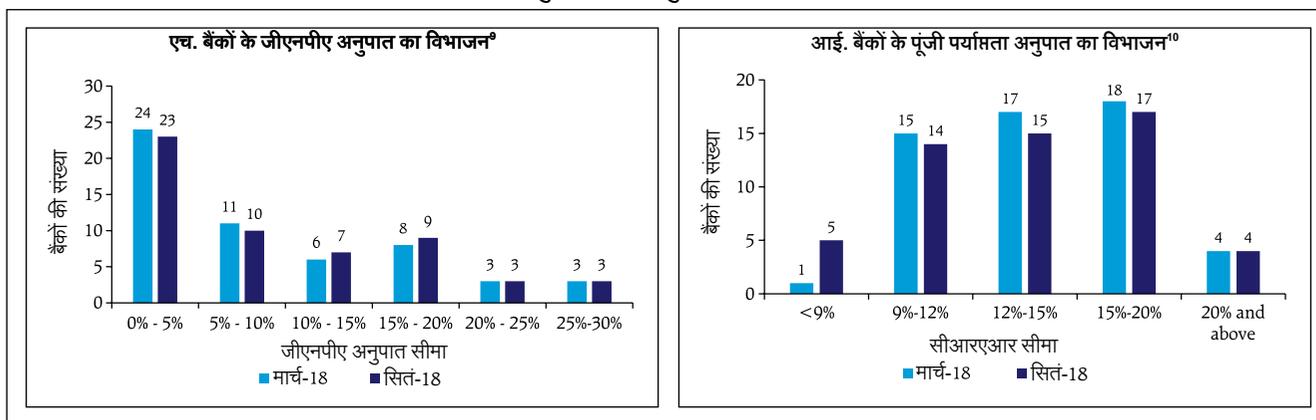
⁷ जोखिम प्रावधान और देयताओं के लिए प्रावधान इस में शामिल है।

चार्ट 2.2: चुनिंदा आस्ति गुणवत्ता संकेतक (जारी.....)



⁸ प्रावधान कवरेज अनुपात (बिना बट्टे खाते समायोजन के) = अनर्जक आस्ति के लिए प्रावधान*100/जीएनपीए

चार्ट 2.2: चुनिंदा आस्ति गुणवत्ता संकेतक (जारी...)



स्रोत : भा.रि.बैं. पर्यवेक्षी विवरणियाँ।

एससीबी के जीएनपीए में वर्ष दर वर्ष वृद्धि में भी सितंबर 2018 में विदेशी बैंक को छोड़कर सभी बैंक समूहों में गिरावट देखने में आई (चार्ट 2.2डी)।

2.9 पीएसबी और पीवीबी दोनों में सुधार के संकेत के साथ सभी एससीबी का प्रोविजन कवरेज अनुपात (पीसीआर), मार्च 2018 के मुकाबले सितंबर 2018 में उच्चतर रहा (चार्ट 2.2 ई)।

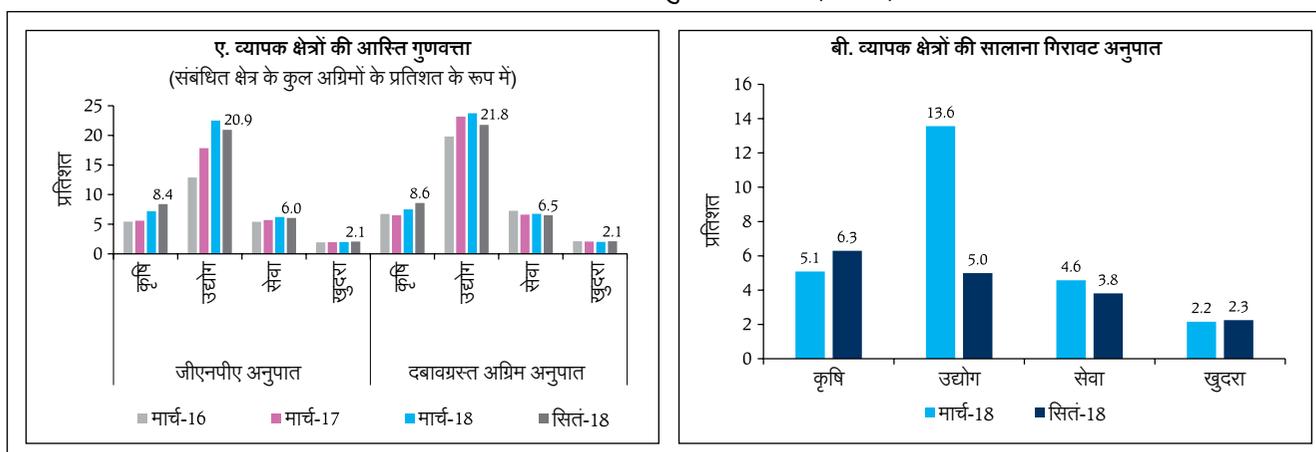
2.10 एससीबी का जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) मार्च 2018 में 13.8 प्रतिशत के मुकाबले सितंबर 2018 में मामूली रूप से गिरकर 13.7 प्रतिशत रहा (चार्ट 2.2 एफ)। पीएसबी का सीआरएआर 11.7 प्रतिशत से गिरकर 11.3 प्रतिशत हो गया। मार्च और सितंबर 2018 के मध्य तक एससीबी के टियर I लीवरेज अनुपात में मामूली गिरावट आई(चार्ट 2.2 जी)।

2.11 बैंकों के जीएनपीए अनुपात का विभाजन यह दर्शाता है कि 10 प्रतिशत से कम जीएनपीए अनुपात रखने वाले बैंकों की संख्या में मार्च 2018 के मुकाबले सितंबर 2018 में गिरावट आई (चार्ट 2.2एच)। बैंकों के पूंजी पर्याप्तता अनुपात का विभाजन यह दर्शाता है कि 9 प्रतिशत से कम जीएनपीए अनुपात रखने वाले बैंकों की संख्या सितंबर 2018 में बढ़ गई (चार्ट 2.3 आई)।

क्षेत्रवार आस्ति गुणवत्ता

2.12 व्यापक क्षेत्रों के बीच, मार्च 2018 के मुकाबले सितंबर 2018 में उद्योग क्षेत्र की आस्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ जबकि कृषि और खुदरा क्षेत्र में गिरावट आई (चार्ट 2.3 ए)। उद्योग क्षेत्र की आस्ति गुणवत्ता में सुधार सितंबर 2018 में नई गिरावट में कमी के कारण उल्लेखनीय रहा (चार्ट 2.3बी)।

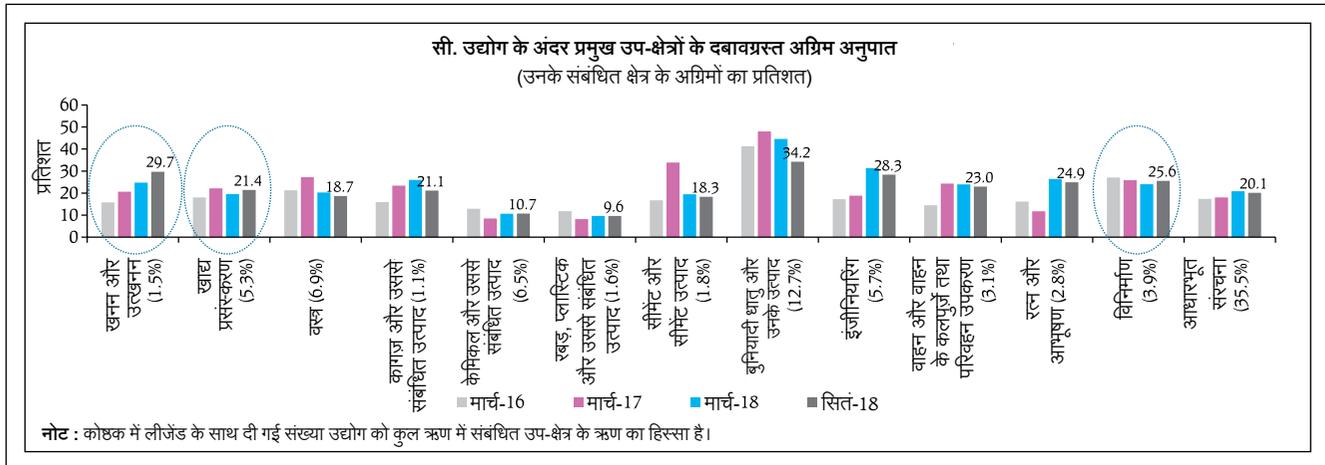
चार्ट 2.3: क्षेत्रवार आस्ति गुणवत्ता संकेतक (जारी ...)



⁹ 55 बैंकों के नमूने

¹⁰ 55 बैंकों के नमूने

चार्ट 2.3: क्षेत्रवार आरिस्त गुणवत्ता संकेतक (जारी ...)



स्रोत : भा. रि. बें. पर्यवेक्षी विवरणियाँ

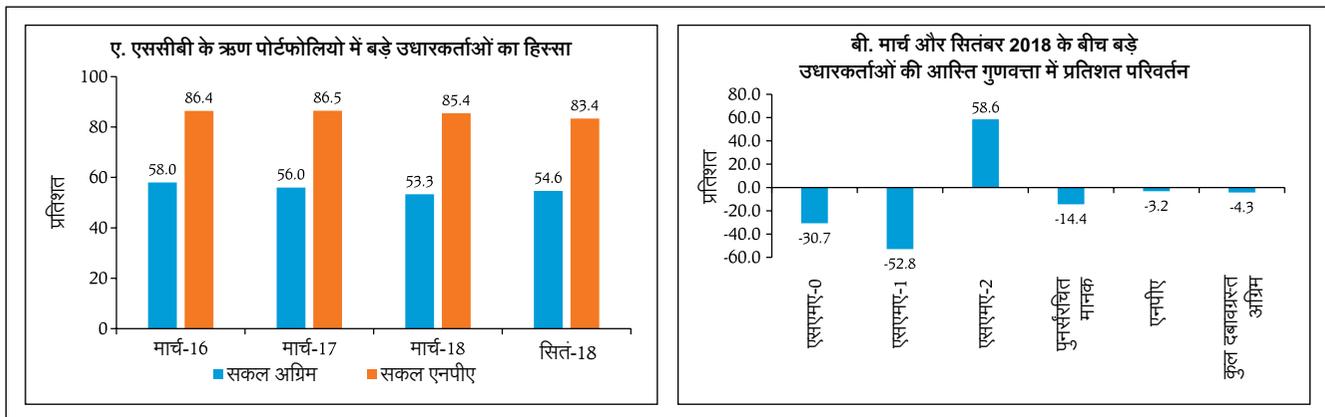
2.13 उद्योग के भीतरी उप-क्षेत्रों में, 'खनन', 'खाद्य प्रसंस्करण' और 'निर्माण' क्षेत्रों के दबावग्रस्त अग्रिमों के अनुपात में मार्च 2018 के मुकाबले सितंबर 2018 में वृद्धि दर्ज की गई (चार्ट 2.3 सी)।

बड़े उधारकर्ताओं की ऋण गुणवत्ता¹¹

2.14 सितंबर 2018 के अंत में एससीबी के कुल उधार पोर्टफोलियो और जीएनपीए में बड़े उधारकर्ताओं का हिस्सा क्रमशः 54.6 प्रतिशत और 83.4 प्रतिशत रहा। एससीबी के सकल अग्रिम का 16.0 प्रतिशत और जीएनपीए का 21.2

प्रतिशत शीर्ष 100 बड़े उधारकर्ताओं के नाम रहा (चार्ट 2.4)। बड़े उधारकर्ताओं के खाते में, किसी भी दबाव के संकेत के साथ वित्तपोषित बकाया राशि का अनुपात (एसएमए-0,1,2, पुनःसंचित ऋण और एनपीए सहित) मार्च 2018 के 30.4 प्रतिशत से गिरकर सितंबर 2018 में 25.4 प्रतिशत रह गया जबकि कुल वित्तपोषित बकाया राशि में एसएमए-2¹² ऋण का अनुपात मामूली रूप से बढ़कर मार्च 2018 के 0.7 प्रतिशत के मुकाबले सितंबर 2018 में 1.1 प्रतिशत हो गया। कुल मिलाकर मुख्य रूप से बेस प्रभाव के परिणामस्वरूप मार्च और सितंबर

चार्ट 2.4: बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा आरिस्त गुणवत्ता संकेतक (जारी...)

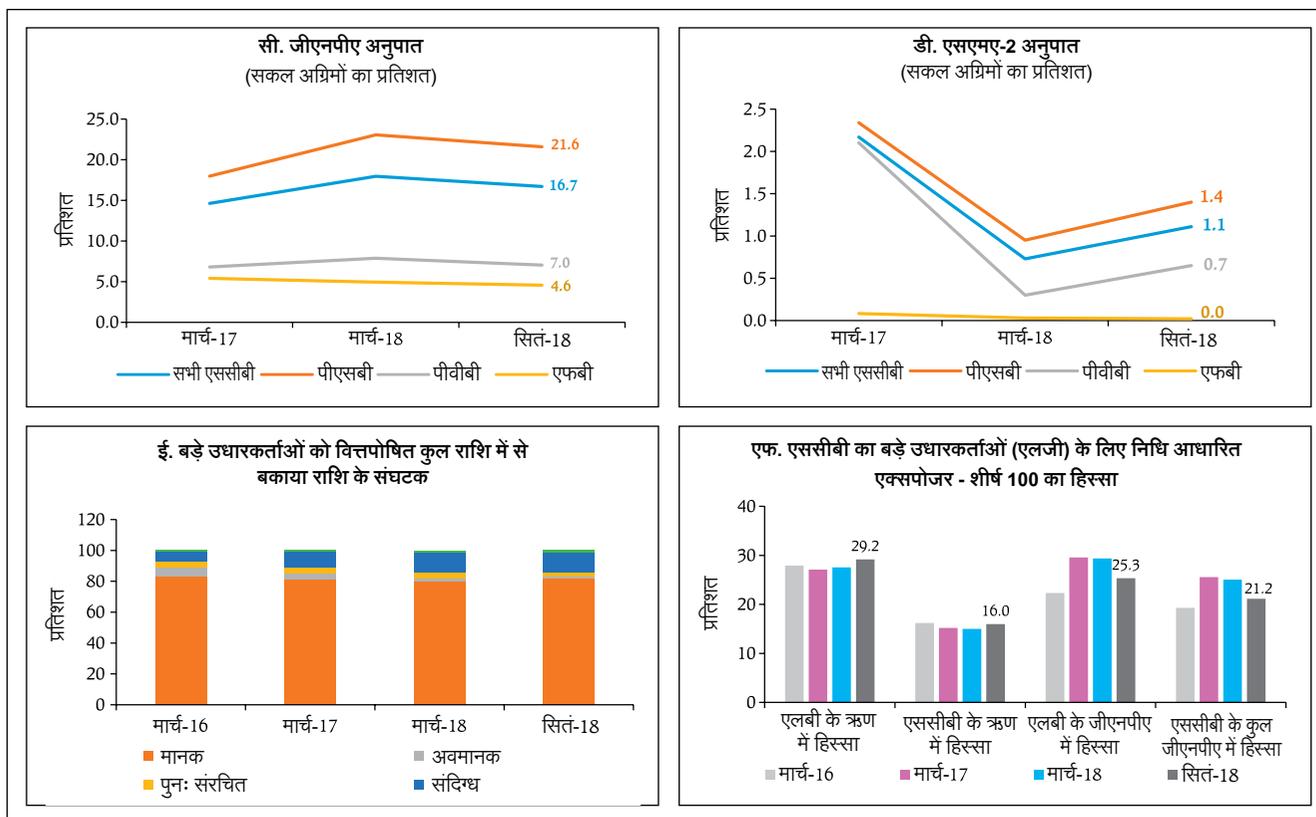


स्रोत : भा. रि. बें. पर्यवेक्षी विवरणियाँ

¹¹ उधारकर्ताओं का सकल निधि आधारित और गैर निधि आधारित एक्सपोजर ₹ 50 मिलियन और उससे अधिक है, बड़े उधारकर्ता के रूप में परिभाषित किया गया है। यह विश्लेषण एससीबी के वैश्विक परिचालन पर आधारित है।

¹² भा. रि. बें. की दिनांक 12 फरवरी 2018 की अधिसूचना के अनुसार उधारकर्ताओं को चाहिए कि वह ऋण चुकौती में चूक होते ही तत्काल उधार खाते के आरंभिक दबाव का वर्गीकरण करें और उनके लिए वे निम्नांकित श्रेणियों के अनुसार दबाव ग्रस्त आस्तियों को एसएमए के रूप में वर्गीकृत करें
 एसएमए-0 : मूलधन अथवा ब्याज का भुगतान अथवा कोई अन्य राशि जो 30 दिन के भीतर पूर्णतः या अंशतः अतिरेक हो;
 एसएमए-1 : मूलधन अथवा ब्याज का भुगतान अथवा कोई अन्य राशि जो 31-60 दिन के भीतर पूर्णतः या अंशतः अतिरेक हो;
 एसएमए-2 : मूलधन अथवा ब्याज का भुगतान अथवा कोई अन्य राशि जो 61-90 दिन के भीतर पूर्णतः या अंशतः अतिरेक हो।

चार्ट 2.4: बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा आस्ति गुणवत्ता संकेतक (जारी...)



स्रोत : भा. रि. बैं. पर्यवेक्षी विवरणियाँ

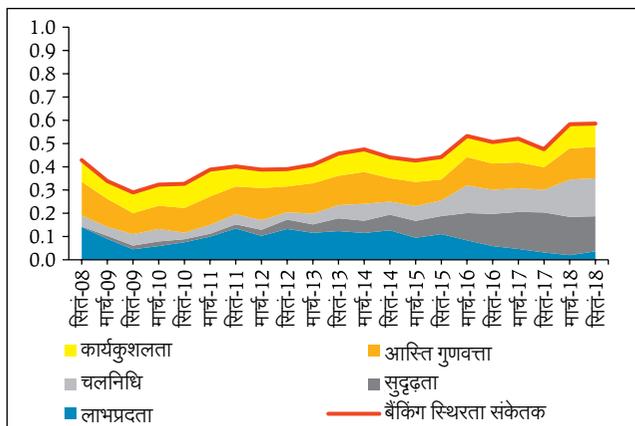
2018 के बीच एसएमए-2 पोर्टफोलियो में 58.6 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि हुई क्योंकि मार्च 2018 की स्थिति के अनुसार एसएमए-2 पोर्टफोलियो में काफी गिरावट आई जिसका कारण था वित्तीय वर्ष 2017-18 की अंतिम तिमाही के दौरान एनपीए की गिरावट में बढ़ोत्तरी।

जोखिम

बैंकिंग स्थिरता संकेतक

2.15 बैंकिंग स्थिरता संकेतक (बीएसआई) दर्शाता है कि बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ है जबकि लाभप्रदता में गिरावट जारी है (चार्ट 2.5 और 2.6)।

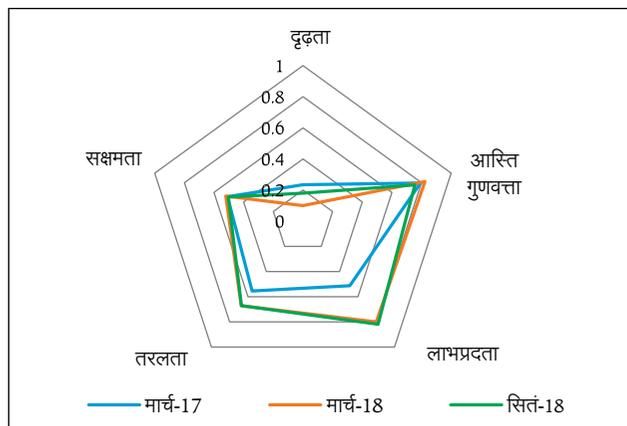
चार्ट 2.5: बैंकिंग स्थिरता संकेतक



नोट : संकेतक मान में वृद्धि कम स्थिरता दर्शाता है। प्रत्येक आयाम की चौड़ाई जोखिम में उनके योगदान को दर्शाती है।

स्रोत : भा. रि. बैं. पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ आंकलन

चार्ट 2.6: बैंकिंग स्थिरता मानचित्र



नोट : केंद्र से दूरी जोखिम में वृद्धि को दर्शाती है।

स्रोत : भा. रि. बैं. पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ आंकलन

समुत्थानशक्ति – दबाव परीक्षण

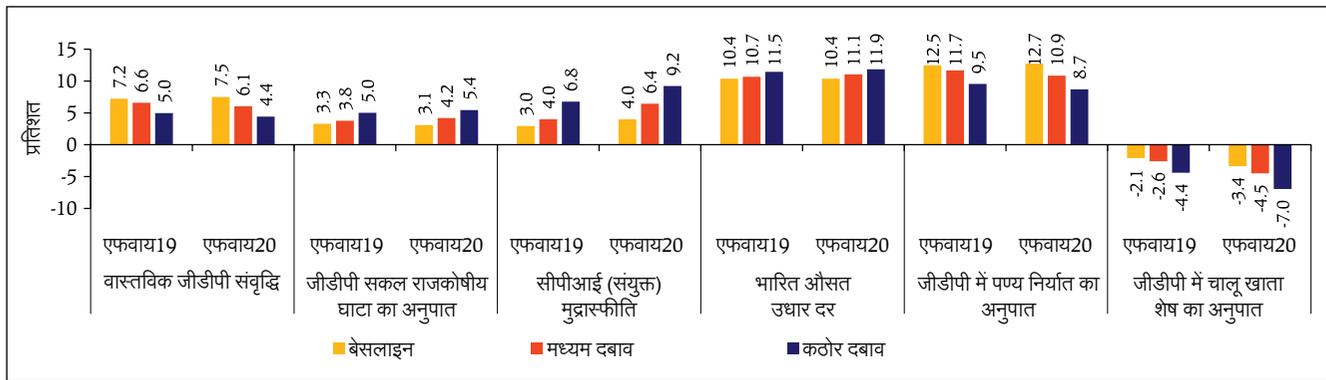
समष्टि दबाव परीक्षण – ऋण जोखिम¹³

2.16 ऋण जोखिम के लिए समष्टि दबाव परीक्षण के माध्यम से, समष्टि-आर्थिक आघातों के प्रति भारतीय बैंकिंग प्रणाली के लचीलेपन की जांच की गई। बेसलाइन और दो (मध्यम और तीव्र) प्रतिकूल समष्टि-आर्थिक जोखिम परिदृश्यों में ये परीक्षण किए गए (चार्ट 2.7)। बेसलाइन परिदृश्य भविष्य में विशिष्ट दरों की परिकल्पना करता है¹⁴। अलग से प्रत्येक समष्टि-आर्थिक चर के विगत मूल्यों में मानक विचलन के आधार पर प्रतिकूल परिदृश्य तक पहुंच गया; अर्थात् मध्यम जोखिम के लिए संबंधित

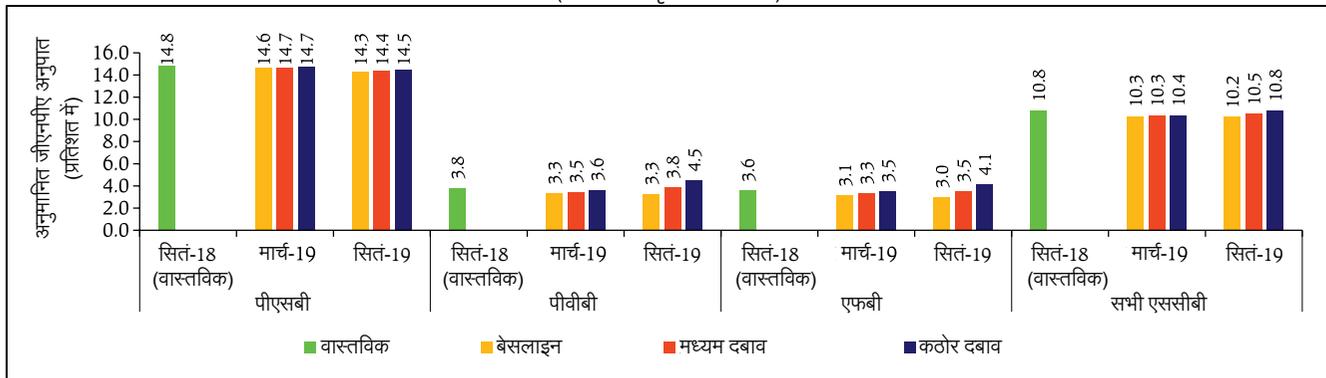
चरों के 1 मानक विचलन (एसडी) तक और गंभीर जोखिम (विगत 10 वर्ष का डाटा) के लिए 1.25 से 2 एसडी¹⁵। दबाव परीक्षण की अवधि एक वर्ष है।

2.17 बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत, सभी एससीबी का जीएनपीए अनुपात सितंबर 2018 के 10.8 प्रतिशत के मुकाबले घटकर मार्च 2019 में 10.3 प्रतिशत रह सकता है (चार्ट 2.8)। बैंक समूहों के बीच, बेस लाइन परिदृश्य के अंतर्गत पीएसबी का जीएनपीए अनुपात सितंबर 2018 के 14.8 प्रतिशत के मुकाबले घटकर मार्च 2019 में 14.6 प्रतिशत रह सकता है, जबकि पीवीबी का जीएनपीए अनुपात 3.8 प्रतिशत से घटकर

चार्ट 2.7: समष्टि-आर्थिक परिदृश्य परिकल्पनाएं¹⁶



चार्ट 2.8 एससीबी के जीएनपीए अनुपात का अनुमान (विभिन्न परिदृश्यों के अंतर्गत)



नोट : प्रणालीगत जीएनपीए का अनुमान तीन अलग-अलग लेकिन परस्पर पूरक अर्थमितिय माडलों; मल्टी वेरिएट रियेशन, वेक्टर आटो रियेशन और क्वांटाईल रियेशन (जो सामान्यतर जोखिम से निपट सकता है और समष्टि-आर्थिक आघातों के अरेखीय प्रभावों को ध्यान में लेता है) का उपयोग कर लगाया गया है। इन तीनों माडलों का औसत जीएनपीए अनुपात चार्ट में दिया गया है। तथापि, बैंक समूहों के मामले में दो माडल; मल्टी वेरिएट रियेशन और वीएआर का प्रयोग किया गया है।

स्रोत : भा. रि. बैं. पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ आंकलन।

¹³ विस्तृत विवरण अनुबंध 2 में दिया गया है।

¹⁴ जीडीपी संवृद्धि, जीडीपी अनुपात का राजकोषीय घाटा, सीपीआई-संयुक्त मुद्रास्फीति, भारत औसत उधार दर, जीडीपी में निर्यात का अनुपात और जीडीपी में चालू खाता शेष का अनुपात।

¹⁵ दोनों परिदृश्यों के लिए प्रत्येक तिमाही में 0.25 एसडी से सतत बढ़ोत्तरी।

¹⁶ ये दबाव परिदृश्य काल्पनिक और गंभीर रूप से प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों में कठोर और रूढ़िवादी मूल्यांकन हैं। अतएव इन परिदृश्यों को पूर्वानुमान या अपेक्षित परिणाम के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। वित्तीय वर्ष 2018-19 (एफवाई 19) के लिए, अंतिम दो तिमाहियों की संख्या दी गई है। वित्तीय वर्ष 2019-20 (एफवाई 20) के लिए, पहली दो तिमाहियों की संख्या दी गई है।

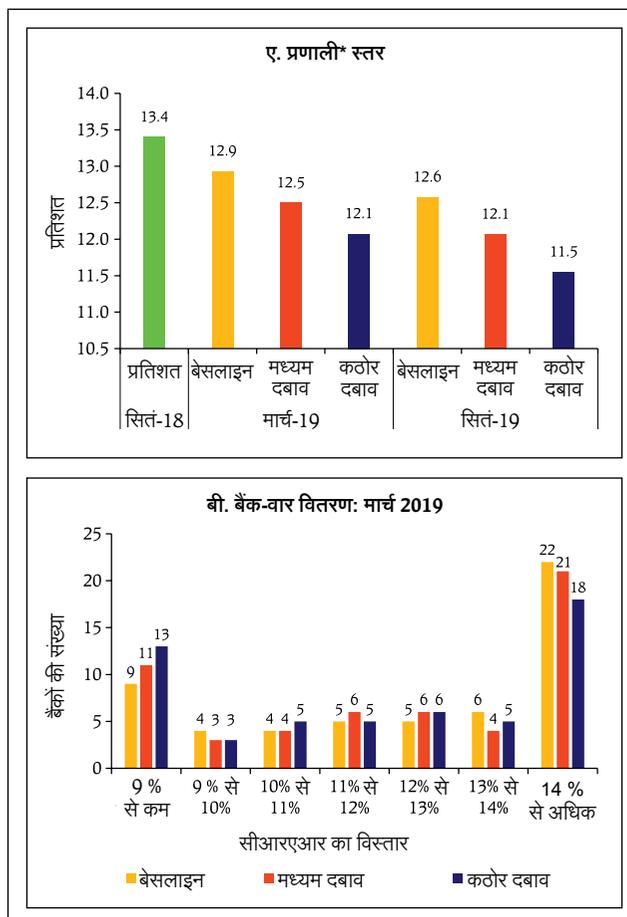
मार्च 2019 में 3.3 प्रतिशत तक रह सकता है। एफबी का जीएनपीए अनुपात बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत 3.6 प्रतिशत से घटकर मार्च 2019 में 3.1 प्रतिशत तक रह सकता है।

2.18 कल्पित बेसलाइन समष्टि परिदृश्य में, प्रणाली स्तर पर सीआरएआर के मार्च 2019 में कम होकर 12.9 प्रतिशत रहने का पूर्वानुमान है। कठोर दबावपूर्ण परिदृश्य में सीआरएआर के और अधिक घटने का पूर्वानुमान है (चार्ट 2.9ए)।

2.19 सरकार की आगे की किसी योजनाबद्ध पुनर्पूजीकरण पर विचार किए बिना त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई फ्रेमवर्क के अंतर्गत आने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीसीए पीएसबी) में से आठ के सीआरएआर 9 प्रतिशत के न्यूनतम विनियामकीय स्तर के नीचे रह सकते हैं। इनके साथ-साथ बेसलाइन परिदृश्य में कुल 9 बैंकों के सीआरएआर 9 प्रतिशत के नीचे रह सकते हैं। यद्यपि, यदि समष्टि-आर्थिक स्थितियाँ बिगड़ती हैं तो कठोर दबावपूर्ण परिदृश्य में ग्यारह में से दस पीसीए पीएसबी के सीआरएआर 9 प्रतिशत के नीचे दर्ज हो सकते हैं। इन बैंकों को मिलाकर, 13 बैंकों के सीआरएआर 9 प्रतिशत के नीचे हो सकते हैं (चार्ट 2.9बी)।

2.20 बेसलाइन परिदृश्य में, सीईटी 1 पूंजी अनुपात सितंबर 2018 के 10.4 प्रतिशत से घटकर मार्च 2019 में 10.0 प्रतिशत हो सकते हैं। मार्च 2019 में पाँच बैंकों, सभी पीसीए पीएसबी के सामान्य इक्विटी सीईटी 1 पूंजी अनुपात 5.5 प्रतिशत के न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षा स्तर के नीचे हो सकते हैं। मार्च 2019 में, कठोर दबावपूर्ण परिदृश्य में, प्रणाली स्तर सीईटी 1 पूंजी अनुपात घटकर 9.3 प्रतिशत हो सकते हैं। मार्च 2019 में, पीसीए पीएसबी के छः बैंकों तथा 1 गैर पीसीए पीएसबी सहित 7

चार्ट 2.9: सीआरएआर का पूर्वानुमान



* 55 चुनिंदा बैंकों की एक प्रणाली के लिए।

नोट: आरक्षित पूंजी में 25 प्रतिशत के न्यूनतम लाभ अंतरण की संरक्षी परिकल्पना के तहत पूंजी पूर्वानुमान किया गया है। हितधारकों द्वारा पूंजीकरण को गणना में नहीं लिया गया है।

स्रोत : रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना।

अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के सीटीई 1 अनुपात 5.5 प्रतिशत के नीचे हो सकते हैं (चार्ट 2.10)।

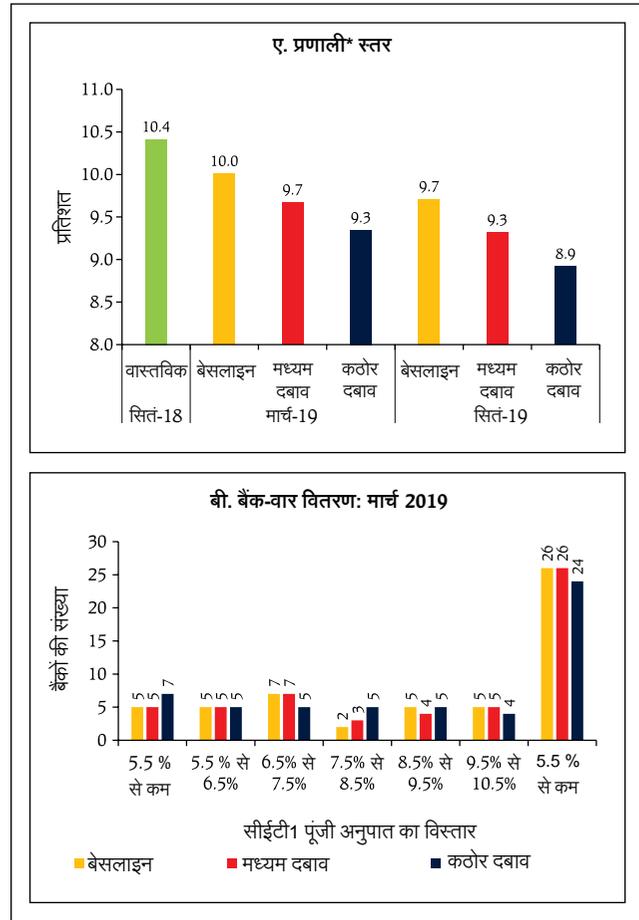
संवेदनशीलता विश्लेषण: बैंक स्तरीय¹⁷

2.21 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की दुर्बलता और समुत्थानशक्ति के निर्धारण हेतु विभिन्न परिदृश्यों में¹⁸ सितंबर 2018 के आंकड़ों पर आधारित कई एक-घटकीय संवेदनशीलता दबाव परीक्षण¹⁹ किया गया। ऋण, ब्याज दर और तरलता जोखिम के संबंध में उनके समुत्थानशक्ति का अध्ययन अधोमुखी (टॉप-डाउन)²⁰ संवेदनशीलता विश्लेषण द्वारा किया गया।

ऋण जोखिम

2.22 2 मानक विचलन²¹ (2एसडी) के कठोर आघात से (अर्थात्, यदि 54 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का जीएनपीए अनुपात 10.9²² प्रतिशत से बढ़कर 14.9 प्रतिशत होता है तो) प्रणाली-स्तर पर सीआरएआर 13.4 प्रतिशत से घटकर 11.1 प्रतिशत हो जाएगा और टीयर-1 सीआरएआर 11.2 प्रतिशत से घटकर 9 प्रतिशत हो जाएगा। इस तरह प्रणाली-स्तर पर पूंजी में लगभग 18.5 प्रतिशत का हास होगा। प्रति दबाव परीक्षण के परिणाम यह दर्शाते हैं कि प्रणाली-स्तर पर सीआरएआर को कम कर 9 प्रतिशत तक लाने में 4.15 मानक विचलन के आघात की आवश्यकता है। बैंक-स्तर पर दबाव परीक्षण यह दर्शाता है कि जीएनपीए अनुपात में 2 मानक विचलन आघात बढ़ाने पर 18 बैंक²³ अपेक्षित सीआरएआर बनाए रखने में विफल हो सकते हैं (चार्ट 2.11)। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों में इनकी हिस्सेदारी 31.7 प्रतिशत है। इस तरह के आघात की स्थिति

चार्ट 2.10: सीईटी 1 पूंजी अनुपात का पूर्वानुमान



* 55 चुनिंदा बैंकों की एक प्रणाली के लिए
 नोट: आरक्षित पूंजी में 25 प्रतिशत के न्यूनतम लाभ अंतरण की संरक्षी परिकल्पना के तहत पूंजी पूर्वानुमान किया गया है। हितधारकों द्वारा पूंजीकरण को गणना में नहीं लिया गया है।
 स्रोत : रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना।

¹⁷ संवेदनशीलता विश्लेषण ऋण जोखिम के लिए समष्टि दबाव परीक्षणों के अतिरिक्त किया गया। पहले वाले में, आस्ति गुणवत्ता (जीएनपीए) पर प्रत्यक्ष आघात दिए गए थे, बाद वाले में आघात प्रतिकूल समष्टि-आर्थिक स्थितियों के रूप में थे। जहां समष्टि दबाव परीक्षण ऋण जोखिम पर केंद्रित था, वहीं संवेदनशीलता विश्लेषण में ऋण, ब्याज दर और चलनिधि जोखिम शामिल थे।

¹⁸ दबाव परीक्षणों के विवरण के लिए, कृपया अनुबंध देखें।

¹⁹ एक-घटकीय संवेदनशीलता दबाव परीक्षण 54 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के नमूनों के लिए किए गए बैंकिंग क्षेत्र के कुल आस्तियों में इनकी भागीदारी 99 प्रतिशत है।

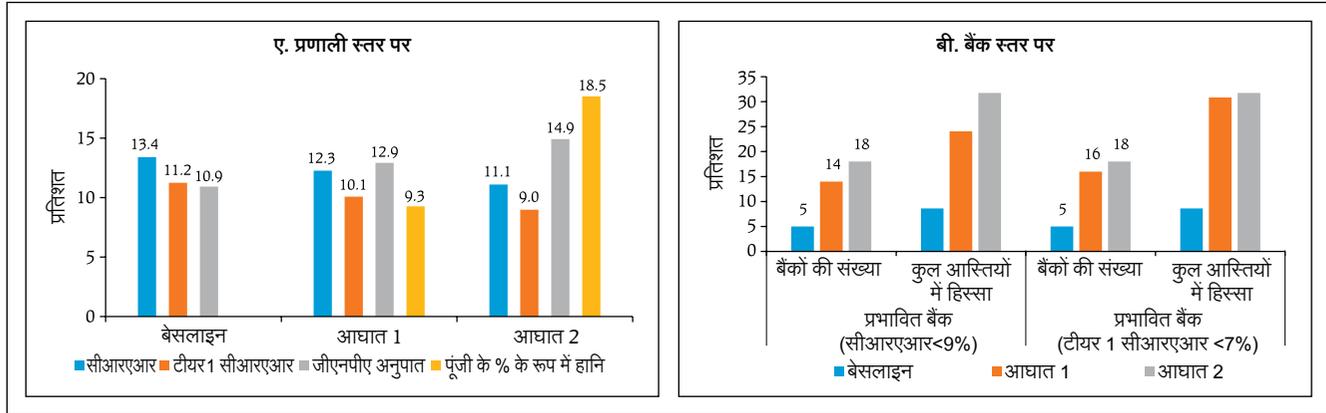
²⁰ सभी बैंकों पर किए गए दबाव परीक्षण प्रयोग के प्रभाव के व्यापक मूल्यांकन हेतु आरबीआई द्वारा विशिष्ट परिदृश्य व बैंक-वार सकल आंकड़ों पर आधारित अधोमुखी (टॉप-डाउन) दबाव परीक्षण किया गया।

²¹ सन 2003 से तिमाही आंकड़ों का उपयोग करके जीएनपीए अनुपात के मानक विचलन का अनुमान लगाया गया है।

²² 54 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के एक नमूने के लिए

²³ आघात लगाने से पहले इन बैंकों में से 5 बैंकों के सीआरएआर 9 प्रतिशत से कम थे।

चार्ट 2.11: ऋण जोखिम - आघात और प्रभाव

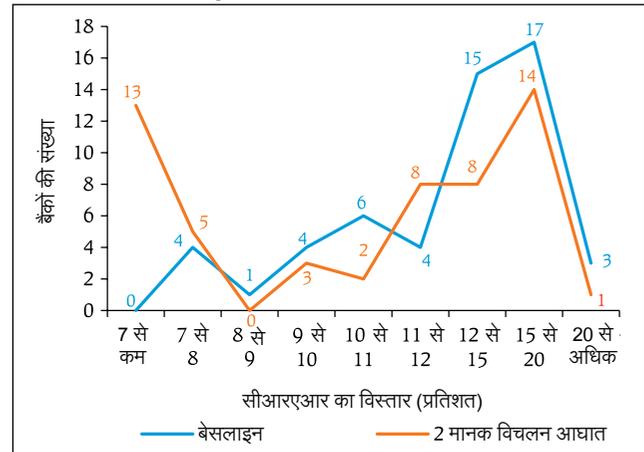


आघात 1: जीएनपीए अनुपात पर 1 मानक विचलन का आघात
 आघात 2: जीएनपीए अनुपात पर 2 मानक विचलन का आघात
 नोट: 54 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की प्रणाली।
 स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना।

में सार्वजनिक क्षेत्र के 21 में से 16 बैंकों के सीआरएआर 9 प्रतिशत के नीचे जाने की संभावना के साथ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अधिक प्रभावित होते हुए पाए गए।

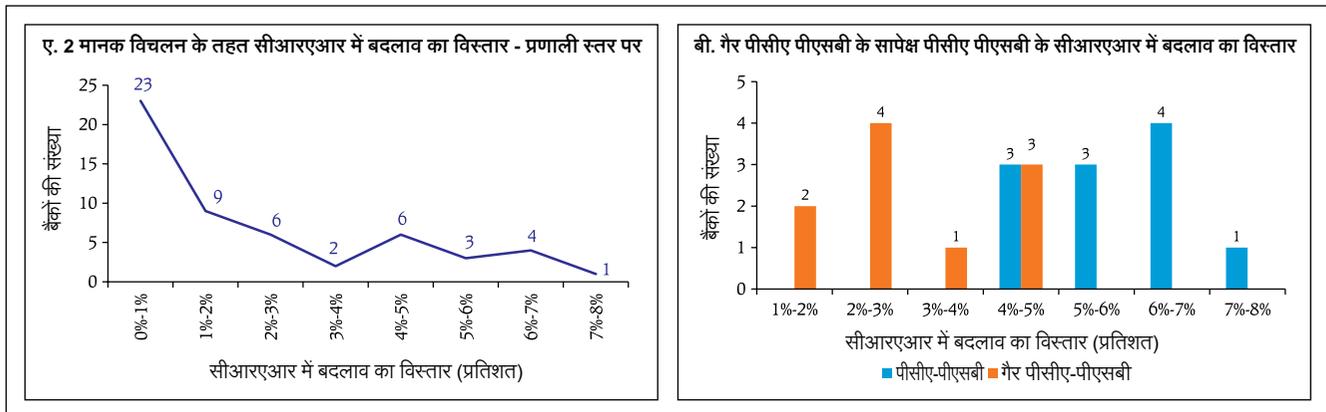
2.23 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के सीआरएआर का वितरण यह दर्शाता है कि जीएनपीए अनुपात पर 2 मानक विचलन के आघात से कम से कम 18 बैंकों, अधिकतर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के सीआरएआर 9 प्रतिशत के नीचे आ जाएंगे। (चार्ट 1.12)। 2 मानक विचलन के आघात से निजी क्षेत्र के बैंकों और और विदेशी बैंकों के सीआरएआर में 3.1 प्रतिशत से कम का बदलाव दिखता है जबकि वितरण के दाहिने भाग पर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का वर्चस्व है (चार्ट 2.13ए)। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में, गैर पीसीए बैंकों में मुकाबले पीसीए बैंकों में बड़ा बदलाव दिखता है, जो कि उनके तुलनपत्र में अंतर्निहित दबावग्रस्त आस्तियों की ओर इंगित करता है जिसके कारण वे आसानी से आघात के चपेट में आ सकते हैं (चार्ट 2.13बी)।

चार्ट 2.12: बैंकों का सीआरएआर-वार वितरण (जीएनपीए अनुपात पर 2 मानक विचलन आघात के तहत)



नोट: 54 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की प्रणाली।
 स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना।

चार्ट 2.13: सीआरएआर में बदलाव का विस्तार (जीएनपीए पर 2 मानक विचलन आघात के तहत)



नोट: 54 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की प्रणाली।
 स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना।

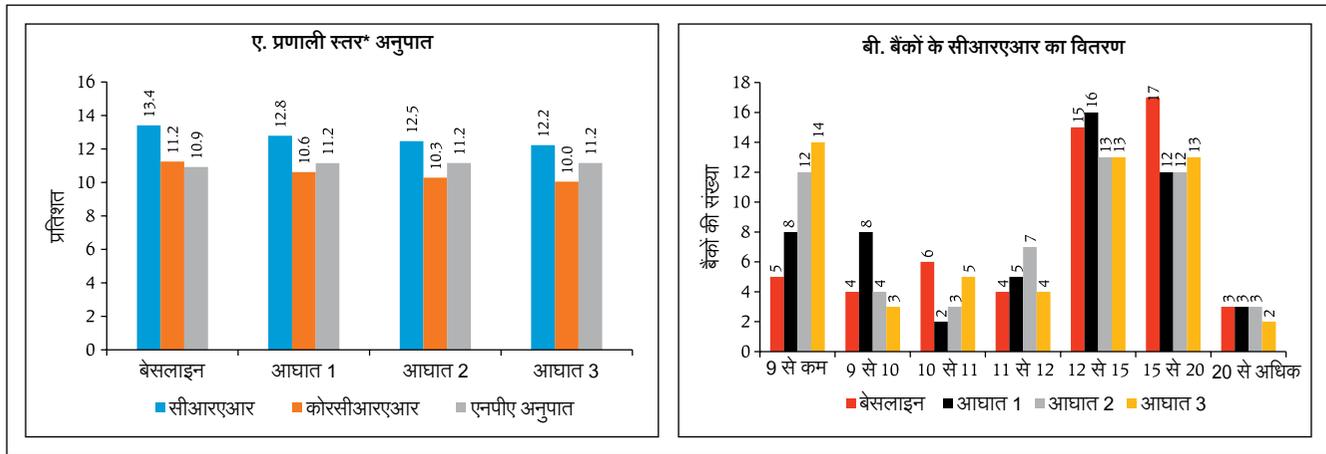
ऋण संकेंद्रीकरण जोखिम

2.24 शीर्ष व्यक्तिगत उधारकर्ताओं को उनके दबावग्रस्त आस्तियों के अनुसार ध्यान में रखकर बैंक के ऋण संकेंद्रीकरण पर किया गया दबाव परीक्षण यह दर्शाता है कि शीर्ष तीन उधारकर्ताओं द्वारा संशोधित भुगतान वायदों²⁴ में चूक करने की चरम स्थिति का 14 बैंकों पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा। अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की कुल आस्तियों में इन बैंकों की 26.6 प्रतिशत हिस्सेदारी है। शीर्ष 1, 2 और 3 दबावग्रस्त उधारकर्ताओं द्वारा भुगतान में चूक करने के इस कल्पित परिदृश्य में प्रणाली स्तर

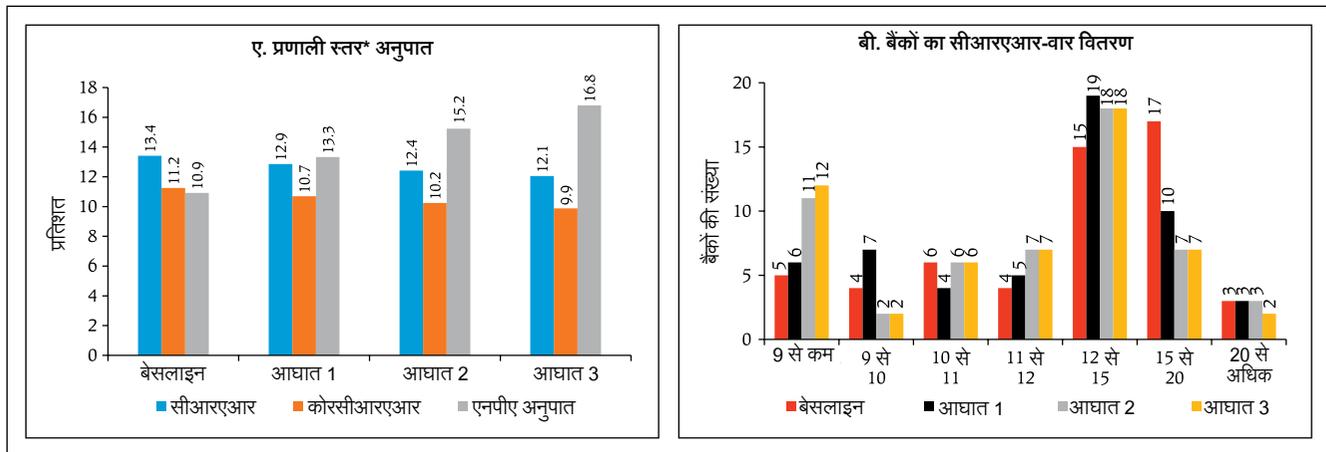
पर सीआरएआर क्रमशः 62, 94 और 118 आधार अंकों से प्रभावित होंगे (चार्ट 2.14)।

2.25 शीर्ष व्यक्तिगत उधारकर्ताओं को उनके एक्सपोजर के अनुसार ध्यान में रखकर बैंक के ऋण संकेंद्रीकरण पर किया गया दबाव परीक्षण यह दर्शाता है कि शीर्ष तीन उधारकर्ताओं द्वारा भुगतान वायदों²⁵ में चूक करने की चरम स्थिति का बारह बैंकों पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा। अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की कुल आस्तियों में इन बैंकों की 21 प्रतिशत हिस्सेदारी है (चार्ट 2.15)। शीर्ष सभी 3 व्यक्तिगत उधारकर्ताओं द्वारा चूक

चार्ट 2.14: ऋण संकेंद्रीकरण जोखिम: व्यक्तिगत उधारकर्ता - दबावग्रस्त अग्रिम



चार्ट 2.15: ऋण संकेंद्रीकरण जोखिम: व्यक्तिगत उधारकर्ता - एक्सपोजर



नोट : 54 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की एक प्रणाली के लिए
 आघात 1: शीर्षस्थ दबावग्रस्त व्यक्तिगत उधारकर्ता अपने भुगतान वायदे में चूक करता है
 आघात 2: शीर्ष 2 दबावग्रस्त व्यक्तिगत उधारकर्ता अपने भुगतान वायदे में चूक करते हैं
 आघात 3: शीर्ष 3 दबावग्रस्त व्यक्तिगत उधारकर्ता अपने भुगतान वायदा में चूक करते हैं
 स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना।

²⁴ ऐसे उधारकर्ताओं द्वारा संशोधित भुगतान वायदा से चूक करने की स्थिति में, यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता हानि की श्रेणी में आ गया है। ब्योरे के लिए कृपया अनुबंध देखें।

²⁵ ऐसे उधारकर्ताओं द्वारा भुगतान वायदों से चूक करने की स्थिति में, यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता अवमानक की श्रेणी में आ गया है। ब्योरे के लिए कृपया अनुबंध देखें।

सारणी 2.1: ऋण संकेंद्रीकरण जोखिम: समूह उधारकर्ता – एक्सपोजर

आघात	सिस्टम के स्तर पर*				बैंक के स्तर पर	
	सीआरएआर	कोर सीआरएआर	एनपीए औसत	पूँजी में % कमी	प्रभावित बैंक (सीआरएआर <9 प्रतिशत)	
आधारांक (आघात से पहले)	13.4	11.2	10.9	---	बैंकों की संख्या	एससीबी के कुल आस्तिक का हिस्सा (प्रतिशत में)
आघात 1	12.5	10.3	15.0	7.6	6	10.3
आघात 2	11.7	9.5	18.3	13.6	11	18.3
आघात 3	11.1	8.9	21.1	18.8	14	23.2

* सिस्टम में कुल 54 एससीबी को लिया गया है।

आघात 1: सर्वोच्च समूह उधारकर्ता अपनी भुगतान प्रतिबद्धता को पूरा करने में विफल रहे।

आघात 2: सर्वोच्च 2 समूह उधारकर्ता अपनी भुगतान प्रतिबद्धता को पूरा करने में विफल रहे।

आघात 3: सर्वोच्च 3 समूह उधारकर्ता अपनी भुगतान प्रतिबद्धता को पूरा करने में विफल रहे।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और स्टाफ परिकलन।

करने के इस कल्पित परिदृश्य में प्रणाली स्तर पर सीआरएआर 135 आधार अंकों से प्रभावित होंगे।

2.26 बैंकों को क्रेडिट एक्सपोजर संकेन्द्रण में शीर्षस्थ समूह उधारकर्ताओं की जानकारी के आधार पर विभिन्न परिदृश्यों का प्रयोग करते हुए किए गए दबाव परीक्षण से प्रकट होता है कि शीर्षस्थ समूह उधारकर्ताओं और शीर्षस्थ उधारकर्ताओं के दो समूहों द्वारा चूक करने के कल्पित परिदृश्य के अंतर्गत प्रणाली स्तर की पूँजी में क्रमशः 7.4 प्रतिशत और 13.6 प्रतिशत के आसपास हानियां हो सकती हैं।²⁶ यदि शीर्षस्थ तीन समूह उधारकर्ता अपनी भुगतान वचनबद्धताओं को पूरा करने में विफल हो जाएं तो तकरीबन 14 बैंक अपने-अपने सीआरएआर स्तर को 9 प्रतिशत पर कायम रखने में सक्षम नहीं रहेंगे (तालिका 2.1)।

क्षेत्रगत ऋण-जोखिम

2.27 कतिपय उप-क्षेत्रों में अपने एक्सपोजरों के कारण अलग-अलग बैंकों की कमजोरी का आकलन करने के लिए

संवेदनशीलता विश्लेषण किया गया। जीएनपीए अनुपातों के अलग-अलग ऐतिहासिक मानक विचलन के आधार पर उप-क्षेत्र से संबद्ध आघातों पर विचार किया गया, ताकि कमजोर उपक्षेत्रों में बैंकों के एक्सपोजर के कारण क्रेडिट जोखिम का आकलन किया जा सके। कुछ उपक्षेत्रों के जीएनपीए अनुपात पर 1 एसडी और 2 एसडी आघात के कारण विभिन्न उप-क्षेत्रों में 54 बैंकों के जीएनपीए में तदनुसूची बढ़ोतरी को नीचे तालिका 2.2 में दिखाया गया है।

2.28 बढ़े हुए प्रावधानों और घटी हुई आय के कारण हुई हानियों को हिसाब में लेते हुए बैंकों की दबावग्रस्त सीआरएआर और जोखिम भारित आस्तियों की गणना की गई है। उपक्षेत्र संबंधी आघातों के तहत आने पर विफल (अर्थात् जिनकी सीआरएआर 9 प्रतिशत से नीचे चली गई है) होने वाले बैंकों की संख्या नीचे तालिका 2.3 में प्रस्तुत है।

सारणी 2.2: उप-क्षेत्रीय आघातों के कारण जीएनपीए में वृद्धि-सितंबर 2018

(प्रतिशत)

	खनन	खाद्य प्रसंस्करण	पेट्रोलियम	सीमेंट	धातु	आभूषण	निर्माण	परिवहन	पावर	दूरसंचार
1 एसडी आघात	24	20	34	36	41	23	28	26	31	37

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और स्टाफ परिकलन।

सारणी 2.3: उप-क्षेत्रीय आघातों को सहन करने में नाकाम रहने वाले बैंकों की संख्या

	खनन	खाद्य प्रसंस्करण	पेट्रोलियम	सीमेंट	धातु	आभूषण	निर्माण	परिवहन	पावर	दूरसंचार
1 एसडी आघात	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0
2 एसडी आघात	1	0	0	0	1	0	0	1	1	0

नोट: जिन 5 बैंकों का सीआरएआर आघात लगाने से पहले 9 प्रतिशत से कम है उन्हें उपरोक्त तालिका से बाहर रखा गया है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और स्टाफ परिकलन।

²⁶ ऐसे उधारकर्ताओं द्वारा भुगतान वचनबद्धताओं को पूरा करने में विफलता के मामले में उधारकर्ता को अवमानक वर्ग में रखने पर विचार किया जाता है। विवरण के लिए अनुलग्नक देखिए।

2.29 परिणामों से प्रकट होता है कि धातु खंड के लिए आघातों में 2 एसडी का प्रबल आघात प्रणालीगत सीआरएआर में 25 आधार अंकों की गिरावट लाएगा, जबकि पावर सेक्टर का एक्सपोजर प्रणालीगत स्तर की सीआरएआर में 19 आधार अंकों की गिरावट करेगा (तालिका 2.4)।

ब्याज दर जोखिम

2.30 बिक्री के लिए उपलब्ध पोर्टफोलियो के परिपक्वता संबंधी विवरण को देखने से प्रकट होता है कि निजी क्षेत्र के बैंकों के पोर्टफोलियो का लगभग 62 प्रतिशत संकेंद्रण “एक साल से कम” की शेष परिपक्वता वाले बकेट में है, सितंबर 2018 के अंत की स्थिति (चार्ट 2.16)। जबकि सरकारी क्षेत्र के निवेशों का उच्चतम हिस्सा (सरकारी क्षेत्र के बैंकों के एएफएस पोर्टफोलियो का लगभग 28.5 प्रतिशत) 5 साल से 10 साल की परिपक्वता अवधि का है और विदेशी बैंकों के कुल एएफएस पोर्टफोलियो का लगभग 42 प्रतिशत हिस्सा 1 साल से 3 साल की समय अवधि का है- सितंबर 2018 के अंत की स्थिति के अनुसार निजी बैंक परिपक्वता अवधि विवरण विद्यमान बाजार स्थितियों में मंदड़िया ब्याज दर दृष्टिकोण को दिखाता है जो उन्हें उच्चतर प्रति लाभ की तुलना में कम जोखिम चुनने को मजबूर करता है।

2.31 अल्पावधि परिपक्वता बकेट (एक वर्ष से कम) में किए गए समानुपात में सभी वर्गों के बैंकों के संबंध में तेज बढ़ोतरी रही, जो कि मार्च 2017 के अंत में ट्रेडिंग हेतु धारित (एचएफटी) पोर्टफोलियो के लिए 27 प्रतिशत थी, जून 2018 के अंत में अपने 64 प्रतिशत के सर्वोच्च स्तर से फिसलकर सितंबर

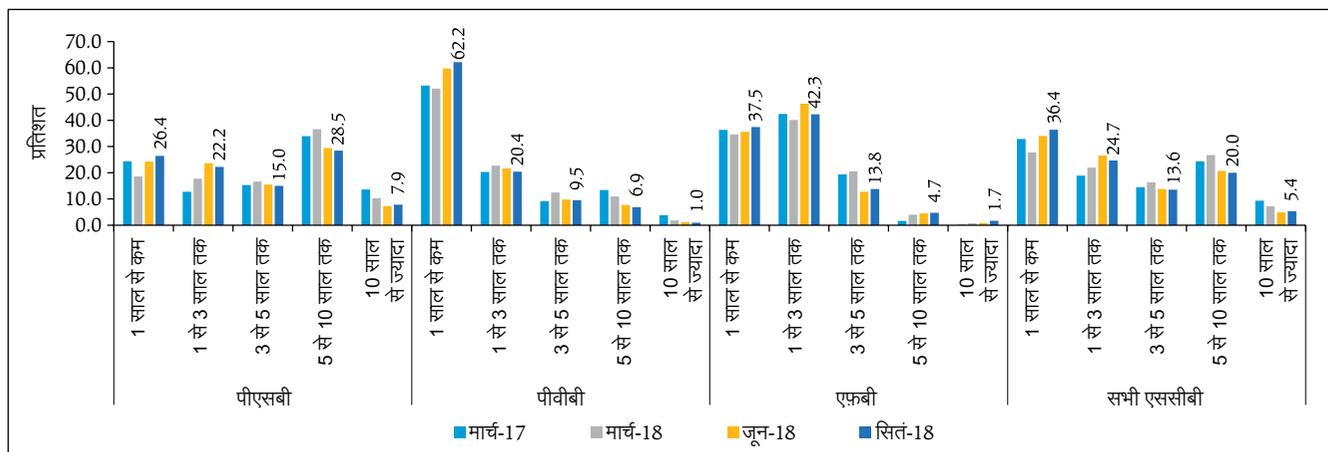
सारणी 2.4: प्रणालीगत सीआरएआर में (आधार अंकों) गिरावट (घटते क्रम में)

उप-क्षेत्र	1 एसडी आघात	2 एसडी आघात
धातु	14	25
पावर	10	19
परिवहन	4	7
निर्माण	2	4
खाद्य प्रसंस्करण	2	3
दूरसंचार	1	3
आभूषण	1	2
सीमेंट	1	2
पेट्रोलियम	1	1
खनन	1	1

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और स्टाफ परिकलन।

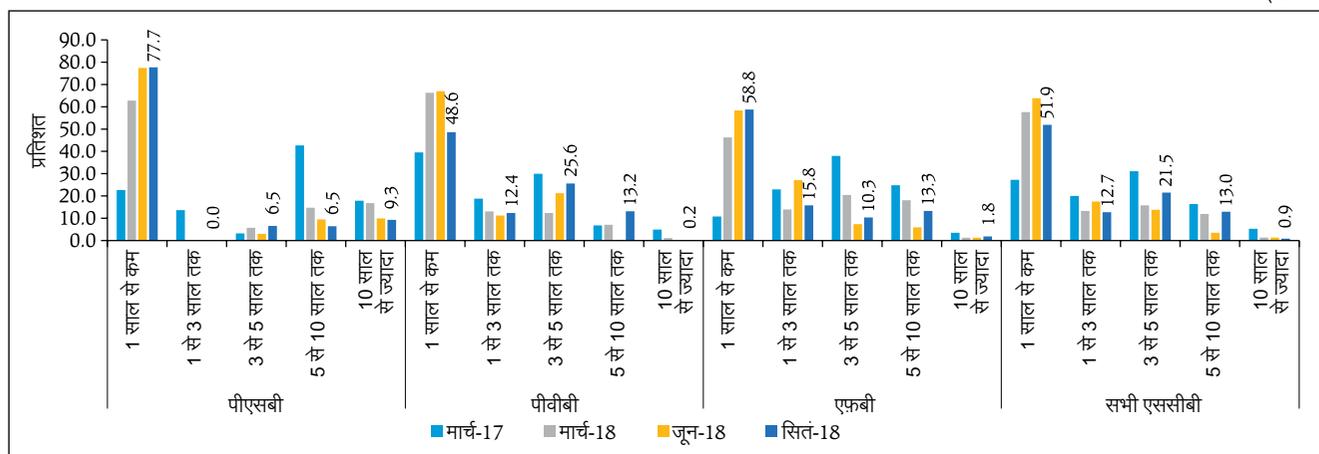
चार्ट: 2.16 एएफएस पोर्टफोलियो का अवधिवार वितरण

(प्रतिशत)



चार्ट 2.17: एचएफटी पोर्टफोलियो का अवधिवार वितरण

(प्रतिशत)



2018 के अंत में 52 प्रतिशत पर आ गई क्योंकि इस परिपक्वता बकेट में निजी क्षेत्र के बैंकों के निवेश समानुपात में गिरावट हुई। एचएफटी पोर्टफोलियो की न्यूनतम समयावधि और न्यूनतर अवधि के लिए निवेशों के सापेक्षतया उच्चतर समानुपातों का होना इसलिए संभव है कि ब्याज दर के लिए स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं होने के कारण बैंक कैरी-ट्रेड में लगे हुए हों, रेपो / सीबीएलओ से उधार लेने और न्यूनतर अवधि वाली मुद्रा बाजार लिखतों में निवेश करने में लगे हों। नमूने के तौर पर लिए गए बैंकों के एचएफटी फोलियो का संपूर्ण मूल्य इसी अवधि के दौरान रु 796 बिलियन से बढ़कर रु 1177 बिलियन हो गया।

2.32 एफएस और एचएफटी श्रेणियों (प्रत्यक्ष प्रभाव) के तहत निवेशों के प्रतिलाभ वक्र में 2.5 प्रतिशतता अंको का समांतर बढ़ोतरी शिफ्ट ऊपर की तरफ हुआ जो कि सिस्टम स्तर पर सीआरएआर को लगभग 92 आधार अंकों तक नीचे ले जाएगा (संख्या 2.5)। अलग-अलग स्तरों पर देखा जाए तो कुल आस्तियों के लगभग 17.4 प्रतिशत के लिए 10 बैंकों की आस्तियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और उनकी सीआरएआर तो

9 प्रतिशत से भी नीचे चली गई। प्रणाली के स्तर पर पूंजी की कुल हानी का आकलन लगभग 7.8 प्रतिशत रहा।

2.33 सितंबर 2018 के अंत में सरकारी क्षेत्र के बैंकों का पीवी01 मूल्य रु 2.8 बिलियन, निजी क्षेत्र के बैंकों का रु 0.8 बिलियन और विदेशी बैंकों के मामले में रु 0.4 बिलियन रहा। इस पीवी01 का अवधि-अनुसार वितरण संकेत देता है कि 7 वर्ष से 10 वर्ष के परिपक्वता बकेट में पीवी01 मूल्य उच्चतम रहा है। प्रतिलाभों दबाव बढ़ा तो बैंकिंग क्षेत्र की पहले से ही दबावग्रस्त लाभदेयता प्रतिकूल बाधित हो जाएगी।

इक्विटी कीमत जोखिम

2.34 इक्विटी कीमत जोखिम के तहत इक्विटी कीमतों में गिरावट से बैंक की पूंजी पर और लाभ पर पड़ने वाले आघात के प्रभाव का परीक्षण किया गया। इक्विटी कीमतों में दबावपूर्ण 55 प्रतिशत की गिरावट होने से पूरी प्रणाली की सीआरएआर में बेसलाइन से 57 आधार अंकों की गिरावट होगी, जबकि इसी परिदृश्य में 7 बैंकों की सीआरएआर 9 प्रतिशत की विनियामक

सारणी 2.5: ब्याज दर जोखिम- बैंक समूह- आघात और प्रभाव
(250 अंकों का आघात रखने पर आईएनआर प्रतिलाभ वक्र में ऊपर की तरफ समानांतर शिफ्ट)

(प्रतिशत)

	सरकारी क्षेत्र के बैंक		निजी क्षेत्र के बैंक		विदेशी बैंक		सभी एससीबी	
	एफएस	एचएफटी	एफएस	एचएफटी	एफएस	एचएफटी	एफएस	एचएफटी
संशोधित अवधि कुल निवेश में प्रतिशत	2.8	1.4	1.5	2.3	1.6	1.7	2.3	2.1
सीआरएआर (बीपीएस) में कटौती	39.8	2.8	37.0	3.7	90.9	9.1	42.3	3.4
	116		48		112		92	

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और स्टाफ परिकलन।

अपेक्षा से नीचे चली जाएगी (चार्ट संख्या 2.18)। पूंजी बाजारों में बैंकों के एक्सपोजरों के लिए विनियामक सीमाओं को देखते हुए समग्र प्रणाली हेतु इक्विटी कीमत में गिरावट का प्रभाव सीमित ही रहेगा और इसलिए इनके तुलनपत्रों पर पूंजी बाजार एक्सपोजरों का समानुपात भी विशिष्ट रूप से कम ही रहेगा।

चलनिधि जोखिम: जमाराशि की निकासियों का नकदी-स्टॉक पर प्रभाव

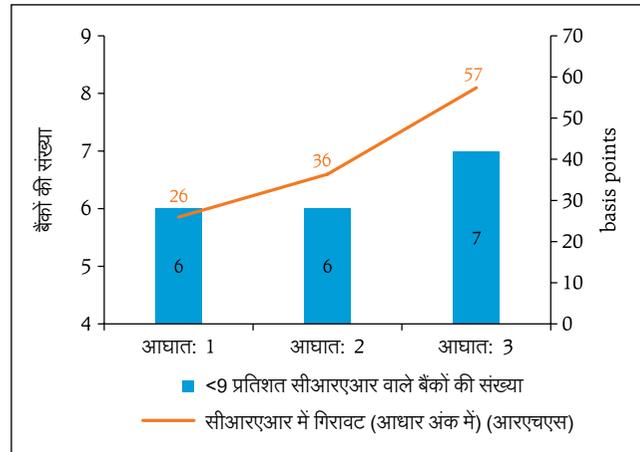
2.35 जलनिधि जोखिम विश्लेषण का लक्ष्य है जमाराशि की निकासियों और पहले से ही स्वीकृत / वचनबद्ध / गारंटीकृत क्रेडिट सुविधाओं के अप्रयुक्त हिस्से की बढ़ती हुई मांग के प्रभाव को ज्ञात करना। सामान्यतया अपनी उच्च कोटि की नगद आस्तियों (एचक्यूएलए) की सहायता से बैंक इस चलनिधि आघात को सहन करने की स्थिति में हो सकते हैं।²⁷ कल्पित स्थितियों में बीमा-रहित जमाराशियों²⁸ की निकासी बढ़ेगी और इसके साथ ही क्रेडिट की मांग बढ़ जाएगी जिससे स्वीकृत कार्यशील पूंजी सीमाओं के अप्रयुक्त भाग की निकासी बढ़ेगी और साथ ही साथ बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को दी गई क्रेडिट वचनबद्धताओं और गारंटियों का प्रयोग भी बढ़ जाएगा।

2.36 दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अपेक्षित एचक्यूएलए का प्रयोग करते हुए इस नमूने के 54 बैंकों में से 49 बैंक ऐसे हैं जो अपनी जमाराशियों में से लगभग 10 प्रतिशत की निकासी के साथ अपनी वचनबद्धता क्रेडिट सुविधाओं के 75 प्रतिशत उपभोग किए जाने की अचानक और अप्रत्याशित कल्पित परिस्थिति के आघात को सहन कर लेंगे (चार्ट 2.19)।

बैंकों के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो का दबाव परीक्षण: उपरिगामी दबाव परीक्षण

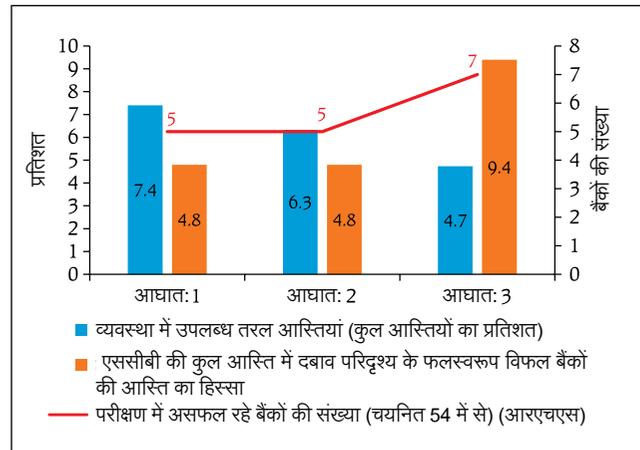
2.37 डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर उपरिगामी दबाव परीक्षणों की शृंखला (संवेदनशीलता विश्लेषण) का संचालन नमूने के चुनिंदा बैंकों के लिए किया गया²⁹ इसकी संदर्भ तारीख 30 सितंबर 2018 रखी गई। इस नमूने में शामिल बैंकों ने ब्याज और विदेशी विनिमय दरों पर अलग-अलग चार आघातों के परिणामों की जानकारी दी। ब्याज दरों पर आघात का दायरा 100 से

चार्ट 2.18: इक्विटी कीमत जोखिम*



* 54 चयनित एससीबी सिस्टम।
 नोट : आघात 1: इक्विटी कीमत में 25 प्रतिशत तक की गिरावट।
 आघात 2: इक्विटी कीमत में 35 प्रतिशत तक की गिरावट।
 आघात 3: इक्विटी कीमत में 55 प्रतिशत तक की गिरावट।
 स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और स्टाफ परिकलन।

चार्ट 2.19: चलनिधि जोखिम: आघात और नगदी स्टॉक पर प्रभाव



नोट 1. दबाव के समय (आघात लगाने पर) यदि बैंक अपनी तरल आस्तियों की सहायता से अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असफल रहता है तो उसे परीक्षण में 'विफल' बैंक माना गया (दबाव की स्थिति में तरल आस्तियों का स्टॉक नकारात्मक हो गया)।
 2. आघात: तरलता आघात में 75 प्रतिशत प्रतिबद्ध क्रेडिट लाइनों की मांग भी शामिल है (स्वीकृत कार्यशील पूंजी सीमाओं के अप्रयुक्त हिस्से और साथ ही अपने ग्राहकों के प्रति ऋण प्रतिबद्धताएं को भी शामिल किया गया है) और नीचे दिए गए बिना बीमित राशि के एक हिस्से की निकासी भी शामिल है:

आघात	आघात 1	आघात 2	आघात 3
गैर-बीमित जमा राशि में से प्रतिशत निकासी	10	12	15

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और स्टाफ परिकलन।

²⁷ भारत में 1 जनवरी 2015 से जलनिधि कवरेज अनुपात के कार्यान्वयन को देखते हुए दबाव परीक्षण हेतु जलनिधि आस्तियों की परिभाषा को संशोधित किया गया। एचक्यूएलए का आकलन अपेक्षित सीआरआर से अधिक नगदी रिजर्व, अतिरिक्त एसएलआर निवेशों और एनडीटीएल (एमएसएफ के तहत) के 2 प्रतिशत तक एसएलआर निवेशों और एनडीटीएल के 11 प्रतिशत तक अतिरिक्त एसएलआर निवेशों के रूप में किया गया (15 जून 2018 के डीबीआर.बीपी.बीसी. 114/21.04.098/2017-18, 28 नवंबर 2014 के डीबीआर.बीपी.बीसी. 52/21.04.098/2014-15 के परिपत्र के अनुसरण में)

²⁸ वर्तमान में कुल जमाराशियों में से लगभग 70 प्रतिशत जमाराशियाँ बीमाकृत नहीं हैं। (स्रोत : डीआईसीजीसी, भारतीय अर्थव्यवस्था पर संख्यिकी हैंडबुक)

²⁹ डेरिवेटिव पोर्टफोलियो के दबाव परीक्षण में नमूने के तौर पर 20 बैंक लिए गए। विवरण अनुलग्नक-2 में दिए गए हैं।

250 आधार अंकों के बीच था, जबकि विदेशी मुद्रा विनिमय दर के लिए 20 प्रतिशत मूल्यवृद्धि / मूल्यहास के आघात माने गए थे। दबाव परीक्षण एकल आघातों के लिए स्टैण्डअलोन आधार पर किए गए।

2.38 चार्ट 2.20 में बाजार भाव के प्रभाव को सीईटी 1 पूंजी के अनुपात के रूप में दर्शाया गया है - जैसा उसमें देखा जा सकता है की इन परिवर्तनों का प्रभाव अलग-अलग बैंकों के मामले में अधिकांशतः मंद हो जाता है। हालांकि, यह देखते हुए कि जोखिम को केवल हस्तांतरित किया जा सकता है, खत्म नहीं किया जा सकता, इस बात की संभावना है कि ऐसे जोखिम संभवतः कॉरपोरेट तुलन-पत्र में रह जाते हों। कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा एनबीएफसी और कंपनियों में भारतीय लेखांकन मानक (इंड एस) अंगीकार किए जाने के साथ ही, बैंकों के लिए यह कमोबेश आसान हो गया है कि वे अपने ग्राहकों की हेजिंग प्रोफाइल का पता लगा सकें और इसके द्वारा प्रतिपक्षकार एक्सपोजर का पुनः आकलन कर सकें। कॉरपोरेट हेजिंग प्रोफाइल की जो प्रकृति है उसका प्रभाव दबावग्रस्त स्थितियों में द्वितीयक बाजार चलनिधि पर भी होता है।

2.39 दबाव परीक्षण के परिणाम ने यह दर्शाया कि नमूने के तौर पर लिए गए बैंकों पर ब्याज दर आघातों का औसत निवल प्रभाव नगण्य रहा। इस परिदृश्य का परिणाम जिसमें भारतीय रुपए का अधिमूल्यन शामिल है, दर्शाता है कि इस आघात का प्रभाव जिसमें पिछले वर्ष वृद्धि हुई थी, उसके बाद सितंबर 2018 में इसका सामान्य होना जारी रहा। (चार्ट 2.21)

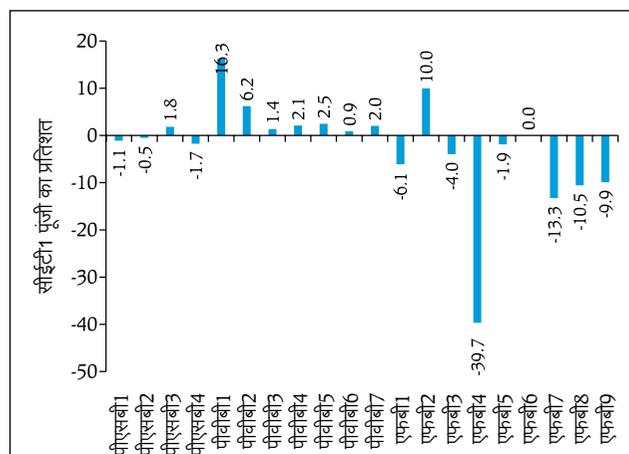
खंड II

अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक

कार्यनिष्पादन

2.40 प्रणालीगत स्तर³⁰ पर अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों का सीआरएआर मार्च 2018 एवं सितंबर 2018 के बीच 13.5 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रहा। हालांकि भिन्न-भिन्न स्तरों पर देखा जाए तो 5 बैंकों के सीआरएआर न्यूनतम अपेक्षित 9 प्रतिशत के स्तर के नीचे रहे। एसयूसीबी के सकल अग्रिमों के प्रतिशत के रूप में जीएनपीए 6.2 प्रतिशत से बढ़ाकर 8.2

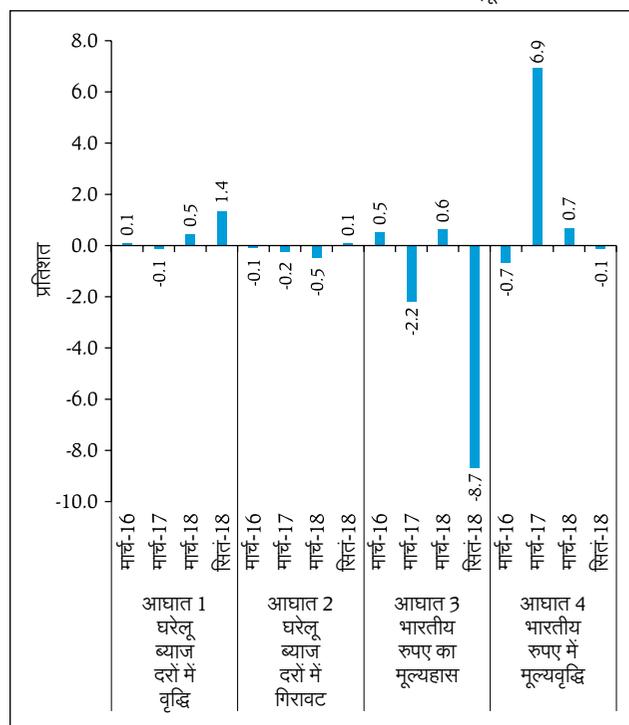
चार्ट 2.20: कुल डेरिवेटिव पोर्टफोलियो का एमटीएम – चुनिंदा बैंक – सितंबर 2018



नोट : पीएसबी: सरकारी क्षेत्र के बैंक, पीवीबी: निजी क्षेत्र के बैंक, एफबी: विदेशी बैंक
स्रोत : 20 बैंकों को नमूने के तौर पर लिया गया (डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर बॉटम-अप दबाव परीक्षण)

चार्ट 2.21: दबाव परीक्षण-चुनिंदा बैंकों के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर आघातों का प्रभाव (आघात देने पर निवल एमटीएम में बदलाव)

(पूंजी निधि का प्रतिशत)



नोट : आघात देने के कारण बेसलाइन के सापेक्ष निवल एमटीएम में बदलाव
स्रोत : 20 बैंकों को नमूने के तौर पर लिया गया (डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर बॉटम-अप दबाव परीक्षण)

³⁰ 54 अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों की प्रणाली।

प्रतिशत हो गया तथा इसी अवधि के दौरान उनका प्रावधान कवरेज अनुपात³¹ 61.4 प्रतिशत से घटकर 48.4 प्रतिशत हो गया। साथ ही आस्तियों के प्रतिफल (आरओए) में 0.6 प्रतिशत से 0.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई जबकि इसी अवधि के दौरान चलनिधि अनुपात³² 34.8 प्रतिशत से घटकर 34.1 प्रतिशत हो गया।

समुत्थानशक्ति – दबाव परीक्षण

ऋण जोखिम

2.41 एसयूसीबी के सीआरएआर के संबंध में ऋण जोखिम आघातों का प्रभाव चार अलग-अलग परिदृश्यों³³ के अंतर्गत देखा गया। परिणामों से यह प्रदर्शित हुआ कि सबसे सख्त आघात (परिदृश्य iv) जीएनपीए में दो एसडी/ विचलन की वृद्धि, जो हानि की श्रेणी में परिणत होती है, एसयूसीबी का प्रणालीगत सीआरएआर न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षा के स्तर से नीचे आ सकता है। हालांकि, अलग-अलग एसयूसीबी के संबंध में देखा जाए काफी संख्या (54 में से 30) में बैंक न्यूनतम सीआरएआर बरकरार नहीं रख पाएंगे।

चलनिधि जोखिम

2.42 चलनिधि जोखिम के संबंध में दबाव परीक्षण दो अलग-अलग परिदृश्यों के अंतर्गत किए गए – 1 से 28 दिवसीय समयावधि (टाइम बकेट) में नकदी बहिर्वाह में i) 50 प्रतिशत; एवं ii) 100 की वृद्धि संभावित थी। इसके आगे, यह माना गया कि दोनों परिदृश्यों के अंतर्गत नकदी अंतर्वाह में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। दबाव परीक्षण के परिणामों से संकेत मिलता है कि दबावग्रस्त परिदृश्य में एसयूसीबी पर भारी प्रभाव पड़ेगा। (54 बैंकों में से 22 बैंकों पर प्रथम परिदृश्य का तथा 40 बैंकों पर दूसरे परिदृश्य का)

खंड III

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां

2.43 30 सितंबर 2018 की स्थिति के अनुसार, भारतीय रिजर्व बैंक के पास 10,190 गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियां पंजीकृत

थीं, जिनमें से 108 जमा स्वीकार करने वाली (एनबीएफसी-डी) थीं। 276 प्रणालीगत दृष्टि से महत्वपूर्ण जमा स्वीकार नहीं करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी-एनडी-एसआई)³⁴ थीं। सभी एनबीएफसी-डी तथा एनबीएफसी-एनडी-एसआई, रिपोर्टिंग की अपेक्षाओं के साथ ही पूंजी पर्याप्तता अपेक्षाओं तथा प्रावधानीकरण मानदंडों जैसे विवेकपूर्ण विनियमों के अधीन हैं।

कार्यनिष्पादन

2.44 एनबीएफसी सेक्टर³⁵ के समग्र तुलन पत्र का आकार सितंबर 2017 के 22.2 ट्रिलियन की तुलना में सितंबर 2018 में 26 ट्रिलियन हो गया, इसमें 17.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। सितंबर 2018 में एनबीएफसी की शेयर पूंजी में 5.8% की बढ़ोतरी हुई जबकि उयाधारियों में 17.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। एनबीएफसी सेक्टर के ऋणों तथा अग्रिम में 16.3 प्रतिशत तथा निवेश में 14.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। (सारणी 2.6)

सारणी 2.6 : एनबीएफसी क्षेत्र का सकल तुलन पत्र : वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि (प्रतिशत)

	मार्च 2018	सितंबर 2018
1. शेयर पूंजी	8.3	5.8
2. आरक्षित निधि एवं बंशी	19.9	17.5
3. कुल उधार	19.1	17.2
4. वर्तमान देयताएँ एवं प्रावधान	15.4	24.5
कुल देयताएँ / आस्तियां	15.0	17.2
1. ऋण एवं अग्रिम	19.2	16.3
2. निवेश	9.1	14.1
3. अन्य	-5.9	27.5
आय / व्यय		
1. कुल आय	8.9	16.7
2. कुल व्यय	7.5	16.2
3. निवल लाभ	22.9	16.2

नोट : आंकड़े अनंतिम हैं।

स्रोत : भारिबै पर्यवेक्षी विवरणियाँ।

³¹ प्रावधान कवरेज अनुपात = (एनपीए हेतु धारित प्रावधान*100/जीएनपीए)।

³² चलनिधि अनुपात = (नकदी + बैंकों से प्राप्त + एसएलआर निवेश)*100/कुल आस्तियां)।

³³ चारों परिदृश्य इस प्रकार हैं: i) जीएनपीए में 1 एसडी आघात (अवमानक अग्रिमों में वर्गीकृत), ii) जीएनपीए में 2 एसडी आघात (अवमानक अग्रिमों में वर्गीकृत), iii) जीएनपीए में 1 एसडी आघात (हानि अग्रिमों में वर्गीकृत), और iv) जीएनपीए में 2 एसडी आघात (हानि अग्रिमों में वर्गीकृत)। एसडी का अनुमान 10 वर्षों के आंकड़ों का प्रयोग करते हुए लगाया गया। दबाव परीक्षणों के विवरण हेतु अनुबंध-2 देखिए।

³⁴ 15 मार्च 2018 को जारी दिशानिर्देशों के अनुसार, सभी सरकारी एनबीएफसी द्वारा आरबीआई को ऑनलाइन विवरणी प्रस्तुत की जानी है।

³⁵ सरकारी स्वामित्व वाली एनबीएफसी सहित एनबीएफसी डी तथा एनबीएफसी एनडी एसआई।

2.45 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के दौरान 22.09 प्रतिशत की तुलना में निवल लाभ में सितंबर 2018 छमाही के अंत में 16.2 प्रतिशत (वार्षिकीकृत) की वृद्धि हुई। आस्ति में प्रतिफल मार्च 2018 के दौरान 1.07 प्रतिशत की तुलना में सितंबर 2018 छमाही के अंत में 1.8 प्रतिशत (वार्षिकीकृत) था। (सारणी 2.6 एवं 2.7)

आस्ति गुणवत्ता और पूंजी पर्याप्तता

2.46 कुल अग्रिमों के प्रतिशत के रूप में एनबीएफसी क्षेत्र का जीएनपीए सितंबर 2018 में बढ़ाकर 6.1 प्रतिशत हो गया जो मार्च 2018 में 5.8 प्रतिशत था।

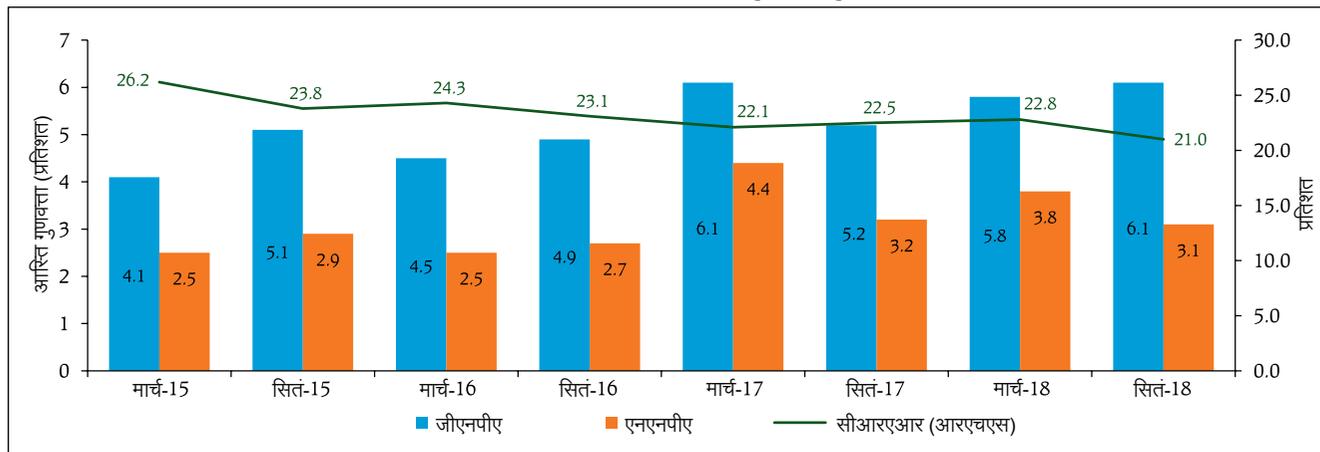
2.47 मौजूदा दिशानिर्देशों के अनुसार, एनबीएफसी से यह अपेक्षा है कि वे निर्धारित न्यूनतम पूंजी अपने पास रखें, जो टियर-1³⁶ तथा टियर-II पूंजी को समाहित करते हुए उनकी समग्र जोखिम भारित आस्तियों के 15 प्रतिशत से कम नहीं होनी चाहिए। एनबीएफसी का सीआरएआर सितंबर 2018 में घटकर 21.0 प्रतिशत हो गया जो मार्च 2018 में 22.8 प्रतिशत था। (चार्ट 2.22)।

सारणी 2.7: एनबीएफसी क्षेत्र के चुनिंदा अनुपात

	मार्च-18	सितं-18
1. कुल आस्तियों की तुलना में पूंजी बाजार में एक्सपोजर	7.3	7.0
2. कुल आस्तियों का रियल इस्टेट में एक्सपोजर	6.6	5.9
3. लीवरेज अनुपात	3.4	4.0
4. कुल आय की तुलना में निवल लाभ	15.3	16.5
5. आस्तियों पर प्रतिलाभ	1.7	1.8
6. इक्विटी पर प्रतिलाभ	7.5	4.4

नोट : आंकड़े अंतिम हैं।
स्रोत : भारिबै पर्यवेक्षी विवरणियाँ।

चार्ट 2.22: एनबीएफसी क्षेत्र³⁷ के चुनिंदा अनुपात



स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ।

³⁶ 01 अप्रैल 2017 से एनबीएफसी-एनडी-एसआई और जमाराशि स्वीकार करने वाली सभी एनबीएफसी को न्यूनतम 10 प्रतिशत टियर-1 पूंजी रखने की आवश्यकता है।

³⁷ कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय (एमसीए) द्वारा जारी किए गए अनुदेश के अनुसार, जिसमें एनबीएफसी के लिए इंड एएस के कार्यान्वयन हेतु रोडमैप की रूपरेखा दी गई है, एनबीएफसी से अपेक्षित है कि वे नीचे दिए गए अनुसार दो चरणों में इंड एएस वित्तीय विवरण तैयार करें :

क) पहले चरण में, ऐसी एनबीएफसी जिनकी निवल मालियत ₹ 5 बिलियन या इससे अधिक हो और जो ऐसी कंपनियों की अनुषंगी, संयुक्त उद्यम या सहयोगी कंपनियां धारित करती हों, उनसे अपेक्षित है कि वे 1 अप्रैल 2018 और इससे आगे की लेखा अवधि से शुरू करते हुए इंड एएस आधारित वित्तीय विवरण और साथ ही 31 मार्च 2018 को समाप्त अवधि से इसका तुलनात्मक अध्ययन तैयार करें।

ख) दूसरे चरण में, ऐसी एनबीएफसी जिनका इक्विटी और/या कर्ज प्रतिभूति स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हो या सूचीबद्ध होने की प्रक्रिया में हो, जिनकी निवल मालियत ₹ 5 बिलियन से कम हो तथा गैर-सूचीबद्ध कंपनी हो, उपर्युक्त के अलावा, जिनकी निवल मालियत ₹ 2.5 बिलियन से ₹ 5 बिलियन हो, और जो ऐसी कंपनियों की अनुषंगी, संयुक्त उद्यम या सहयोगी कंपनियां धारित करती हों, उनसे अपेक्षित है कि वे 1 अप्रैल 2019 और इससे आगे की लेखा अवधि से शुरू करते हुए इंड एएस आधारित वित्तीय विवरण और साथ ही 31 मार्च 2019 को समाप्त अवधि से इसका तुलनात्मक अध्ययन तैयार करें।

समुत्थानशक्ति – दबाव परीक्षण

प्रणालीगत स्तर

2.48 एनबीएफसी क्षेत्र के लिए ऋण जोखिम के संबंध में दबाव परीक्षण सितंबर 2018 को समाप्त अवधि के लिए तीन परिदृश्यों/परिस्थितियों के अंतर्गत किए गए: जीएनपीए में (i) 0.5 मानक विचलन (एसडी) (ii) 1 एसडी (iii) 3 एसडी की वृद्धि। परिणाम यह दर्शाते हैं कि सीआरएआर पहले परिदृश्य में 21.0 प्रतिशत से घटकर 20.6 प्रतिशत हो गया। दूसरे परिदृश्य में यह गिरकर 18.8 प्रतिशत तथा तीसरे परिदृश्य में यह घटकर 14.7 प्रतिशत रह गया।

एकल एनबीएफसी

2.49 एकल एनबीएफसी के दबाव-परीक्षण परिणाम यह दर्शाते हैं कि पहले दो परिदृश्यों में 8 प्रतिशत कंपनियां सीआरएआर की विनियामकीय अपेक्षा के निर्धारित न्यूनतम पूंजी के 15 प्रतिशत के स्तर को नहीं बनाए रख पाएंगी। तीसरे परिदृश्य के अंतर्गत लगभग 12 प्रतिशत कंपनियां विनियामकीय अपेक्षा के निर्धारित न्यूनतम स्तर को नहीं बनाए रख पाएंगी।

खंड IV

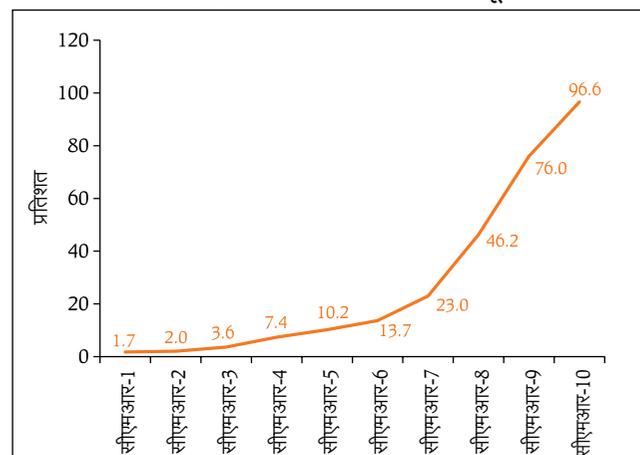
वित्तीय मध्यस्थों का सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) में एक्सपोजर - एक तुलनात्मक विश्लेषण

2.50 थोक पोर्टफोलियो (स्वीकृत सीमा ₹50 मिलियन या इससे अधिक) की गुणवत्ता ने, विशेषकर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) के मामलों में, काफी ध्यान खींचा है। जून 2018 की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (एफएसआर) में एकल बनाम संघीय/बहुविध बैंकिंग व्यवस्था (एमबीए) के थोक पोर्टफोलियो व्युत्पत्ति गुणवत्ता का विस्तृत विश्लेषण किया गया। जैसाकि इस रिपोर्ट में पाया गया, पीएसबी की एनपीए भागीदारी में संघीय/एमबीए का योगदान अग्रिमों में उनकी भागीदारी के मुकाबले अंसगत रूप से है। इसी तर्ज पर, अन्य मामलों के अलावा, बैंकों के एमएसएमई क्षेत्र एक्सपोजर की व्युत्पत्ति गुणवत्ता से संबंधित मुद्दों को यहां परखा गया है। सबसे महत्वपूर्ण यह कि जहां एक ओर पीसीए फ्रेमवर्क थोक पोर्टफोलियो के विस्तार को प्रतिबंधित करता

है, वहीं दूसरी ओर, इसमें अधिकांश पीसीए बैंकों के लिए एमएसएमई क्षेत्र को दिए जाने वाले ऋण विस्तार को अपेक्षाकृत अबाधित रखा गया है। एमएसएमई क्षेत्र को एनबीएफसी द्वारा भी सुविधा प्रदान की जा रही है। सभी बैंकों और एनबीएफसी के पोर्टफोलियो प्रदर्शन की परस्पर तुलना की गई है और यह देखना भी महत्वपूर्ण है कि क्या पोर्टफोलियो प्रदर्शन का मुद्दा इस क्षेत्र में विस्तृत संविभाग अभिलक्षणों से जुड़ा हुआ हो सकता है। एमएसएमई क्षेत्र और उपर्युक्त वर्णित मुद्दे को परखने के लिए, विनियामकीय सहनशीलता से पृथक दुर्बलता की एक एक-समान परिभाषा और साथ ही संबंधित संस्था द्वारा उनका उपयोग भी अपेक्षित है। इसके अलावा, इस प्रयोजन हेतु 'प्लांट एवं मशीनरी में निवेश' के आधार पर एमएसएमई की परंपरागत परिभाषा को कमतर माना गया है। ट्रांसयूनियन सिबिल डेटाबेस, जो किसी संस्था के कुल ऋण एक्सपोजर³⁸ पर विचार करता है तथा संबंधित खातों के प्रदर्शन के आधार पर दुर्बल स्थिति का वर्गीकरण करता है और संस्थागत लेखांकन वर्गीकरण मानदंड से स्वतंत्र, सभी संस्थाओं में दुर्बलता हेतु पिछला 90 दिन देय मानदंड का पालन करता है, पर पूरे विश्लेषण³⁹ में विचार किया गया है।

2.51 इस संबंध में थोक ऋण की तुलना में नोट करने योग्य पहली समस्या एमएसएमई संविभाग की निहित चूक प्रवृत्ति अधिक महत्वपूर्ण है, चार्ट 2.23 और 2.24 में सिबिल

चार्ट 2.23: एमएसएमई ऋणों के 1-वर्ष की अवधि में चूक की संभावना



स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल

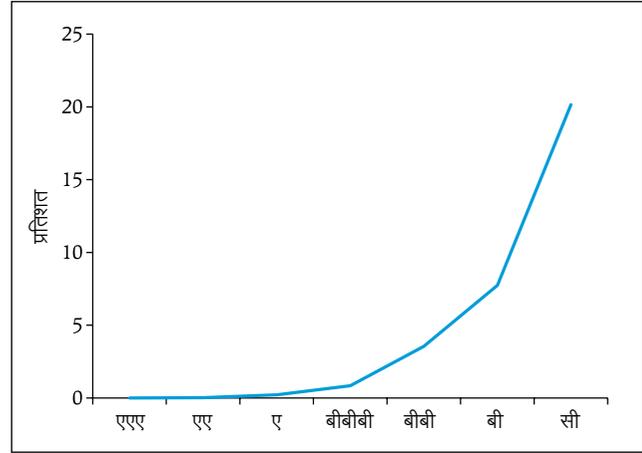
³⁸ 19 नवंबर 2018 को <https://msme.gov.in/faqs/q1-what-definition-msme> एक्सेस किया गया; सूक्ष्म क्षेत्र- ₹ 10 मिलियन से कम, लघु एवं मध्यम उद्यम – ₹ 10-250 मिलियन के बीच।

³⁹ ट्रांसयूनियन सिबिल, प्रकाशन एमएसएमई पल्स (जून, सितंबर 2018 अंक), आरबीआई हेतु बेस्पोक विश्लेषण।

एमएसएमई श्रेणी (सीएमआर) के एकवर्षीय चूक के संक्रमण की तुलना में क्रिसिल दीर्घावधि रेटिंग के अंतर को दर्शाया गया है और इसमें यह भी देखा जा सकता है कि एमएसएमई ऋणों में अधिक बड़े चूक संक्रमण की संभाव्यता है। इसके अतिरिक्त, मार्च 2018 रेटिंग वितरण (चार्ट 2.25) के आधार पर वित्तीय मध्यस्थों के बीच बकाया एमएसएमई संविभाग में भी काफी चूक जोखिम निहित है।

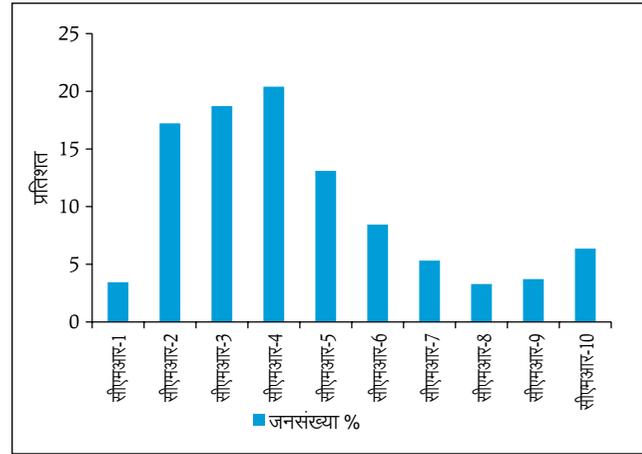
2.52 जैसा कि चार्ट 2.26 में देखा जा सकता है कि रु 10 से 50 मिलियन के आकार में सापेक्ष एक्सपोजर चार्ट में प्रमुखता बनाए हुए है, जो वाणिज्यिक बैंकों के लिए प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के अंदर सूक्ष्म क्षेत्र के लिए विशेष लक्ष्य निर्धारण के कारण हो

चार्ट 2.24: दीर्घावधि रेटिंग (2007-17) के लिए चूक के प्रति क्रिसिल 1 वर्षीय औसत संक्रमण दर



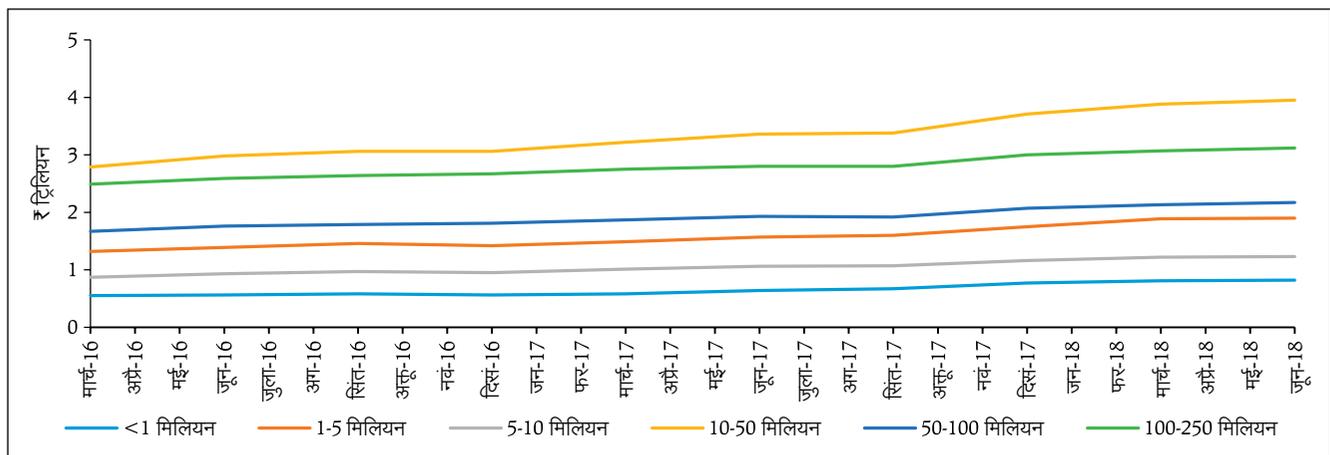
स्रोत : क्रिसिल (19 नवंबर 2018 के अनुसार)।

चार्ट 2.25: एमएसएमई ऋणों का रेटिंग वितरण



स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

चार्ट 2.26: एमएसएमई क्षेत्र का ऋण एक्सपोजर (₹ ट्रिलियन में)

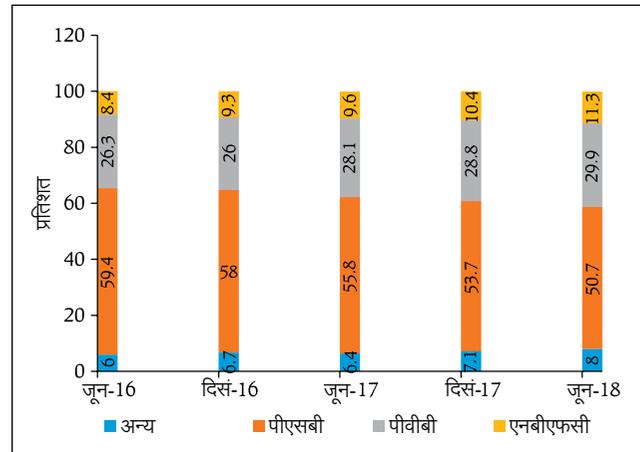


स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

सकता है। थोक बैंकिंग क्षेत्र (चार्ट 2.27) के घटनाक्रम के समान ही सरकारी बैंकों (पीएसबी) का सापेक्षी बाजार भाग निजी बैंकों (पीवीबी)/ गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के पक्ष में स्थानांतरित हो रहा है। सूक्ष्म क्षेत्र की अपेक्षा एसएमई क्षेत्र में बड़े एनपीए होने के कारण (चार्ट 2.28), ये स्थानांतरण अपने एनपीए प्रोफाइल के संबंध में पीएसबी के लिए वास्तव में लाभप्रद हो सकते हैं। जैसा कि चार्ट 2.29 में दर्शाया गया है, पीएसबी का उल्लेखनीय शाखा नेटवर्क और स्थानीय जानकारी उपलब्ध होते हुए भी पीएसबी का सापेक्षी एनपीए हिस्सा न केवल पीवीबी बल्कि एनबीएफसी, जो पीएसबी की तुलना में सापेक्षी उल्लेखनीय वित्तीय सुविधाकरण में अलाभप्रद स्थिति में हैं, से भी काफी बढ़ गया है। इस संबंध में, इस बात पर जोर दिए जाने की आवश्यकता है कि वर्तमान विनियामकीय मानदंडों को ध्यान में नहीं रखने पर भी एनबीएफसी की हानि, वाणिज्यिक बैंकों के समान पिछले 90 दिनों के बकाया पर आधारित है।

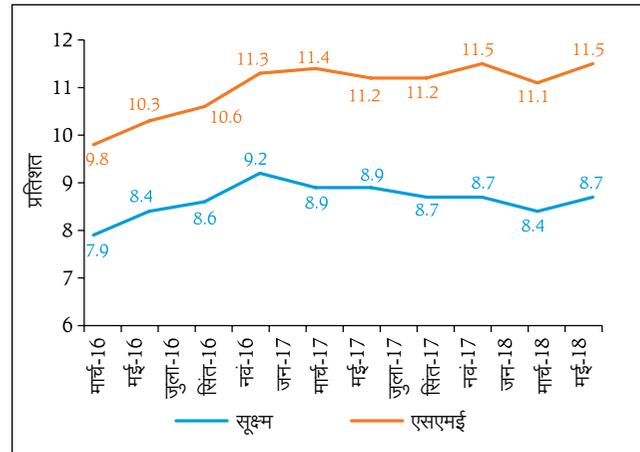
2.53 एमएसएमई के संबंध में पीएसबी द्वारा उल्लेखनीय रूप से निम्न कार्यनिष्पादन, उनके एमएसएमई संविभाग प्रोफाइल पर अधिक विस्तृत रूप से ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर देता है। ट्रांसयूनियन सिबिल का एमएसएमई रेटिंग एमएसएमई रेटिंग श्रेणियों के वितरण को दर्शाता है जो खराब हास कार्यनिष्पादन के अनुरूप है। नए निजी बैंकों (नए पीवीबी)⁴⁰ का “न्यू टू बैंक” (एनटीबी) एमएसएमई खातों की प्रोफाइल काफी बेहतर है। पुराने निजी बैंकों (पुराने पीवीबी) के लिए 36 प्रतिशत, पीएसबी के लिए 37 प्रतिशत और एनबीएफसी के लिए 34 प्रतिशत की तुलना में उन्होंने सीएमआर 1-3 श्रेणी में एनटीबी का 47 प्रतिशत अर्जन किया है। इसी प्रकार, एमएसएमई प्रोफाइल में सबसे अधिक जोखिम के लिए, नए पीवीबी ने काफी बेहतर कार्यनिष्पादन किया है। पुराने पीवीबी के 14 प्रतिशत, पीएसबी के लिए 17 प्रतिशत और एनबीएफसी के लिए 14 प्रतिशत

चार्ट 2.27: बाजार हिस्सेदारी में सापेक्ष उतार-चढ़ाव : बाजार हिस्सेदारी का पीएसबी से पीवीबी और एनबीएफसी की ओर स्थानांतरण



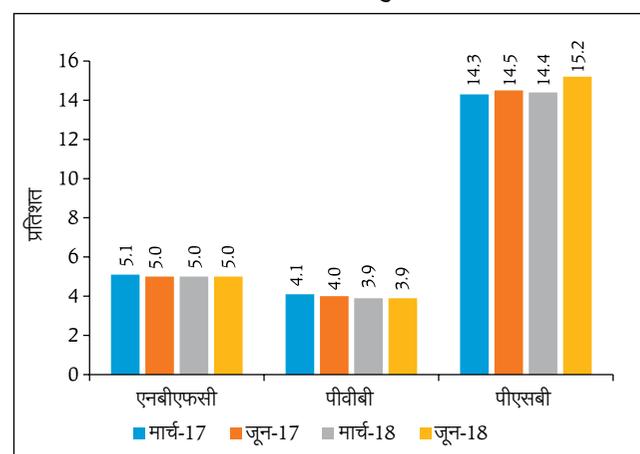
स्रोत : ट्रांस यूनियन सिबिल

चार्ट 2.28: सापेक्षी एक्सपोजर के अनुसार सूक्ष्म और एसएमई क्षेत्र में एनपीए प्रोफाइल



स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

चार्ट 2.29: ऋणदाता-प्रकार के अनुसार एनपीए प्रोफाइल



स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

⁴⁰ नए निजी बैंकों का तात्पर्य उन बैंकों से है जिनको सन् 1990 के बाद बैंकिंग लाइसेंस दिया गया है।

(सारणी 2.8) की तुलना में सीएमआर 7-10 क्रेडिट स्पेस में हाल में केवल 10 प्रतिशत के हिस्से के साथ नए पीवीबी का कार्यनिष्पादन उल्लेखनीय रूप से बेहतर है।

2.54 पुराने पीवीबी, पीएसबी और एनबीएफसी के बीच सीएमआर 7-10 वर्ग के तहत वृद्धिशील ऋण अर्जन तुलनीय प्रतीत होता है, इस स्पेस में ऋणदाताओं द्वारा अर्जित आस्तियों की आधार प्रकृति में काफी असमानता है। ट्रांसयूनियन सिबिल का अनुमान है कि इस उच्च जोखिम वाले क्षेत्र को नए पीवीबी द्वारा केवल आंशिक रूप से समर्थित ऋण (वाणिज्यिक वाहन, वाणिज्यिक उपस्कर, वाहन ऋण, स्वर्ण ऋण, बंधक ऋण) देने के कारण जोखिम न्यून हो गया है जबकि इस उच्च-जोखिम वाले क्षेत्र में पीएसबी सिर्फ कार्यशील पूंजी और मीयादी ऋण प्रदान कर रहे हैं (62 प्रतिशत, सारणी 2.9)। यहाँ तक कि एनबीएफसी जिनका इस क्षेत्र में 14 प्रतिशत अर्जन है, उनका 80 प्रतिशत एक्सपोजर आंशिक रूप से समर्थित होने से जोखिम काफी कम हो गया है और वे बेहतर कर रहे हैं। सामान्यतः पीएसबी की कार्यशील पूंजी में धोखाधड़ी का विषय पिछले एफएसआर⁴¹ में उठाया गया है।

2.55 बकाया एमएसएमई संविभाग का जोखिम स्नेपशॉट (मार्च 2018 के अनुसार) विशेष महत्व का है। चार्ट 2.30, ऋणदाताओं के बीच गैर-एनपीए-एमएसएमई के रेटिंग वितरण

सारणी 2.8: ऋणदाताओं में क्रेडिट स्पेक्ट्रम के बीच वृद्धिशील एमएसएमई उधारकर्ताओं का वितरण

(प्रतिशत)

	सीएमआर-1	सीएमआर-2	सीएमआर-3	सीएमआर-4	सीएमआर-5	सीएमआर-6	सीएमआर-7 to 10
नए पीवीबी	5	19	23	24	13	7	10
पुराने पीवीबी	2	13	20	27	12	12	14
पीएसबी	2	14	21	25	11	11	17
एनबीएफसी	2	12	20	28	13	11	14

स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

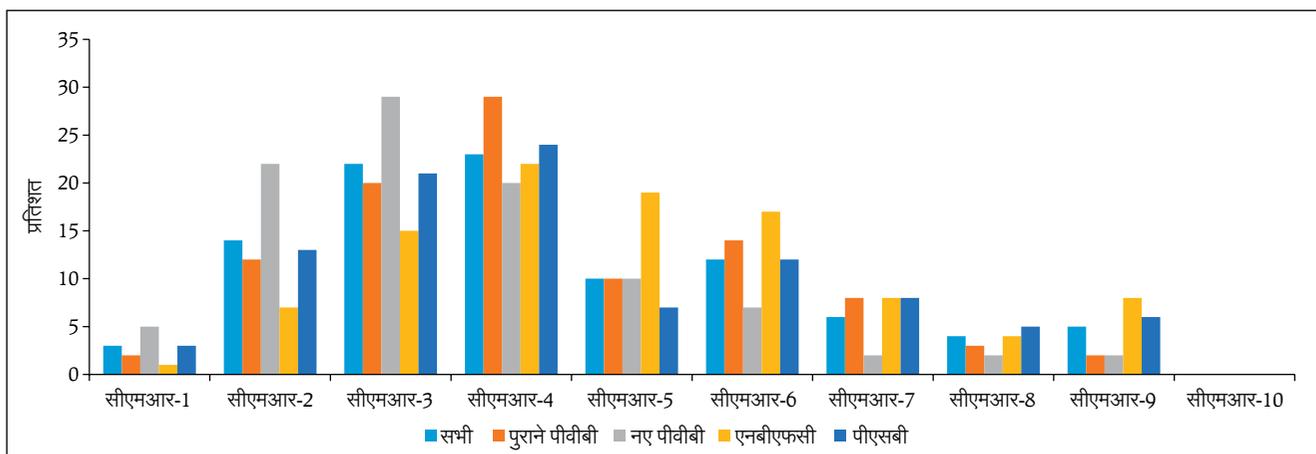
सारणी 2.9: ऋणदाताओं के बीच सीएमआर 7-10 क्षेत्र में आंशिक अर्जन का अनुपात

(प्रतिशत)

	सादा कार्यशील पूंजी / मीयादी ऋण	आंशिक समर्थित / खुदरा ऋण	गैर-निधि आधारित / व्यापार	अन्य सुविधाएं
नए पीवीबी	22	62	7	9
पुराने पीवीबी	60	21	8	10
सरकारी बैंक	62	16	12	10
एनबीएफसी	4	80	6	11

स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

चार्ट 2.30: ऋणदाताओं के बीच वर्तमान संविभाग का रेटिंग वितरण : मार्च 2018



स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

⁴¹ वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, जून 2018 (पैराग्राफ 3.9-3.11)।

को प्रदर्शित करता है। नए पीवीबी के कुल एक्सपोजर का लगभग 6-7 प्रतिशत सीएमआर 7-10 रेटिंग क्षेत्र के अंतर्गत है, क्षेत्र में एनबीएफसी और पीएसबी का एक्सपोजर लगभग 20 प्रतिशत है। हालांकि, तथ्यों के अनुसार एनबीएफसी का कुल एनपीए पीएसबी की तुलना में काफी कम है, इस रेटिंग स्पेक्ट्रम के अनुसार पीएसबी की असुरक्षितता महत्वपूर्ण रूप से अधिक प्रतीत होती है।

2.56 एमएसएमई एक्सपोजर के संबंध में उपर्युक्त विश्लेषण पीएसबी को अविभेदित समूह में रखता है। तथ्यों के अनुसार वर्तमान में 21 पीएसबी में से 11 पीसीए के अधीन हैं, कुछ सीमा तक असमेकित पीएसबी समूह (पीसीए-पीएसबी और गैर-पीसीए पीएसबी के बीच) के वृद्धिशील एक्सपोजर की प्रकृति का और अधिक परीक्षण किया गया। 50 मिलियन के एक्सपोजर तक विश्लेषण सीमित रहा क्योंकि इस सीमा से अधिक का एक्सपोजर सीआरआईएलसी⁴² डाटा के तहत कवर किया जाता है।

2.57 जैसा कि सारणी 2.10-2.11 में दर्शाया गया है, वित्तीय वर्ष 2016-17 की तुलना में वित्तीय वर्ष 2017-18 में यानी उच्चसीमा के अधिक एक्सपोजर के लिए इस अवधि के दौरान पीसीए प्रतिबंध लगाए गए थे, इस विशिष्ट क्षेत्र में पीसीए-पीएसबी का सापेक्ष हिस्सा बढ़ा है। हालांकि, ऐसी उच्च सीमाएं सामान्यतया रु 50 मिलियन से काफी ऊपर थीं, समग्र एक्सपोजर रु 50 मिलियन से कम होने पर ऋण विस्तार में पर्यवेक्षी प्रतिबंध संबंधी कोई बाध्यता नहीं है। यदि पूर्ण राशि की बात करें तो वित्तीय वर्ष 2016-17 और वित्तीय वर्ष 2017-18 के बीच इस क्षेत्र में पीसीए-पीएसबी वृद्धिशील एक्सपोजर रु 226.80 बिलियन से लगभग 116 प्रतिशत बढ़कर रु 602.80 बिलियन हो गया है। इस तीव्र वृद्धि को ध्यान में रखते हुए ऋण मानकों के और अधिक गिरावट की संभावना की जांच करने और पीसीए बैंकों के लिए पर्यवेक्षी रणनीति में परिवर्धन की आवश्यकता है।

2.58 आंकड़े वित्त वर्ष 2016-17 और 2017-18 के बीच पीसीए-पीएसबी में गिरावट का रुझान दर्शाते हैं। इस पर

सारणी 2.10: ₹ 50 मिलियन से अधिक के समग्र एक्सपोजर वाले खातों का वृद्धिशील एक्सपोजर: मार्च 2016 – मार्च 2017

(प्रतिशत)

मार्च 16 से मार्च 17 के बीच अर्जित उधारकर्ताओं का अधिशेष	नए पीवीबी	पुराने पीवीबी	पीसीए के तहत पीएसबी	अन्य पीएसबी	अन्य ऋणदाता	कुल योग (₹ बिलियन)
मार्च-16	19	9	29	32	11	330.43
जून-16	23	7	21	33	16	600.45
सित-16	21	7	19	35	18	855.82
दिस-16	16	5	12	24	44	1529.87
मार्च-17	23	8	15	35	19	1495.65

नोट : मार्च 2017 को समाप्त तिमाही के लिए अवधि 1 जनवरी- 31 मार्च है।

स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

सारणी 2.11: ₹ 50 मिलियन से अधिक के समग्र एक्सपोजर वाले खातों का वृद्धिशील एक्सपोजर: मार्च 2017 – मार्च 2018

(प्रतिशत)

मार्च 17 से मार्च 18 के बीच अर्जित उधारकर्ताओं का अधिशेष	नए पीवीबी	पुराने पीवीबी	पीसीए के तहत पीएसबी	अन्य पीएसबी	अन्य ऋणदाता	कुल योग (₹ बिलियन)
मार्च-17	22	11	39	19	8	821.08
जून-17	25	9	30	24	12	1181.47
सित-17	28	8	26	25	14	1794.39
दिस-17	30	7	22	26	15	2366.31
मार्च-18	31	7	20	26	15	2970.39

नोट : मार्च 2017 को समाप्त तिमाही के लिए अवधि 1-31 मार्च 2017 है।

स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

सारणी 2.12: वित्तीय वर्ष के भीतर नए अर्जन में एनपीए स्लिपेज : वित्तीय वर्ष 2016-17

(प्रतिशत)

एनपीए दर	नए पीवीबी	पुराने पीवीबी	पीसीए के तहत पीएसबी	अन्य पीएसबी	अन्य ऋणदाता	कुल योग
मार्च-16	0.22	0.54	2.59	0.67	0.96	1.15
जून-16	0.11	0.99	4.03	0.74	0.86	1.33
सित-16	0.38	0.96	4.07	0.95	1.10	1.44
दिस-16	0.69	1.49	3.98	1.00	0.30	1.02
मार्च-17	0.95	1.21	4.69	1.17	0.79	1.58

स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

सारणी 2.13: वित्तीय वर्ष के भीतर नए अर्जन में एनपीए स्लिपेज : वित्तीय वर्ष 2017-18

(प्रतिशत)

एनपीए दर	नए पीवीबी	पुराने पीवीबी	पीसीए के तहत पीएसबी	अन्य पीएसबी	अन्य ऋणदाता	कुल योग
मार्च-17	0.04	0.45	1.40	0.58	0.79	0.79
जून-17	0.14	0.72	2.02	0.54	0.75	0.93
सित-17	0.14	0.64	1.84	0.51	0.77	0.79
दिस-17	0.25	0.72	2.07	0.73	1.73	1.03
मार्च-18	0.23	0.64	1.99	1.25	0.80	0.97

स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल।

⁴² बड़े ऋणों से संबंधित सूचना का केंद्रीय निधान।

⁴³ अप्रैल-मार्च।

भी, नए सिरे से स्वीकृत पोर्टफोलियो का 2 प्रतिशत उसी वित्त वर्ष 2017-18 के भीतर ही बेमेल हो जाना, खासकर उनकी बाधित पूंजी स्थिति और निजी मध्यवर्ती संस्थाओं के बीच हर तरफ बेहतर प्रदर्शन को देखते हुए काफी ज्यादा है। हर तरफ सुधार के बीच, अन्य पीएसबी समूह ने वित्त वर्ष 2017-18 में चिंताजनक रूप से बढ़ी हुई रूपान्तरण दर को दर्शाया है।

2.59 निष्कर्षतः, एमएसएमई सेक्टर में पीएसबी का प्रदर्शन अन्य मध्यवर्ती संस्थाओं की तरह ही सुस्त रहा। यह अंतर्निहित और साथ ही साथ अनुभव किए गए ऋण जोखिम दोनों के संदर्भ में है। नए अधिग्रहीत पोर्टफोलियो के संदर्भ में, वित्त वर्ष 2017-18 में पीसीए-पीसीबी एनपीए के प्रति घटती हुई रूपांतरण दर को दर्शाते हैं, यद्यपि अन्य वित्तीय मध्यवर्ती संस्थाओं की तुलना में यह दर अभी भी काफी ज्यादा बनी हुई है। सेक्टर के महत्व के साथ-साथ पीएसबी के स्वास्थ्य को को ध्यान में रखते हुए, इस सेक्टर के प्रदर्शन, खास तौर पर विकास दर के साथ गुणवत्ता पर भी (विशेष रूप से सांपाश्रिकीकृत कार्यशील पूंजी/आवधिक ऋण एक्सपोजर के कमजोर निर्माण) लक्ष्योन्मुख निगरानी लागू किए जाने की आवश्यकता है ताकि सभी श्रेसहोल्ड में ऋणों की बेहतर संवीक्षा सुनिश्चित हो सके।

खंड V

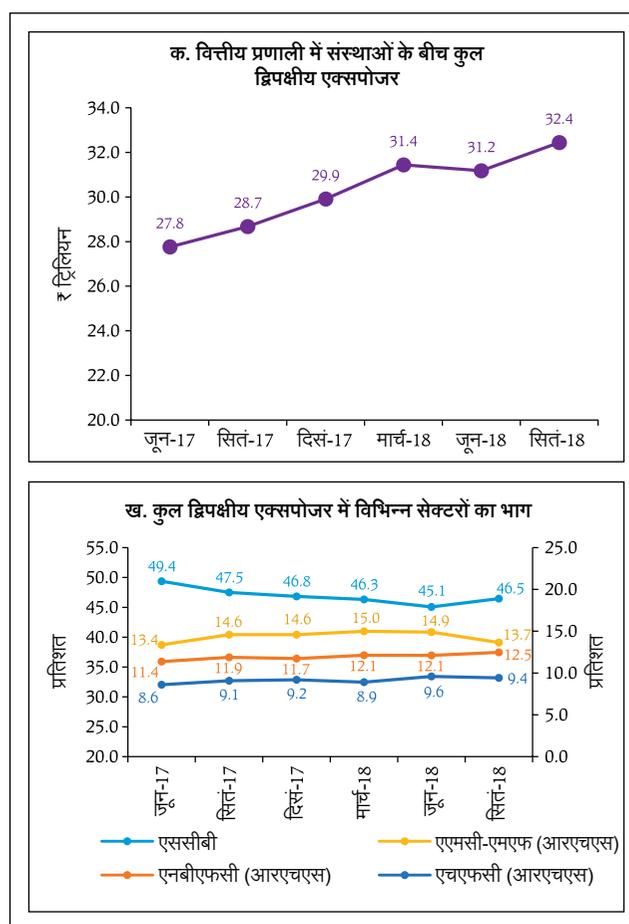
वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क⁴⁴

2.60 यदि हम वित्तीय संस्थानों को नोड और इनके बीच 'द्विपक्षीय एक्सपोजर' को इन नोड्स को जोड़ने वाले लिंक के रूप में मानें तो वित्तीय प्रणाली की कल्पना एक नेटवर्क के रूप में की जा सकती है। वित्तीय संस्थान दक्षता लाभ और जोखिम विविधीकरण के लिए अन्य वित्तीय संस्थानों के साथ

लिंक स्थापित करते हैं परंतु संकट के समय यही लिंक जोखिम संचरण को बढ़ावा देते हैं।

2.61 वित्तीय प्रणाली में, संस्थाओं के बीच कुल बकाया द्विपक्षीय एक्सपोजर⁴⁵ सितंबर 2017 के अंत के ₹28.7 ट्रिलियन से बढ़कर सितंबर 2018 के अंत में ₹32.4 ट्रिलियन हो गया जो वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 13.1 प्रतिशत की वृद्धि के बराबर है (चार्ट 2.31 क)

चार्ट 2.31: द्विपक्षीय एक्सपोजर⁴⁶



स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ द्वारा आकलन।

⁴⁴ यहाँ पर और अगले भाग में प्रस्तुत विश्लेषण आगे दिए गए 8 सेक्टरों की 201 संस्थाओं के डेटा पर आधारित है: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (एससीबी), अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक (एसयूसीबी), आरिस्त प्रबंधन कंपनियाँ-म्यूचुअल फंड (एमसी-एमएफ), गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ (एनबीएफसी), बीमा कंपनियाँ, आवास वित्त कंपनियाँ (एचएफसी), पेंशन फंड (पीएफ) तथा अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं (एआईएफआई)।

कवर की गई 201 संस्थाओं में शामिल हैं - 80 एससीबी, 20 एसयूसीबी, 22 एमसी-एमएफ (जो म्यूचुअल फंड सेक्टर के 90 प्रतिशत से अधिक एयुएम को कवर करते हैं), 32 एनबीएफसी (जमाराशि स्वीकार करने वाली और जमाराशि स्वीकार न करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ जो एनबीएफसी आस्तियों के लगभग 60 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करती हैं), 21 बीमा कंपनियाँ (जो बीमा कंपनियों की 90 प्रतिशत से ज्यादा आस्तियों को कवर करती हैं), 15 एचएफसी (जो एचएफसी की कुल आस्तियों के 90 प्रतिशत से अधिक भाग का प्रतिनिधित्व करती हैं), 7 पेंशन फंड और 4 एआईएफआई (नाबार्ड, एक्जिम, एनएचबी और सिडबी)।

⁴⁵ उसी सेक्टर की संस्थाओं के एक्सपोजर शामिल हैं।

⁴⁶ एक संशोधित डेटा रिपोर्टिंग फार्मेट दिसंबर 2016 में लागू किया गया था और विश्लेषण के लिए विचार की जाने वाली वित्तीय संस्थानों की संख्या को मार्च 2017 में संशोधित किया गया था। अतः, तुलनात्मक विश्लेषण के लिए विगत 6 तिमाहियों का डेटा प्रस्तुत किया गया है।

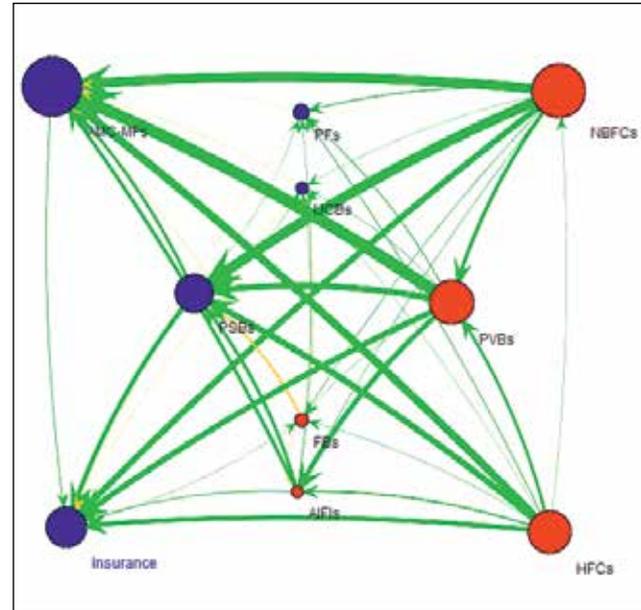
2.62 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (एससीबी) वित्तीय प्रणाली के द्विपक्षीय एक्सपोजर में सितंबर 2018 के अंत में लगभग 46.5 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ प्रमुख भागीदार बने हुए हैं। दूसरे शब्दों में, वित्तीय प्रणाली में सभी अन्य संस्थाओं को एससीबी द्वारा (अन्य एससीबी सहित) दिया गया ऋण और लिए गए उधार वित्तीय प्रणाली के कुल ऋण और उधार का 46.5 प्रतिशत हैं (चार्ट 2.31 ख)।

2.63 आस्ति प्रबंधन कंपनियों की हिस्सेदारी - सितंबर 2018 के अंत में म्यूचुअल फंड (एमसी-एमएफ), गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) और आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) की हिस्सेदारी क्रमशः 13.7 प्रतिशत, 12.5 प्रतिशत और 9.4 प्रतिशत रही और यह पिछली कुछ तिमाहियों से लगातार बढ़ रही है। यह वित्तीय प्रणाली के साथ उनके बढ़ते अंतर-संबंधों को दर्शाती है। हालिया तिमाही (तिमाही 2: 2018-19) में एमसी-एमएफ की हिस्सेदारी में गिरावट आई क्योंकि उन्होंने एनबीएफसी और एचएफसी को अपना ऋण देना कम कर दिया है। (चार्ट 2.31 ख)।

2.64 बीमा कंपनियों और अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाओं (एआईएफआई) की हिस्सेदारी पिछली कुछ तिमाहियों में 8-8.5 प्रतिशत की सीमा में लगभग स्थिर सी रही है। इसके विपरीत, कुल द्विपक्षीय एक्सपोजर में पेंशन फंड (पीएफ) की हिस्सेदारी बढ़ रही है परंतु, समग्र रूप से, यह अब भी काफी कम अर्थात् सितंबर 2018 के अंत में लगभग 1 प्रतिशत है।

2.65 अंतर-क्षेत्रीय एक्सपोजर⁴⁷के संदर्भ में, एमसी-एमएफ और इसके बाद बीमा कंपनियाँ प्रणाली में सर्वाधिक निधि प्रदाता थी, जबकि एनबीएफसी और इसके बाद एचएफसी और एससीबी सर्वाधिक निधि प्राप्तकर्ता थे। हालांकि, एससीबी के अंदर निजी बैंक (पीवीबी) और विदेशी बैंक (एफबी) दोनों सम्पूर्ण वित्तीय क्षेत्र की तुलना में निवल देय स्थिति में थे, जबकि सरकारी क्षेत्र के बैंक (पीएसबी) निवल प्राप्य स्थिति में हैं। (चार्ट 2.32 और सारणी 2.14)।

चार्ट 2.32: वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क प्लॉट - सितंबर 2018



नोट : प्राप्य और देय राशियों में उसी समूह की संस्थाओं के बीच के लेनदेन शामिल नहीं हैं। लाल रंग के गोले निवल देय स्थिति वाली संस्थाएँ हैं और नीले निवल प्राप्य स्थिति वाली संस्थाएँ हैं।

स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ द्वारा आकलन

सारणी 2.14: अंतर क्षेत्र आस्तियाँ और देयताएँ – सितंबर 2018

(₹ बिलियन)

वित्तीय संस्था	प्राप्य	देय
सरकारी क्षेत्र के बैंक	7,579.0	3,149.8
निजी बैंक	3,469.6	8,795.1
विदेशी बैंक	955.4	1,186.1
एसयूसीबी	137.3	56.0
एआईएफआई	2,595.1	2,717.2
एमसी-एमएफ	8,345.5	500.4
बीमा कंपनियाँ	5,098.4	201.6
एनबीएफसी	560.2	7,457.8
पीएफ	658.2	58.2
एचएफसी	412.0	5,688.6

स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ आकलन।

⁴⁷ अंतर-सेक्टर एक्सपोजर में उसी सेक्टर की संस्थाओं के बीच के संव्यवहार शामिल नहीं हैं।

2.66 मार्च 2018 से सितंबर 2018 के बीच वित्तीय क्षेत्र के एमसी-एमएफ की निवल प्राप्य राशियाँ, जो उल्लेखनीय दर से बढ़ रही थी, में गिरावट दर्ज हुई। इसके विपरीत, इसी अवधि के दौरान सरकारी क्षेत्र के बैंकों की निवल प्राप्य राशियों में उल्लेखनीय उछाल दर्ज हुआ। सभी प्रमुख उधारकर्ताओं के लिए (अर्थात् ऐसे संस्थान जिनकी शेष वित्तीय प्रणाली के प्रति निवल देय स्थिति थी) वित्तीय क्षेत्र के प्रति उनकी निवल देय स्थिति की वृद्धि संतुलित बनी रही। (चार्ट 2.33)

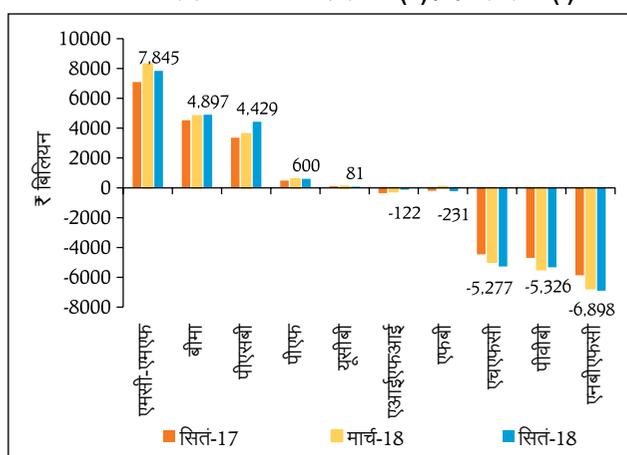
अंतर-बैंक बाजार

2.67 बैंकिंग प्रणाली की कुल आस्तियों के अनुपात के रूप में देखा जाए तो अंतर बैंक बाजार के आकार में (निधि-आधारित और गैर-निधि-आधारित दोनों) पिछले कुछ वर्षों में लगातार गिरावट आई है। पिछले एक वर्ष के दौरान (सितंबर 2017 से सितंबर 2018), निधि-आधारित अंतर-बैंक एक्सपोजर कुल बैंक आस्तियों (चार्ट 2.34) के 4.6 प्रतिशत से घटकर 3.8 प्रतिशत हो गए।

2.68 यह काफी हद तक वैश्विक अनुभव के अनुरूप है जहां असुरक्षित अंतर-बैंक बाजार तेजी से सुरक्षित निधियन पद्धतियों के साथ प्रतिस्थापित हो रहे हैं। नतीजतन, बैंक जो अब तक अंतर-बैंक बाजार में बड़े उधारदाता थे, अब एक बड़ा भाग एनबीएफसी और एचएफसी को उधार दे रहे हैं। संक्रामकता के नजरिए से, अंतर-बैंक बाजार के आकार में यह कमी बैंकिंग क्षेत्र के भीतर संक्रामी नुकसान पर संतुलित प्रभाव बताती है। लेकिन दूसरी ओर, यह बाकी वित्तीय क्षेत्र के साथ बैंकिंग प्रणाली की बृहत्तर अंतर-संबद्धता को दर्शाती है।

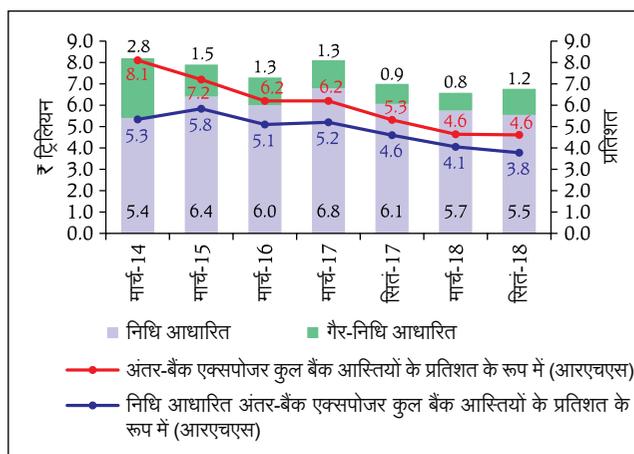
2.69 सितंबर 2018 की समाप्ति पर (चार्ट 2.35) अंतर-बैंक बाजार में सरकारी क्षेत्र के बैंक, एक समूह के रूप में 53.1 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ (कुल बैंक आस्तियों में 63.7 प्रतिशत की हिस्सेदारी की तुलना में) सबसे बड़े भागीदार बने रहे और इसके बाद निजी बैंक 31.1 प्रतिशत (कुल बैंक आस्तियों में 29.8 प्रतिशत की हिस्सेदारी) है और विदेशी बैंक 15.8 प्रतिशत (कुल बैंक आस्तियों में केवल 6.5 प्रतिशत की हिस्सेदारी) का स्थान था।

चार्ट 2.33: संस्थाओं की निवल प्राप्य (+) / देय राशियाँ (-)



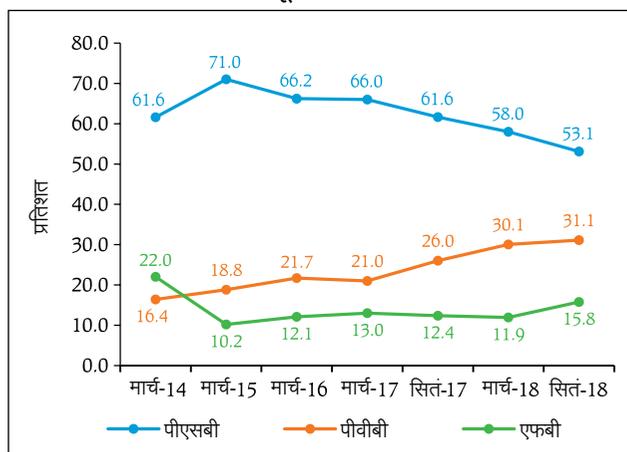
स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ द्वारा आकलन।

चार्ट 2.34: अंतर बैंक बाजार



स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ द्वारा आकलन।

चार्ट 2.35: विभिन्न बैंक समूहों की अंतर बैंक बाजार में हिस्सेदारी



स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ द्वारा आकलन।

2.70 सितंबर 2018 की समाप्ति पर, निधि आधारित अंतर-बैंक बाजार का 73 प्रतिशत भाग अल्पकालिक (एसटी) प्रकृति का है जिसमें अधिकतम हिस्सा अल्पकालिक जमाराशियों का था इसके बाद मांग मुद्रा (कॉल) और अल्पकालिक ऋण थे। दीर्घावधि निधि (एलटी) आधारित अंतर-बैंक बाजार की संरचना दर्शाती है कि इसमें दीर्घावधि ऋणों का हिस्सा सर्वाधिक था और इसके बाद दीर्घावधि जमाएँ (चार्ट 2.36) थी।

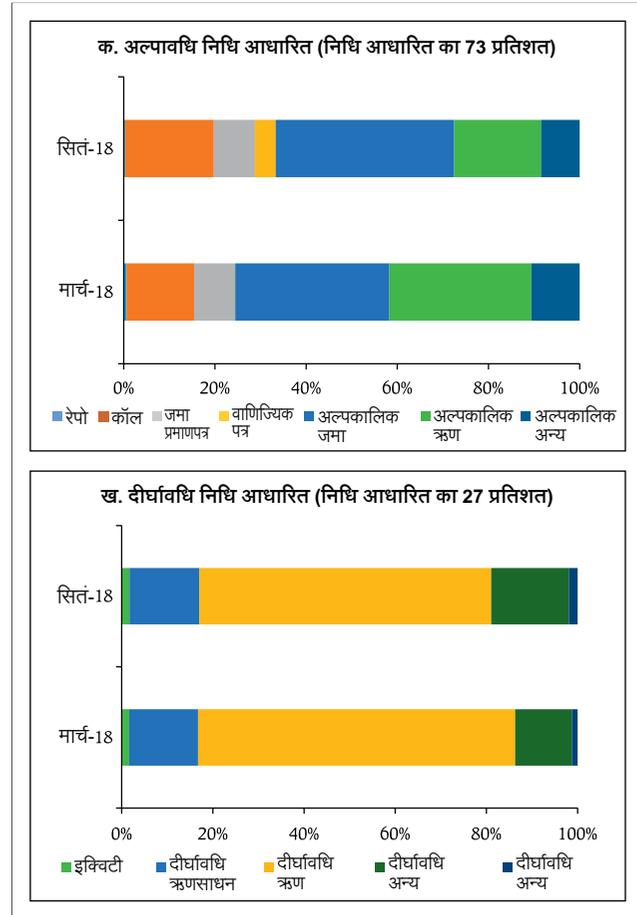
अंतर-बैंक बाजार: नेटवर्क संरचना और परस्पर संबद्धता

2.71 अधिकांशतः अंतर-बैंक बाजार की कोर-परिधि संरचना होती है। सितंबर 2018 की समाप्ति पर बैंकिंग प्रणाली⁴⁹ की नेटवर्क संरचना⁴⁸ दर्शाती है कि सबसे भीतरी कोर में 4 बैंक थे और 9 बैंक मध्य कोर में थे। चार्ट 2.37 सितंबर 2018 की समाप्ति पर अंतर-बैंक बाजार की कोर-परिधि संरचना को दर्शाता है। पिछले 5 वर्षों में हर तिमाही के लिए इसी प्रकार का विश्लेषण दर्शाता है कि समय के साथ-साथ परस्पर संबद्धता किस प्रकार विकसित हुई है। पिछले 5 वर्षों के दौरान सबसे भीतरी कोर में बैंकों की संख्या 2 और 5 की सीमा में रही। अधिकांशतः ये, सबसे बड़े सरकारी क्षेत्र के बैंक या निजी बैंक थे (चार्ट 2.37)।

2.72 ज़्यादातर विदेशी बैंक और लगभग सभी 'पुराने' निजी बैंक सामान्यतः सबसे बाहरी परिधि में हैं जो उन्हें भारत में सबसे कम संबद्धता वाले बैंक बनाता है। शेष सरकारी क्षेत्र के बैंक और निजी बैंक, कुछ विदेशी बैंकों के साथ मध्य और बाहरी कोर को निर्मित करते हैं।

2.73 बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) में परस्पर-संबद्धता की मात्रा, जो संयोजकता अनुपात⁵⁰ द्वारा मापी गई है, में पिछले पांच वर्षों में धीरे-धीरे गिरावट आई है। यह पूर्व में उल्लिखित संकुचित होते अंतर-बैंक बाजार के अनुरूप है। क्लस्टर गुणांक⁵¹ जो स्थानीय परस्पर-संबद्धता को दर्शाता है (अर्थात् समूहन की प्रवृत्ति),

चार्ट 2.36: निधि आधारित अंतर बैंक की संरचना



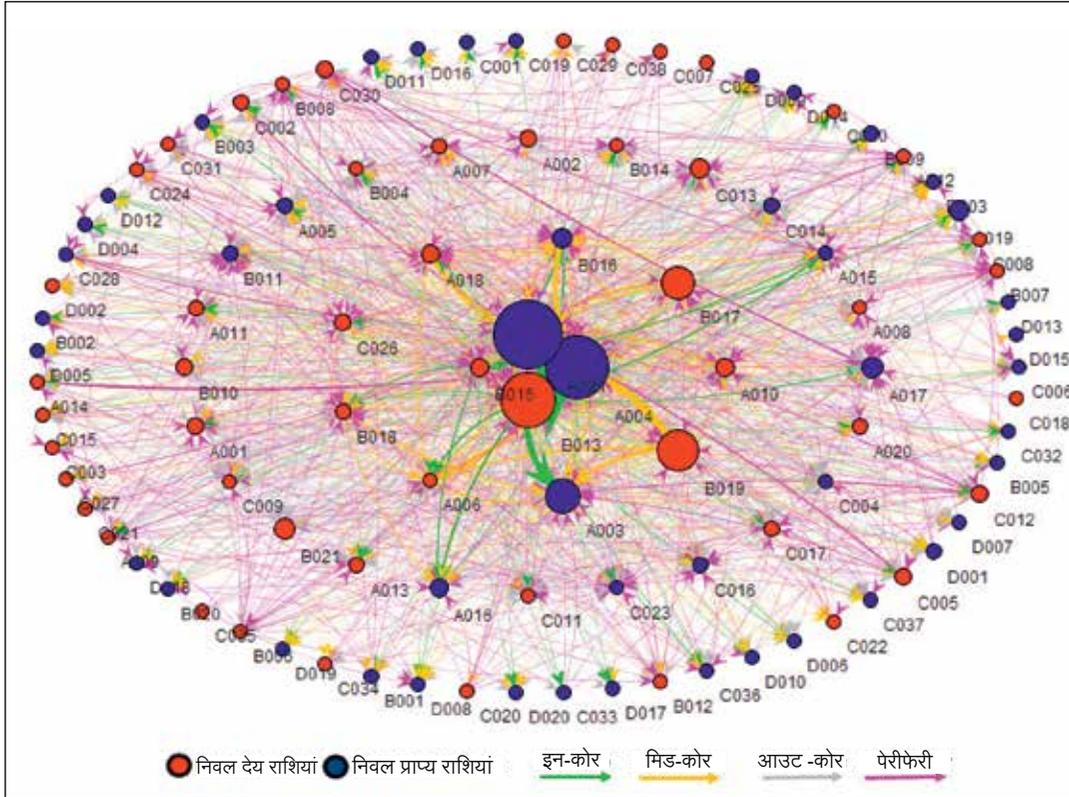
स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ द्वारा आकलन।

⁴⁸ बैंकिंग प्रणाली के नेटवर्क का आरेखीय निरूपण टीयर संरचना का है, जहां विभिन्न बैंकों के पास नेटवर्क में अन्य बैंकों के साथ अलग-अलग मात्रा और स्तर की संयोजकता है। प्रस्तुत विश्लेषण में, सर्वाधिक संयोजित बैंक सबसे भीतरी कोर (नेटवर्क आरेख के केंद्र) में हैं। इसके बाद सापेक्षित संयोजकता के आधार पर बैंकों को मध्य कोर, बाहरी कोर और परिधि (आरेख के केंद्र के चारों ओर संबंधित संकेंद्रित वृत्त) में बैंकों को रखा गया है। टीयर नेटवर्क आरेख में लिंक की रंग कोडिंग नेटवर्क में विभिन्न टीयरों से उधारी को निरूपित करती है (उदाहरण के लिए हरे लिंक भीतरी कोर के बैंकों से लिए गए उधारों को दर्शाते हैं) प्रत्येक गैर एक बैंक को निरूपित करती है और प्रणाली में अन्य बैंकों की तुलना में उनकी निवल स्थिति को तदनुसार भारत किया गया है। प्रत्येक बैंक को लिंक करने वाली रेखाएँ बकाया एक्सपोजर के आधार पर भारत की गयी हैं।

⁴⁹ इस विश्लेषण के लिए 80 एससीबी और 20एसयूसीबी पर विचार किया गया है।

⁵⁰ संयोजकता अनुपात: यह उन आंकड़ों से संबन्धित है जो सम्पूर्ण नेटवर्क में सभी संभावित लिंकों के सापेक्ष नोडों के बीच लिंकों के विस्तार का मापन करता है।

चार्ट 2.37: भारतीय बैंकिंग प्रणाली की नेटवर्क संरचना (एससीबी+एसयूसीबी)



स्रोत : भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा आकलन।

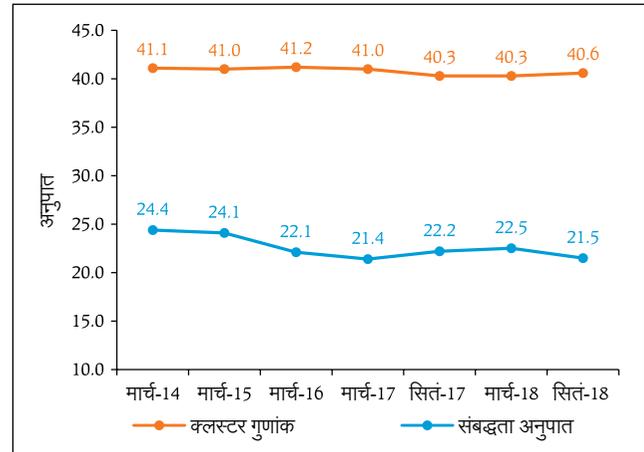
पिछले 5 सालों में लगभग स्थिर बना हुआ है जो यह दर्शाता है कि बैंकिंग नेटवर्क के भीतर क्लस्टरिंग/समूहन में समय के साथ ज्यादा बदलाव नहीं हुआ है (चार्ट 2.38)।

एएमसी-एमएफ का एक्सपोजर

2.74 एएमसी-एमएफ, वित्तीय प्रणाली के लिए कुल धन के सबसे बड़े प्रदाता थे। 'उनकी सकल प्राप्य राशि लगभग रु. 8,145 बिलियन (सितंबर 2018 तक उनके औसत एयूएम का लगभग 36.5 प्रतिशत) थी, और सितंबर 2018 में उनकी सकल देय राशि लगभग रु.500 बिलियन थी।

2.75 एससीबी के बाद एनबीएफसी और एचएफसी अपनी निधियों के शीर्ष तीन प्राप्तकर्ता थे। जबकि एससीबी (प्रतिशत के संदर्भ में) से इनकी प्राप्त होने वाली राशि में वृद्धि हुई है, पिछली कुछ तिमाहियों में एनबीएफसी से इनकी प्राप्त होने वाली

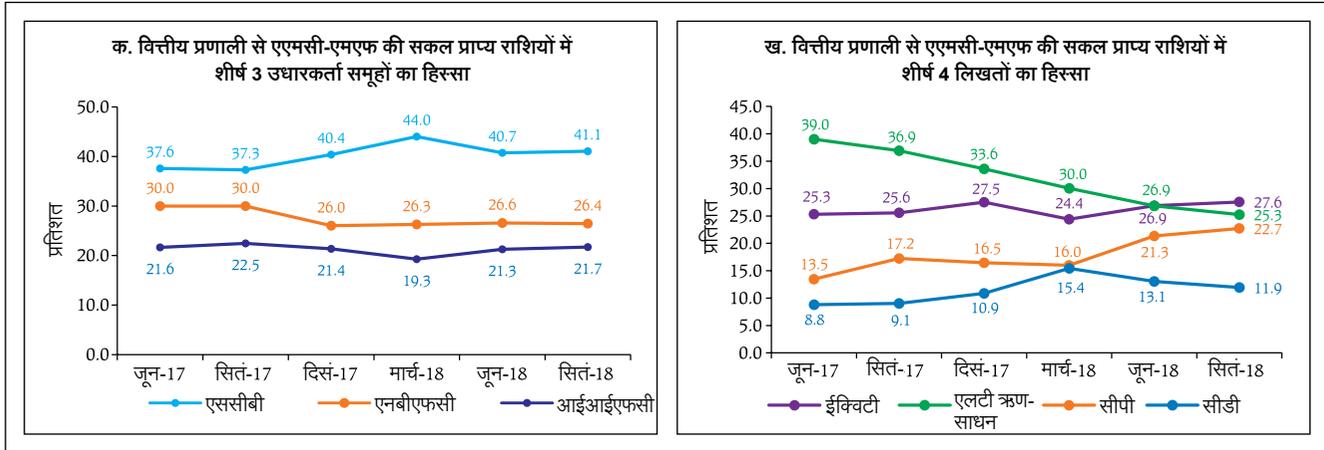
चार्ट 2.38: बैंकिंग प्रणाली (सीबी) के संबद्धता आँकड़े



स्रोत : भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा आकलन

⁵¹ क्लस्टर गुणांक: नेटवर्क के क्लस्टरिंग में यह मापा जाता है प्रत्येक नोड के बीच पारस्परिक संबंध कैसा है। विशेष रूप से, यह ज्यादातर संभावना रहती है कि एक नोड के दो पड़ोसी (वित्तीय नेटवर्क के मामले में बैंकों की काउंटर पार्टि) अपने आप में भी पड़ोसी होते हैं। नेटवर्क का उच्च क्लस्टर गुणांक सिस्टम में विद्यमान उच्च स्थानीय अंतरसंबद्धता के समरूप होता है।

चार्ट 2.39: आसित प्रबंधन कंपनियों की सकल प्राप्य राशियां



स्रोत : भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा आकलन।

राशियों में कमी आई है। एचएफसी का अंश लगभग स्थिर रहा है (चार्ट 2.39 ए)।

2.76 एएमसी-एफसी, मुद्रा बाजारों (विशेषकर वाणिज्यिक पत्र (सीपी) और जमा प्रमाणपत्र (सीडी)) में काफी सक्रिय थे, जहां प्राप्य राशियां अल्पकालिक स्वरूप की होने के नाते लगभग 47 प्रतिशत थीं। शेष 53 प्रतिशत प्राप्त होने वाली राशियां दीर्घावधि स्वरूप की थीं, जिसमें एलटी ऋण-साधन और ईक्विटी में एएमसी की सकल प्राप्य राशियों का काफी महत्वपूर्ण हिस्सा था। अन्य लिखतों विशेष रूप से सीपी और सीडी (चार्ट 2.79 बी) की बढ़ती हिस्सेदारी के कारण एएमसी की सकल प्राप्य राशियों में तेजी से कमी आई।

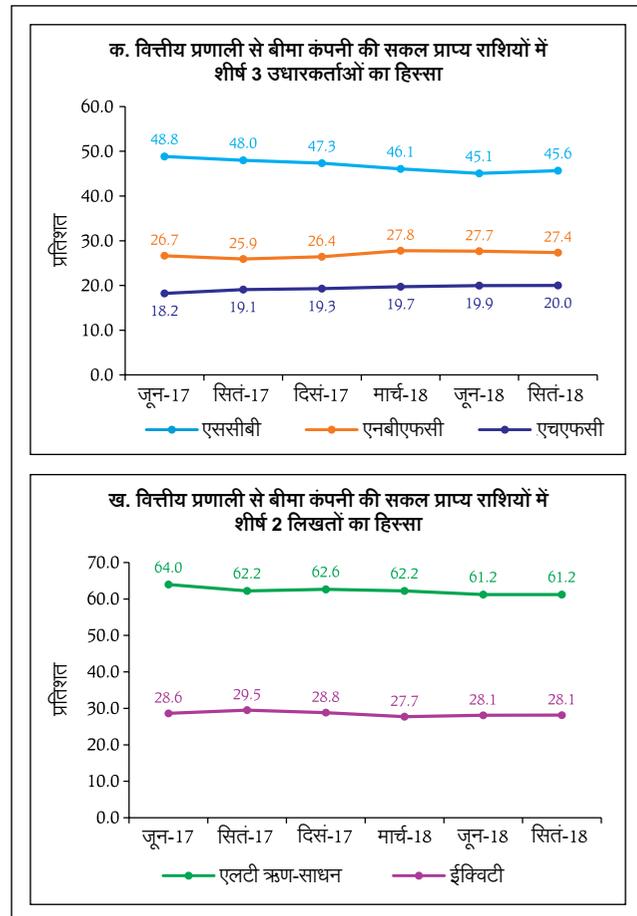
बीमा कंपनियों का एक्सपोजर

2.77 बीमा कंपनियों के पास रु.5,098 बिलियन की कुल प्राप्य राशियां थीं और सितंबर 2018 के अंत तक वह वित्तीय प्रणाली के लिए लगभग कुल 202 बिलियन की निधियों के साथ दूसरा सबसे बड़ा प्रदाता बन गया।

2.78 एएमसी-एमएफ की तरह, इनकी सकल प्राप्य राशियों का ब्योरा यह दर्शाता है कि उनकी निधियों के शीर्ष 3 प्राप्तकर्ताओं में एससीबी के बाद एनबीएफसी और एचएफसी थे। बीमा कंपनियों की संपूर्ण प्राप्य राशियों में अधिकांशतः एलटी ऋण-साधन और इक्विटी के एक्सपोजर के साथ कुछ लघु अवधि के एक्सपोजर शामिल थे। बीमा कंपनियों की रूढ़िवादी

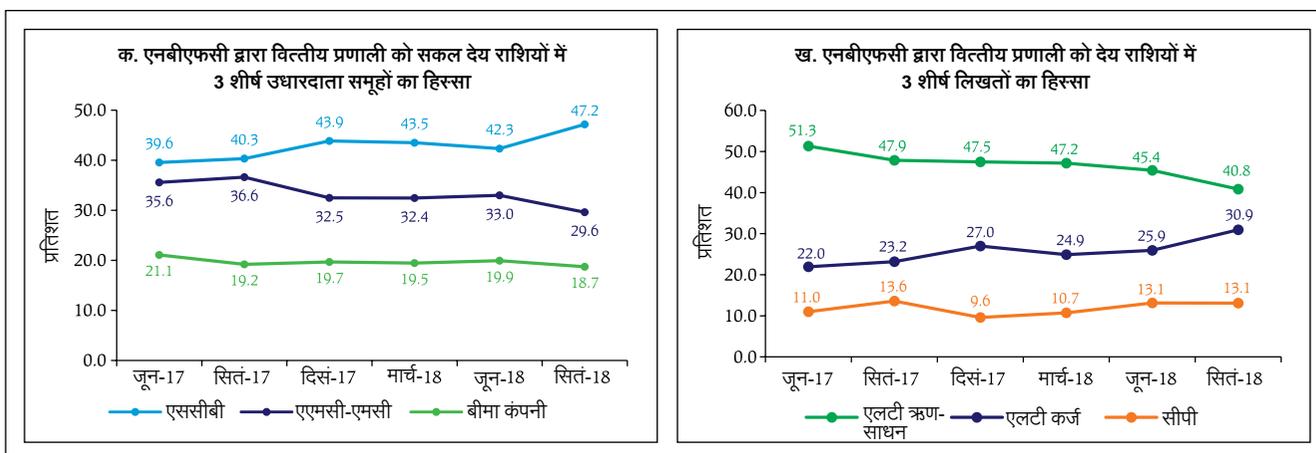
निवेश शैली के अनुरूप, विभिन्न उधारकर्ताओं की हिस्सेदारी और विभिन्न लिखतों के हिस्सेदारी में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं हुआ है (चार्ट 2.40 ए और बी)।

चार्ट 2.40: बीमा कंपनियों की सकल प्राप्य राशियां



स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा गणना

चार्ट 2.41: एनबीएफसी की सकल प्राप्य राशियां



स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा गणना

एनबीएफसी के एक्सपोजर

2.79 एनबीएफसी, सितंबर 2018 के अंत तक, लगभग 7,458 बिलियन की सकल देय राशियों और लगभग 560 बिलियन की सकल प्राप्य राशियों के साथ वित्तीय प्रणाली से सबसे बड़े निवल उधारकर्ता थे। सकल प्राप्य राशियों का ब्योरा यह दर्शाता है कि सबसे अधिक निधियां, एससीबी के बाद एएमसी-एमएफ और बीमा कंपनियों से प्राप्त हुई थीं। पिछली कुछ तिमाहियों में एससीबी के हिस्से में वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। (चार्ट 2.41 ए)।

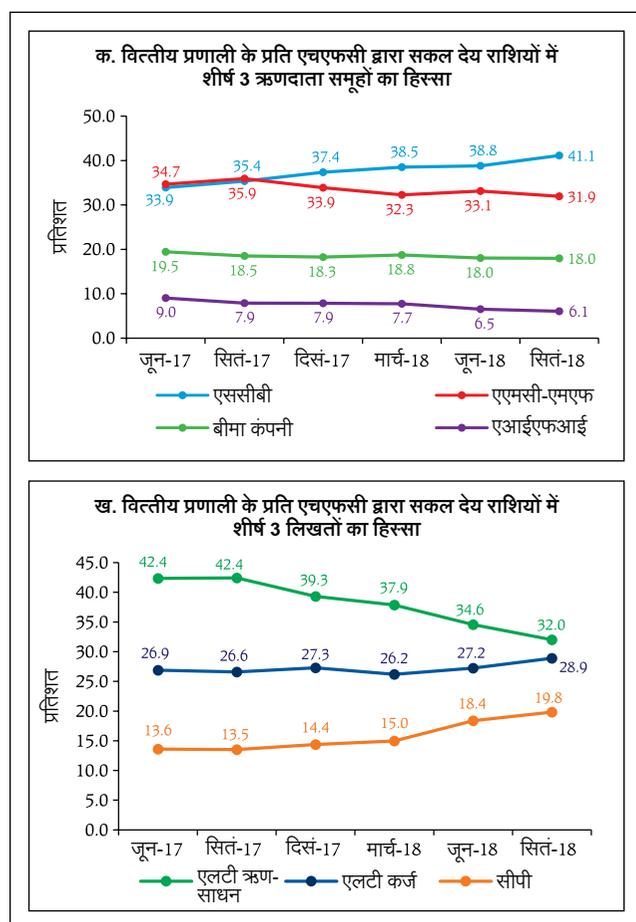
2.80 एनबीएफसी के निधियन में लिखतों का संयुक्त रूप से चयन, एलटी ऋण-साधन (एससीबी तथा एआईएफआई द्वारा प्रदत्त) और सीपी (मुख्य रूप से एएमसी-एमएफ द्वारा और कुछ हद तक एससीबी द्वारा प्रदत्त) दोनों में वृद्धि और एलटी ऋण-साधन (बीमा कंपनियों और एएमसी-एमएफ द्वारा अंशदान) के अंशदान में कमी को प्रदर्शित करता है। (चार्ट 2.41 ख)

आवास वित्त कंपनियों में एक्सपोजर

2.81 एचएफसी, सितंबर 2018 के अंत तक, लगभग रु. 5,689/- बिलियन की सकल देय राशियों और केवल रु. 412 बिलियन की सकल प्राप्य राशियों के साथ वित्तीय प्रणाली से निधियों के दूसरे सबसे बड़े उधारकर्ता थे। एचएफसी का उधार पैटर्न एनबीएफसी के समान था सिवाय एआईएफआई जिन्होंने एचएफसी को निधि उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभाई। हालांकि एससीबी को छोड़कर, जिसकी हिस्सेदारी

एचएफसी को धन उपलब्ध कराने में बढ़ी है, जबकि एएमसी, बीमा कंपनियों और एआईएफआई के हिस्सेदारी में गिरावट आई है (चार्ट 2.42 ए)।

चार्ट 2.42: एचएफसी द्वारा सकल देय राशियां



स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा गणना

2.82 एनबीएफसी के मामले में, एलटी ऋण-साधन, एलटी ऋण और सीपी सबसे बड़े तीन लिखत थे जिसके माध्यम से एचएफसी ने वित्तीय बाजार से धन जुटाया जबकि पिछली छह तिमाहियों में उनके फंडिंग मिक्स में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। सीपी (एमसी और कुछ हद तक एससीबी द्वारा अभिदत्त) और एलटी ऋण (बैंकों और एआईएफआई द्वारा) पर भरोसे में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जबकि एलटी ऋण-साधनों में कमी आई है (चार्ट 2.42 बी)।

सीपी बाजार : एक सूक्ष्म विश्लेषण⁵²

2.83 सभी अल्पकालिक लिखतों जिसके माध्यम से वित्तीय संस्थान एक दूसरे से धन जुटते हैं, में सीपी सबसे महत्वपूर्ण है और हाल ही में आए संकट और इस बाजार में जोखिम के पुनर्मूल्यनिर्धारण के आलोक में, सीपी बाजार की नेटवर्क टोपोलॉजी प्रस्तुत की गई है।

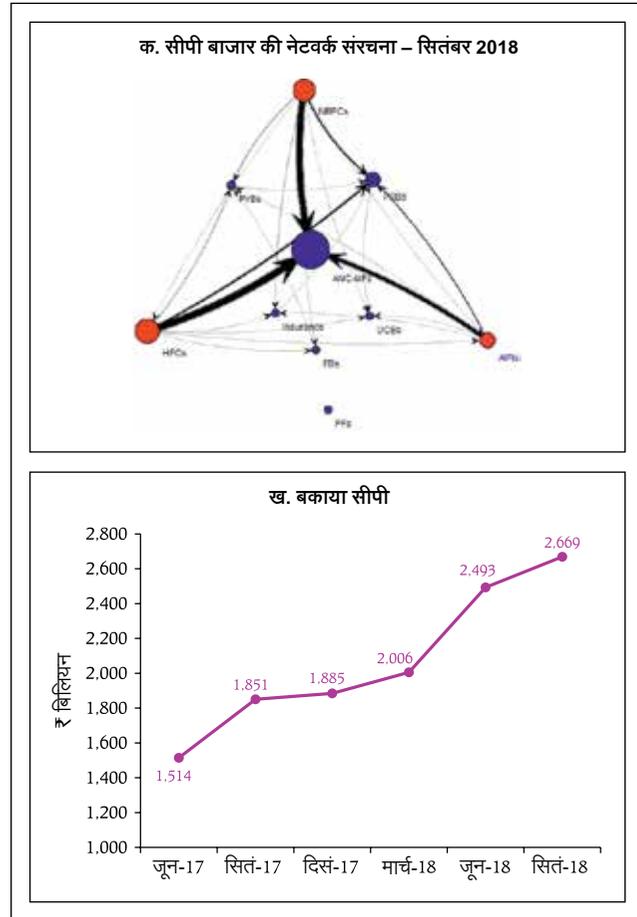
2.84 सीपी बाजार में, एमसी-एमएफ सबसे बड़े निवेशक हैं और एचएफसी, एनबीएफसी और एआईएफआई सबसे बड़े निर्गमकर्ता हैं। सितंबर 2017 और सितंबर 2018 के बीच बकाया सीपी के परिमाण में काफी वृद्धि हुई है (चार्ट 2.43 और 2.44)।

पारस्परिक विश्लेषण⁵³

एससीबी के लिए संयुक्त शोधनक्षमता⁵⁴- चलनिधि⁵⁵ अंतरसंबंध विश्लेषण

2.85 पारस्परिक विश्लेषण एक नेटवर्क तकनीक है, जो विभिन्न बैंकों के प्रणालीगत रूप से महत्व का अनुमान लगाने के लिए उपयोग में लायी जाती है। बैंक, जो प्रणालीगत रूप से काफी महत्वपूर्ण हैं, की विफलता के परिणाम स्वरूप बैंकिंग प्रणाली में शोधन क्षमता एवं चलनिधि की अधिक हानि होती है। बदले में, शोधन क्षमता और चलनिधि की हानि, बैंकों की प्रारंभिक पूंजी और तरलता की स्थिति के साथ-साथ विफल होने वाले बैंक का शेष बैंकिंग सिस्टम के साथ अंतरसंबंधों की संख्या, स्वरूप (वह ऋणदाता हो अथवा उधारकर्ता) तथा परिमाण पर निर्भर करता है।

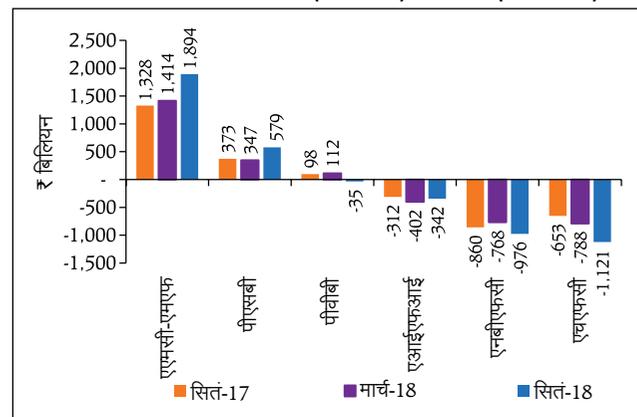
चार्ट 2.43 : सीपी बाजार



टिप्पणी : एक ही समूह की संस्थाओं के बीच लेनदेन को प्राप्य और देय राशियों में शामिल नहीं किया गया है। लाल वृत्तों का आशय निवल देयता संस्थानों से और नीले वृत्तों का आशय निवल प्राप्तकर्ता संस्थानों से है।

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा गणना।

चार्ट 2.44: सीपी - अभिदत्त (धनात्मक) / निर्गत (ऋणात्मक)



स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा गणना

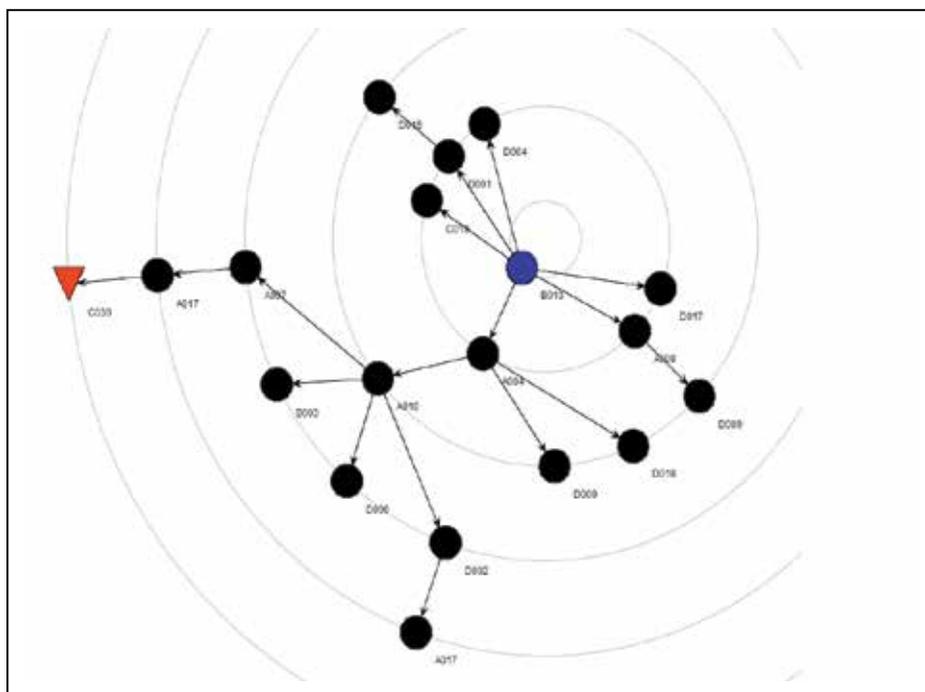
⁵² यह सम्पूर्ण सीपी मार्केट का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, बल्कि उस बाजार का केवल वह भाग जिसमें सीपी वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी भी किया जाता है और रखा भी जाता है।

⁵³ कार्य-पद्धति के लिए कृपया अनुबंध 2 देखें।

⁵⁴ शोधन क्षमता अंतरसंबंध विश्लेषण में, एक अथवा एक से अधिक बैंकों की विफलता के दूरगामी प्रभाव के कारण बैंकिंग सिस्टम में कुल हानि।

⁵⁵ तरलता अंतरसंबंध विश्लेषण में, जब किसी एक बैंक की तरल आस्तियां, बड़े निवल देनदारों की विफलता के कारण उत्पन्न तरलता दबाव को पूरी नहीं कर पाती हैं तो उसे विफल बैंक समझा जाता है। तरल आस्तियों को निम्नानुसार मापा जाता है : अतिरिक्त एसएलआर + अतिरिक्त सीआरआर + एनडीटीएल का 15%

चार्ट: 2.45 प्रतिनिधिक संक्रामक प्लॉट - बैंक की विफलता का प्रभाव



नोट : 'ट्रिगर संस्थान' (केंद्र के पास एकल नीला नोड B013) की विफलता से संक्रामक प्रसार को प्रदर्शित किया गया है। काले नोड शोध क्षमता समस्याओं के कारण विफल हो गए हैं, लाल नोड तरलता के मुद्दों के कारण विफल हुए हैं।

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां और कर्मचारी गणना।

2.86 इस विश्लेषण में, बैंकों को एक-एक करके काल्पनिक रूप से ट्रिगर किया गया है और यह देखा गया है कि इसकी वजह से विफल होने वाली बैंकों की संख्या और शोध क्षमता और तरलता नुकसान की मात्रा के रूप में बैंकिंग प्रणाली पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है। (चार्ट:2.45)

2.87 एफएसआर के अंतिम संस्करण तक, शोधन क्षमता संक्रामकता के लिए असफलता मानदंड टियर-1 सीआरएआर को 7 प्रतिशत से नीचे गिरने के रूप में लिया गया था। तथापि, सितंबर 2018 के अंत तक 5 पीएसबी इन मानदंडों को पूरा नहीं करते थे और नियोजित मॉडल की धारणा के तहत यह 5 बैंक विफल हो जाते।

2.88 यह अंतर्निहित संप्रभुता गारंटी के कारण है, जिसका लाभ पीबीएस लेते हैं अन्यथा विनियामक पूंजी की आवश्यकता का उल्लंघन करने की स्थिति में ये बैंक डिफॉल्ट कर सकते थे। पीएसबी और पीवीबी के बीच के इन अंतरों का पता लगाने के लिए संक्रामक विश्लेषण इस बार दो दृष्टिकोणों के तहत किया गया है।

2.89 पहले दृष्टिकोण में पीएसबी की निहित संप्रभुता गारंटी के द्वारा पाई गई स्थिरता को पीएसबी और पीवीबी के लिए विभेदित शोध क्षमता विफलता मानदंड अपनाते हुए हिसाब में लिया गया। पीएसबी को केवल तभी विफल माना जाता है जब उसकी टियर-1 पूंजी शून्य से कम हो जाए, जबकि पीवीबी के लिए मानदंड पहले जैसा ही रहता है, टियर-1 सीआरएआर का 7 प्रतिशत से नीचे गिरना। अब जब एक काल्पनिक बैंक की विफलता शुरू हो जाती है, तो पीएसबी अभी भी असफल ट्रिगर बैंक से होने वाले नुकसान के प्रति संवेदनशील होगा, लेकिन संक्रामक नहीं होगा क्योंकि यह धारणा है कि वे सभी नुकसानों को अवशोषित करेंगे (जब तक उनका टियर-1 सीआरएआर 0 प्रतिशत से अधिक रहता है) और उन्हें आगे प्रसारित नहीं करेंगे।

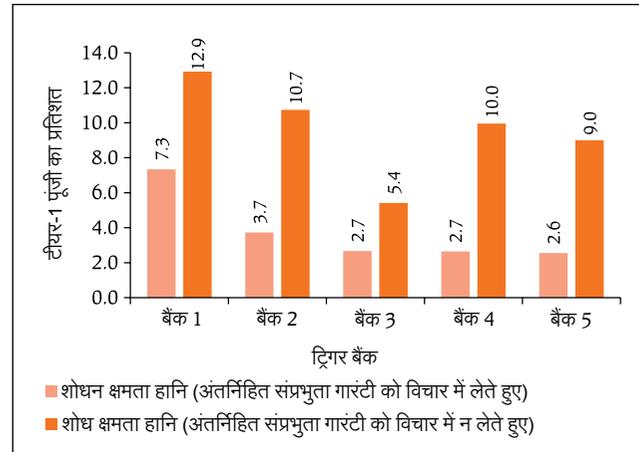
2.90 दूसरे दृष्टिकोण में यह माना जाता है कि पीएसबी को सोवरिन लाभ उपलब्ध नहीं है और सभी व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए वह पीवीबी के समान हैं। इसके बाद मौजूदा मॉडल की मान्यताओं के अनुसार, यह अर्थ निकलता है कि वे पांच

पीएसबी जो 7 प्रतिशत की टियर-1 पूंजी की कसौटी पर खरे नहीं उतरते हैं, डिफॉल्ट कर सकते हैं और वे अपने आप ही एक संक्रामक प्रक्रिया शुरू कर देंगे। इसलिए अब जब हम एक ट्रिगर बैंक की काल्पनिक विफलता पर विचार करते हैं, तो प्रणाली को होने वाले नुकसान की वजह केवल ट्रिगर बैंक को नहीं माना जाएगा, बल्कि 5 पीएसबी के कारण भी होगा जो स्वचालित रूप से ट्रिगर हुए थे।

2.91 किसी भी ट्रिगर बैंक के दो दृष्टिकोणों के बीच का अंतर पीएसबी डिफॉल्ट के कारण शोध क्षमता/ तरलता हानि की संभाव्य बढ़ी हुई मात्रा को दर्शाता है और साथ ही वह निहित संप्रभु गारंटी प्राप्त, एक अपर्याप्त पूंजी वाली सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली के कारण संभाव्य प्रणालीगत नुकसान को भी दर्शाता है।

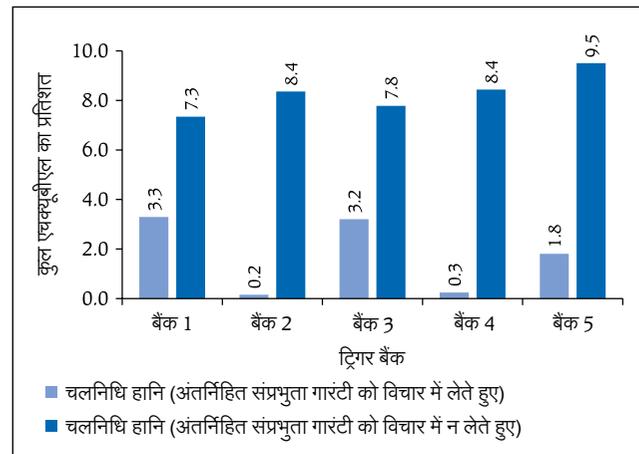
2.92 शोधक्षमता हानि निर्माण करने की अधिकतम क्षमता वाले शीर्ष 5 बैंकों द्वारा किए गए नुकसानों को दोनों दृष्टिकोणों के तहत प्रस्तुत किया गया है। दृष्टिकोण 1 के तहत, बैंक-1 की विफलता से बैंकिंग प्रणाली की टियर -1 पूंजी के 7.3 प्रतिशत शोधक्षमता हानि होगी, कुल एचक्यूएलए के 3.3 प्रतिशत की तरलता हानि होगी और 7 बैंकों की विफलता होगी। दृष्टिकोण 2 के तहत, टियर-1 पूंजी में शोधक्षमता हानि 12.9 फीसदी बढ़ गई होगी, एचक्यूएलए के 7.3 प्रतिशत तरलता हानि होगी और डिफॉल्ट करने वाले बैंकों की संख्या बढ़कर 23 हो जाएगी। (चार्ट : 2.46, 2.47 और 2.48)

चार्ट 2.46: शोध क्षमता हानि



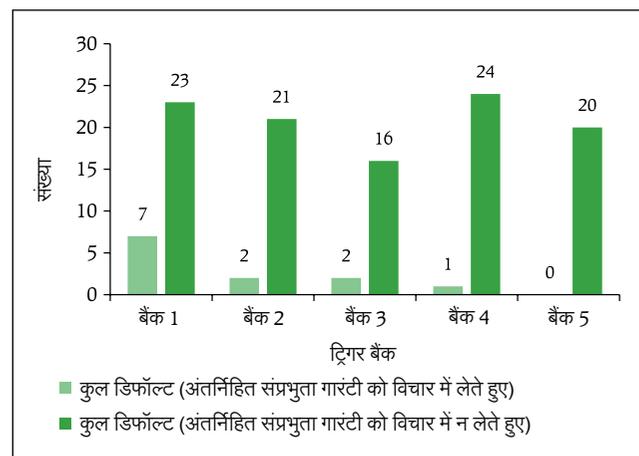
स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा गणना।

चार्ट 2.47: चलनिधि हानि



स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा गणना।

चार्ट 2.48: बैंक डिफॉल्ट की संख्या



स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ द्वारा गणना।

2.93 इस संदर्भ में भारतीय रिजर्व बैंक की त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई (PCA) के अधीन बैंकों के संभावित प्रणालीगत पदचिह्न का विश्लेषण बॉक्स 2.1 में प्रस्तुत किया गया है।

एससीबी को समष्टि आर्थिक झटकों के बाद शोधन क्षमता संक्रामक प्रभाव⁵⁶

2.94 यदि, अर्थव्यवस्था में सामान्यीकृत मंदी की स्थिति में बैंकिंग प्रणाली में समष्टि आर्थिक झटके लगने के कारण संकट उत्पन्न होता है तो बैंक की विफलता का संक्रामक प्रभाव

बढ़ने की संभावना है। एससीबी को समष्टि आर्थिक झटके दिए जाते हैं जिससे कुछ एससीबी शोधन क्षमता मानदंड में विफल हो जाते हैं, जो बाद में ट्रिगर के रूप में कार्य करते हैं जिससे शोधन क्षमता का और नुकसान होता है। व्यक्तिगत बैंकों की पूंजी पर समष्टि अर्थिक झटकों का प्रारंभिक प्रभाव मैक्रो-तनाव परीक्षणों से लिया गया था, जहां एक बेसलाइन और दो (मध्यम और तीव्र) प्रतिकूल परिदृश्यों को सितंबर 2019⁵⁷ के लिए लिया गया।

बॉक्स 2.1: पीसीए बैंक: संक्रामकता विश्लेषण का उपयोग करके उनके प्रणालीगत पदचिह्न में परिवर्तन का अनुमान

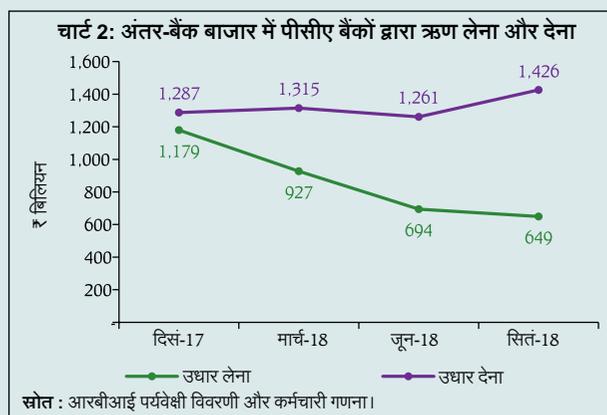
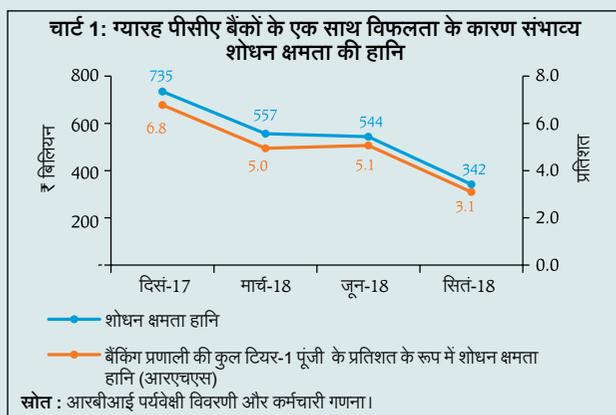
पीसीए ढांचे ने पीसीए बैंकों के प्रणालीगत पदचिह्न को कम करने में मदद की है या नहीं इसका आकलन करने के लिए संक्रामकता विश्लेषण का उपयोग करके अभ्यास किया गया।

सही या अंतर्भूत प्रणालीगत पदचिह्न का अनुमान केवल तभी लगाया जा सकता है जब हम पीसीए बैंकों द्वारा प्राप्त निहित संप्रभुता गारंटी के लाभ को समाप्त करते हैं (जैसा कि पहले दृष्टिकोण 2 में था)। ऐसा करने पर पीसीए बैंकों के एक साथ विफल हो जाने की स्थिति में बैंकिंग प्रणाली की कुल शोधन क्षमता हानि पर विचार करके प्रणालीगत प्रभाव अनुमानित किए जा सकते हैं।

ग्यारह पीसीए बैंकों की एक साथ विफलता के कारण हो रही शोधन क्षमता हानि पिछली 4 तिमाहियों में 735 बिलियन रुपए

(कुल टियर -1 पूंजी का 6.8 प्रतिशत) से घटकर 342 बिलियन रुपए (कुल टियर -1 पूंजी का 3.1 प्रतिशत) हो गयी है और इस हद तक पीसीए ढांचा पीसीए बैंकों के प्रणालीगत पदचिह्न को कम करने में सफल रहा है (चार्ट 1)

पीसीए ढांचे के तहत पीसीए बैंकों को ऋण देने संबंधी और अन्य प्रतिबंधों के परिणाम स्वरूप संपर्क के माध्यम से प्रणाली पर पड़ने वाले प्रभाव में कमी आई है। इसने पीसीए बैंकों की विफलता के मामले में बैंकिंग प्रणाली को होने वाली संक्रामक हानियों को कम कर दिया है (चार्ट 2)।



⁵⁶ पीएसबी और पीवीबी दोनों के लिए विफलता मानदंड टियर-1 सीआरएआर के 7 प्रतिशत से नीचे गिरने के रूप में लिया गया है।

⁵⁷ मैक्रो-स्ट्रेस परीक्षण के परिणामों का उपयोग संक्रामकता विश्लेषण के लिए एक इनपुट के रूप में किया गया। निम्नलिखित धारणाएं बनाई गईं:

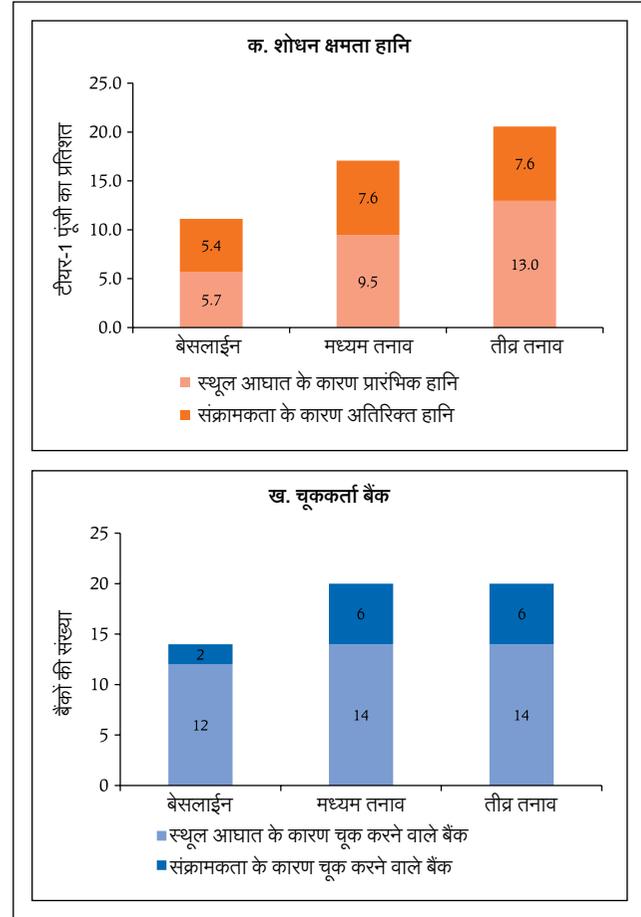
क एक स्थूल परिदृश्य के तहत परियोजना का नुकसान (अनुमानित टियर 1 सीआरएआर में प्रतिशत के संदर्भ में, कमी के रूप में गणना की गई, सितंबर 2019 में सितंबर 2018 में वास्तविक मूल्य के संबंध में) सितंबर 2018 की पूंजी की स्थिति पर सितंबर 2018 और सितंबर 2019 दोनों के लिए अनुपातिक समान तुलनपत्र संरचनाओं को मानते हुए लागू किया गया।

ख वित्तीय संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर के संबंध में यह माना गया है कि वह सितंबर 2018 और सितंबर 2019 के लिए समान ही रहने वाला है।

2.95 समष्टि आर्थिक झटकों के कारण आधारभूत, मध्यम और तीव्र तनाव परिदृश्यों के लिए टीयर -1 पूंजी की शुरुआती पूंजी हानि क्रमशः 5.7 प्रतिशत, 9.5 प्रतिशत और 13 प्रतिशत है। समष्टि आर्थिक झटकों के कारण असफल रहने वाले बैंकों की संख्या आधारभूत के लिए 12 और मध्यम और तीव्र तनाव, दोनों के लिए 14 है।

2.96 वृहद तनाव परीक्षण के परिणाम पर व्यास संक्रामक प्रभाव से पता चलता है कि संक्रामकता की वजह से (समष्टि झटके के कारण पूंजी में हुए प्रारंभिक नुकसान के अलावा) बैंकिंग प्रणाली को अतिरिक्त शोधन क्षमता हानि टीयर -1 पूंजी के संदर्भ में तीव्र दबाव के अतिरिक्त आधार रेखा के लिए 5.4 प्रतिशत तक तथा मध्यम और तीव्र तनाव दोनों के लिए 7.6 प्रतिशत तक सीमित रहा और तीव्र दबाव बना रहा। इसके अलावा, संक्रामकता के कारण डिफॉल्ट करने वाले बैंकों की अतिरिक्त संख्या (समष्टि झटके के कारण डिफॉल्ट करने वाले शुरुआती बैंकों को छोड़कर) बेसलाइन के लिए दो, मध्यम और तीव्र तनाव, दोनों के लिए छः है। (चार्ट: 2.49)

चार्ट 2.49: समष्टि आर्थिक झटकों के बाद संक्रामकता का प्रभाव (शोधन क्षमता संक्रामकता)



टिप्पणी : सितंबर 2019 के लिए अनुमानित पूंजी में हितधारकों द्वारा लगाई किसी भी पूंजी की गणना नहीं की गई है। अनुमान के आकलन के दौरान पूंजीगत भंडार में रूढ़ि के अनुसार 25 प्रतिशत न्यूनतम लाभ हस्तांतरण को भी ध्यान में लिया गया है।
स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणी और कर्मचारियों की गणना।

अध्याय III

वित्तीय क्षेत्र: विनियमन एवं गतिविधियां

वैश्विक वित्तीय संकट के बाद, ऐसा प्रतीत होता है कि बैंक पूंजी के बेहतर दौर में वैश्विक रूप से प्रणालीगत आघात-सहनीयता बढ़ गई है। वैश्विक वित्तीय बाजार में, लिबॉर पश्चात् बदलाव का क्रम जारी है। घरेलू मोर्चे पर, रिज़र्व बैंक ने सरकारी प्रतिभूति और रिपो बाजारों को मजबूत करने के लिए कई नीतिगत उपाय किए। पूंजी बाजार में, एसआईपी के जरिए म्युच्युअल फंडों में अधिक निवेश से उज्ज्वल स्थिति रही। भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) ने क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के लिए प्रकटीकरण एवं पारदर्शिता मानकों को उन्नत बनाने के अलावा, डेरिवेटिव, म्युच्युअल फंड और कमोडिटी डेरिवेटिव बाजार की निगरानी एवं सत्यनिष्ठा को आगे और मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

दिवाला एवं शोधन अक्षमता का नया दौर जो 2016 में प्रभावी हुआ, वह किसी कॉर्पोरेट देनदार के दिवाला समाधान के मामले में बाजार-निर्देशित तथा समयबद्ध प्रक्रिया उपलब्ध कराता रहा है, जिससे वित्तीय संस्थाओं को अपने तुलन पत्र को साफ करने में मदद मिली है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इससे मौजूदा ऋण संस्कृति और अनुशासन में एक मूलभूत बदलाव लाने में मदद मिली है।

पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने अधिक से अधिक नागरिकों को पेंशन दायरे में लाने का प्रयास जारी रखा। विनियामक ने राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के संबंध में निवेश दिशानिर्देशों में परिवर्तन किया ताकि इक्विटी म्युच्युअल फंडों में एक्सपोजर को सीमित किया जा सके।

प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण घरेलू बीमाकर्ताओं (डीएसआईआई) को पहचानने की प्रक्रिया शुरू होने, जोखिम आधारित पूंजी (आरबीसी) के कार्यान्वित होने और सीईआरटी-फिन के ऑपरेशनल होने के साथ ही भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) बीमा क्षेत्र की आघात-सहनीयता को मजबूत करने का प्रयास कर रहा है।

फिनटेक और सुपटेक के साथ सहभागिता बढ़ रही है। विनियामक के लिए चुनौती यह है कि किस प्रकार कार्यक्षमता को विवेकपूर्ण उपायों के साथ संतुलित किया जाए ताकि जोखिम को कम किया जा सके और फिनटेक द्वारा उपलब्ध अवसरों का उपयोग किया जा सके।

खंड क

अंतरराष्ट्रीय और घरेलू गतिविधियां

I. बैंक

क) अंतरराष्ट्रीय विनियामक और बाजार गतिविधियां

3.1 अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआईएस) ने जून 2018¹ में जारी अपनी वार्षिक आर्थिक रिपोर्ट (ईआर) में बताया है कि बासल III पूंजी अपेक्षा ने बैंकों को विफल होने के जोखिम से सुरक्षा प्रदान की है। इसके निष्कर्ष दर्शाते हैं कि विपत्ति का सामना कर रहे बैंक के खराब होने की संभावना 2 वर्ष की अवधि के भीतर कम हो जाती है क्योंकि इनका टियर -1 जोखिम आधारित पूंजी अनुपात बढ़ जाता है और यदि उच्च लीवरेज-आधारित टियर-1 पूंजी अनुपात भी बनाए रखा जाता है यह जोखिम और भी कम हो जाता है। इस रिपोर्ट में टियर -1 पूंजी

अनुपात और लीवरेज अनुपात आधारित विनियमों की पूरक प्रकृति भी रेखांकित की गई है।

3.2 तथापि, वार्षिक आर्थिक रिपोर्ट में दो ऐसे क्षेत्र इंगित किए गए हैं, जहां यह महसूस किया गया कि आघात सहनीयता बढ़ाने के लिए अधिक कार्रवाई करने की आवश्यकता है। पहली चिंता आघात सहनीयता और विनियामकीय रिपोर्टिंग अपेक्षाओं के बीच लिंक को लेकर है जिससे विनियामकीय अंतरपणन का जोखिम बढ़ जाता है। ऐसा ही एक उदाहरण विनियामकीय रिपोर्टिंग तारीख के आसपास बैंकों द्वारा की जानेवाली विंडो-ड्रेसिंग से संबंधित है। दूसरी चिंता का विषय बैंकों की लाभप्रदता के परिदृश्य से संबंधित है। हालांकि, बैंकों के तुलन पत्र और

¹ <https://www.bis.org/publ/arpdf/ar2018e.pdf> पर उपलब्ध।

बिजनेस मॉडल समाशोधन के संदर्भ में काफी प्रगति हुई है, तब भी लाभप्रदता संभावनाओं के संबंध में इनमें से कई के बाजार मूल्यन को लेकर निवेशकों में संशय की स्थिति बनी रही। मूल्यन को लेकर ऐसी संशय स्थिति से बाजार-आधारित आघात सहनीयता उपाय जैसे बाजार लीवरेज अनुपात या ऋण चूक स्वैप स्प्रेड हतोत्साहित होते हैं; दूसरे शब्दों में, निवेशक बैंकों को खराब लाभप्रदता परिदृश्य के लिए दंडित करते हैं और उन्हें प्रेरित करते हैं कि वे अल्पावधि लाभ अनुमान बनाए रखने के महत्व को कम न होने दें फिर चाहे ऐसे नतीजे लंबी अवधि के लिए लाभप्रद क्यों न हों।

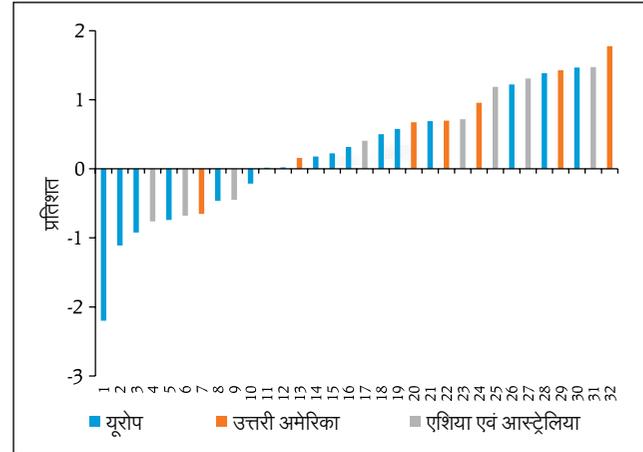
3.3 ईआईए यह भी तर्क देता है कि बैंकों के आंतरिक मॉडल की बाध्यताओं से अपेक्षित है कि वे पूंजी अपेक्षाओं की गेमिंग को रोकें और जोखिम भारित आस्ति (आरडब्ल्यूए) उपायों को समूचे क्षेत्र में और तुलनीय बनाएं। रिपोर्ट में वर्णित बीसीबीएस² रिपोर्ट से यह पता चलता है कि ऐसी अवांछित परिवर्तिता की बड़ी भूमिका हो सकती है। यह अध्ययन जो 10 प्रतिशत बेंचमार्क पूंजी अनुपात मानकर चलता है, दर्शाता है कि एकसमान बैंकिंग बही आस्तियों वाले दो बैंक ऐसा पूंजी अनुपात रिपोर्ट कर सकते हैं जो 4 प्रतिशत अंक तक अंतर दर्शा सकता है (चार्ट 3.1)। इसके अलावा, इस अध्ययन में यह भी पता चला कि कई मामलों में आंतरिक रूप से निर्मित जोखिम भार मानकीकृत अप्रोच के जोखिम भार से उल्लेखनीय रूप से कम थे- कॉर्पोरेट एक्सपोजर के मामले में 60 प्रतिशत अधिक तक कम थे (चार्ट 3.2) और पाई गई ऐसी कृति और संबंधित पूंजी राहत को उचित ठहराना मुश्किल है। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग मानक (आईएफआरएस) के तहत पूंजी अपेक्षा की ऐसी छेड़छाड़ का प्रभाव मॉडल आधारित प्रत्याशित ऋण हानि (ईसीएल) अनुमान पर भी पड़ेगा।

3.4 केंद्रीय बैंकों और वित्तीय बाजार विनियामकों ने ब्याज दर बेंचमार्क³ में सुधार लाने के लिए एक मुहिम चलाई है। ये बेंचमार्क बड़ी मात्रा के और कई प्रकार के वित्तीय उत्पादों एवं संविदाओं के लिए संदर्भ के रूप में हैं जिसमें डेरिवेटिव, ऋण और प्रतिभूतियां शामिल हैं। वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) तीन प्रकार के कार्यों में हुई प्रगति की निगरानी कर रहा है,

² बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासल समिति।

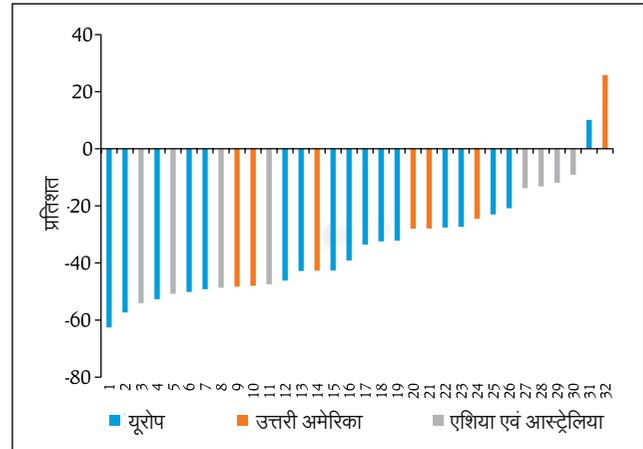
³ <https://www.bis.org/review/r180523b.htm> पर उपलब्ध।

चार्ट 3.1: आंतरिक जोखिम मॉडल के प्रयोग द्वारा प्रवृत्त पूंजी पर्याप्तता में परिवर्तनीयता: 32 प्रमुख वित्तीय संस्थाएं



टिप्पणी : यदि बैंक के स्वयं के अंतर्निहित मॉडल जोखिम भार का समायोजन सभी बैंकों द्वारा रिपोर्ट किए गए माध्यिका जोखिम भार से किया जाता है, तब 10 प्रतिशत बेंचमार्क पूंजी अनुपात में परिवर्तन। सरकार, बैंक एवं कॉर्पोरेट एक्सपोजर में एकसमान (परिकल्पित) सविभाग वाले 32 प्रमुख वित्तीय संस्थाओं द्वारा किए गए जोखिम आकलन पर आधारित; समग्र आरडब्ल्यूए स्तर पर सकल किया गया, अन्य सभी आरडब्ल्यूए घटकों की धारिता स्थिर रखा गया।
स्रोत : बीआईएस वार्षिक आर्थिक रिपोर्ट, 2018।

चार्ट 3.2: आंतरिक मॉडल एवं मानकीकृत अप्रोच के आधार पर जोखिम भारों की तुलना: 32 प्रमुख वित्तीय संस्थाएं



टिप्पणी : मानकीकृत अप्रोच (एसए) जोखिम भार से अंतर, प्रतिशत में।
स्रोत : बीआईएस वार्षिक आर्थिक रिपोर्ट, 2018।

नामत: (1) अंतर-बैंक प्रस्तावित दर (आईबॉर) को लेनदेनों की बड़ी संख्या के लिए निर्धारित करके उसे मजबूत करना। (2) उपयुक्त वैकल्पिक जोखिम-मुक्त दरों की पहचान करना तथा डेरिवेटिव को आईबॉर के स्थान पर उन्हें संदर्भ रूप में लेने के लिए प्रोत्साहित करना और (3) आईबॉर से संदर्भित संविदाओं के लिए एक मजबूत फॉल-बैक प्रावधान करना ताकि यदि आईबॉर समाप्त होता है तब वित्तीय अस्थिरता को कम किया जा सके।

3.5 पूरे विश्व में लगभग 350 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की संविदाएं लिबॉर के साथ जुड़ी हुई हैं, जो कि कई सारी प्रमुख मुद्राओं के लिए प्रमुख ब्याज दर बेंचमार्क है। मौजूदा कई संविदाएं 2021 से आगे जाएंगी (यह प्रस्ताव किया गया है कि इसके आगे लिबॉर समाप्त हो जाएगा)। वैकल्पिक संदर्भ दरों को अपनाते समय लिबॉर प्रयोक्ताओं को संविदाओं में संशोधन और प्रणाली को अद्यतन करने में काफी प्रयास करने होंगे ताकि। बावजूद इसके, जब ऐसे किसी महत्वपूर्ण सुधार की बात होती है, तब संबंधित प्राधिकारी परिपक्व वित्तीय बाजार से पीछे नहीं हटते हैं।

3.6 अपनी ओर से, फेडरल रिज़र्व (यूएस फेड) ने हाल ही में तीन नए बेंचमार्क दरें प्रसारित करना शुरू किया। इनमें से एक, सेक्योर्ड ओवरनाइट फाइनेंसिंग रेट (एसओएफआर) को फेडरल रिज़र्व बैंक ऑफ न्यूयॉर्क द्वारा यूएस लिबॉर (यूएसडी-लिबॉर) के विकल्प के रूप में माना गया है। ब्रिटिश पाउंड के संबंध में, संशोधित स्टर्लिंग ओवरनाइट इंडेक्स ऐवरेज (एसओएनआईए) को एक वैकल्पिक जोखिम-मुक्त दर के रूप में स्वीकार किया गया है। यूरोप मौजूदा यूरो बेंचमार्क – यूरो ओवरनाइट इंडेक्स ऐवरेज (ईओएनआईए) एवं यूरो अंतरबैंक प्रस्तावित दर (ईयूआरआईबीओआर) को हटाने और एक नए जोखिम मुक्त दर के रूप में यूरो अल्पावधि दर (ईएसटीईआर) प्रस्तावित करने पर विचार कर रहा है। तथापि, एक मुद्दा यह है कि चुनी गई अधिकतर दरें ओवरनाइट दरें हैं, जबकि लिबॉर में ऋण जोखिम शामिल है और यह एक मीयादी दर

है। अतः, महत्वपूर्ण चुनौती ऋण एवं मीयादी स्प्रेड की गणना हेतु एक मानक कार्यप्रणाली पर सहमत होना है जिसे जोखिम मुक्त दर से जोड़ा जा सके ताकि लिबॉर हेतु एक विकल्प का निर्माण हो सके। एक ओर जबकि ओवरनाइट सेक्योर्ड दरों को लिबॉर बेंचमार्क के प्रमुख प्रतिस्थापन के रूप में देखा जा रहा है, वहीं दूसरी ओर कुछ बाजार प्रतिभागी मीयादी दरों को प्रतिस्थापन के रूप में प्राथमिकता दे सकते हैं। किसी भी हालत में, बदलाव के दौरान ब्याज दर स्वैप (आईआरएस) बाजार और मूल्यन बाधित हो सकते हैं। साथ-साथ, आगामी फंडामेंटल रिव्यू ऑफ ट्रेडिंग बुक (एफआरटीबी)⁴ के अनुसार अनकदी ट्रेड के लिए उच्चतर पूंजी शुल्क शुरु करने से बैंकों के लिए भी वैकल्पिक जोखिम मुक्त दर को अपनाना एक महंगा कार्य होगा।

3.7 जी-20 को प्रस्तुत 2018 की एफएसबी की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, सरकार और वित्तीय क्षेत्र विनियामकों के समन्वित प्रयासों के चलते वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) के प्राथमिकता प्राप्त और साथ ही गैर-प्राथमिकता क्षेत्रों में भारत की स्थिति में पिछले वर्ष के मुकाबले सुधार हुआ है। प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में हुए सुधार विशेष रूप से 'क्षतिपूर्ति', हस्तांतरण/ ब्रिज/ बीमाकर्ताओं हेतु रन-ऑफ पावर तथा 'ओवर द काउंटर डेरिवेटिव'- ट्रेड रिपोर्टिंग एवं प्लेटफार्म ट्रेडिंग क्षेत्रों में हुए। 'कार्यान्वयन निगरानी नेटवर्क सर्वेक्षण' की नवीनतम स्थिति के अनुसार, एफएसबी के गैर-प्राथमिकता क्षेत्रों में भारत की स्थिति '22 सिफारिशों में से 20 में कार्यान्वयन पूरे हुए' रूप में दर्शायी गई है।

3.8 अन्य प्रमुख गतिविधियों में, आसन्न ब्रेक्सिट से यूके में उपलब्ध वित्तीय सेवाओं तक यूरोपीय यूनियन हाउसहोल्ड और कॉर्पोरेट की पहुंच सीमित हो जाएगी, जिसका बाजार चलनिधि और जोखिम प्रीमियम पर असर हो सकता है। यदि 'नो डील ब्रेक्सिट' परिदृश्य उभरकर आता है तो, यूरोपीय यूनियन वित्तीय संस्थाएं, प्रतिपक्षकार और निवेशक एक उपयुक्त कार्रवाई योजना की तैयारी करेंगे।

⁴ फंडामेंटल रिव्यू ऑफ ट्रेडिंग बुक या एफआरटीबी- बासल 2.5 संबंधी मुद्दों का समाधान करता है जैसे कि बैंकिंग एवं ट्रेडिंग बुक के बीच पूंजी अंतरपणन तथा आंतरिक जोखिम हस्तांतरण। यह ट्रेडिंग बुक एवं बैंकिंग बुक के बीच अधिक वस्तुपरक सीमा स्थापित करता है और इस प्रकार विनियामकीय बैंकिंग एवं ट्रेडिंग बुक के बीच पूंजी अंतरपणन को समाप्त करता है। एफटीआरबी बाजार जोखिम पूंजी को निर्धारित करने में प्रयुक्त तरीके में परिवर्तन करता है। वित्तीय बाजार के काफी दबाव की अवधि के दौरान "सामान्यतर जोखिम" (टेल रिस्क) तथा पूंजी पर्याप्तता को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करने हेतु यह 99 प्रतिशत विश्वास स्तर के वीएआर के स्थान के पर 97.5 प्रतिशत विश्वास वाली प्रत्याशित कमी (ईएस) का प्रयोग करता है।

ख) घरेलू विनियामक और बाजार गतिविधियां

3.9 आईएल एण्ड एफएस से जुड़ी हाल की गतिविधियां उन जटिलताओं को रेखांकित करती हैं जो वित्तीय संगुट (एफसी) संरचना और उनकी निगरानी से जुड़े हुए हैं (बॉक्स 3.1)।

3.10 बैंकिंग प्रणाली की चलनिधि का अधिक कुशलतापूर्वक प्रबंध करने के लिए बैंकों को 2 प्रतिशत की बढ़ी हुई वृद्धिशील कार्व-आउट की अनुमति दी गई है, जो चलनिधि कवरेज अनुपात (एफएलएलसीआर) के तहत चलनिधि प्राप्त करने की सुविधा के तहत 1 अक्टूबर 2018 से कुल सांविधिक चलनिधि अनुपात

बॉक्स 3.1: वित्तीय संगुट – पहचान एवं निगरानी – एक गहन अवलोकन

वित्तीय संगुट (एफसी) एक ऐसी संस्थाओं का समूह होता है जिनकी गतिविधियां वित्तीय क्षेत्र में होती हैं। जैसे तो यह परिभाषा विशेष रूप से अलग-अलग आकार वाले कई प्रतिष्ठानों के एक विस्तृत स्वरूप को शामिल करती है, तब भी विनियामकीय क्षेत्राधिकार विशेष रूप से अतिरिक्त शर्तें लगाते हैं ताकि ऐसे वित्तीय संगुटों पर स्पष्ट रूप से फोकस किया जा सके जिनकी गतिविधियों का वित्तीय प्रणाली के बाह्य जगत पर समग्र रूप से काफी प्रभाव पड़ता है।

मिलर एवं मोदीग्लियानी के घर्षणरहित बाजार तथा गैर-सूचना असममिति की परंपरागत दुनिया में, किसी प्रतिष्ठान की पूंजीगत संरचना अप्रासंगिक है क्योंकि निवेशक अपने जोखिम वहन क्षमता के आधार पर विविधीकरण के जरिए अपना अपेक्षित जोखिम स्तर प्राप्त कर सकता है। ऐसे जगत में, इस प्रकार किसी प्रतिष्ठान को केवल अपने जोखिम के उस भाग के लिए श्रेय मिलता है जिसे विविध रूप से बांटा नहीं जा सकता (अर्थात् प्रणालीगत जोखिम)। तथापि, प्रतिष्ठान अपने जोखिम प्रोफाइल के बारे में उचित ध्यान देते हैं क्योंकि मिलर एवं मोदीग्लियानी द्वारा आकलन किए गए घर्षणरहित संसार से वास्तविकता भिन्न होती है। सूचना प्रवाह, कर, दिवालियापन लागत, सूचना एवं प्रोत्साहन अपूर्णता, दायरा एवं विविधीकरण लाभ की अर्थव्यवस्था (जिसमें आंतरिक पूंजी बाजार तक पहुंच शामिल है⁵) संगुट संरचना के लिए प्रोत्साहन उपलब्ध कराती है।

जैसाकि घरेलू वित्तीय बाजार में घटित आईएल एण्ड एफएस घटना व्याख्या करती है, संगुट संरचना से भी कुछ स्पष्ट जोखिम उत्पन्न होते हैं: अंतर्समूह लेनदेनों में एक्सपोजर मानदंड तथा दोहरे गियरिंग एवं जटिल अंतर-ग्रुप संरचना के जरिए लीवरेज को छिपाने के अवसर से संबंधित विनियमों की उपेक्षा करके विनियामकीय अंतरपणन के अवसर उत्पन्न होते हैं, जिससे कारोबार में उथल-पुथल के समय वित्तीय प्रणाली में एक संभावित स्पिलओवर जोखिम हो सकता है।

एफसी निगरानी संरचना जिसका वर्तमान में भारत में प्रयोग हो रहा है, पर आगे चर्चा की गई है और वे अंतर्निहित कारण जिनकी वजह से कुछ एफसी निगरानी प्रक्रियातंत्र की कमियों कारण असफल हुए, उन पर नीचे चर्चा की गई है।

वर्तमान में, वित्तीय संगुटों की निगरानी, वित्तीय संगुट निगरानी हेतु गठित एक अंतर-विनियामकीय फोरम (आईआरएफ-एफसी)

द्वारा की जा रही है जो कि एफएसडीसी उप-समिति (एफएसडीसी-एससी) के तत्वावधान के तहत गठित चार कार्यदलों में से एक है। इस कार्यदल को प्रमुख विनियामक सिद्धांत के तहत तैयार किया गया है। इस बॉक्स के शेष भाग में (क) एफसी की पहचान करने की मौजूदा प्रक्रिया (ख) एफसी की निगरानी संरचना; और (ग) कार्रवाई उत्प्रेरक बिंदुओं को परखा गया है।

(क) एफसी की पहचान

भारत में, अंतर विनियामकीय फोरम (आईआरएफ) ने 2013 में आईआरएफ निगरानी के तहत एफसी की पहचान करने के लिए निम्नलिखित परिभाषा अपनायी है:

“किसी समूह की दो या अधिक बाजार क्षेत्रों (बैंकिंग, बीमा, प्रतिभूति, गैर-बैंकिंग वित्त तथा पेंशन फंड) में उनकी उल्लेखनीय उपस्थिति के आधार पर एफसी के रूप में पहचान की जाएगी।”⁶

तदनुसार, इनमें से प्रत्येक बाजार क्षेत्र में उल्लेखनीय उपस्थिति की पहचान करने के लिए मात्रात्मक एवं वस्तुपरक मानदंड निर्धारित किए गए। दिलचस्प बात यह है कि कोई समूह जिसकी क्रॉस सेक्टरल गतिविधियों में उल्लेखनीय रूप से उपस्थिति है, लेकिन उक्त मानदंड द्वारा तय किए गए अनुसार कम से कम दो क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपस्थिति नहीं है, वह इस परिभाषा में शामिल नहीं है। हालांकि गतिविधियों में उल्लेखनीय उपस्थिति किसी संस्था के प्रणालीगत जोखिम में एक प्रमुख योगदाता होती है, लेकिन तब भी वह एकमात्र योगदाता नहीं है।

उक्त वजह से भारतीय संदर्भ में, एफसी की पहचान करने में ऋण सहायता के जरिए जटिल एवं छद्म अंतर-समूह लिंकेज तथा उथल-पुथल (बैंकिंग क्षेत्र लिंकेज के जरिए) के समय स्पिलओवर प्रभावों की प्रबलता महत्वपूर्ण तथ्य होते जा रहे हैं इसके अलावा, यह भी महत्वपूर्ण है कि ऐसे समूहों की निगरानी हो जो उल्लेखनीय स्पिलओवर प्रबलता के साथ वित्तीय मध्यस्थता में शामिल हों और उनके समूह के राजस्व का एक बड़ा भाग गैर-वित्तीय कारोबार से आ रहा हो।

(जारी...)

⁵ आंतरिक पूंजी बाजार वित्तीय संगुट के विभिन्न अनुषंगियों को उच्चतम संभावित प्रत्याशित रिटर्न के आधार पर पूंजी आबंटित करते हैं। ऐसे बाजारों तक पहुंच को अक्सर क्रेडिट रेटिंग प्रयोजन हेतु विचार में लिया जाता है।

⁶ वित्तीय सेवा उद्योग में सुधार: एक अधिक स्थिर प्रणाली हेतु प्रथाओं को मजबूत करना, इन्सटीट्यूट फॉर इन्टरनेशनल फाइनेंस, दिसंबर – 2009।

(b) एफसी की निगरानी

एफसी द्वारा चलनिधि प्रबंधन के संबंध में त्रैमासिक आधार पर जमा की जाने वाली वित्तीय संगुट विवरणियों (फिनकॉन) में निम्नलिखित जानकारी शामिल की जाती है:

क. अल्पावधि उधारी, जमाराशि नियोजन, बॉन्ड / डिबेंचर में निवेश, वाणिज्यिक पत्र (सीपी), जमा प्रमाणपत्र (सीडी), म्यूचुअल फंड की यूनिट, इत्यादि को शामिल करने वाले समूह के भीतर की संस्थाओं के आंतर-समूह लेनदेन। इस जानकारी को प्रत्येक तिमाही के अंत में बकाया राशि के रूप में, साथ ही तिमाही के दौरान इसमें परिवर्तन को भी कैप्चर किया जाता है। इससे संस्थाओं के भीतर निधि के संचार का पता लगाने में मदद मिलती है।

ख. प्रारम्भ की जाने वाली संशोधित फिनकॉन विवरणी फॉर्मेट का उद्देश्य एफसी में प्रत्येक समूह इकाई द्वारा लिए गए उधार से संबंधित अतिरिक्त विस्तृत जानकारी को कैप्चर करना है। इसके अलावा, अल्पावधि उधार (1 वर्ष तक) और दीर्घावधि उधार (एक वर्ष से अधिक) के संदर्भ में विभाजन भी प्राप्त किया जाएगा। इससे बैंकों और अल्पकालिक उधार पर एफसी के समूह संस्थाओं की निर्भरता का पता लगाने में मदद मिलेगी।

यद्यपि सूचना सेट काफी विस्तृत है, फिर भी यह अदूरदर्शी है और हो सकता है कि उभरते जोखिमों व कमजोरियों को पर्याप्त रूप से कैप्चर न कर पाए। सेबी ने हाल ही में क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों (सीआरए) के प्रकटन को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है। यह उन्नत प्रकटन मूल / समूह / सरकारी सहायता, चलनिधि स्थिति (गैर-बैंकों के लिए दूरदर्शी उपायों सहित जैसे परिपक्वता वाले ऋण दायित्व को पूरा करने के लिए उपयोग न की गयी ऋण व्यवस्था और नकदी प्रवाह की पर्याप्तता) से संबंधित है।

इस विश्लेषण और रेटिंग एजेंसियों के साथ आवधिक चर्चाओं में भी इस तरह के प्रकटन को शामिल करने से तिमाही विश्लेषण की गुणवत्ता अत्यधिक समृद्ध होगी।

(c) कार्रवाई ट्रिगर

जोखिम संवेदनशील एफसी निगरानी अभिशासन, जहां एफसी की निगरानी पर हस्तक्षेप इनके संयोजन के अनुपात में है (क) इकाई के आकार, और (ख) प्रतिकूल घटना की संभावना, (जैसे एक वर्ष की अवधि में) संभव उपचारी उपाय अधिक समय पर कर सकते हैं। एफसी के आकलन के संचालन के लिए सांकेतिक ट्रिगर घटनाओं में से कुछ प्रतिकूल रेटिंग कार्रवाई, एक निश्चित सीमा से नीचे आने वाली उपयोग न की गयी ऋण व्यवस्था और परिपक्व होने वाली देनदारियों का समुच्चय हो सकती हैं।

निष्कर्षतः, यद्यपि आईआरएफ-एफसी द्वारा की गयी वर्तमान एफसी निगरानी सामान्यतः वित्तीय संगुट पर्यवेक्षण पर बीआईएस के सभी प्रासंगिक दिशानिर्देशों को पूरा करती है, संभवतः संबन्धित एफसी की पहचान करने के लिए भारतीय परिस्थितियों में उनमें और सुधार करने, एफसी मूल्यांकन में बाजार-आधारित प्रतिक्रिया शामिल करने और समय पर कार्रवाई के लिए आनुपातिक ट्रिगर रखने की कुछ गुंजाइश है।

संदर्भ :

बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (2012): “प्रिसिपल्स फॉर दी सुपरविज़न ऑफ फिनांशियल कॉन्लोमरेट्स”, <https://www.bis.org/publ/joint29.htm>. पर उपलब्ध

अंतर्राष्ट्रीय वित्त संस्थान (2009): “रीफॉर्म इन दी फिनांशियल सर्विसेज़ इंडस्ट्री”, https://www.if.com/system/files/ifi-report_reformfinancialservicesindustry_1209.pdf. पर उपलब्ध

(एसएलआर) धारिता से कुल कार्व-आउट का उनकी शुद्ध मांग और मीयादी देनदारियों (एनडीटीएल) का 13 प्रतिशत है। सीमांत स्थायी सुविधा (एमएसएफ) के लिए उपलब्ध 2 प्रतिशत कार्व-आउट के साथ यह कुल कार्व-आउट एनडीटीएल की 15 प्रतिशत तक उपलब्ध है।

3.11 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों और आवास वित्त कंपनियों को वैकल्पिक निधियन चैनल विकसित करने में सक्षम बनाने के लिए, रिज़र्व बैंक ने बैंकों को कुछ विवेकपूर्ण शर्तों के अधीन रिज़र्व बैंक के साथ पंजीकृत प्रणालीगत महत्वपूर्ण जमाराशि स्वीकार

न करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-एनडी-एसआई) और राष्ट्रीय आवास बैंक के साथ पंजीकृत आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) द्वारा जारी किए गए बॉन्ड को आंशिक ऋण वृद्धि (पीसीई) प्रदान करने की अनुमति प्रदान की है।

3.12 एनबीएफसी को अपनी पात्र आस्तियों को प्रतिभूतिकृत करने / सौंपने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु, यह निर्णय लिया गया है कि मूल एनबीएफसी के लिए 5 वर्ष से अधिक की मूल परिपक्वता ऋण के संबंध में न्यूनतम धारिता अवधि (एमएचपी) की आवश्यकता में छूट दी जाए जो छह मासिक किस्तों की

चुकौती या दो त्रैमासिक किश्तों (जैसा भी लागू) की प्राप्ति तक हो। तथापि एनबीएफसी को न्यूनतम प्रतिधारण आवश्यकता (एमआरआर) को पूरा करना जरूरी होगा।

II. प्रतिभूति बाजार

वैश्विक

3.13 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन (आईओएससीओ) ने "रिटेल ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) लीवरेज्ड प्रोडक्ट्स" पर अंतिम रिपोर्ट⁷ जारी की, जिसमें विशेषतः सामान्य और बाइनरी विकल्पों वाले ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) लीवरेज्ड उत्पादों के खुदरा निवेशकों द्वारा लाए गए जोखिमों से निपटने के लिए बनाए गए नीतिगत उपायों पर चर्चा की गई है। खुदरा निवेशक आम तौर पर इन उत्पादों का उपयोग किसी दिए गए वित्तीय अंडरलाइंग में अल्पकालिक कीमत परिवर्तनों पर सट्टेबाजी करने के लिए करते हैं। इस रिपोर्ट में तीन पूरक टूलकिट शामिल हैं, जिनका उद्देश्य उन खुदरा निवेशकों की सुरक्षा को बढ़ाना है जिन्हें ओटीसी लीवरेज्ड उत्पादों की पेशकश की गयी, जो अक्सर सीमा-पार आधार पर होती है। रिपोर्ट में रोलिंग-स्पॉट फॉरेक्स कॉन्ट्रैक्ट्स, कॉन्ट्रैक्ट्स ऑफ़ डिफरेंस (सीएफडी) और बाइनरी विकल्पों के विपणन और बिक्री को शामिल किया गया है। टूलकिट इन उत्पादों को बेचने वाले डीलरों द्वारा उत्पन्न जोखिमों से निपटने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, निवेशकों को ओटीसी लीवरेज्ड उत्पादों के जोखिमों के बारे में शिक्षित करने की सलाह देते हैं, और प्रवर्तन के दृष्टिकोण के बारे में जानकारी देते हैं, विशेषकर उन बिना लाइसेंस वाली कंपनियों के खिलाफ जो इस प्रकार के उत्पादों की पेशकश करती हैं।

3.14 एफएसबी ने अपने सलाहकारी दस्तावेज⁸ में केंद्रीय रूप से समाशोधित ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) डेरिवेटिव पर जी20 के वित्तीय विनियामक सुधारों के प्रभावों की जांच की। केंद्रीय रूप से समाशोधन वाले मानकीकृत ओटीसी डेरिवेटिव वैश्विक वित्तीय संकट के जवाब में ओटीसी डेरिवेटिव बाजारों में सुधार के लिए जी20 लीडरों की प्रतिबद्धता का एक स्तंभ है। रिपोर्ट में कहा गया है कि सुधार, विशेष रूप से पूंजीगत आवश्यकताएं, गैर-केंद्रीय रूप से समाशोधित डेरिवेटिव के लिए समाशोधन अधिदेश और मार्जिन आवश्यकताएं केंद्रीय

समाशोधन को बढ़ावा देने के अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर रही हैं, विशेषतया सर्वाधिक प्रणालीगत बाजार सहभागियों के लिए। सीसीपी, डीलरों / समाशोधन सेवा प्रदाताओं और बड़े, अधिक सक्रिय ग्राहकों के डेरिवेटिव नेटवर्क के प्रणालीगत कोर से परे, प्रोत्साहन कम मजबूत हैं। इसके अलावा, मात्रात्मक और गुणात्मक सर्वेक्षण डेटा और बाजार आउटरीच के विश्लेषण से पता चलता है कि लीवरेज अनुपात में प्रारंभिक मार्जिन का व्यवहार बैंकों को ग्राहक समाशोधन सेवाओं की पेशकश या विस्तार करने के लिए हतोत्साहित करने वाला हो सकता है। रिपोर्ट उन सुधार क्षेत्रों की पहचान करती है जो संबन्धित मानक-निर्धारण निकायों (एसएसबी) द्वारा विचार करने योग्य हैं।

घरेलू

3.15 कॉर्पोरेट बॉन्ड बाजार को मजबूत करने के लिए, सेबी⁹ ने यह अनिवार्य किया है कि एए और उससे ऊपर की उत्कृष्ट रेटिंग वाले और ₹1 बिलियन या इससे अधिक के बकाया दीर्घकालिक उधार वाली सभी सूचीबद्ध संस्थाएं (अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के अलावा) वित्त वर्ष 2019-20 से ऋण प्रतिभूतियों के माध्यम से अपनी वृद्धिशील उधारी का 25 प्रतिशत से कम एकत्र नहीं करेंगे।

III. बीमा बाजार

घरेलू

3.16 व्यक्तिगत स्वास्थ्य बीमा व्यवसाय द्वारा शामिल किए गए ज़िंदगियों की संख्या जो वित्त वर्ष 2011-12 में 21 मिलियन थी, बढ़कर वित्त वर्ष 2017-18 में 33 मिलियन हो गई। किंतु, कुल स्वास्थ्य बीमा व्यवसाय (समूह व्यवसाय + सरकार प्रायोजित योजनाएँ + व्यक्तिगत व्यवसाय) के अंतर्गत आने वाली ज़िंदगियों की तुलना में व्यक्तिगत स्वास्थ्य बीमा के अंतर्गत आने वाली ज़िंदगियों का हिस्सा वित्त वर्ष 2011-12 के 10 प्रतिशत से घटकर वित्त वर्ष 2017-18 में 7 प्रतिशत रह गया। दूसरी तरफ, वित्त वर्ष 2010-11 में प्रति व्यक्ति जो औसत प्रीमियम ₹2,377 था, वह बढ़कर वित्त वर्ष 2017-18 में ₹4,595 हो गया है जिसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं :

- स्वास्थ्य बीमा के अंतर्गत शामिल व्यक्तियों की औसत आयु में वृद्धि,

⁷ इस पर उपलब्ध है : http://www.iosco.org/publications/?subsection=public_reports

⁸ इस पर उपलब्ध है : <http://www.fsb.org/2018/08/incentives-to-centrally-clear-over-the-counter-otc-derivatives/>

⁹ इस पर उपलब्ध है : https://www.sebi.gov.in/legal/circulars/nov-2018/fund-raising-by-issuance-of-debt-securities-by-large-entities_41071.html

- ii. बीमाकर्ताओं द्वारा पेश किए गए अभिनव उत्पादों के कारण, जिनमें अधिक प्रीमियम वाले उत्पादों में अधिक लाभ होने से प्रीमियम अपेक्षाकृत वृद्धि, और
- iii. बीमा राशि में वृद्धि।

3.17 दावों के संबंध में यह अनुभव रहा कि, वित्त वर्ष 2017-18 में बीमा दावों के हानि अनुपात (आईसीआर) सुधार हुआ जो 71 प्रतिशत है। औसत प्रति व्यक्ति प्रीमियम में वृद्धि के साथ उच्च आईसीआर संकेत देता है कि बीमा कंपनियों के लिए बाजार में पर्याप्त व्यावसायिक अवसर हैं।

3.18 भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) ने घरेलू बीमा क्षेत्र (घरेलू प्रणालीगत महत्वपूर्ण बीमाकर्ता या डीएसआईआई) के लिए प्रणालीगत महत्वपूर्ण बीमाकर्ताओं (एसआईआई) की पहचान के लिए मसौदा दिशानिर्देश तैयार करना शुरू कर दिया है।

3.19 मौजूदा विनियमों के अनुसार, भारतीय बीमाकर्ताओं द्वारा धारित की जाने वाली आवश्यक शोधन-क्षमता वाली पूंजी साधारण कारक-आधारित दृष्टिकोण पर आधारित है जिसे आरक्षित पूंजी के प्रतिशत और जोखिम के योग के रूप में व्यक्त किया गया है। बीमाकर्ताओं से अपेक्षित है कि वे बीमाकृत देनदारियों के लिए 150 प्रतिशत मार्जिन बनाए रखें। जोखिम आधारित पूंजी (आरबीसी) दृष्टिकोण आवश्यक पूंजी के स्तर को अंडरलाइंग व्यापार में निहित जोखिमों से जोड़ता है। यह पूंजी की उस राशि को दर्शाता है जो प्रतिकूल घटनाओं की स्थिति में हितधारकों की रक्षा के लिए कंपनी को जोखिम के आकलन के आधार पर रखनी चाहिए। हालांकि, आरबीसी में अंतरित होने के लिए अधिक तकनीकी विशेषज्ञता और इससे संबंधित लागतों की आवश्यकता हो सकती है। आईआरडीएआई ने आरबीसी तंत्र और भारतीय बीमा बाजार में इसके कार्यान्वयन के बारे में विस्तार से जाँच करने के लिए एक समिति का गठन किया है।

3.20 आईआरडीएआई ने अप्रैल 2017 में सभी संबंधित हितधारकों के साथ परामर्श प्रक्रिया पूरी करने के बाद बीमा क्षेत्र के लिए व्यापक सूचना और साइबर सुरक्षा दिशानिर्देश जारी किए। ये दिशानिर्देश सभी बीमाकर्ताओं के लिए लागू होते हैं। आईआरडीएआई साइबर सुरक्षा दिशानिर्देशों के अनुपालन की स्थिति का आकलन करने के लिए बीमाकर्ताओं की स्वतंत्र समीक्षा भी कर रहा है। अब तक 55 बीमाकर्ताओं की समीक्षा

पूरी हो चुकी है। सात गैर-जीवन बीमाकर्ताओं और एक जीवन बीमाकर्ता को छोड़कर, शेष ने साइबर सुरक्षा दिशानिर्देशों का अनुपालन किया है। इन बीमाकर्ताओं को दिसंबर 2018 तक लंबित कार्यों को पूरा करने के लिए सूचित किया गया है। आईआरडीएआई यह सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठा रहा है कि ये बीमाकर्ता साइबर सुरक्षा दिशानिर्देशों का पूरी तरह से पालन करें।

IV. पेंशन निधियां

घरेलू

3.21 राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) और अटल पेंशन योजना (एपीवाई) दोनों ने कुल अंशदाताओं की संख्या के साथ-साथ प्रबंधन के अंतर्गत आस्तियों (एयूएम) में प्रगति को जारी रखा है (सारणी 3.1 और 3.2)। पीएफआरडीए एपीवाई के तहत कवरेज का विस्तार करके असंगठित क्षेत्र और निम्न आय वर्ग के वित्तीय समावेशन की दिशा में अपना कार्य जारी रखे हुए है। अक्टूबर 2018 के अंत तक पेंशन के दायरे में अधिक से अधिक नागरिकों को लाने के उद्देश्य से एपीवाई के तहत 405 बैंकों को पंजीकृत किया गया है।

V. शोधन अक्षमता और दिवाला अभिशासन

सारणी 3.1: अंशदाता संख्या में वृद्धि

क्षेत्र	अक्टूबर 2017 (मिलियन)	अक्टूबर 2018 (मिलियन)
केंद्र सरकार	1.88	1.98
राज्य सरकार	3.61	4.06
कॉर्पोरेट	0.65	0.75
सभी नागरिक मॉडल	0.53	0.76
एनपीएस लाइट	4.41	4.38
एपीवाई	6.97	12.13
कुल	18.05	24.06

स्रोत : पीएफआरडीए।

सारणी 3.2: एयूएम वृद्धि

क्षेत्र	अक्टूबर 2017 (₹ बिलियन)	अक्टूबर 2018 (₹ बिलियन)
केंद्र सरकार	789.62	950.52
राज्य सरकार	1040.86	1335.36
कॉर्पोरेट	187.99	252.94
सभी नागरिक मॉडल	42.34	68.48
एनपीएस लाइट	29.28	31.20
एपीवाई	29.70	52.88
कुल	2119.79	2691.38

स्रोत : पीएफआरडीए।

सारणी 3.3: कॉर्पोरेट शोधन अक्षमता समाधान प्रक्रियाएँ (सीआईआरपी) – कॉर्पोरेट देनदारों की संख्या

तिमाही	तिमाही की शुरुआत में समाधान के अंतर्गत	स्वीकृत	इनके द्वारा बंद हुआ			प्रत्येक तिमाही की समाप्ति पर समाधान के अंतर्गत
			अपील / समीक्षा	समाधान योजना का अनुमोदन	परिसमापन का आरंभ	
जन-मार्च, 2017	0	37	1	-	-	36
अप्रैल-जून, 2017	36	129	8	-	-	157
जुलाई-सितंबर, 2017	157	231	15	2	8	363
अक्टूबर-दिसंबर, 2017	363	147	33	8	24	445
जन-मार्च, 2018	445	194	14	13	57	555
अप्रैल-जून, 2018	555	244	18	11	47	723
जुलाई-सितंबर, 2018	723	216	29	18	76	816
कुल	NA	1198	118	52	212	816

नोट : एनए-लागू नहीं।

स्रोत : आईबीबीआई।

3.22 शोधन अक्षमता और दिवाला संहिता (संहिता) 2016 उद्यमिता, ऋण उपलब्धता और सभी हितधारकों के हितों को संतुलित करने के लिए अन्य के साथ-साथ कॉर्पोरेट व्यक्तियों की आस्तियों के मूल्य को अधिकतम करने के लिए समयबद्ध तरीके से पुनर्गठन और शोधन अक्षमता समाधान प्रदान करता है। यह शोधन अक्षमता समाधान के वाणिज्यिक पहलुओं को इसके न्यायिक पहलुओं से अलग करता है और कॉर्पोरेट देनदार (सीडी) के हितधारकों और न्यायनिर्णयन प्राधिकारी (एए) को उनके संबंधित क्षेत्रों के भीतर मामलों पर तेजी से निर्णय करने का अधिकार देता है। यह किसी सीडी के दिवाला समाधान के लिए एक प्रोत्साहनकारी, बाजार संचालित और समयबद्ध प्रक्रिया प्रदान करता है। यह संहिता अपनी सफलता के लिए महत्वपूर्ण रूप से वित्तीय लेनदारों पर निर्भर करती है। सितंबर 2018 के अंत तक 816 कॉर्पोरेट देनदार समाधान प्रक्रिया के अंतर्गत थे (सारणी 3.3)।

3.23 लगभग 48 प्रतिशत स्वीकृत कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रियाओं को परिचालन लेनदारों (ओसी) द्वारा और लगभग 38 प्रतिशत वित्तीय लेनदारों (एफसी) द्वारा ट्रिगर किया गया, जिनमें अधिकांश बैंक हैं (सारणी 3.4)।

3.24 सितंबर 2018 तक समाधान प्रक्रिया में 1,198 कॉर्पोरेट्स में से, 112 अपील या समीक्षा पर बंद हुए, 52 मामलों में समाधान हुआ और 212 का परिसमापन हुआ; यह व्यापक रूप से कार्यान्वयन के शुरुआती दिनों में संहिता के तहत अपेक्षाओं के अनुरूप है। परिसमापन में समाप्त हुए 212 कॉर्पोरेट देनदारों का वितरण सारणी 3.5 में दिया गया है।

सारणी 3.4: कॉर्पोरेट दिवालियापन समाधान प्रक्रिया (सीआईआरपी) का आरंभ

तिमाही	इनके द्वारा आरंभ की गयी समाधान प्रक्रियाओं की संख्या			कुल
	वित्तीय लेनदार	परिचालन लेनदार	कॉर्पोरेट देनदार	
जन-मार्च, 2017	8	7	22	37
अप्रैल-जून, 2017	37	58	34	129
जुलाई-सितंबर, 2017	92	100	39	231
अक्टूबर-दिसंबर, 2017	64	69	14	147
जन-मार्च, 2018	84	88	22	194
अप्रैल-जून, 2018	98	128	18	244
जुलाई-सितंबर, 2018	77	126	13	216
कुल	460	576	162	1198

स्रोत : आईबीबीआई।

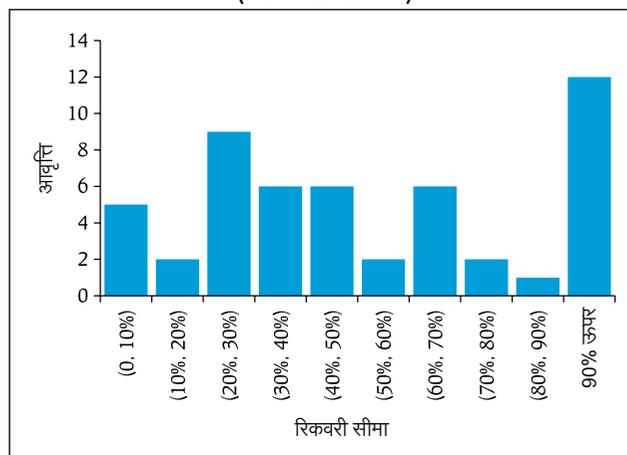
सारणी 3.5: परिसमापन में समाप्त होने वाले कॉर्पोरेट देनदारों का वितरण

सीआईआरपी की शुरुआत में कॉर्पोरेट देनदारों की स्थिति	इनके द्वारा आरंभ किए गए सीआईआरपी की संख्या			
	एफसी	ओसी	सीडी	कुल
या तो बीआईएफआर या गैर-कार्यात्मक या दोनों में समाधान मूल्य ≤ परिसमापन मूल्य	49	61	53	163
समाधान मूल्य > परिसमापन मूल्य	57	71	54	182
समाधान मूल्य > परिसमापन मूल्य	11	4	15	30

स्रोत : आईबीबीआई।

3.25 सितंबर 2018 तक एनसीएलटी¹⁰ ने 500 मामलों का निपटान किया, जिसमें एफसी में स्वीकृत दावों की कुल रकम 1249.77 बिलियन रुपए थी। तथापि स्वीकृत मीडियन दावा 0.85 बिलियन रुपए से भी बहुत कम था और स्वीकृत दावे का तीसरा चतुर्थक अर्थात क्वार्टाइल 10. 51 बिलियन रुपए था, जिससे यह अभिप्रेत होता है कि छोटे दावों को निपटाने के प्रयास अधिकाधिक किए गए। तीसरे क्वार्टाइल की सीमा से अधिक दावों के लिए औसत रिकवरी 46.66 प्रतिशत थी जबकि मीडियन रिकवरी 39.53 प्रतिशत थी अर्थात कुछ बड़े दावों के मामले में मोटी रिकवरी हुई। एफसी में स्वीकृत दावों के लिए, जो तीसरे चतुर्थक से कम थे, औसत रिकवरी 36.37 प्रतिशत थी जबकि मीडियन रिकवरी अधिक, अर्थात 53.88 प्रतिशत हुई। अर्थात इस समूह में बड़े दावों के लिए थोड़ी कम रिकवरी हुई। एफसी रिकवरी दरों का फ्रीक्वेंसी वितरण चार्ट 3.3 में दर्शाया गया है।

चार्ट 3.3: एनसीएलटी में वित्तीय दावों की वसूली दरें (सितंबर 2018 तक)



स्रोत : आईबीबीआई

VI. हाल की विनियामक पहलें और उनका औचित्य

3.26 हाल की कुछ विनियामकीय पहल और , उनका औचित्य नीचे सारणी 3.6 में दर्शाया गया है।

सारणी 3.6: प्रमुख विनियामकीय पहल (जून-2018-नवंबर 2018)

तारीख	उपाय	औचित्य/प्रयोजन
1. भारतीय रिज़र्व बैंक		
15 जून, 2018	विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) द्वारा डेट (सरकारी ऋण) में निवेश: एफपीआई से अपेक्षित था कि वे न्यूनतम 03 वर्ष बची परिपक्वता अवधिवाले सरकारी बांड में निवेश करें। अब से कतिपय शर्तों के अधीन एफपीआई को बिना किसी अवशिष्ट न्यूनतम परिपक्वता अवधि के विशेष प्रकार की प्रतिभूतियों में निवेश करने की अनुमति दी जाती है, जबकि कॉरपोरेट बांड में निवेश के लिए एक वर्ष की अवशिष्ट न्यूनतम परिपक्वता अवधि होनी चाहिए।	भारत में ऋण लिखतों में एफपीआई निवेश की प्रक्रिया को और भी सुगम करने के लिए।
25 जुलाई, 2018	द्वितीयक बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों की मंदड़िया बिक्री के लिए भारिबें ने मानदंडों में संशोधन किया है। संशोधित मानदंडों के अनुसार किसी भी अन्य विनियमित निकाय को इसकी अनुमति दे दी गई है बशर्ते मंदड़िया बिक्री प्रारंभ करने के लिए पात्र निकाय माने जाने के लिए उसने अपने संबंधित विनियामक से अनुमोदन प्राप्त किया हो। किसी प्रतिभूति (अंकित मूल्य) का अधिकतम मूल्य जिसकी मंदड़िया बिक्री की जा सकती है, वह है: चलनिधि प्रतिभूतियां प्रत्येक प्रतिभूति की कुल बकाया स्टॉक का 2 प्रतिशत, अथवा, 5 बिलियन रुपए, इनमें से जो भी अधिक हो, और अन्य प्रतिभूतियां प्रत्येक प्रतिभूति की कुल बकाया स्टॉक का 1 प्रतिशत अथवा, 2.5 बिलियन रुपए, इनमें से जो भी अधिक हो।	सरकारी प्रतिभूति और रिपो बाजार को और अधिक सशक्त बनाने के लिए।

¹⁰ नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल

तारीख	उपाय	औचित्य/प्रयोजन
16 अगस्त, 2018	यह निर्णय किया गया है कि 20 अगस्त 2018 से चलनिधि-समायोजन-सुविधा (एलएएफ) अनुसूचित राज्य सहकारी बैंकों, जिनके पास कोर बैंकिंग सॉल्यूशन है और जिनकी सीआरएआर (पूजी पर्याप्तता अनुपात) कम से कम 9 प्रतिशत तक है, को भी उपलब्ध कराई जाएगी। इसके अतिरिक्त एलएएफ के अलावा चलनिधि प्रबंधन के लिए एक और सुविधा दिए जाने के लिए यह निर्णय किया गया कि (एमएसएफ) की सुविधा कोर बैंकिंग सक्षम और न्यूनतम 9 प्रतिशत सीआरएआर रखनेवाले प्राथमिक शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) और अनुसूचित राज्य सहकारी बैंकों को भी उपलब्ध कराई जाए।	यूसीबी और राज्य सहकारी बैंकों में चलनिधि प्रबंधन में सुधार करने के लिए।
19 सितंबर, 2018	भारिबैं ने बाह्य वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) मानदंडों को शिथिल किया है। संशोधित मानदंडों के अनुसार विनिर्माण क्षेत्र के पात्र ईसीबी उधारकर्ता 50 मिलियन अमरीकी डॉलर अथवा इसकी समतुल्य राशि तक ईसीबी प्राप्त कर सकेंगे जिसकी न्यूनतम औसत परिपक्वता अवधि 1 वर्ष होगी। यह भी निर्णय किया गया कि भारतीय बैंकों को विदेश में रुपया मूल्यवर्गवाले बांड (रूपी डिनोमिनेटेड बांड या आरडीबी) का विपणन करने की अनुमति दी जाए। बैंक जारी किए गए ओवरसीज आरडीबी में व्यवस्थापक/हामीदार/बाजार निर्माता/ट्रेडर के रूप में यथलागू विवेकपूर्ण मानदंडों का पालन करने की शर्त पर इसमें भागीदारी कर सकते हैं।	कॉरपोरेट को अपना देयता पोर्टफोलियो चुनने के लिए उन्हें अधिक लचीलापन उपलब्ध कराने हेतु।
21 सितंबर, 2018	प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को ऋण उपलब्ध कराने के लिए बैंकों और एनबीएफसी द्वारा मिलकर ऋण उपलब्ध कराना/कोओरिजिनेशन: सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक और लघु वित्त बैंकों को छोड़कर) प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को आस्ति निर्माण के लिए जमा स्वीकार न करनेवाली-प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFC-ND-Sis) के साथ मिलकर ऋण कोओरिजिनेट कर सकते हैं। बैंक एनबीएफसी का सहारा लिए बिना भी प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र होने का दावा कर सकता है। ऋण जोखिम का न्यूनतम 20 प्रतिशत प्रत्यक्ष निवेश के रूप में परिपक्वता पर्यंत एनबीएफसी की बहियों में रहेगा और शेष भाग बैंक की बही में रहेगा।	प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र में निधियों का प्रवाह बढ़ाने के लिए।
27 सितंबर, 2018	चलनिधि मानकों के लिए बासल III फ्रेमवर्क: बैंकों को चलनिधि कवरेज अनुपात आवश्यकता को पूरा करने के लिए उनके अपने सांविधिक चलनिधि रिज़र्व का अतिरिक्त भाग उपयोग करने की अनुमति है। अतः चलनिधि कवरेज अनुपात हेतु चलनिधि सुविधा (FALLCRR) के अंतर्गत एसएलआर से लिया गया भाग अब 13 प्रतिशत होगा, जबकि बैंकों के लिए उपलब्ध एसएलआर में से लिया गया कुल भाग उनकी एनडीटीएल का 15 प्रतिशत होगा।	प्रणाली में अधिक चलनिधि उपलब्ध कराने के लिए।
27 सितंबर, 2018	न्यूनतम अंशदान चुकता इक्विटी पूंजी का 26 प्रतिशत होना चाहिए। स्वैच्छिक परिवर्तन के लिए इसकी ऑन टैप योजना के अंतर्गत प्रवर्तकों को चाहिए कि वे इसके लिए आवेदन प्रस्तुत करें जिसके साथ आवश्यक कागजात और जनरल बॉडी के संकल्प (दो-तिहाई बहुमत से पारित) संबंधी सूचना, जिसमें बोर्ड के निदेशकों को परिवर्तन के लिए कदम उठाने हेतु प्राधिकृत किया गया हो, उपलब्ध कराई जाए। उक्त संकल्प में प्रवर्तकों की पहचान और उनका अनुमोदन भी किया गया होना आवश्यक है। प्रवर्तकों को अपने आवेदनों के साथ अपने बिजनेस प्लान्स और अपनी परियोजना रिपोर्ट भी प्रस्तुत करनी होगी। भारिबैं उपयुक्तता का निर्धारण करने के लिए आवेदकों की "फिट एंड प्रॉपर" स्थिति का मूल्यांकन करेगा।	बैंकिंग के क्षेत्र में संवृद्धि लाने के लिए।

तारीख	उपाय	औचित्य/प्रयोजन
2 नवंबर, 2018	प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमा स्वीकार न करनेवाली गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-एनडी-एसआई), जिनका पंजीकरण भारिबैं में है, और हाउसिंग वित्त कंपनियाँ (एचएफसी), जिनका पंजीकरण राष्ट्रीय आवास बैंक में है, द्वारा जारी किए गए बांडों में कतिपय शर्तों के अधीन आंशिक ऋण संवर्धन (PCE) करने की अनुमति भारिबैं द्वारा बैंकों को दी गई है।	एनबीएफसी और एचएफसी को उपलब्ध चलनिधि प्रवाह को और उन्नत करने के लिए बांडों को पीसीई उपलब्ध करानेवाले बैंकों द्वारा बांडों की क्रेडिट रेटिंग बढ़ाई जाएगी जिससे आसान शर्तों पर बांड मार्केट से निधियाँ प्राप्त करने में कंपनियों की पहुँच हो सकेगी।
26 नवंबर, 2018	ट्रैक I के अंतर्गत ईसीबी लेने वाले पात्र उधारकर्ताओं के लिए बाह्य वाणिज्य उधार (ईसीबी) अनिवार्य हेजिंग, जिनकी औसत परिपक्वता अवधि 3 से 5 वर्ष की है, प्रावधानों को रिजर्व बैंक द्वारा 100 प्रतिशत से घटाकर 70 प्रतिशत कर गया है। इसके दायरे में आनेवाले ईसीबी, जो पूर्व में लिए गए हैं, को अनिवार्यतः अपनी विद्यमान हेज को घटाकर बकाया ईसीबी एक्सपोजर के 70 प्रतिशत तक लाना होगा।	विदेशी मुद्रा विनियम दर जोखिमों के प्रबंधन के लिए अतिरिक्त लचीलापन उपलब्ध कराना।
29 नवंबर, 2018	रिजर्व बैंक ने गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के लिए उनकी ऋण बहियों को सिक्यूरिटाइज करने के मानदंडों में ढील दी है। एनबीएफसी अब अपनी बहियों में छह माह से अधिक समय से धारित पांच वर्ष की परिपक्वता से अधिक समय वाले ऋणों को प्रत्याभूत कर सकते हैं। ऐसे प्रतिभूतिकरण लेन-देनों के लिए न्यूनतम प्रतिधारिता आवश्यकता (एमआरआर) प्रत्याभूत किए जानेवाले ऋणों के बही मूल्य का 20 प्रतिशत होगा।	एनबीएफसी क्षेत्र के लिए निधीयन हेतु अतिरिक्त उपलब्धता प्रदान करना।
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी)		
11 जून, 2018	एक्सचेंजों द्वारा कृषि पण्य डेरिवेटिव्स के लिए डेलिवरी योग्य सप्लाइ एंड पोजीशन लिमिट केलकुलेशन से संबंधित प्रकटन।	स्टेकधारकों को आवश्यक सूचना उपलब्ध कराने के इरादे से एक्सचेंजों को निदेश दिया गया है कि वे एक्सचेंज पर ट्रेड किए जाने वाले प्रत्येक पण्य के लिए पांच वर्षीय औसत डेलीवरी योग्य सप्लाइ, चालू वर्ष की डेलीवरीयोग्य सप्लाइ, डेटा का स्रोत, पण्य का वर्गीकरण, पोजीशन लिमिट इत्यादि की जानकारी दिए गए फॉर्मेट के अनुरूप अपनी-अपनी वेबसाइटों पर प्रमुखता से दर्शाएँ।
5 जुलाई, 2018	स्टॉक ऑप्शन्स के लिए कारपोरेट कार्रवाइयों के समायोजन की समीक्षा।	द्वितीयक बाजार परामर्शदात्री समिति (एसएमएसी) की संस्तुतियों के आधार पर स्टॉक ऑप्शन्स के लिए लाभांश समायोजन के कार्यत्र में संशोधन किया गया।।
12 जुलाई, 2018	स्टॉक ब्रोकरों द्वारा नकदी स्वीकारना बंद करना।	इलेक्ट्रॉनिक भुगतानों के विभिन्न नकदी रहित माध्यमों को ध्यान में रखते हुए स्टॉक ब्रोकरों को निदेश दिया गया है कि वे अपने ग्राहकों से सीधे नकदी अथवा अपने बैंक खाते में नकदी जमा स्वीकार न करें।
03 अगस्त, 2018	अधिकृत व्यक्ति (एपी) की तुलना में उप ब्रोकर (SB) की भूमिका।	उप ब्रोकर और अधिकृत व्यक्ति की परिचालन भूमिका में कोई फर्क नहीं है। सेबी ने 21 जून 2018 को हुई अपनी बैठक में मध्यस्थ के रूप में उप ब्रोकर का पंजीयन सेबी में करना बंद करने का निर्णय किया है।
10 अगस्त, 2018	इश्यू और शेयर अंतरण एजेंटों के लिए अर्हताप्राप्त राजिस्ट्रारों की उन्नत निगरानी: अर्हताप्राप्त रजिस्ट्रारों (क्यूआरटीएस) को निदेश दिया गया है कि वे आंतरिक नीति फ्रेमवर्क को अपनाकर और उसका क्रियान्वयन करते हुए, मुख्य जोखिम क्षेत्रों, डेटा सिक्यूरिटी उपायों, कारोबार निरंतरता इत्यादि की आवधिक रिपोर्टिंग करते हुए उन्नत निगरानी अपेक्षाओं का पालन करें।	बाजार मूलभूत संरचना संस्थानों (एमआईआईएस) के लिए जोखिम प्रबंध प्रणाली को और भी सुदृढ़ करना।
16 अगस्त, 2018	ऋण प्रतिभूतियों, अपरिवर्तनीय भुनाने योग्य अधिमानी शेयरों (एनसीआरपीएस), म्युनिसिपैलिटी द्वारा जारी की गई ऋण प्रतिभूतियों और प्रतिभूतिकृत ऋण लिखतों (SDI) के पब्लिक इश्यू की प्रक्रिया को युक्तिसंगत करने के लिए सेबी ने इन प्रतिभूतियों की लिस्टिंग के लिए समय सीमा वर्तमान के 12 दिन से घटाकर 6 दिन कर दी है।	ऋण प्रतिभूतियों, एनसीआरपीएस और एसडीआई जारी करने को सुगम और कम खर्चिला बनाने के लिए।

तारीख	उपाय	औचित्य/प्रयोजन
16 अगस्त, 2018	निजी प्लेसमेंट आधार पर प्रतिभूतियाँ जारी करने के लिए ई-बुक मैकेनिज्म: अतिरिक्त सुविधाएं यथा- क्लोज्ड बिडिंग, मल्टीपल यील्ड एलॉटमेंट, जारीकर्ता के बैंक खाते में एस्करो खाते के माध्यम से भुगतान को विनियामक द्वारा उपलब्ध कराया जाता है।	ईबीपी प्लेटफॉर्म पर प्रतिभूतियाँ जारी करने की प्रक्रिया को युक्तिसंगत और आसान बनाना।
24 अगस्त, 2018	प्रतिभूतियों के उधार देने और लेने (एसएलबी) संबंधी क्षेत्र के ट्रेडिंग घंटों में विस्तार।	ईक्विटी डेरिवेटिव के प्रत्यक्ष निपटान को सुविधाजनक बनाने के लिए।
1 सितंबर, 2018	अतिरिक्त सर्वेलांस उपाय (एसएसएम)।	विद्यमान सर्वेलांस पूर्वोपाय के साथ-साथ उन प्रतिभूतियों के लिए अब अतिरिक्त सर्वेलांस उपाय (एसएसएम) किए गए हैं जिनके संबंध में सर्वेलांस संबंधी चिंताएं हैं, जैसे कि जैसे, मूल्य विचलन, उतार-चढ़ाव इत्यादि, ताकि निवेशकों को सतर्क किया जा सके और उन्हें अतिरिक्त सावधानी बरतने के लिए कहा जा सके और बाजार के भागीदारों को इन प्रतिभूतियों में लेन-देन करने के दौरान विवेकपूर्ण ढंग से काम करने के लिए सूचित किया जा सके।
11 सितंबर, 2018	भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (क्रेडिट रेटिंग एजेंसियां) विनियम, 1999 में संशोधन।	किए गए संशोधनों के अनुसार क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों को पब्लिक अथवा राइट्स इश्यू के माध्यम से प्रस्तावित प्रतिभूतियों की रेटिंग से इतर कोई अन्य कार्य करने की अनुमति नहीं है। तथापि ये एजेंसियां वित्तीय लिखतों की रेटिंग वित्तीय क्षेत्र के विनियामक अथवा अन्य किसी प्राधिकारी, जैसा सेबी द्वारा तय किया गया हो, के संबंधित दिशा-निर्देशों के तहत कर सकती हैं।
19 सितंबर, 2018	भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (क्रेडिट रेटिंग एजेंसियां) विनियमन, 1999 में संशोधन और सेबी के 30 मई 2018 के परिपत्र में आशोधन : निर्णय किया गया है कि किसी जारीकर्ता द्वारा उसकी अपनी लिखतों को प्रदान की गई रेटिंग की समीक्षा किए जाने के उसके अनुरोध के मामलों की पुनरीक्षा क्रेडिट रेटिंग एजेंसी की रेटिंग समिति द्वारा की जाएगी जिसमें ऐसे सदस्यों का बहुमत होगा जो रेटिंग समिति के उन सदस्यों से भिन्न होंगे जिन्होंने पूर्व रेटिंग प्रदान की थी। यह भी कि समिति के एक-तिहाई सदस्य स्वतंत्र सदस्य होने चाहिए।	क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के लिए प्रकटन और पारदर्शिता मानदंडों का उन्नयन करने के लिए।
19 सितंबर, 2018	समाशोधन निगमों के बीच परस्पर परिचालनात्मकता-प्रतिभूति संविदा (विनियम) (शेयर बाजार और समाशोधन निगम) विनियमन 2012 में संशोधन।	"परस्पर परिचालनात्मकता" का उद्देश्य प्रतिभूति बाजार में वर्तमान में मार्जिन और पूंजी संसाधनों के अधिकतम से कम उपभोग को दुरुस्त करना है जिसके लिए समाशोधन निगमों को आपस में जोड़ा जाएगा और बाजार भागीदारों को अनुमति दे दी जाएगी कि वे अपने समाशोधन तथा निपटान कार्य को, इस बात की परवाह किए बगैर कि उन्होंने किस स्टॉक एक्सचेंज में ट्रेड निष्पादित किया है, एकल सीसीपी में समेकित करें।
19 सितंबर, 2018	विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) के लिए अपने ग्राहक को जानें अपेक्षाएं।	एफपीआई से अपेक्षित है कि वे दिए गए अपने ग्राहक को जानें अपेक्षाओं (KYC) का पालन करें यथा-लाभार्थी स्वामियों की पहिचान और उनका सत्यापन-एफपीआई के वर्ग-II और III एफपीआई के लिए। आवधिक केवायसी समीक्षा। निरीक्षण/पूछताछ करने के समय छूट प्राप्त कागजात उपलब्ध कराए जाएं। डेटा सिक्क्युरिटी इत्यादि।
09 अक्तूबर, 2018	कॉमोडिटी डेरिवेटिव मार्केट में पात्र विदेशी संस्थाओं की भागीदारी।	भारतीय कॉमोडिटी बाजार में वास्तव में धन निवेश करनेवाली विदेशी कंपनियों को भारतीय कॉमोडिटी डेरिवेटिव बाजार में अपने मूल्य जोखिमों को संरक्षित करने योग्य बनाना।
22 अक्तूबर, 2018	म्यूचुअल फंड के लिए कुल व्यय अनुपात (TER) और निष्पादन प्रकटन: निर्णय किया गया है कि आस्ति प्रबंधन कंपनियों को सभी योजनाओं में बिना कोई अप फ्रंट कमीशन के ही कमीशन के फुल ट्रेल मॉडल को अपनाना होगा। म्यूचुअल फंड योजनाओं के लिए टीईआर (कुल व्यय अनुपात) में बढ़ाई गई पारदर्शिता हेतु फ्रेमवर्क तथा योजनाओं के निष्पादन प्रकटन के लिए फ्रेमवर्क का क्रियान्वयन भी कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त बी-30 शहरों के लिए प्रोत्साहनों को आशोधित किया गया है और यह खुदरा निवेशकों से प्राप्त अंतरप्रवाहों पर आधारित है। बेस टीईआर स्लैब्स को भी आशोधित किया गया है ताकि अंतिम निवेशक के लिए कम लागत आए।	व्ययों में पारदर्शिता लाने, म्यूचुअल फंड की योजनाओं में पोर्टफोलियो चर्निंग और मिस सेलिंग को कम करने के लिए।

तारीख	उपाय	औचित्य/प्रयोजन
3. पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण		
20 अगस्त, 2018	पेंशन निधि द्वारा इक्विटी म्यूच्युअल फंड में निवेश के संबंध में एनपीएस योजना के लिए निवेश दिशानिर्देश में परिवर्तन: यह निर्णय लिया गया है कि इक्विटी म्यूच्युअल फंड में निवेश पर 5 प्रतिशत की सीमा इस प्रकार से लगाई जाए जिससे कि किसी भी समय पर निधि के कुल पोर्टफोलियो के 5 प्रतिशत से अधिक समग्र पोर्टफोलियो निवेश न हो और ऐसे म्यूच्युअल फंड में नए निवेश वर्ष के नए अभिवृद्धि निवेश के 5 प्रतिशत से अधिक नहीं होने चाहिए।	पेंशन निधियों द्वारा इक्विटी म्यूच्युअल फंड में निवेश को सीमित करने तथा सक्रिय निधि प्रबंधन व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए।
4. भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (आईबीबीआई)		
4 जुलाई, 2018	भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (कॉर्पोरेट व्यक्तियों के लिए दिवाला समाधान प्रक्रिया) विनियम 2016 का संशोधन। ¹¹	संशोधित मानदंड लेनदारों के विभिन्न वर्गों के लिए प्रक्रियात्मक आवश्यकताओं, समाधान पेशेवरों के लिए समयावधि ब्योरों के विवरण और दिवालिया आवेदन की वापसी प्रक्रिया पर स्पष्टता प्रदान करते हैं।
10 अगस्त, 2018	रेसोल्यूशन पेशेवर को परिपत्र द्वारा लेनदारों की समिति में प्रतिनिधित्व के लिए नोटिस संबंधी परिपत्र द्वारा निर्देश।	यह लेनदारों की समिति में वित्तीय लेनदारों के प्रतिनिधित्व से संबन्धित है।
17 अगस्त, 2018	दिवाला और शोधन अक्षमता कोड (द्वितीय संशोधन) अधिनियम 2018। कुछ महत्वपूर्ण प्रावधान: 1) वित्तीय लेनदारों के रूप में आवास खरीदारों की स्थिति की पहचान कर उन्हें राहत प्रदान करना। 2) आईबीसी 2016 में प्रविष्टि के बाद किसी मामले को वापस लेने की सख्त प्रक्रिया बनाना। इसकी मंजूरी केवल लेनदारों की समिति के अनमोदन से दी जा सकती है जिनके पास 90 प्रतिशत मतदान शेर हों, एक्सप्रेशन ऑफ इंटरैस्ट संबंधी नोटिस जारी होने से पूर्व अनुमति दी जा सकती है। 3) समाधान योजना के अनुमोदन, सीआईआरपी अवधि का विस्तार आदि जैसे सभी महत्वपूर्ण निर्णयों में वोटिंग सीमा कम करके 75 प्रतिशत से 66 प्रतिशत की गई है। नियमित निर्णयों के लिए इसे 51 प्रतिशत किया गया है ताकि सीडी सुचारु रूप से चले। 4) विभिन्न कानूनों के तहत वैधानिक कार्यों को पूरा करने के लिए कामयाब समाधान आवेदक को एक वर्ष की अनुग्रह अवधि प्रदान करना	विभिन्न हितधारकों, मुख्यतः आवास क्रेता तथा सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के हितों को संतुलित करने के लिए, सीओसी के मतदान सीमा को कम करते हुए कॉर्पोरेट देनदारों के परिसमापन पर समाधान को बढ़ावा देने और समाधान आवेदकों की पात्रता के संबंध में प्रावधानों को सुव्यवस्थित करना।
5 अक्टूबर, 2018	भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (कॉर्पोरेट व्यक्तियों के लिए दिवाला समाधान प्रक्रिया) विनियम 2016 में संशोधन।	इस संशोधन से यह आवश्यक हो गया है कि समाधान पेशेवर अब से बैठक के कार्यवृत्त को प्राधिकृत प्रतिनिधि(यों) को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से परिचालित करेंगे। इस विनियमन से वित्तीय लेनदार यदि बैठक से पूर्व वोट नहीं कर सके तो कार्यवृत्त के परिचालन के पश्चात कर सकते हैं।
11 अक्टूबर, 2018	निम्नलिखित में संशोधन क) भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (दिवाला पेशेवर एजेंसी) विनियमन 2016। ख) भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (मॉडल बाई-लॉ तथा दिवाला पेशेवर एजेंसियों का प्रबंध मंडल) विनियमन 2016, और ग) भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (सूचना उपयोगिता) विनियमन 2017।	दिवालिया कार्यवाही के संबंध में कुछ प्रक्रियागत मुद्दों पर संशोधन।

¹¹ संशोधन में निराकरण किए गए मुद्दों का विवरण are available at https://ibbi.gov.in/webadmin/pdf/whatsnew/2018/Oct/CIRPper cent20Amendment-5.10.2018_2018-10-05per cent2023:21:24.pdf पर उपलब्ध है।

तारीख	उपाय	औचित्य/प्रयोजन
22 अक्तूबर, 2018	भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (परिसमापन प्रक्रिया) विनियम 2016 में संशोधन।	यह संशोधन परिसमापक को कॉर्पोरेट उधारकर्ता के व्यवसाय को सुगमतापूर्वक विक्रय करने का अधिकार देता है। संशोधन यह भी सुनिश्चित करता है कि विक्रय किए गए परिसंपत्तियों अथवा व्यवसाय का मूल्यांकन आईबीबीआई (कॉर्पोरेट व्यक्तियों के लिए दिवाला समाधान प्रक्रिया) या आईबीबीआई (कॉर्पोरेट पर्सन्स के लिए फास्ट ट्रैक इन्सॉल्वेंसी रिजॉल्यूशन की प्रक्रिया) विनियमन 2017, के अनुसार, जो भी मामला हो, माना जाए।
22 अक्तूबर, 2018	भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (विनियम जारी करने वाली प्रक्रिया) विनियम 2018।	इन विनियमों में यह व्यवस्था दी गई है कि आईबीबीआई किस प्रकार विनियमों का ढांचा बनाए ताकि अन्य बातों के साथ-साथ विनियमों को बनाने में हिताधिकारी भी प्रभावी रूप जुड़े रहें।

खंड ख

अन्य गतिविधियां, बाजार प्रथाएँ और पर्यवेक्षी मुद्दे

I. वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद

3.27 जून 2018 में पिछली एफएसआर के प्रकाशन के बाद, वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी) की एक बैठक दिनांक 30 अक्तूबर 2018 को वित्त मंत्री की अध्यक्षता में आयोजित की गई जिसमें आर्थिक स्थिति, वित्तीय क्षेत्र में साइबर सुरक्षा के सुदृढ़ीकरण सहित कंप्यूटर इमरजेन्सी रिसपोन्स टीम (CERT-Fin) की स्थापना में हुई प्रगति, क्रिप्टोआस्ति/ मुद्रा के मुद्दे और चुनौतियाँ, बाजार गतिविधियां और वित्तीय फर्म तथा विनियामक और पर्यवेक्षी प्राधिकारियों द्वारा रेग-टेक और सप-टेक के प्रयोग से वित्तीय स्थिरता पर असर और उपायों पर सुमित बोस समिति की

रिपोर्ट में उपायों की सिफारिशों, जैसे कि वित्तीय वितरण लागतों के उचित प्रकटीकरण को बढ़ावा, के कार्यान्वयन पर चर्चा की गई। परिषद ने वास्तविक ब्याज दरों संबंधी मुद्दे और क्षेत्रवार तरलता स्थिति सहित वर्तमान तरलता स्थिति पर भी चर्चा की।

II. निधि का प्रवाह: एफपीआई और म्यूच्युअल फंड

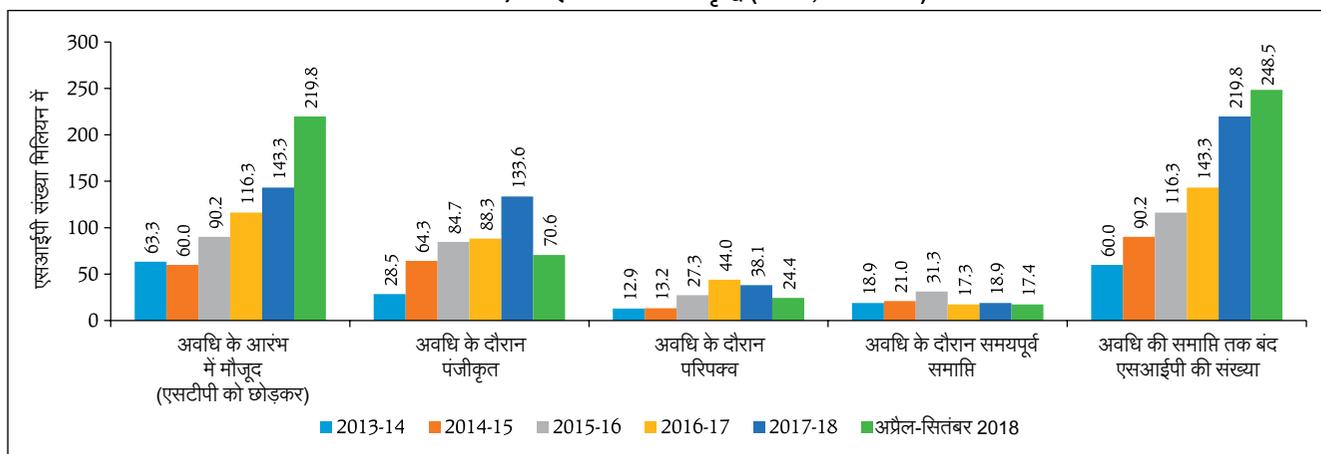
3.28 म्यूचुअल फंड उद्योग बाजार की कुछ गतिविधियों के कारण अस्थिरता का सामना कर रहा है। अप्रैल-सितंबर 2017 के दौरान ₹2020 बिलियन के निवल अंतर्वाह की तुलना में अप्रैल-सितंबर 2018 को ₹458 बिलियन का निवल अंतर्वाह हुआ। (सारणी 3.7)

सारणी 3.7: निधियों के प्रवाह की प्रवृत्ति (₹ बिलियन)

माह/ वर्ष	अप्रैल-17	मई-17	जून-17	जुलाई-17	अगस्त-17	सितंबर-17
सकल संग्रहण	16372.2	16594.55	15523.72	18005.82	16252.21	18356.59
चुकोती	14865.17	17001.66	15689.64	17370.78	15635.2	18522.64
अवधि की समाप्ति पर आस्तियां	19263.02	19039.75	18962.91	19969.05	20592.89	20403.01
निवल अंतर्वाह / बहिर्गमन	1507.03	-407.11	-165.93	635.05	617.01	-166.05
माह/ वर्ष	अप्रैल-18	मई-18	जून-18	जुलाई-18	अगस्त-18	सितंबर-18
सकल संग्रहण	17183.28	19384.27	20684.5	22014.06	19797.79	16929.8
चुकोती	15809.00	19884.28	20219.75	22340.34	18051.3	19231.39
अवधि की समाप्ति पर आस्तियां	23255.05	22595.78	22864.01	23055.38	25204.3	22044.23
निवल अंतर्वाह / बहिर्गमन	1374.28	-500.01	464.75	-326.28	1746.49	-2301.59

स्रोत : सेबी।

चार्ट 3.4: एसआईपी की संख्या में वृद्धि (संख्या, मिलियन में)



स्रोत : सेबी

3.29 म्यूच्युअल फंड के समग्र संग्रहण में उतार-चढ़ाव के बावजूद सुनियोजित निवेश योजना (एसआईपी) निवेशकों का पसन्दीदा विकल्प रहा (चार्ट 3.4)। 2017-18 के मुकाबले अप्रैल-सितंबर 2018 के दौरान कुल फोलियो वृद्धि 2.88 मिलियन रही। म्यूच्युअल फंड में सुनियोजित निवेश योजना

(एसआईपी) द्वारा निवेश स्थिर निधि अंतर्वाह की दृष्टि से अधिक सुदृढ़ दिखा है।

3.30 एमएफ प्रवाहों में महत्वपूर्ण परिवर्तन को देखते हुए, म्यूच्युअल फंडों द्वारा तरलता के प्रबंधन को महत्व प्राप्त होता है (बॉक्स 3.2)।

बॉक्स 3.2 म्यूच्युअल फंडों द्वारा चलनिधि जोखिम प्रबंधन का फ्रेमवर्क

म्यूच्युअल फंड को दैनिक आधार पर भुनाया जा सकता है, जिसमें साधारण परिस्थितियों में समयनिष्ठ चुकौती होती है। तथापि, दवाबग्रस्त बाजार परिस्थितियों में अपने यूनिट धारकों को चुकौती के लिए निधि को तैयार रहना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में, म्यूच्युअल फंड के लिए तरलता प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है और निवेशकों के चुकौती अनुरोधों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नीति और प्रक्रिया होनी चाहिए। सेबी ने म्यूच्युअल फंड योजना में तरलता मुद्दों को घटाने/समाधान करने के लिए विविध नीतिगत साधन लाए हैं।

- एक्जिट लोड:** जब योजना के प्रस्ताव दस्तावेज में विनिर्दिष्ट अवधि कैसे पहले यूनिट चुकौती के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं तो निवल आस्ति मूल्य के कुछ प्रतिशत के रूप में शुल्क की गणना कर निवेशक से प्रभार लिया जाता है। इस उपाय से विनिर्दिष्ट अवधि से पहले म्यूच्युअल फंड योजना से निवेशकों के आहरण की संभावना कम होती है।
- आस्ति-देयता मिलान में सुधार:** क्लोज एंडेड डेट स्कीम केवल उन प्रतिभूतियों में निवेश कर सकती है जो योजना की परिपक्वता की तिथि पर या उससे पूर्व परिपक्व हो रही हों। इसके अलावा, तरल निधि केवल 91 दिन की

परिपक्वता वाले लिखतों में ही निवेश कर सकती है और मुद्रा बाजार म्यूच्युअल फंड योजना केवल एक वर्ष की परिपक्वता वाले मुद्रा बाजार लिखतों में निवेश कर सकती है।

- क्लोज एंडेड/ इंटरवल योजना की सूची:** निवेशकों के लिए निकास विकल्प उपलब्ध कराने और बंद होने की तारीख तक निधि प्रबंधकों को निधि प्रबंधन की निश्चितता मुहैया कराने के लिए, विनियामक ढांचे में संशोधन करके क्लोज एंडेड और अंतराल योजनाओं की सूची बनाना अनिवार्य किया गया।
- पोर्टफोलियो विविधीकरण मानदंड:** एकल जारीकर्ता द्वारा जारी प्रतिभूतियों पर निवेश सीमाएं, क्षेत्र जोखिम सीमा, गुण लेवल सीमा और तथा एसोसिएट/ गुप कंपनी द्वारा जारी सूचीबद्ध प्रतिभूतियों पर निवेश सीमाएं हैं।
- 20-25 नियम:** निवेशकों के संकेन्द्रण को कम करने के लिए सेबी का दिशानिर्देश है कि प्रत्येक योजना में कम से कम 20 निवेशक हों और किसी भी एकल निवेशक के पास योजना की राशि के 25 प्रतिशत से अधिक न हो।
(जारी...)

इससे योजना आस्ति में बड़ी मात्रा में निवेश वाले किसी एक/ कुछ निवेशकों द्वारा स्कीम यूनिटों के बड़ी मात्रा में रिडेम्पशन की संभावना कम हो जाती है।

6. **उचित मूल्यांकन सिद्धान्त को अपनाना:** सभी निवेशकों को उचित व्यवहार प्राप्त हो यह सुनिश्चित करने के लिए व्यापक और महत्वपूर्ण उचित मूल्यांकन सिद्धान्तों को अपनाया गया है जिसके अनुसार निवेशों का मूल्यांकन प्रतिभूतियों/ परिसंपत्तियों के वास्तविक मूल्यानुसार प्रतिबिंबित होगा। ऐसे उचित मूल्यांकन सिद्धान्त को अपनाने के कारण अन्य निवेशकों से पूर्व रिडेम्पशन करने का प्रलोभन निवेशक का नहीं रहता है जिससे रिडेम्पशन दबाव और योजना से आहरण के लिए भगदड़ कम हो जाती है।
7. म्यूचुअल फंडों को रिडेम्पशन अनुरोध की तिथि से निवेशकों को रिडेम्पशन की राशि उपलब्ध करने तक 10 दिनों की अवधि भी मुहैया करायी गई है।
8. **एमसी द्वारा दबाव परीक्षण:** संभाव्य कमजोरियों का मूल्यांकन करने और उसके लिए सुधारात्मक कार्रवाई करने के लिए सभी लिक्विड फंड और एमएमएमएफ योजनाओं के लिए दबाव परीक्षण अनिवार्य है। एमसी द्वारा दबाव परीक्षण कम से कम माह में एक बार किया जाना है जिसमें संबन्धित योजना के एनएवी पर अन्य आवश्यक समझे जाने वाले जोखिमों के साथ-साथ ब्याज दर जोखिम, ऋण जोखिम और तरलता तथा रिडेम्पशन जोखिम के प्रभाव की जांच करनी चाहिए।
9. **अतरल आस्तियों में निवेश पर सीमा:** अतरल आस्तियों में निवेश पर सीमा लगाने के लिए किसी भी योजना के निवेशों में 'अतरल प्रतिभूतियों' में, जो कि नॉन-ट्रेडेड, थीनली ट्रेडेड और सूची बाह्य इक्विटी शेयर के रूप में परिभाषित हैं, निवेश की कुल आस्तियों के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। कुल आस्तियों के 15 प्रतिशत से अधिक धारित अतरल प्रतिभूतियों को शून्य मूल्य प्रदान किया जाएगा।
10. **एमएफ द्वारा उधार:** पुनःक्रय, यूनिटों के रिडेम्पशन अथवा ब्याज या लाभांश का यूनिट-धारकों को भुगतान के प्रयोजन के लिए म्यूचुअल फंड की अस्थायी चलनिधि आवश्यकताओं के लिए म्यूचुअल फंडों को योजना की कुल आस्ति का 20 प्रतिशत तक का उधार लेने की अनुमति है और इस प्रकार की उधारी की अवधि छः माह से अधिक नहीं होगी।
11. **रिडेम्पशन पर प्रतिबंध:** निवेशकों के हितों का ध्यान रखते हुए सेबी ने अपने 31 मई 2016 के परिपत्र द्वारा

रिडेम्पशन पर प्रतिबंध के संबंध में दिशानिर्देश जारी किया है। रिडेम्पशन पर प्रतिबंध लगाने से पूर्व निम्नलिखित को ध्यान में रखा जाना है:

- क) जब प्रणालीगत संकट जैसी परिस्थिति अथवा बाजार की तरलता को अथवा बाजारों के कुशल कामकाज को गंभीर रूप से बाधित करने वाली निम्न लिखित प्रकार घटना हो तो प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं:
 - i. तरलता के मुद्दे: जब किसी विशिष्ट जारीकर्ता की प्रतिभूति के बजाय बड़े पैमाने पर बाजार में तरलता की कमी आ जाए जिससे सभी प्रतिभूतियां प्रभावित होती हों। खराब निवेश निर्णय के कारण किसी योजना के पोर्टफोलियो के निर्दिष्ट प्रतिभूति में अतरलता के कारण रिडेम्पशन पर प्रतिबंध लगाने की अनुमति नहीं है।
 - ii. बाजार की विफलताएं, एक्सचेंज बंद होना- जब बाजार अप्रत्याशित घटनाओं से प्रभावित होता है जिससे एक्सचेंजों या नियमित लेन-देन पर असर पड़ता हो।
 - iii. परिचालनगत मुद्दे- जब दैवी विपत्ति, अप्रत्याशित परिचालनिक समस्याओं और तकनीकी विफलताओं (जैसे ब्लैकआउट) के कारण उत्पन्न असाधारण परिस्थितियां हों
 - ख) 90 दिनों की अवधि में केवल 10 विनिर्दिष्ट कार्यदिवसों तक ही रिडेम्पशन के लिए प्रतिबंध लगाया जा सकता है।
 - ग) कोई भी प्रतिबंध लगाने के लिए एमसी तथा न्यासी बोर्ड का विशिष्ट अनुमोदन आवश्यक है और सेबी को तुरंत इस संबंध में सूचित किया जाना चाहिए।
 - घ) जब रिडेम्पशन पर प्रतिबंध लगाया जाए तो निम्नलिखित प्रक्रिया अपनायी जाए:
 - i. ₹0.20 मिलियन तक के सभी रिडेम्पशन अनुरोध पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा।
 - ii. जहां रिडेम्पशन अनुरोध ₹0.20 मिलियन से अधिक है एमसी ऐसे प्रतिबंध के बगैर पहले ₹0.20 मिलियन की चुकौती कर दें। ₹0.20 मिलियन से ऊपर की राशि पर इस प्रकार का प्रतिबंध लगेगा।
- योजना से संबन्धित दस्तावेजों में इस सूचना का व्यापक और विस्तृत रूप से उल्लेख किया जाए।

III. जुटाई गई पूंजी में रुझान डेट और इक्विटी — उभरते मुद्दे

अ. क्रेडिट रेटिंग और ढांचागत कार्य की भूमिका और दायित्व

अ. रेटिंग गतिविधियों की प्रवृत्ति

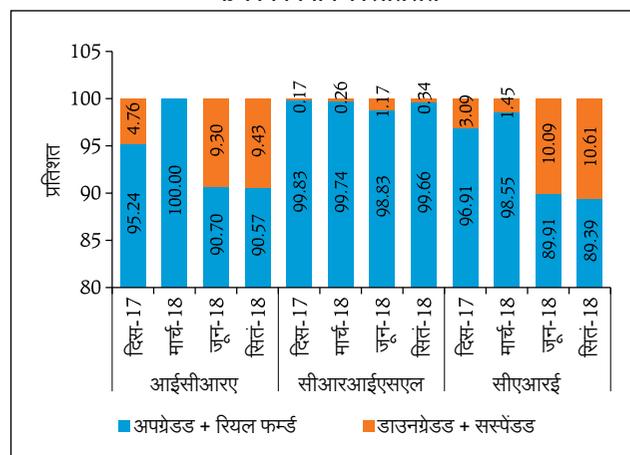
3.31 भारत की प्रमुख क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों द्वारा सूचीबद्ध कंपनियों के ऋण संबंधी मामले पर किया गया क्रेडिट रेटिंग विश्लेषण यह दर्शाता है कि जून और सितंबर 2018 तिमाही के दौरान दो रेटिंग एजेंसियों की निम्न दर्जे/निलंबित कंपनियों के शेयर में बढ़त हुई है (चार्ट 3.5)।

आ. सीआरए ढांचे को और मजबूत बनाना

3.32 रेटिंग ढांचेगत को और मजबूत बनाने के लिए सेबी ने मई 2018 में रेटिंग की समीक्षा के लिए प्रक्रिया संबंधी दिशानिर्देश जारी किया। इस परिपत्र के अनुरूप, बाजार के भागीदारों से प्राप्त अभ्यावेदनों के आधार पर कार्य में और अधिक आशोधन किया गया। यह निर्णय लिया गया कि उनके किसी जारीकर्ता के अनुरोध पर उनके लिखतों को दी गई रेटिंग की समीक्षा सीआरए के रेटिंग समिति द्वारा की जाएगी जिसमें अधिकांश सदस्य उस रेटिंग समिति से भिन्न होंगे जिन्होंने पूर्व में रेटिंग दी थी और इसमें कम से कम एक तिहाई सदस्य स्वतंत्र सदस्य होंगे। साथ ही, खुलासों(डिस्क्लोजर) को और प्रासंगिक बनाने के लिए सीआरए को यह निर्देश दिया गया कि जारीकर्ता द्वारा अस्वीकार की गई उन सभी रेटिंग को उनकी वेबसाइट पर दर्शाए और अस्वीकार की गई रेटिंग को बताते हुए ऐसी रेटिंग की तिथि से 12 महीनों की अवधि तक वेबसाइट पर रखा जाए।

3.33 जून 2018 में सेबी ने निर्देश दिया कि सीआरए रेटिंग को हटा सकता है बशर्ते कि (i) सीआरए लिखत को लगातार 5 साल के लिए या लिखत की अवधि के 50 प्रतिशत अवधि तक रेट किया है, जो भी अधिक है और (ii) जारीकर्ता से उस लिखत के लिए रेटिंग उपलब्ध है। साथ ही, हटाते/समाप्त करते समय एक वचन-पत्र प्राप्त किया/लिया जाए आरए ऐसे लिखत के लिए रेटिंग प्रदान करेंगे और रेटिंग के संबंध में एक प्रेस विज्ञप्ति भी जारी करेंगे। सेबी (क्रेडिट रेटिंग एजेंसीस) (संशोधन) विनियमन,

चार्ट 3.5: रेटिंग कार्य के अनुसार सूचीबद्ध कंपनियों के ऋण निर्गमनोम का प्रतिशत



स्रोत : सेबी

2018, 30 मई 2018 को अधिसूचित किया गया जिसकेतहत सेबी ने सीआरए की संवृद्ध निवल संपत्ति, लॉक-इन अपेक्षा सहित प्रोमोटर का न्यूनतम शेयरधारण, सीआरए के बीच क्रॉस-धारण पर पाबंदी और पब्लिक या कुछ कार्व करते हुए राईट इश्यू के जरिए दिए गए प्रतिभूतियों की रेटिंग के अलावा अन्य कोई कार्यकलाप करने पर प्रतिबंध लगाते हुए विभिन्न मानदंड लागू किए हैं

3.34 सेबी ने सीआरए द्वारा हाल में किए गए खुलासों की भी जांच की। बढ़ी हुई प्रकटीकरण पेरेंट/समूह/सरकारी सहयोग, तरलता स्थिति (गैर-बैंकों के लिए अप्रयुक्त ऋण की व्यवस्था और परिपक्व हो रही ऋण बाध्यताओं के लिए पर्याप्त नकद प्रवाह आदि जैसे आशातीत उपाय सहित से संबन्धित थे। बढ़ी हुई प्रकटीकरण के क्षेत्र ने उल्लेखनीय रूप से रेटिंग की सामग्री वालीसूचना को भी बढ़ाया है।

इ) वित्त वर्ष 2018-19 में प्राइमरी मार्केट निर्गमन संबंधी प्रवृत्ति

3.35 अप्रैल-सितंबर 2018 के दौरान बॉन्ड मार्केट में 12 पब्लिक निर्गमन के जरिए रु.274.45 बिलियन जुटा गए। उसी अवधि के दौरान कार्पोरेट बॉन्ड के निजी प्लेसमेंट के जरिए रु.2 ट्रिलियन से भी अधिक राशि जुटाई गई। (चार्ट 3.6)। सितंबर 2018 की स्थिति के अनुसार प्रमुख जारीकर्ता के रूप में बकाया कार्पोरेट बॉन्ड के 50 प्रतिशत से भी अधिक के लिए बाँडी कार्पोरेट और एनबीएफसी थे (चार्ट 3.7ए) जबकि इसके लिए

निकाय कार्पोरेट और म्यूचल फंड प्रमुख अभिदाता थे (चार्ट 3.7बी)। ईक्विटी कैपिटल (पूंजी) के मामले में अप्रैल-अक्तूबर 2018 के दौरान रु.149.70 बिलियन जुटाई गई(चार्ट 3.6)।

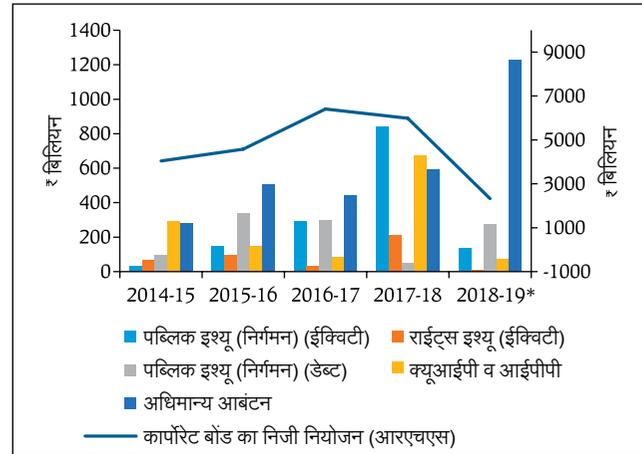
IV. पण्य व्युत्पन्नी

(अ) पण्य व्युत्पन्नी बाजार का जोखिम प्रबंधन और निगरानी

3.36 28 सितंबर 2015 से सेबी ने कमोडिटी डेरिवेटिव्स बाजार के विनियमन का कार्य अपने हाथ में ले लिया। कमोडिटीस फ्यूचर्स मार्केट को कारगर बनाने और उसका सुचारु संचालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सेबी ने अक्तूबर 2015 में राष्ट्रीय कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज के लिए जोखिम प्रबंधन और निगरानी संबंधी व्यापक ढांचा तैयार किया और सितंबर 2016 में राष्ट्रीय पण्य विनियम केंद्र के लिए अतिरिक्त जोखिम प्रबंधन मानदंड निर्धारित किया।

3.37 2014 में, सेबी ने मान्यता प्राप्त समाशोधन निगमों शनों के लिए कोर निपटान गारंटी निधी, डीफोल्ट वाटरफॉल, स्ट्रेस टेस्टिंग, बैंक टेस्टिंग आदि से संबन्धित मानदंड जारी किया था। इन मानदंडों को पण्य व्युत्पन्नी लेनदेनों के निपटान कर रहे क्लियरिंग कार्पोरेशनों पर भी लागू किया गया। किसी भी स्टॉक विनियम केंद्र के लिए कमोडिटी डेरिवेटिव्स वर्ग के लिए कोर (मूल) निपटान गारंटी निधि (एमआरसी) का न्यूनतम अपेक्षित कोर्पस को रु.100 मिलियन निर्धारित किया गया और कमोडिटी

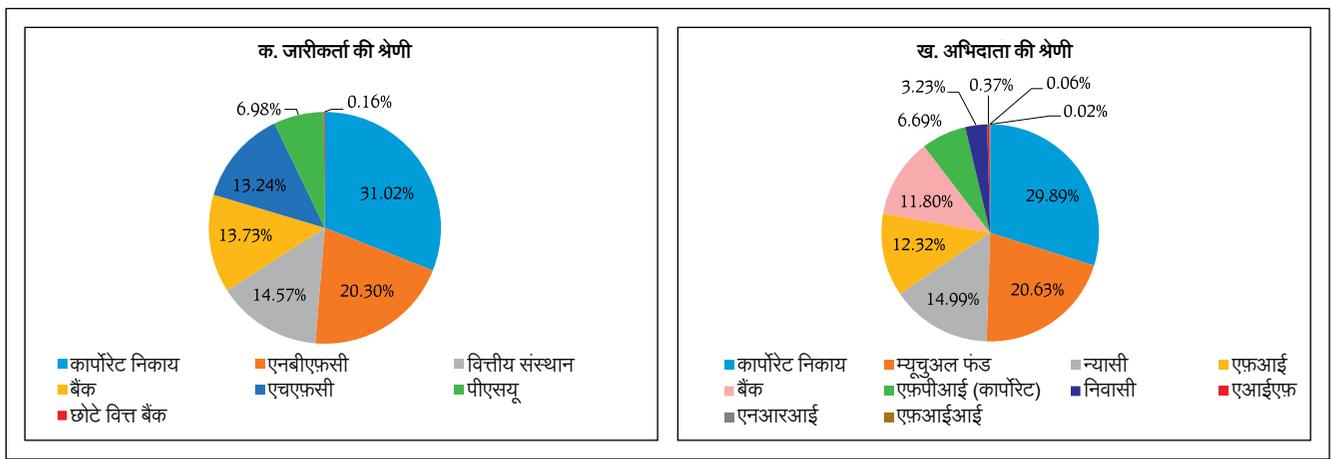
चार्ट: 3.6 प्राइमरी मार्केट में जुटाई गई पूंजी



नोट : *अप्रैल-अक्तूबर 2018
 श्रोत : सेबी

डेरिवेटिव्स के लिए ऋण जोखिम संबंधी दैनिक स्ट्रेस टेस्ट करने के लिए संशोधित मानकीकृत स्ट्रेस टेस्टिंग परिदृश्य और कार्य-प्रणाली निर्धारित की गई। कमोडिटी फ्यूचर्स (भावी पण्य) पर विकल्पों में व्यापार के लिए जोखिम प्रबंधन ढांचा और उत्पाद के डिज़ाइन संबंधी दिशानिर्देश जारी किए गए। वर्तमान में, दि मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (एमसीएक्स) गोल्ड फ्यूचर्स, क्रूड ओयल फ्यूचर्स, कोपर फ्यूचर्स, सिल्वर फ्यूचर्स और जिंक फ्यूचर्स में विकल्प व्यापार (ओप्शंस ट्रेडिंग) की सुविधा प्रदान कर रहा है। दि नैशनल कमोडिटी एंड डेरिवेटिव्स एक्सचेंज लिमिटेड (एनसीडीईएक्स) गुआर बीज फ्यूचर्स, गुआर

चार्ट: 3.7 कार्पोरेट बॉन्ड के श्रेणीवार जारीकर्ता और अभिदाता



नोट : 18 सितंबर 2018 को।
 श्रोत : सेबी।

गम फ्यूचर्स, चना फ्यूचर्स, सोयाबीन फ्यूचर्स और रिफाइंड सोय ऑयल फ्यूचर्स में विकल्प व्यापार(ओपशन ट्रेडिंग) की सुविधा प्रदान कर रहा है।

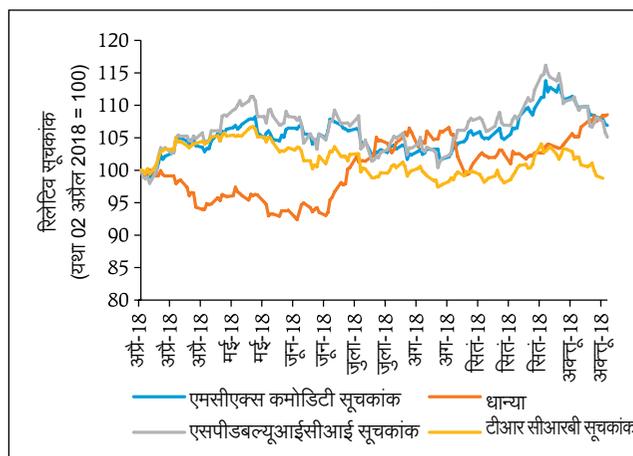
3.38 इसके अलावा, सेबी द्वारा कमोडिटी डेरिवेटिव्स मार्केट की निगरानी और विश्वसनीयता को और मजबूत बनाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। 2018-19 के दौरान सेबी द्वारा उठाए गए कुछ महत्वपूर्ण कदमों में कमोडिटी एक्सचेंज के साथ मासिक निगरानी बैठकें, आकस्मिक वेयरहाउस दौरें, एक्सचेंज में व्यापार किए गए कमोडिटी के प्रत्यक्ष मार्केट के दौरें, विभिन्न विक्रेताओं और बाद में लिए जानेवाले नीति संबंधी उपायों के बारे में फीडबैक और निरीक्षण संबंधी इनपुट प्राप्त करने के लिए वेल्यू चेन प्रतिभागियों से मिलना, कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज का निरीक्षण, विशेष मार्जिन लगाना, एक्सचेंज प्लेटफार्म पर वाश/स्वयं व्यापार(सेल्फ-ट्रेड) को रोकने के लिए एक्सचेंज केन्द्रों द्वारा स्थाई खाता संख्या पर स्वयं व्यापारको रोकने हेतु जांच, व्यापार के विपर्यय के मामले में दंड को बढ़ाना (बुक किए गए लाभ/ हानि का 100% तक) आदि शामिल हैं।

(आ) बाजार की गतिविधियां

3.39 31 अक्टूबर 2018 को एमसीएक्स सीओएमडीईएक्स जैसे बेंचमार्क सूचकांक बढ़कर 6.8 प्रतिशत हो गया और 31 मार्च 2018 को एनसीडीईएक्स धान्या में 10.3 प्रतिशत वृद्धि हुई। उसी अवधि के दौरान, जबकि एस&पी वर्ल्ड कमोडिटी सूचकांक में 5.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई और थोमसन रूटर्स सीआरबी सूचकांक में 2.3 प्रतिशत गिरावट हुई (चार्ट 3.8)।

3.40 अप्रैल 2018 – सितंबर 2018 के दौरान सभी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज (फ्यूचर्स और ओप्शंस मिलकर) की कुल बिक्री पिछले छह महीने की अवधि, अर्थात् अक्टूबर 2017- मार्च

चार्ट: 3.8 भारतीय और अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी सूचकों की गतिविधियां¹²



स्रोत : ब्लूमबर्ग

2018 की तुलना में 14.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस अवधि के दौरान धातु (मेटल) का शेयर 38.7 प्रतिशत रहा और 31.6 प्रतिशत शेयर के साथ बुलियन दूसरे स्थान पर रहा। ऊर्जा और कृषि में क्रमशः 20.3 प्रतिशत और 9.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

¹² एमसीएक्स इंडिया कमोडिटी इंडेक्स मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर व्यापारगत वायदा कीमतों पर आधारित एक समग्र सूचकांक है जिसमें बुलियन, मूलधातु, ऊर्जा और कृषि वस्तुओं की संविदाओं का समूह शामिल है।

एनसीडीईएक्स धान्या एक मूल्य भारित सूचकांक है जो एनसीडीईएक्स प्लेटफार्म पर किए जाने वाले कारोबार के 10 सबसे तरल कमोडिटी फ्यूचर्स की कीमतों पर आधारित है।

एस एंड पी वर्ल्ड कमोडिटी इंडेक्स यू.एस. के बाहर एक्सचेंजों पर कारोबार किए गए वायदा संविदाओं का एक निवेश योग्य वस्तु सूचकांक है जिसमें ऊर्जा, कृषि उत्पाद, औद्योगिक और कीमती धातु शामिल हैं।

थॉमसन रूटर्स/ कोर कमोडिटी सीआरबी इंडेक्स विनियम वायदा कारोबार पर आधारित है जिसमें 19 वस्तुएं शामिल हैं जिन्हें तरलता के आधार पर 4 समूह यथा ऊर्जा, कृषि, पशु धन और धातुओं के समूह में रखा गया है।

इसी अवधि के दौरान गैर-कृषि डेरिवेटिव्स 90.6 प्रतिशत रहा जबकि कृषि-डेरिवेटिव्स का योगदान 9.4 प्रतिशत रहा।

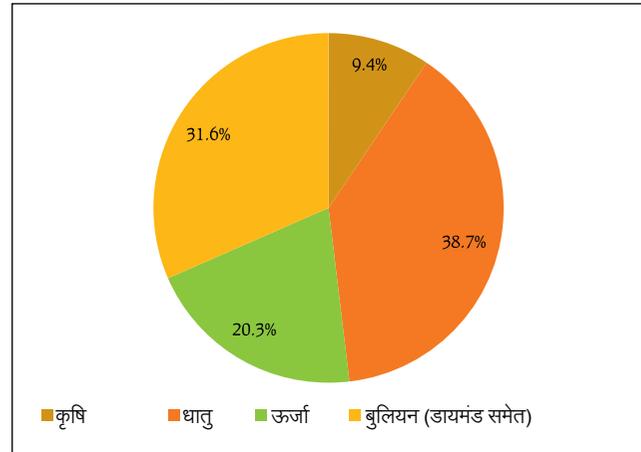
(इ) एकीकृत स्टॉक एक्सचेंज

3.41 वित्त वर्ष 2017-18 के केंद्र बजट में यह प्रस्ताव था कि प्रतिभागियों, ब्रोकरों और परिचालनात्मक ढांचों को एकीकृत करते हुए कमोडिटीज और प्रतिभूति डेरिवेटिव्स मार्केट को और एकीकृत किया जाएगा। सेबी द्वारा बजट घोषणा को दो चरणों में कार्यान्वित किया गया। चरण – I में मध्यवर्ती स्तर पर एकीकरण और चरण – II में एक ही एक्सचेंज को विभिन्न वर्ग जैसे ईक्विटी, ईक्विटी डेरिवेटिव्स, कमोडिटी डेरिवेटिव्स, करेंसी डेरिवेटिव्स, ब्याज दर फ्यूचर्स और ऋण के संचालन के लिए सक्षम बनाना। प्रतिभूतियों और कमोडिटी बाजार के कार्य में सहक्रियता (synergy) लाने के उद्देश्य से प्रतिभूति और कमोडिटी डेरिवेटिव्स में सार्वभौमिक व्यापारसुविधा (universal Trading facility) के साथ एक्सचेंज केन्द्रों का एकीकरण करना।

3.42 निवेशकों, बाजार के प्रतिभागियों और विनियामक के दृष्टिकोण से यह लाभदायक था क्योंकि बिक्री और निपटान पद्धति, जोखिम प्रबन्धन और निवेशकों के शिकायत निवारण की दृष्टि से दोनों मार्केट के बीच कई समानताएं हैं। एक्सचेंजों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ने के कारण लेनदेन संबंधी लागत कम होने की उम्मीद से ब्रोकरों को भी लाभ मिलता है। साथ ही, दोनों बाजारों के लिए एकल फर्म/कंपनी होने के फलस्वरूप एक ही मार्जिन खाता होगा।

3.43 निवेशक कम भुगतान करके एक ही व्यापार खाते के जरिए दोनों ईक्विटी और कमोडिटी में व्यापार कर सकते हैं। वर्तमान परिदृश्य में, व्यापारियों को जो दोनों ईक्विटी और कमोडिटी बाजार में सक्रिय हैं, दो दलाल फर्म/कंपनी को पैसा स्थानांतरित करना पड़ता था। यह एक मजबूरी थी क्योंकि दोनों बाजार के बीच पैसे के अंतरण में समय लगता है, अधिक कार्यशील पूंजी की जरूरत पड़ती है और महंगा भी (अंतरण प्रभार)। इसके फलस्वरूप अवसर नष्ट हो सकते हैं विशेषकर एक परिवर्तनशील बाजार में। एक नया कदम पहले से विकसित

चार्ट 3.9 अखिल भारतीय डेरिवेटिव्स टर्नओवर (फ्यूचर्स व विकल्प) में उत्पादन क्षेत्र के अनुसार हिस्सेदारी (अप्रैल 2018 – सितंबर 2018)



स्रोत : सेबी

ईक्विटी बाजार के लाभ लेते हुए कमोडिटी डेरिवेटिव्स बाजार का विस्तार करने में मदद करेगी।

V. फिनटेक

3.44 हाल में फिनटेक पर प्रकाशित ईबीए (यूरोपियन बैंकिंग प्राधिकरण) रिपोर्ट¹³ में फिनटेक के संभावित विवेकपूर्ण जोखिमों और फिनटेक के कारण आनेवाले अवसरों पर एक संतुलित विश्लेषण प्रदान करने का प्रयास किया है। यह विश्लेषण सात प्रमुख फिनटेक उपयोग मामले के आधार पर किया गया है: फिंगरप्रिंट की पहचान करते हुए बयोमेट्रिक अधिप्रमाणन, निवेश सलाह के रूप में रोबो-पारामर्शी, क्रेडिट स्कोरिंग में बड़ा डाटा और मशीन लर्निंग, व्यापार वित्त के लिए स्मार्ट ठेका और वितरित लेड्जर प्रौद्योगिकी, ग्राहक सम्यक तत्परता प्रक्रिया को सरल एवं कारगर बनाने के लिए वितरित लेड्जर प्रौद्योगिकी, नियर-फील्ड संप्रेषण के उपयोग के साथ मोबाइल वॉलेट और प्रमुख बैंकिंग/भुगतान प्रणाली को पब्लिक क्लाउड के लिए आउटसोर्स करना। ईबीए रिपोर्ट इस बात को मानती है कि पर्याप्त विशेषज्ञ और दूसरों की तुलना में साइबर सुरक्षा की कमी के कारण आश्रयी संस्थानों का परिचालन जोखिम बढ़ा है। तथापि, क्षमता वर्धन, लागत में कमी और बेहतर ग्राहक अनुभव के आधार पर कई अवसरों पर इस बार पर जोर दिया जाता है।

¹³ Available at: <https://www.eba.europa.eu/-/eba-assesses-risks-and-opportunities-from-fintech-and-its-impact-on-incumbents-business-models>

3.45 बीआईएस ने अपनी रिपोर्ट¹⁴ में सुपटैक (पर्यवेक्षी प्रौद्योगिकी) के प्रारम्भिक उपयोगकर्ता के अनुभव का विश्लेषण किया था। (बॉक्स 3.3)

बॉक्स 3.3: पर्यवेक्षी प्रौद्योगिकी की ओर अग्रसर

पर्यवेक्षण एजेंसियों द्वारा पर्यवेक्षण को सहायता पहुंचाने के लिए पर्यवेक्षी प्रौद्योगिकी का नवीन प्रौद्योगिकी के रूप में उपयोग करना है। वर्तमान में, पर्यवेक्षकों द्वारा उपयोग में लाई जा रही आंकड़ा संग्रहण पद्धति में आवधिक डाटा टैम्पलेट्स शामिल हैं जिसमें डेटा बिन्दु खोया हुआ हो सकता है अथवा अतिव्यापी हो सकता है। रिपोर्टिंग टैम्पलेट्स पर्यवेक्षकों को विभेदित विश्लेषण हेतु कम लचीलापन प्रदान करता है। पर्यवेक्षी प्रौद्योगिकी रिपोर्टिंग तथा विनियामक प्रक्रियाओं को डिजिटलकृत करने में सहायक है जिसके परिणामस्वरूप वित्तीय संस्थानों द्वारा जोखिम तथा अनुपालन की कुशल तथा सक्रिय निगरानी की जाती है। पिछड़ी दिखने वाली प्रक्रिया से जोखिम तथा अनुपालन निगरानी को पूर्वानुमान प्रक्रिया में विकसित करने में सहायक हो सकता है।

बहुत सी पर्यवेक्षण एजेंसियां पर्यवेक्षण के लिए जोखिम आधारित दृष्टिकोण को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए पहले से ही अभिनव तरीकों का उपयोग कर रही हैं। विभिन्न देशों में अपनाए जाने वाला सबसे आसान कदम विनियामक 'सेंडबॉक्स' है जो विनियमित तथा अविनियमित संस्थानों हेतु कुछ नियमों के अनुसार तथा कुछ अवधि के लिए नवाचारों की जांच करने के लिए वित्तीय प्राधिकारी द्वारा बनाया गया नियंत्रित वातावरण है।

एफएसआई इनसाइट रिपोर्ट में से लिए गए पर्यवेक्षी प्रौद्योगिकी की कुछ संभावित तथा वास्तविक एप्लीकेशन नीचे संक्षेप में प्रस्तुत हैं :

वास्तविक समय पर निगरानी हेतु पर्यवेक्षी प्रौद्योगिकी एप्लीकेशन : आस्ट्रेलिया की प्राथमिक तथा द्वितीयक पूंजी बाजारों की वास्तविक समय पर निगरानी आस्ट्रेलियाई प्रतिभूति तथा निवेश आयोग (एएसआईसी) द्वारा की जाती है। यह प्रणाली सभी इक्विटी तथा इक्विटी व्युत्पन्न लेन देन से वास्तविक समय पर डेटा उपलब्ध करवाती है तथा बाजारों के भीतर की विसंगतियों को पहचानने में सक्षम बनाने हेतु वास्तविक समय पर सावधान करती है।

डेटा विश्लेषणात्मक : कई पर्यवेक्षण एजेंसियां डेटा सत्यापन, डेटा क्लीनिंग तथा डेटा जांच हेतु पर्यवेक्षी प्रौद्योगिकी का उपयोग करती हैं। उदाहरण के लिए बैंक ऑफ इटली (बीओआई) धनशोधन निवारण (एएमएल) का पता लगाने हेतु संरचित तथा असंरचित डेटा का उपयोग करती है। नीदरलैंड बैंक (डीएनबी) डेटा आउटपुट को लोजिकल इंटीकेटर्स में बदल देता है, उदाहरण के लिए ट्रैफिक लाईट और डेश बोर्ड। मैक्सिको का राष्ट्रीय बैंकिंग तथा प्रतिभूति आयोग

बड़ी मात्रा में आंकड़ों को संसाधित करने के लिए क्लाउड कम्प्यूटिंग का उपयोग करता है। कई पर्यवेक्षी एजेंसियां पर्यवेक्षी संस्थाओं को अप्रत्यक्ष सहायता उपलब्ध करने तथा उपभोक्ताओं की शिकायतों का उत्तर देने के लिए चैटबोट्स का उपयोग करती हैं।

बाजार निगरानी तथा पर्यवेक्षण : यूके का वित्तीय कंडक्ट (आचार) प्राधिकरण मिलियन इक्विटी बाजार लेन देन तथा बाजार परिचालन के संकेतों का पता लगाने के लिए पर्यवेक्षित मशीन लर्निंग (एमएल) टूल का उपयोग करता है। सुपटैक एप्लीकेशन कदाचार विश्लेषण में एएमएल, आतंकवाद के वित्तपोषण, धोखाधड़ी का पता लगाने तथा गलत बिक्री पर ज़ोर देती है। वृहत विवेकपूर्ण पर्यवेक्षण में सुपटैक एप्लीकेशन में ऋण जोखिम मूल्यांकन, तरलता जोखिम का पता लगाने, बड़े वित्तीय जोखिमों की पहचान तथा नीति मूल्यांकन हेतु पाया जा सकता है। पर्यवेक्षक एजेंसियों ने एमएल एल्गोरिदम (कलन) विधि का उपयोग करना प्रारम्भ कर दिया है जो ऋण चूककर्ताओं का पूर्वानुमान लगाने के लिए विभिन्न डेटा स्रोत का विलय करते हैं। डीएनबी विसंगतियों का पता लगाने के लिए एक तंत्रिका नेटवर्क ढांचे पर कार्य कर रहा है जो वास्तविक समय सकल पर निपटान प्रणाली से प्राप्त भुगतान आंकड़ों में असामान्य तरलता प्रवाह है।

व्यष्टि वित्तीय जोखिमों की पहचान: डीएनबी जोखिम संकेतकों के पूर्वानुमान हेतु लक्ष्य 2¹⁵ तथा अन्य वित्तीय बाजार ढांचे (एफएमआई) में संसाधित लेन देन का उपयोग करता है।

सुपटैक एप्लीकेशन को विकसित करने में चुनौतियाँ : बड़ी हुई हुए परिचालन जोखिम, अभिकलनात्मक और मानव संसाधन की कमी तथा कुछ डेटा विश्लेषण एप्लीकेशन में पारदर्शिता की कमी कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, पाए गए हैं। अतः, पर्यवेक्षी प्रक्रिया में पर्यवेक्षी विशेषज्ञता के माध्यम से मानव हस्तक्षेप महत्वपूर्ण बना हुआ है, मुख्य रूप से विश्लेषण के परिणामों की जांच तथा कार्रवाई पर निर्णय लेना।

संदर्भ:

अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (2018) : वित्तीय पर्यवेक्षण में नवीन प्रौद्योगिकी (सुपटैक) – “पूर्व उपयोगकर्ताओं का अनुभव” <https://www.bis.org/fsi/publ/insights9.htm>. पर उपलब्ध है।

भारतीय रिजर्व बैंक (2017) : “फिनटैक और डिजिटल बैंकिंग पर कार्यदल की रिपोर्ट” <https://rbidocs.rbi.org.in/rdocs/PublicationReport/Pdfs/WGFR68AA1890D7334D8F8F72CC2399A27F4A>.

¹⁴ <https://www.bis.org/fsi/publ/insights9.htm> पर उपलब्ध।

¹⁵ लक्ष्य 2 यूरो क्षेत्र में बैंकों के बीच यूरो भुगतान प्रवाहों की निपटान-प्रणाली है।

VI. साइबर सुरक्षा तथा डेटा सुरक्षा

(क) बैंकों में साइबर सुरक्षा की तैयारी – भारतीय परिदृश्य

3.46 कई वर्षों से, भारतीय वित्तीय क्षेत्र में, विशेष रूप से महत्वपूर्ण भुगतान प्रणाली अवसंरचना से जुड़े बैंकिंग कार्यों के संदर्भ में, साइबर खतरों के प्रति लचीलापन चिंता का एक प्रमुख क्षेत्र बनकर उभरा है। पिछले कुछ वर्षों में, बैंकों में साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में कई बुनियादी मील के पत्थर साबित हुए हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि भारतीय बैंकिंग प्रणाली अधिक मजबूती से साइबर खतरों से निपटने के लिए हर तरह से तैयार है। कुछ उठाए गए तथा कार्यान्वित सुरक्षा उपाय निम्नलिखित हैं :

- i. बैंकों के निदेशक मण्डल (अथवा बोर्ड स्तर की समितियां जैसा भी मामला हो) को पर्याप्त विशेषज्ञता के साथ रणनीतिक निर्देश प्रदान करने हेतु अपने आप को उपयुक्त रूप लैस करके, साइबर सुरक्षा पर विचार करने हेतु वर्तमान प्रणाली में नई प्रणालियों/ बड़े बदलावों के कार्यान्वयन तथा डिजाइन के संबंध में चर्चा; सीआईएसओ के कार्यालय को दोनों रूप में साइबर सुरक्षा बजट, संसाधनों तथा बैंक के साइबर सुरक्षा की स्थिति की आवधिक समीक्षा द्वारा सुदृढ़ बनाकर साइबर सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता तथा इसका महत्व प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।
- ii. जून 2016 में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा परिचालित व्यापक साइबर सुरक्षा ढांचे में बैंकों से साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में की जाने वाली अपेक्षाओं की रूपरेखा तैयार की गई थी। बैंकों को अपने वातावरण में (जहां लागू हो तृतीय पक्ष सहित) अन्य विषयों के साथ पासवर्ड नियंत्रण, पोर्ट खोलने / बंद करने, नेटवर्क एक्सेस नियंत्रण, आदि को सुनिश्चित करने के लिए आईटी परिसंपत्तियों की सूची बनाना कि ये नवीनतम पैच के साथ अद्यतन किए गए हैं, सुरक्षा संचालन केन्द्रों के कामकाज सहित साइबर सुरक्षा से संबन्धित नियंत्रणों की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए उपयुक्त मैट्रिक और उपाय तैयार करना; संवेदनशील डेटा की एप्लीकेशन तथा डेटाबेस की यथार्थता तथा गोपनीयता सुनिश्चित करने, तथा अतिसंवेदनशील आकलन / निदेश

की जांच, कोड समीक्षा आदि करके आवधिक आधार पर बैंक के सूचना प्रौद्योगिकी के आधारभूत ढांचे को प्रमाणित करके साइबर स्वच्छता को सख्ती से लागू करने की आवश्यकता है। बैंकों द्वारा साइबर सुरक्षा ढांचे तथा अन्य विनियामक निर्देशों / परामर्शों में उल्लिखित उपायों में कार्यान्वयन में की गई प्रगति का समय समय पर आवधिक आकलन सीएसआईटीई इकाई द्वारा दोनों ऑनसाइट जांच के माध्यम से व्यापक और विषयगत/केन्द्रित तथा बैंकों द्वारा ऑफसाइट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से, विशिष्ट नियंत्रण उपायों के अनुपालन का संचार करके किया जाता है।

- iii. बाजार की खुफिया तथा सरकारी एजेंसियों से मिले इनपुट के आधार पर, इसी प्रकार के अतिसंवेदनशीलता के समुपयोजन से बचाने के लिए बैंकों को परामर्श तथा अलर्ट जारी किए गए हैं। यह सुनिश्चित करता है कि एक इकाई के रोकथाम तथा पहचान हेतु किए गए प्रयास दूसरी इकाई की रोकथाम तथा पहचान हेतु किए गए प्रयास में सहायक है, जिससे पूरी बैंकिंग प्रणाली सुरक्षा स्तर बढ़ जाता है। साथ ही निरंतर आधार पर बैंकों की साइबर स्वच्छता का आकलन करने के लिए समय समय पर रिटर्न का संग्रहण तथा समीक्षा की जाती है।
- iv. भारतीय रिजर्व बैंक तथा अन्य एजेंसियां (जैसे सीईआरटी – इन और आईडीआरबीटी) बैंकों के लिए उनके अनुसंधान प्रतिक्रिया तथा वसूली नीतियों तथा प्रक्रियाओं का आकलन करने के लिए तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे उल्लंघनों को रोकने व सुधारने के लिए पर्याप्त हैं तथा यथाशीघ्र सामान्य परिचालन में वापस लाने के लिए आवधिक साइबर अभ्यास (ड्रिल) आयोजित करती हैं।

3.47 भारत में साइबर हमलों हेतु पसंदीदा लक्ष्य के रूप में बैंकिंग उद्योग नवीन तथा उभरते खतरों के प्रति संवेदनशील है तथा होगा। हाल ही के साइबर हमलों ने बैंकों को खतरों की समयानुसार प्रभावी जानकारी हेतु निरंतर आधार पर अपनी विशेषज्ञता के माध्यम से अपने सिस्टम तथा नेटवर्क की व्यापक निगरानी करना अनिवार्य कर दिया है। साइबर खतरों की सघन

विविधता तथा बढ़ती हुई जटिलता ने इस बात का अहसास करवाया है कि विभिन्न हितधारकों के एक दृढ़, केन्द्रित तथा समन्वित प्रयास से साइबर खतरा उत्पन्न करने वाली बैंकिंग प्रणाली का मार्ग प्रशस्त होगा।

3.48 विनियामक लगातार साइबर सुरक्षा ढांचे के कार्यान्वयन तथा मजबूती की प्रगति पर अपने प्रासंगिक मध्यस्थों की निगरानी में लगे हुए हैं। सक्षम लेखा परीक्षक द्वारा नियमित रूप से मध्यवर्ती संस्थाओं की साइबर सुरक्षा / सिस्टम लेखापरीक्षा आयोजित कारवाई जा रही है तथा इसके बारे में संबन्धित विनियामकों को भी अवगत करवाया जा रहा है। विभिन्न विनियामकों द्वारा जारी किए गए सामान्य दिशानिर्देशों की कुछ मुख्य विशेषताएँ निम्नानुसार हैं:

- क्रिटिकल इन्फोर्मेशन इन्फ्रास्ट्रक्चर (सीआईआई) की पहचान तथा उन्हें राष्ट्रीय क्रिटिकल इन्फोर्मेशन इन्फ्रास्ट्रक्चर केंद्र (एनसीआईआईपीसी) के समन्वयन में अधिसूचित करवाना।
- निदेशक मण्डल द्वारा अनुमोदित साइबर सुरक्षा नीति को अपनाना
- मध्यवर्ती संस्थाओं द्वारा महत्वपूर्ण आईटी परिसंपत्तियों की पहचान तथा ऐसी परिसंपत्तियों से जुड़े जोखिमों का प्रलेखीकरण
- भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (सीआईआरटी-आईएन) को सभी साइबर घटनाओं की रिपोर्टिंग
- सूचना और साइबर सुरक्षा की स्थिति का समय समय पर पुनर्मूल्यांकन

vi. सभी सार्वजनिक सुलभ एप्लीकेशन के लिए अतिसंवेदनशीलता मूल्यांकन तथा प्रवेश परीक्षा (वीए/पीटी) का आयोजन करना।

vii. मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी (सीआईएसओ) की नियुक्ति जो सूचना सुरक्षा (आईएस) नीति बनाने तथा उसे लागू करने हेतु जिम्मेदार होगा।

3.49 सेबी ने अपने संबन्धित साइबर सुरक्षा परिचालन केंद्र (सी-एसओसी) की स्थापना करने तथा समर्पित सुरक्षा विश्लेषकों द्वारा इसके परिचालन की अनवरत देख रेख करने के लिए बाजार इन्फ्रास्ट्रक्चर संस्थानों (एमआईआई) को विस्तृत दिशानिर्देश जारी किए थे। साइबर रिसिलियन्स ढांचे को स्टॉक ब्रोकर्स / अमानतदार भागीदारों के लिए भी बढ़ा दिया गया है। छोटी मध्यवर्ती संस्थाएं भी एसओसी बाजार की सेवाओं का उपयोग कर सकती हैं जो एमआईआईएस द्वारा समर्पित साइबर सुरक्षा समाधान हेतु बनाया जाना प्रस्तावित है। आईआरडीएआई ने नेटवर्क सुरक्षा की निगरानी हेतु बीमाकर्ताओं को बीमाकर्ता स्तर पर ही एसओसी की स्थापना के आदेश दिए हैं।

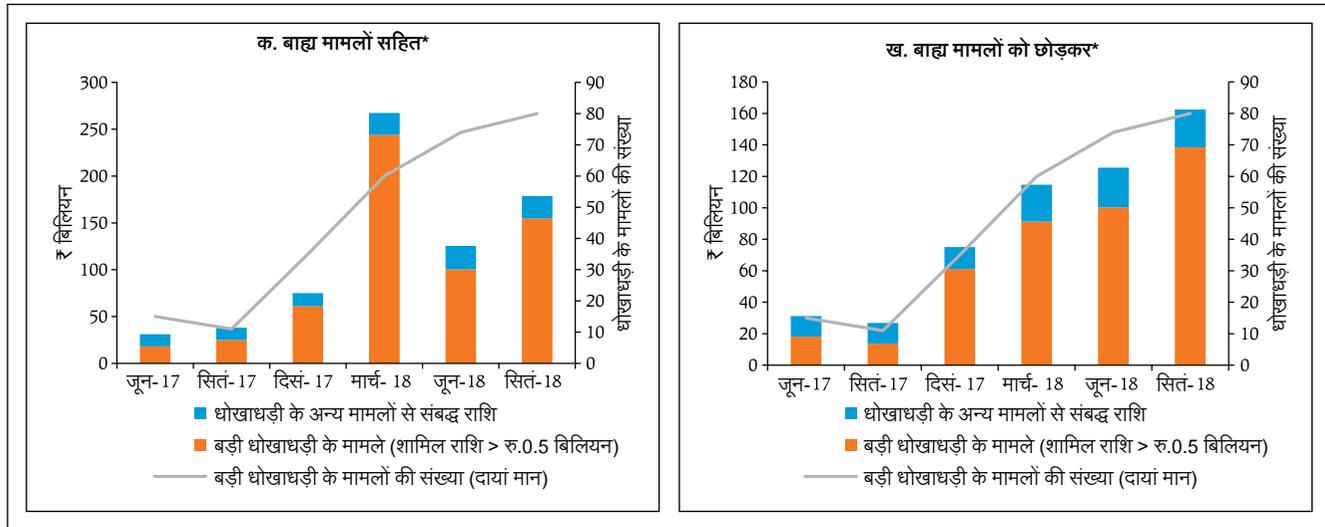
(ख) बैंकिंग धोखाधड़ी

3.50 गर्वनेंस और निदेशक मण्डल की निगरानी संरचनाओं में सुधार तथा बैंकों में मौजूदा जोखिम की अधिकता को देखते हुए बैंकिंग क्षेत्र में परिचालन जोखिम को देरी से महत्व दिया गया (बॉक्स 3.4 देखें)। सारणी 3.8 में पिछले 5 वित्तीय वर्षों तथा वित्तीय वर्ष 2018-19 की पहली छमाही के दौरान बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों द्वारा सूचित किए गए 0.1 मिलियन तथा

सारणी 3.8: पिछले 5 वित्तीय वर्षों तथा वित्तीय वर्ष 2018-19 की पहली छमाही के दौरान रिपोर्ट किए गए धोखाधड़ी के मामले (शामिल राशि \geq ₹0.1 मिलियन)

वित्तीय वर्ष	₹ 0.1 मिलियन तथा इससे अधिक की धोखाधड़ी (क)		(क) में से, ऋण से संबन्धित धोखाधड़ी (ख)		क में ख का प्रतिशत	
	धोखाधड़ियों की संख्या	शामिल राशि (₹ मिलियन)	धोखाधड़ियों की संख्या	शामिल राशि (₹ मिलियन)	धोखाधड़ियों की संख्या	शामिल राशि
2013-14	4306	101708	1990	84121	46.21	82.71
2014-15	4639	194551	2251	171222	48.52	88.01
2015-16	4693	186988	2125	173681	45.28	92.88
2016-17	5076	239339	2322	205614	45.74	85.91
2017-18	5917	411677	2526	225590	42.69	54.8
छ1:2018-19	3416	304202	1792	287505	52.5	94.51

चार्ट 3.10: बैंकिंग क्षेत्र में रिपोर्ट किए गए धोखाधड़ी के मामले (शामिल राशि > = ₹0.1 मिलियन)



नोट : *बाह्य मामलों में ऐसे मामले शामिल हैं जिनकी राशि > ₹10 बिलियन से अधिक है।
 स्रोत : रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ द्वारा परिकलन

उससे अधिक धोखाधड़ी में शामिल मामलों की संख्या तथा राशि उपलब्ध करवाया है।

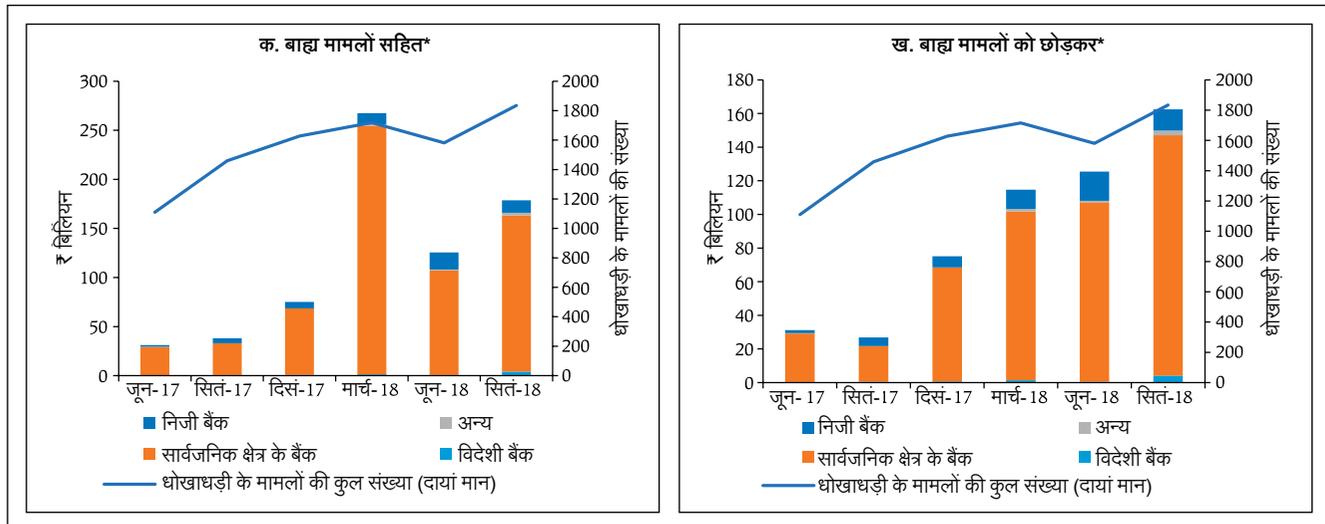
3.51 हाल ही की तिमाहियों में, रिपोर्ट किए गए धोखाधड़ी के बढ़ते हुए मामलों में बड़ी धोखाधड़ी में वृद्धि हुई है (राशि ≥ ₹ 0.5 बिलियन (चार्ट 3.10))। यहाँ पिछली 6 तिमाहियों की दोनों, बाह्य मामलों के अतिरिक्त तथा सभी

रिपोर्ट किए गए आंकड़ों के साथ, धोखाधड़ी की घटनाओं का विश्लेषण किया गया है (शामिल राशि > ₹. 10 बिलियन¹⁶)।

3.52 धोखाधड़ी की सापेक्ष हिस्सेदारी के संदर्भ में, पीएसबी का प्रभुत्व बना हुआ है। (चार्ट 3.11)

3.53 ऋण तथा अग्रिमों में धोखाधड़ी के मामले में पीएसबी तथा पीवीबी दोनों हावी रहे, यद्यपि हाल ही के रुझानों में विशेष

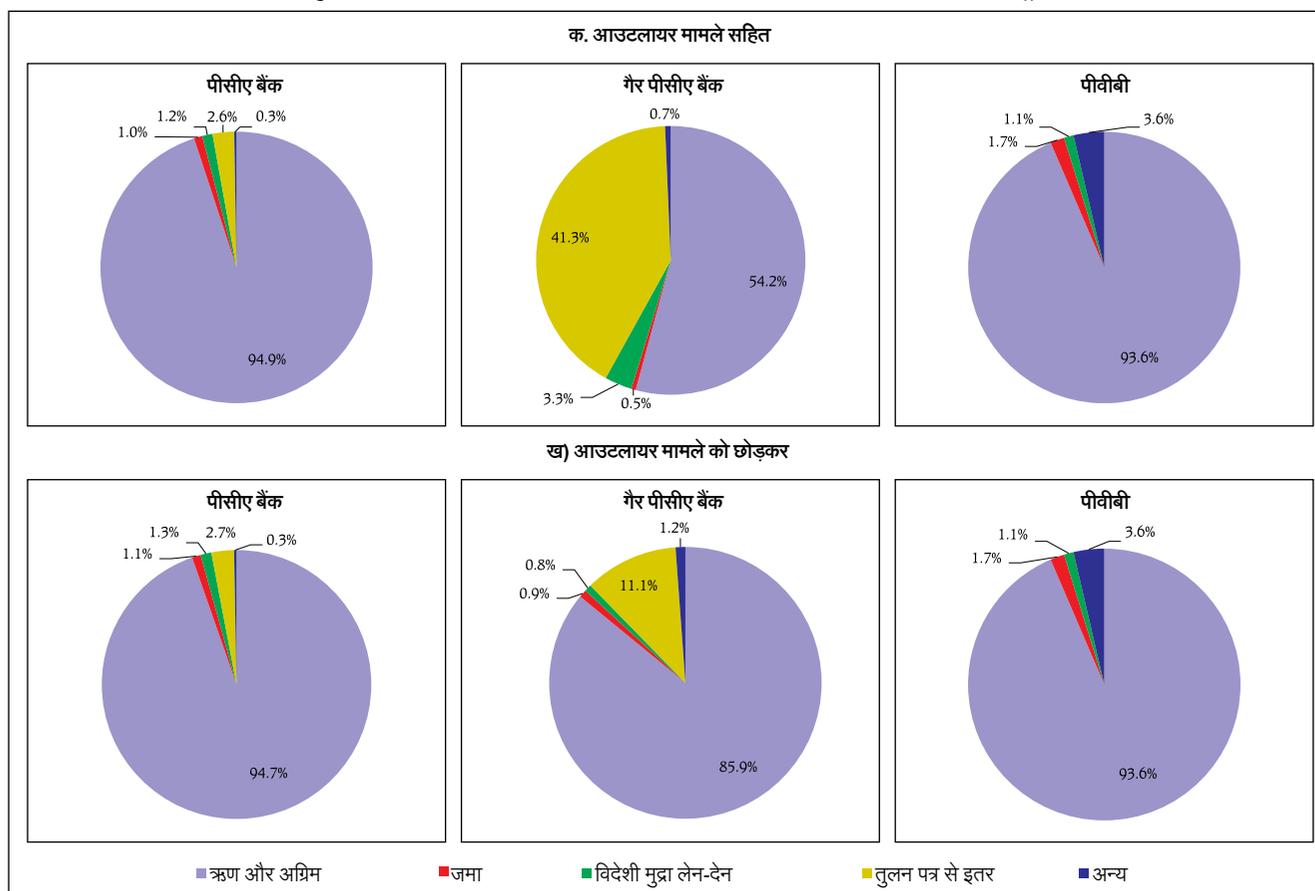
चार्ट 3.11: समग्र रूप से रिपोर्ट की गई धोखाधड़ी की राशि में बैंक समूहों की सापेक्ष हिस्सेदारी (शामिल राशि > = ₹0.1 मिलियन)



नोट : *बाह्य मामलों में ऐसे मामले शामिल हैं जिनकी राशि > ₹10 बिलियन से अधिक है।
 स्रोत : रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ द्वारा परिकलन।

¹⁶ थ्रेशोल्ड का चयन 99.9 प्रतिशतक के रूप में किया गया जो कि पिछली 6 तिमाहियों, जून 2017-सितंबर 2018 के आंकड़े पर आधारित है।

चार्ट 3.12: रिपोर्ट किए गए कुल धोखाधड़ी में से श्रेणीवार धोखाधड़ी का अंश (शामिल राशि >= ₹0.1 मिलियन) (जून 2017 से सितंबर 2018)



नोट : *गैर (आउटलायर) मामलों में वे मामले समाहित हैं जहां राशि >₹10 बिलियन शामिल हैं।
 स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी गणना।

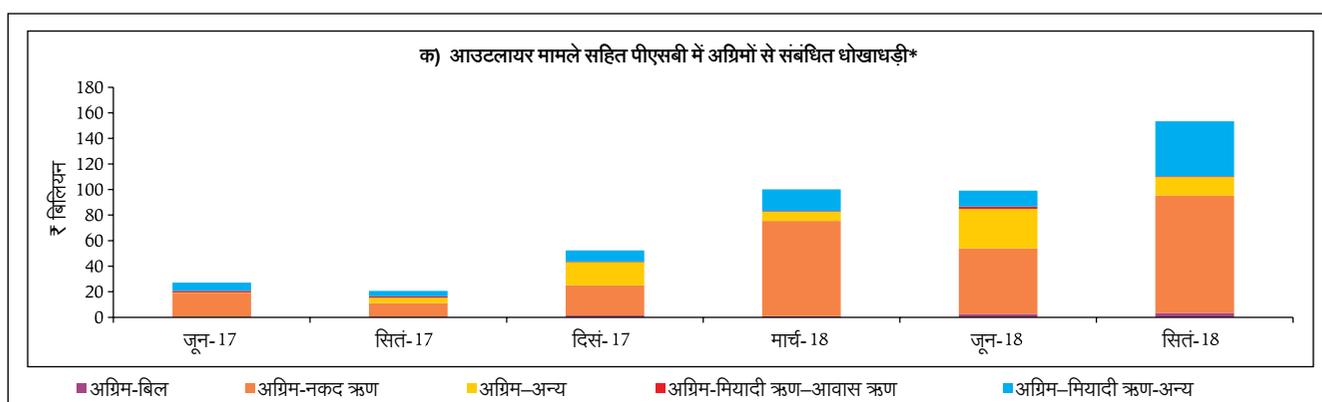
रूप से गैर पीसीए पीएसबी के ऑफ तुलन पत्र के प्रदर्शन में बढ़ती हुई कमजोरियों को इंगित किया है (चार्ट 3.12)।

3.54 ऋण के संदर्भ में, खासकर पीएसबी में धोखाधड़ी युक्त (चार्ट 3.13क) कार्यशील पूंजी, जैसा कि जून 2018 के एफएसआर में बताया गया है, पीवीबी हेतु इसी प्रकार का एक

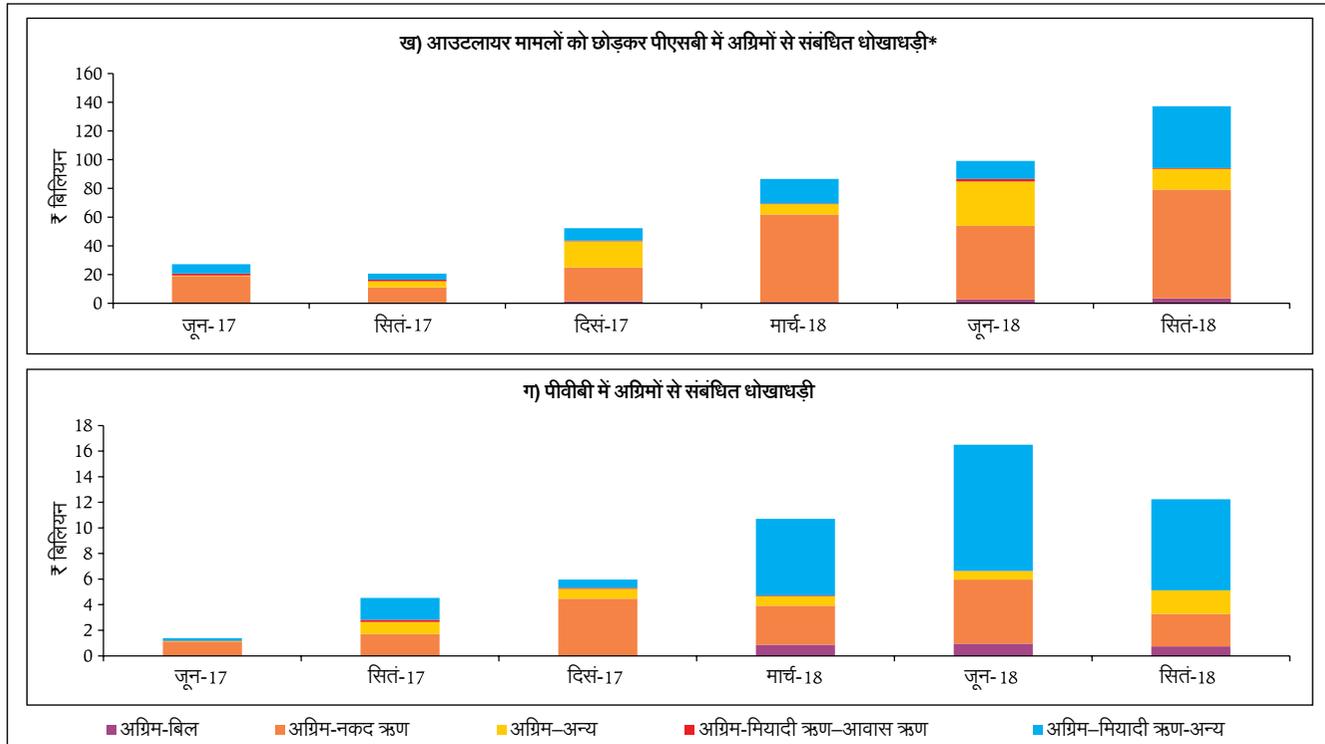
विश्लेषण यह दर्शाता है कि मियादी ऋणों में भी उच्च धोखाधड़ी की घटनाएँ घटित हुई हैं। (चार्ट 3.13ग)

3.55 परिचालन जोखिम के संदर्भ में पीएसबी में अपेक्षाकृत उच्च संवेदनशीलता को देखते हुए, ऐसे बैंकों में परिचालन जोखिम को ध्यान में रखते हुए प्रासंगिक पूंजीकरण तर्कसंगत

चार्ट 3.13: रिपोर्ट किए गए अग्रिम संबंधी धोखाधड़ी (शामिल राशि >= ₹0.1 मिलियन) (जारी...)



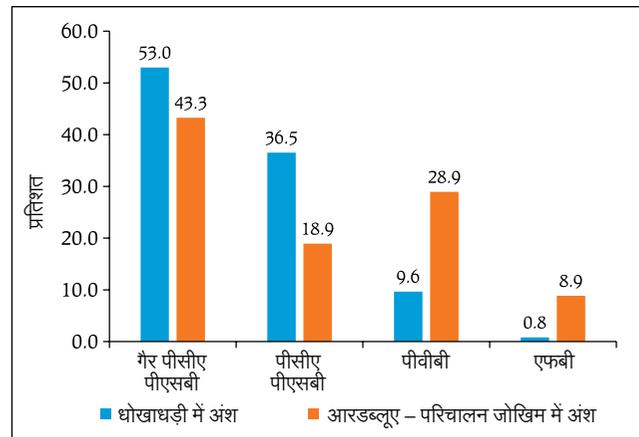
चार्ट 3.13: अग्रिम संबंधी धोखाधड़ी (जारी...)



नोट : * आउटलायर मामलों में वे मामले समाहित हैं जहां राशि > ₹10 बिलियन शामिल है।
 स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी गणना।

प्रतीत होता है। चार्ट 3.14, धोखाधड़ी में विभिन्न बैंक-समूहों के संबंधित अंश (साधित परिचालन जोखिम हेतु प्रॉक्सी) साथ ही परिचालन जोखिम आरडब्ल्यूए (अर्थात परिचालन जोखिम के लिए आबंटित पूंजी) में उनके संबंधित अंश को दर्शाता है। उदाहरणार्थ, जैसा कि चार्ट में देखा जा सकता है, पिछले चार वर्षों में हुए कुल धोखाधड़ी में पीसीए-पीएसबी का अंश लगभग 36.5 प्रतिशत रहा है, परंतु परिचालन जोखिम हेतु आरडब्ल्यूए में उनकी कुल भागीदारी 18.9 फीसदी के निचले स्तर पर रही है। आबंटित पूंजी के साथ वास्तविक परिचालन जोखिम का अधिक विवेकपूर्ण संरेखण, विशेष रूप से पीसीए-पीएसबी के संबंध में, वांछनीय है। इसके अतिरिक्त, जैसा कि एफएसआर (जून 2018) के 17वें संस्करण में उल्लेख किया गया है कि लेखा परीक्षा ढांचे (आंतरिक और बाह्य दोनों) की दक्षता पर संपूर्ण मूल्यांकन की आवश्यकता है, अतः क्रेडिट जोखिम में अंतर्निहित “परिचालन जोखिम” के कारण उत्पन्न हुए समस्याओं, खासकर पीएसबी हेतु, से निपटने के लिए जवाबदेही और क्रेडिट स्क्रीनिंग / पर्यवेक्षण संबंधी एक आंतरिक गवर्नेंस ढांचे की आवश्यकता है।

चार्ट 3.14: प्रमुख बैंक समूहों के परिचालन जोखिम हेतु जोखिम-भारित आस्तियां तथा रिपोर्ट किए गए धोखाधड़ी में संबंधित अंश (वित्त वर्ष 2014-15 से वित्त वर्ष 2017-18)



स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी गणना।

3.56 तुलन-पत्र से इतर लिखतों के माध्यम से बड़ी धोखाधड़ी की बढ़ती घटनाओं के आलोक में, बैंकों में तुलन-पत्र से इतर एक्सपोजर के क्रॉस वैलिडेशन का उपयोग अति महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, पीएसबी के मध्य धोखाधड़ी की प्रबलता, जोखिम शमन प्रक्रियाओं की अपर्याप्तता को इंगित

करता है। इस संबंध में, संगठनात्मक परिवेश में उपयुक्त जोखिम संस्कृति का मूल्यांकन एवं समावेशन महत्व रखता है। बॉक्स 3.4, जोखिम संस्कृति से संबंधित कुछ मुख्य विशेषताओं की संभावना तलाशता है।

बॉक्स 3.4 जोखिम संस्कृति

वित्तीय इतिहासकार पीटर एल. बर्नस्टीन के अनुसार, 'जोखिम' नामक शब्द की व्युत्पत्ति प्रारंभिक इतालवी शब्द 'रिसिकेयर' से हुआ है, जिसका अर्थ है 'साहस दिखाना'। इस अर्थ में, जोखिम भाग्य के बजाय एक विकल्प है। जिन कार्यों को करने के लिए हम साहस दिखाते हैं, जो इसपर निर्भर करता है कि हम विकल्प चुनने हेतु कितने स्वतंत्र हैं, वास्तव में वही जोखिम का पूरा परिदृश्य है। बर्नस्टीन ने अपनी पुस्तक "अगेंस्ट द गॉड्स; दी रिमार्केबल स्टोरी ऑफ रिस्क" में जोखिम की व्याख्या एक बड़े पैमाने पर करने की कोशिश कर रहे थे।

द इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल फाइनेंस (आईआईएफ) ने जोखिम संस्कृति को "एक संगठन के भीतर व्यक्तियों और समूहों के व्यवहार के मानदंड और परंपराओं के रूप में परिभाषित किया है जो संगठन द्वारा सामना किए गए एवं लिए गए जोखिमों के संबंध में उसे निर्धारित मानदंडों के अनुरूप पहचानते हैं, समझते हैं, चर्चा करते हैं और उससे निपटते हैं। जोखिम में अपेक्षाओं का सुपरिभाषित सेट होता है जो मात्रात्मक है। परंतु संस्कृति में "आप इसे समझते हैं जब आप इसे देखते हैं" नामक तत्व अंतर्निहित होता है, जो समय, व्यक्ति के साथ-साथ संगठन हेतु विशिष्ट होता है, अतः इसका अंदाजा लगाना मुश्किल होता है। अतः, यह सुनिश्चित करने के लिए कि निर्णय में जोखिम संस्कृति अंतर्निहित हो, नई प्रणालियों और तकनीकों की आवश्यकता होती है तथा फर्म के भीतर उसे संचालित करने वाले मुख्य कारकों की और अधिक गहन संवीक्षा करने की आवश्यकता होती है।

यह मुद्दा विशेष रूप से जेनिफर लर्नर और फिलिप टेटलॉक द्वारा व्यवहार संबंधी शोध परिणामों के संदर्भ में प्रासंगिक है जिसमें व्यक्ति दूसरों द्वारा जवाबदेह ठहराए जाने पर ही गंभीर तरीके से सोचने के लिए प्रेरित होता है। अतः, यदि संगठन जवाबदेह निर्णय लेने संबंधी संस्कृति को बढ़ावा देता है, तो कर्मचारियों द्वारा पुष्टिकरण साक्ष्य के प्रति पक्षपात करने की संभावना कम हो जाती है।

अतः, चूंकि जोखिम संस्कृति समग्र संस्कृति से प्रभावित होती है, पर यह व्यवहार तत्वों, प्रोत्साहन संरचनाओं, फर्मों में जवाबदेही ढांचे के साथ-साथ जोखिम जागरूकता और नियंत्रण से भी प्रभावित

होती है। जैक्सन (2014) ने कहा है कि जोखिम संस्कृति से संबंधित तत्वों, जो कि उसे प्रभावित करता है, की सीमा को समझने के लिए, श्रेणियों की एक विस्तृत श्रृंखला में इसकी असफलताओं को देखना बोधपरक होगा :

- ज्ञात लेकिन असंभावित जोखिमों पर ध्यान देने में कमी
- अधिकाधिक जोखिम के कारण व्यापार बंद
- जोखिमों को उजागर करने में वरिष्ठ प्रबंधन की विफलता
- कर्मचारियों द्वारा जोखिम में कमी को प्राथमिकता के रूप में नहीं देखना
- व्यक्तिगत जोखिम भरा व्यवहार

जोखिम संस्कृति का आंकलन

जोखिम संस्कृति के आंकलन का सामना करने वाली चुनौती मुख्य रूप से इस तथ्य से उजागर होती है कि इस तरह के आंकलन को एक विशिष्ट बहुसांस्कृतिक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान में संस्कृति और मूल्यों पर केंद्रित व्यापक, मौजूदा कार्यक्रमों से अलग किया जाए। चूंकि जोखिम संस्कृति आंकलन कार्यक्रम एवं संस्कृति और मूल्यों से संबंधित कार्यक्रम दोनों ही स्टाफ के दृष्टिकोण और व्यवहार के बारे में अपेक्षाओं को निर्धारित करने का प्रयास करते हैं, अतः जोखिम संस्कृति का दायरा अधिक विशिष्ट हो जाता है; इस मामले में, मनोभाव और व्यवहार विशेष रूप से जोखिम प्रबंधन से संबंधित हैं।

चूंकि बोर्ड सहित शीर्ष कार्यपालक समिति, जिन पर प्राथमिक रूप से वास्तविक जोखिम संस्कृति एवं नियंत्रण और प्रणाली पर इसके प्रभाव का आंकलन करने के लिए विभिन्न सर्वेक्षण आयोजित करने संबंधी उत्तरदायित्व होता है, के संबंध में यह उजागर हुआ है कि 'एक सर्वेक्षण' जोखिम और अनुपालन के दृष्टिकोण से उत्परिवर्तन को जानने में सक्षम नहीं होता। अतः, इस मुद्दे पर ऑन-गोइंग डैशबोर्ड और संकेतक होना चाहिए।

उपयुक्त जोखिम संस्कृति का सृजन करना

उपयुक्त जोखिम संस्कृति वाले वातावरण बनाने के लिए इसके भीतर विभिन्न प्रकार के तत्वों को अंतर्निहित करना आवश्यक होता है।
(जारी...)

है। कुछ महत्वपूर्ण तत्व निम्नानुसार हैं¹⁷:-

1. जोखिम-वहन क्षमता - जोखिम संस्कृति की आमतौर पर विफलता इस तथ्य से उजागर होती है कि प्रत्याशित हानि या प्रतिष्ठा संबंधी नुकसान का यदि पूर्व में उचित रूप से आंकलन किया जाता है तो यह पूर्व में स्वीकार्य योग्य नहीं होता। फिर भी, जोखिम-वहन क्षमता की मौजूदा परिभाषा में अक्सर रिस्क-रिटर्न ट्रेड ऑफ का व्यावहारिक मूल्यांकन नहीं होता है। इस भूमिका के निर्वहन के लिए, जोखिम-वहन क्षमता को स्पष्ट मापीय आधार पर वास्तविक रूप में होना चाहिए जिसके आधार पर नियंत्रण और निगरानी की जा सके। चूंकि यह अकेले एक मजबूत जोखिम संस्कृति हेतु पर्याप्त नहीं है, अतः इस तरह का मापने योग्य मैट्रिक्स एक ढांचा प्रदान करता है जिसके आधार पर निर्णयों का परीक्षण किया जा सकता है और नियंत्रण का आंकलन किया जा सकता है।
2. मूल्य और व्यवहार - सामान्य तौर पर, संगठन द्वारा की गई अपेक्षाओं के अनुरूप कर्मचारी, जैसा उन्हें लगता है, व्यवहार करेंगे। फिर भी, अपेक्षित व्यवहार का पालन करके जरूरी नहीं की आवश्यक मूल्य और संस्कृति उभार कर सामने आए क्योंकि इस तरह के व्यवहार को व्यवसाय मॉडल के साथ भी फिट बैठना चाहिए।
3. प्रोत्साहन
 - क. निष्पादन प्रबंधन प्रणाली और जोखिम-आधारित पारिश्रमिक, जोखिमों के साथ रिward को संरेखित करने में एक दीर्घकालिक उपाय साबित हो सकता है। आस्थगित पारिश्रमिक, अर्थात् एक ऐसी पारिश्रमिक संरचना जिसमें जब लाभ उच्चतम स्तर पर हो तो भी उसमें कोई अप-साइड न हो तथा यदि कुछ निश्चित बिंदुओं के कारण लाभ कम होने लगे तो डाउन-साइड हो, को कुछ यूरोपीय व्यवस्था में जोखिम आधारित पारिश्रमिक को बढ़ावा देने हेतु विचार किया जा रहा है।
 - ख. जोखिम संस्कृति में, व्यापक गैर-धन संबंधी प्रोत्साहन समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आंतरिक पदानुक्रम में जोखिम और अनुपालन अधिकारियों की पदोन्नति के साथ-साथ अमूर्त प्रोत्साहन जैसे कि 'पद' जोखिम वाले व्यवहार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ग. जोखिम संस्कृति में विफलता के लिए कौन जिम्मेदार है - क्या यह व्यावसायिक है या जोखिम प्रबंधन - यह हमेशा संगठनों में पारदर्शी रूप से निर्धारित नहीं होता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि निर्मित व्यवस्था के तहत जोखिम विफलता हेतु संबंधित को उत्तरदायी ठहराया जाए, एक प्रोत्साहन समर्थित तर्क की आवश्यकता है।

4. जोखिम पारदर्शिता- इस तरह की पारदर्शिता में आंतरिक और बाहरी दोनों तरह की विशेषता होती है। आंतरिक पारदर्शिता प्रबंधन को जोखिम-वहन क्षमता के भीतर जोखिम को रखने तथा प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाती है, जबकि बाहरी पारदर्शिता बाहरी हितधारकों को जोखिम संस्कृति को समझने और उचित रूप से प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाती है।

चूंकि जोखिम संस्कृति को तत्वों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रभावित करती है, अतः ऐसे कार्यक्रम जो केवल जोखिम संस्कृति को प्रभावित करने के लिए केंद्रित होते हैं, उनके सफल होने की संभावना कम होती है। व्यावसायिक लक्ष्यों, व्यवहार और प्रोत्साहन के लिए एक व्यापक भूमिका जैसे मुद्दे नियमित रूप से जोखिम-वहन क्षमता के साथ बने रहते हैं। सांस्कृतिक स्वरूप जैसे खुलापन, बोलने की क्षमता – मुख्य रूप से गलतियों की जल्द से जल्द पहचान और स्वीकारोक्ति सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा उपाय और उनसे सीख प्राप्त करने की प्रवृत्ति मनोवैज्ञानिक सुरक्षा को बढ़ावा देती हैं तथा ऐसा कहा जाता है कि यह स्वस्थ संस्कृतियों का पोषण करती हैं एवं किसी संस्था में दुष्क्रियात्मक व्यवहार से बचने और गलत कार्यों से निपटने में बेहतर सिद्ध होती है। एक अच्छी संगठनात्मक संस्कृति न केवल यह सुनिश्चित करती है कि अच्छे लोग बुरे काम न करें, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि अच्छे लोग और बेहतर काम करने में सक्षम हो सकें।

संदर्भ:

पीटर एल. बर्नस्टीन (1996): "अगैस्ट द गॉड्स: द रिमार्केबल स्टोरी ऑफ रिस्क", जॉन विली एंड संस

पेट्रीसिया जैक्सन (2014): "रिस्क कल्चर एण्ड एफेक्टिव रिस्क गोवर्नेंस", <https://riskbooks.com/risk-culture-and-effective-risk-governance> पर उपलब्ध

वित्तीय आचरण प्राधिकरण यूके (2018): "ट्रान्स्फॉर्मिंग कल्चर इन फ़िनान्सियल सर्विसेज", <https://www.fca.org.uk/publication/discussion/dp18-02.pdf> पर उपलब्ध।

¹⁷ "रिस्क कल्चर एण्ड एफेक्टिव रिस्क गोवर्नेंस" से अनुकूलित - पेट्रीसिया जैक्सन द्वारा संपादित, रिस्क बुक्स, सितंबर 2014, <https://www.fca.org.uk/publications/discussion-papers/dp18-2-transforming-culture-financial-services>.

(सी) वित्तीय सेवाओं का आउटसोर्सिंग

3.57 रिज़र्व बैंक ने प्रमुख विदेशी बैंकों के सेवा केंद्रों/कारोबार प्रक्रिया के आउटसोर्सिंग उपक्रमों की परिचालन पर विषयगत अध्ययन किया। इस अध्ययन ने यह उजागर किया कि आउटसोर्सिंग एजेंसियां/ सामूहिक संस्थाएं दिये गए आदेश के अनुसार कार्य कर रही थीं और ऐसी कोई भी चिंताएं नहीं दिखीं जिससे बैंक की प्रतिष्ठा पर आंच आए।

3.58 कुछ पाई गई चिंताएं/ जोखिम

- आउटसोर्स की गई एजेंसी के स्टाफ-सदस्यों को सीबीएस में पढ़ने/लिखने दोनों का समान एक्सेस अधिकार, था। साथ ही यह भी पाया गया कि उपयोगकर्ता नियंत्रण संबंधी गतिविधियां जैसे कि पासवर्ड रिसेट करना, बैंक के एप्लिकेशनों तक एक्सेस अधिकार और परिवर्तन अनुरोध आदि आउटसोर्स एजेंसी द्वारा किए जा रहे थे।
- आउटसोर्स की गई एजेंसी के साथ बैंक के सेवा संबंधी करार (एसएलए) में रिज़र्व बैंक के इस अधिकार का उल्लेख नहीं है कि रिज़र्व बैंक का एक अथवा अधिक अधिकारी अथवा कर्मचारी अथवा अन्य व्यक्ति द्वारा बैंक के सेवा प्रदाता और उसके खाते-बहियों का निरीक्षण किया जा सकता है।
- आउटसोर्स किये गए सेवाओं पर अधिक मात्रा में किए जा रहे व्यय के कारण व्यक्ति संबंधी जोखिम और बढ़ा है।

पायी गई उक्त कमियों को दूर करने के लिए संबंधित बैंकों को भेजा गया।

(डी) भुगतान प्रणाली आंकड़े का संग्रहण

3.59 बेहतर निगरानी सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि भुगतान इकोसिस्टम में प्रणाली में/सेवा प्रदाता एजेंसी के पास संग्रहित आंकड़े निर्बाध रूप से पर्यवेक्षण हेतु उपलब्ध हो सके। भारत में डिजिटल भुगतान क्षेत्र में वृद्धि और इसकी आवश्यकताओं ध्यान में रखते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक ने हाल ही में भुगतान प्रणाली आंकड़ों के संग्रहण पर निदेश जारी किया है। उक्त अधिसूचना में सभी डिजिटल भुगतान प्रणाली प्रदाताओं को निर्देश दिया गया है कि उनके द्वारा संचालित भुगतान प्रणालियों से संबंधित सभी आंकड़े केवल भारत में ही रखे जाएं। इन आंकड़ों में मेसेज/ भुगतान के अनुदेश से संबंधित संपूर्ण एंड टु एंड लेनदेन का ब्यौरा/ संग्रहित जानकारी/ संपादित/ प्रक्रियागत

सूचनाएं आदि होनी चाहिए। लेनदेनों के विदेशी लैग, यदि कोई हो, के लिए आंकड़ा संबंधित विदेशी देश में, यदि आवश्यक हो तो, रखा जाना चाहिए। भुगतान प्रणाली प्रदाताओं को CERT-IN द्वारा सूचीबद्ध लेखा-परीक्षकों द्वारा लेखा-परीक्षा करवाया जाना अपेक्षित है और 2018 के अंत तक एक अनुपालन रिपोर्ट भारतीय रिज़र्व बैंक को प्रस्तुत किया जाना है।

VII. पर्यवेक्षण और प्रवर्तन

3.60 01 जुलाई 2017 से 30 जून 2018 की अवधि में प्रवर्तन विभाग ने 14 बैंकों (एक भुगतान बैंक और एक सूक्ष्म वित्त बैंक सहित) पर प्रवर्तन कार्रवाई की और कुल 1.024 मिलियन जुर्माना लगाया। 01 जुलाई 2018 से 31 अक्टूबर 2018 तक की अवधि के लिए प्रवर्तन विभाग ने 7 बैंकों (एक भुगतान बैंक और एक सहकारी बैंक सहित) पर धोखाधड़ी वर्गीकरण और रिपोर्टिंग संबंधी निदेशों के गैर अनुपालन, चालू खाता खोलते समय अपेक्षित मानदंडों का अनुपालन और CRILIC प्लेटफॉर्म और आरबीएस को रिपोर्ट दिये जाने संबंधी उल्लंघनों, अपने ग्राहक को जाने (केवाईसी) मानदंड, आय निर्धारण और आस्ति वर्गीकरण मानदंड, एटीएम संबंधी शिकायतों का समाधान करने में देरी संबंधी रिज़र्व बैंक द्वारा जारी निदेशों/दिशा-निर्देशों का उल्लंघन, समग्र रूप से सभी निदेशों का उल्लंघन और नये खाते खोलने पर रोक लगाने संबंधी विशिष्ट निदेश के गैर अनुपालन पर प्रवर्तन कार्रवाई की गई और कुल 142 मिलियन जुर्माना लगाया गया। 03 अक्टूबर 2018 से सहकारी बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों से संबंधित प्रवर्तन नियमन विभाग के दायरे में लाया गया।

VIII. अन्य गतिविधियां

3.61 भारत में सभी हितधारकों के लिए ऋण सूचनाओं का एक वृहत डेटाबेस से ऋण बाजार की दक्षता बढ़ाने, वित्तीय समावेशन में वृद्धि, कारोबार करने की सुगमता में वृद्धि, और अपचारिता पर नियंत्रण और इस प्रकार वित्तीय स्थिरता आदि में सहायता मिलेगी। इस संबंध में भारतीय रिज़र्व बैंक ने जानबुझकर चूक करने वालों और वित्तीय अपचारिता पर नियंत्रण लगाने के लिए सभी लंबित विधिक मामलों सहित सभी उधारकर्ताओं से संबंधित जानकारी को एकत्र/ दर्ज करने के लिए वृहत डिजिटल पब्लिक क्रेडिट रजिस्ट्री (पीसीआर) तैयार करने के लिए कदम

उठाया है। इस पीसीआर में सेबी, कारपोरेट कार्य मंत्रालय, वस्तु एवं सेवाकर नेटवर्क (जीएसटीएन) और भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (आईबीबीआई) से संबंधित आंकड़े शामिल किये जाएंगे ताकि बैंक तथा वित्तीय संस्थानों को रियल टाइम आधार पर मौजूदा और भावी उधारकर्ताओं का 360-डिग्री प्रोफाइल मिल सकेगा।

3.62 गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक (गिफ्ट) सिटी में वित्तीय तथा विनियामकीय फ्रेमवर्क को मजबूत करने के लिए भी कदम उठाए गए हैं ताकि उपयुक्त विवेकपूर्ण मानक विकसित किये जाएं और वित्तीय संरचनाओं का क्रमवार विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

अनुबंध 1

सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण

श्रृंखला में पन्द्रहवां सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण अक्टूबर-नवंबर 2018 के दौरान किया गया था जिसमें वित्तीय प्रणाली द्वारा वर्तमान में जिन प्रमुख जोखिमों का सामना किया जा रहा है, उनपर बाजार के प्रतिभागियों सहित विशेषज्ञों की अवधारणाओं को शामिल किया गया है। इस सर्वेक्षण के परिणामों के अनुसार जहाँ वित्तीय बाजार जोखिम को वित्तीय प्रणाली वैश्विक जोखिम को प्रभावित करने वाली उच्च-जोखिम श्रेणी के रूप में लिया गया है, वहीं समष्टि आर्थिक स्थितियों और संस्थागत स्थितियों पर जोखिम अवधारणा को वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करने वाली मध्यम जोखिम समझा गया है (चित्र 1)।

वैश्विक जोखिम के अंतर्गत पण्यों की कीमतों के कारण जोखिम को (कच्चे तेल के मूल्यों सहित) उच्च जोखिम के रूप में श्रेणीबद्ध किया गया है। समष्टि आर्थिक जोखिम समूह के अंतर्गत घटते पूँजी अंतरप्रवाह के कारण जोखिम, उच्चतर चालू खाता घाटा¹ और कॉरपोरेट क्षेत्र जोखिम मध्यम से उच्च जोखिम श्रेणी में शामिल किये गए हैं। घरेलू वृद्धि, देशी मुद्रास्फीति, राजकोषीय घाटा, ढांचागत विकास की गति, स्थावर संपदा मूल्य और हाऊसहोल्ड बचत की जोखिम वर्तमान सर्वेक्षण के अनुरूप मध्यम श्रेणी के जोखिम के रूप में बना हुआ है। वित्तीय बाजार जोखिम श्रेणी के अंतर्गत इक्विटी मूल्य में अस्थिरता, विदेशी मुद्रा विनिमय दर जोखिम और चलनिधि जोखिम मध्यम से उच्च जोखिम श्रेणी में बदल गया। संस्थागत जोखिम के अंतर्गत बैंकों की आस्ति गुणवत्ता का हास, अतिरिक्त पूँजी की आवश्यकता संबंधी जोखिम और साइबर जोखिम उच्च जोखिम कारकों के रूप में यथावत बने हुए हैं (चित्र 2)।

प्रतिभागियों का यह मत था कि आगामी आम चुनाव को ध्यान में रखते हुए राजकोषीय अनुशासन को बनाये रखना केंद्र और राज्य सरकारों की दक्षता बाजार के रुख को ऊपर उठाने में आवश्यक होगी। यू.एस. डॉलर के और अधिक मजबूत होने के साथ ही वैश्विक चलनिधि की कमी से चालू खाते में अनुवर्ती जोखिम के साथ पूँजी प्रवाह का प्रतिगमन हो सकता है। बाजार के प्रतिभागियों को यह अपेक्षा है कि व्यापारिक दबावों के कारण अनिश्चित वैश्विक वातावरण से आम चुनाव के बाद भी अस्थिरता उच्च बनी रहेगी।

लगभग 50 प्रतिशत प्रतिभागियों का यह मानना है कि आईबीसी प्रक्रिया (चार्ट 1) के स्थिरीकरण के कारण अगले

चित्र 1: सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण में पहचान किये गए प्रमुख जोखिम समूह (अक्टूबर 2018)*			
प्रमुख जोखिम समूह	अप्रैल-18	परिवर्तन	अक्टूबर-18
ए. वैश्विक जोखिम		↑	
बी. समष्टि आर्थिक जोखिम		↑	
सी. वित्तीय बाजार जोखिम		↑	
डी. संस्थागत जोखिम		↑	
ई. सामान्य जोखिम		↑	

स्रोत : आरबीआई सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण (अप्रैल 2018 और अक्टूबर 2018)।

नोट :
जोखिम श्रेणी

बहुत उच्च	उच्च	मध्यम	निम्न	बहुत निम्न
-----------	------	-------	-------	------------

पिछले सर्वेक्षण से जोखिम में परिवर्तन		
↑	↔	↓
वृद्धि	कोई परिवर्तन नहीं	कमी

*विभिन्न काल खंडों (अप्रैल और अक्टूबर में अर्ध-वार्षिक आधार पर) में संपन्न प्रसर्वांगी वित्तीय सर्वेक्षण से परिलक्षित जोखिम अवधारणा एक श्रेणी से किसी दूसरे श्रेणी में बदल (वृद्धि/कमी) सकती है, जिसे रंग में परिवर्तन द्वारा दिखाया गया है। तथापि, समान जोखिम श्रेणी में (एक ही रंग में दर्शाए गए बॉक्स) भी जोखिम अवधारणा बढ़/घट सकती है अथवा अपरिवर्तित रह सकती है, जिसे तीर द्वारा दर्शाया गया है। जोखिम अवधारणा में परिवर्तन दो लगातार सर्वेक्षण के तुलनात्मक विश्लेषण से संबंधित है।

¹ सर्वे 10 अक्टूबर 2018 को आरंभ किया गया और मूल्यों में गिरावट तथा यूएस डॉलर की मजबूती में कमी आने से पहले हुआ था।

चित्र 2: सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण में पहचान किये गए प्रमुख जोखिम (अक्तूबर 2018)*

जोखिम समूह	जोखिम मद्	अप्रैल-18	परिवर्तन	अक्तूबर-18
ए. वैश्विक जोखिम	वैश्विक विकास		↑	
	सार्वभौमिक जोखिम/ संक्रामक		↑	
	निधीयन जोखिम (बाह्य ऋण)		↑	
	वस्तु दर जोखिम (कच्चे तेल के मूल्य सहित)		↓	
	अन्य वैश्विक जोखिम		↓	
बी. समष्टि आर्थिक जोखिम	देशी विकास			
	देशी मुद्रास्फीति			
	चालू खाता घाटा			
	पूँजी अंतरप्रवाह/ बाह्यप्रवाह (एफआईआई प्रतिगमन, एफआईआई में धीमापन)		↑	
	सार्वभौमिक रेटिंग गिरावट			
	राजकोषीय घाटा			
	कॉरपोरेट क्षेत्र जोखिम			
	ढांचागत विकास की गति			
	स्थावर संपदा मूल्य			
	घरेलू बचत			
	राजनैतिक अस्थिरता/ शासन/ नीति कार्यान्वयन		↑	
	अन्य समष्टि आर्थिक जोखिम		↑	
	सी. वित्तीय बाजार जोखिम	विदेशी मुद्रा विनिमय दर जोखिम		
इक्विटी मूल्य अस्थिरता				
ब्याज दर जोखिम				
चलनिधि जोखिम				
अन्य वित्तीय बाजार जोखिम			↑	
डी. संस्थागत जोखिम	विनियमन जोखिम			
	आस्ति गुणवत्ता हास			
	बैंकों को अतिरिक्त पूँजी की आवश्यकता			
	बैंकों द्वारा निधीयन की उपलब्धता			
	ऋण वृद्धि का स्तर			
	साइबर जोखिम			
	परिचालनगत जोखिम			
	अन्य संस्थागत जोखिम			
ई. सामान्य जोखिम	आतंकवाद			
	मौसम संबंधी जोखिम			
	सामाजिक अस्थिरता (बढ़ती हुई असमानता)			
	अन्य सामान्य जोखिम		↑	

स्रोत : आरबीआई प्र सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण (अप्रैल 2018 और अक्तूबर 2018)।

नोट :
जोखिम श्रेणी

बहुत उच्च	उच्च	मध्यम	निम्न	बहुत निम्न
-----------	------	-------	-------	------------

पिछले सर्वेक्षण से जोखिम में परिवर्तन		
↑	↔	↓
वृद्धि	कोई परिवर्तन नहीं	कमी

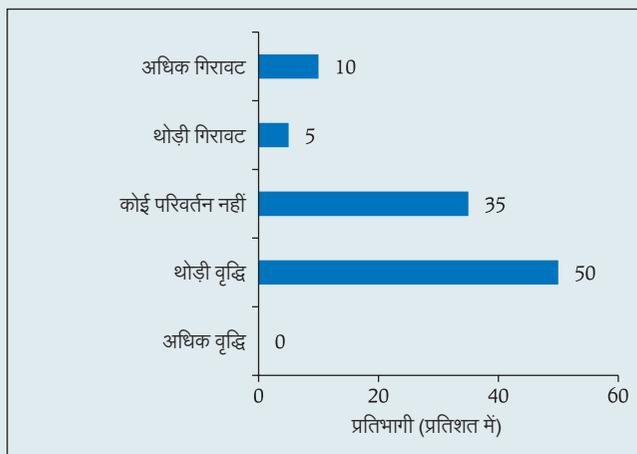
*विभिन्न काल खंडों (अप्रैल और अक्तूबर में अर्ध-वार्षिक आधार पर) में संपन्न सर्वांगी वित्तीय सर्वेक्षण से परिलक्षित जोखिम अवधारणा एक श्रेणी से किसी दूसरे श्रेणी में बदल (वृद्धि/कमी) सकती है, जिसे रंग में परिवर्तन द्वारा दिखाया गया है। तथापि, समान जोखिम श्रेणी में (एक ही रंग में दर्शाए गए बॉक्स) भी जोखिम अवधारणा बढ़/घट सकती है अथवा अपरिवर्तित रह सकती है, जिसे तीर द्वारा दर्शाया गया है। जोखिम अवधारणा में परिवर्तन दो लगातार सर्वे के तुलनात्मक विश्लेषण से संबंधित है।

एक वर्ष में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की संभावनाएं थोड़ी बेहतर होगी।

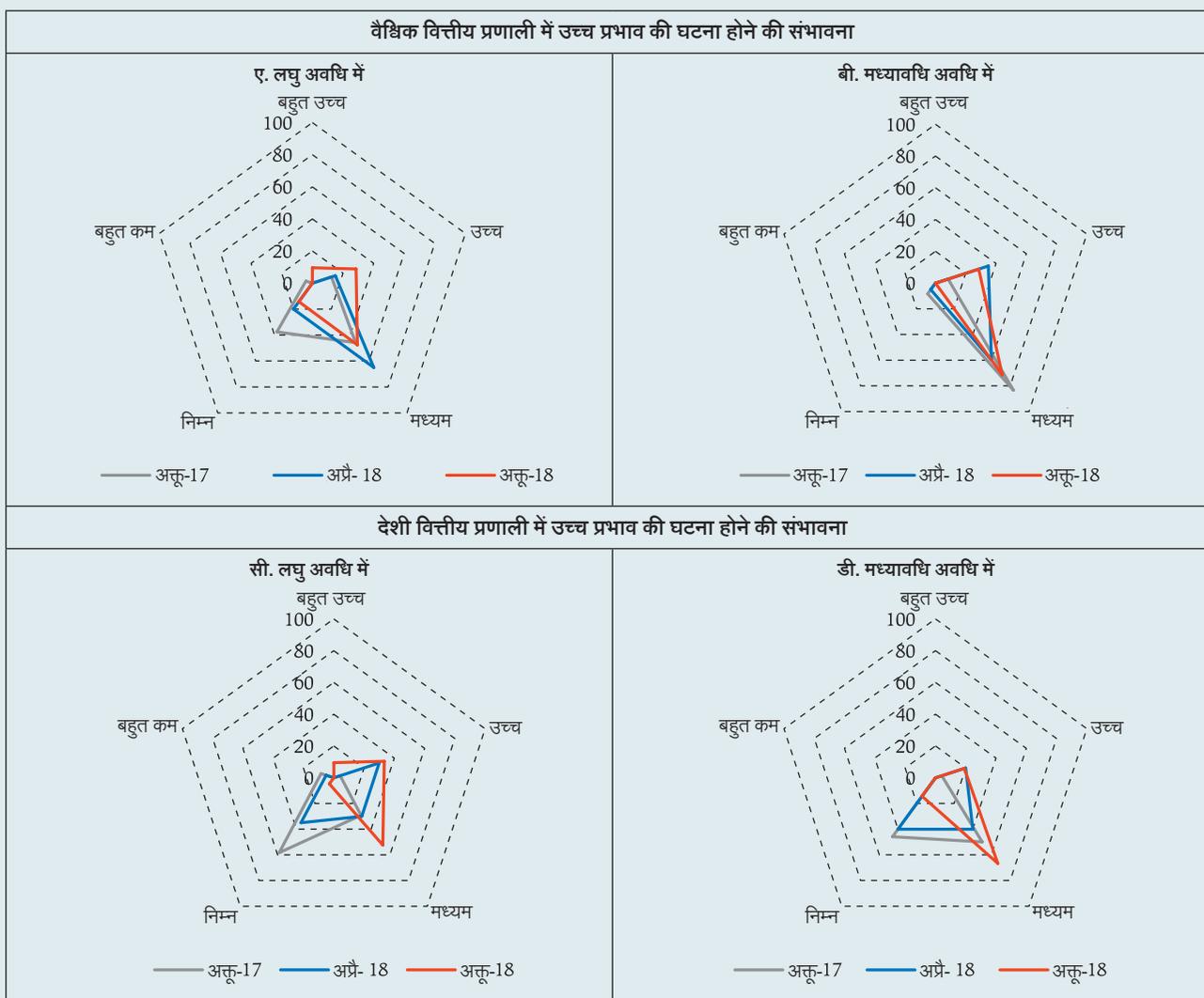
सर्वेक्षण के इस संस्करण में शामिल अधिकतर प्रतिभागी यह समझते हैं कि वैश्विक वित्तीय प्रणाली पर अथवा भारतीय वित्तीय प्रणाली पर उच्च प्रभाव की घटना होने की संभावना लघु अवधि (1 वर्ष तक) और माध्यमिक अवधि (1 से 3 वर्ष) के दौरान मध्यम रहने वाली है। इस सर्वेक्षण में शामिल ऐसे प्रतिभागियों की संख्या में कमी आई है, जो यह मानते हैं कि वे वैश्विक वित्तीय प्रणाली की स्थिरता को लेकर बहुत आश्वस्त थे (चार्ट 2)।

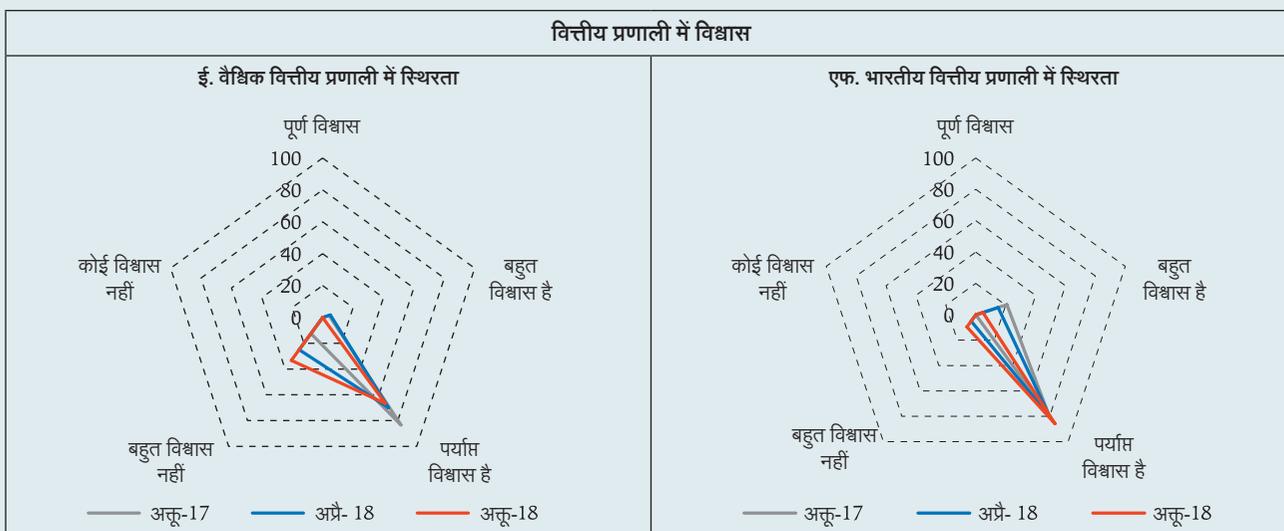
अधिकतर प्रतिभागियों का यह मानना था कि अगले

चार्ट 1: अगले एक वर्ष में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की संभावनाएं



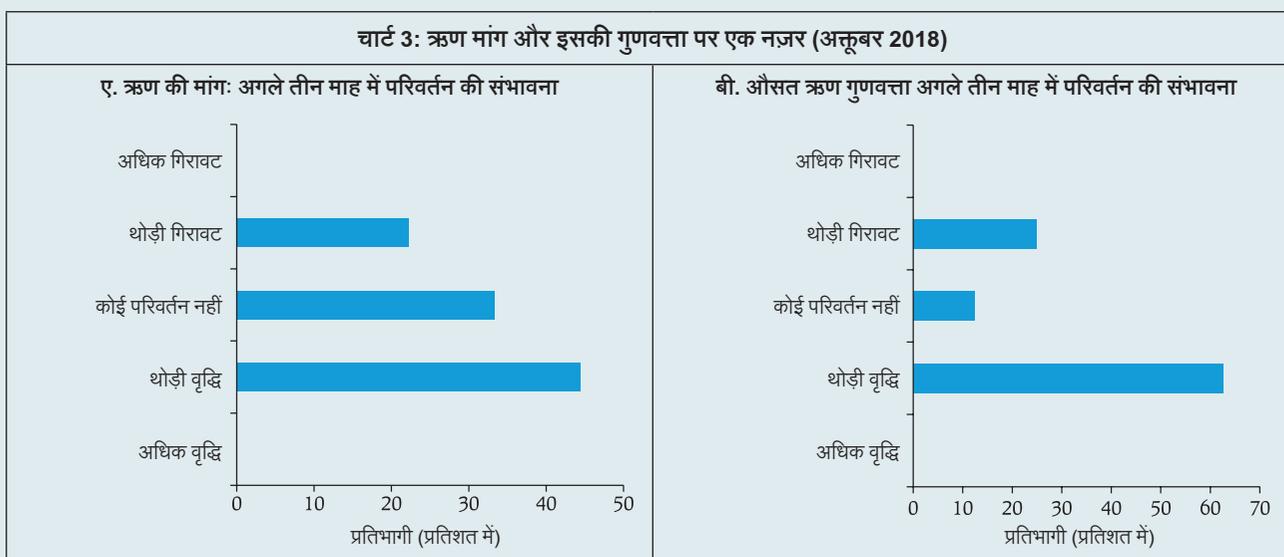
चार्ट 2: वित्तीय प्रणाली में उच्च प्रभाव की घटना होने की संभावना और विश्वास की अवधारणा





स्रोत : आरबीआई सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण (अप्रैल 2018 और अक्टूबर 2018)।

तीन माह में ऋण की मांग थोड़ी बढ़ने वाली है। अगले तीन माह में औसत ऋण गुणवत्ता थोड़ी बेहतर होने वाली है (चार्ट 3)।



स्रोत : आरबीआई प्र सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण (अप्रैल 2018 और अक्टूबर 2018)।

अनुबंध 2

सर्वांगी जोखिम सर्वेक्षण

2.1 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक

बैंकिंग स्थिरता परिदृश्य और संकेतक

बैंकिंग स्थिरता परिदृश्य और संकेतक एक अवधि के दौरान बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता पर प्रभाव डालने वाली आधारभूत स्थितियों और जोखिम घटकों में होने वाले परिवर्तनों के समग्र मूल्यांकन को प्रस्तुत करते हैं। बैंकिंग स्थिरता परिदृश्य में प्रयुक्त पाँच सम्मिश्रित सूचकांक एवं संकेतक वृद्धता, आस्ति गुणवत्ता, लाभप्रदता, चलनिधि और कार्यकुशलता के पांच आयामों को व्यक्त करते हैं। प्रत्येक सम्मिश्रित सूचकांक को बनाने में प्रयुक्त अनुपातों को सारणी 1 में दिया गया है:-

सारणी 1: बैंकिंग स्थिरता परिदृश्य और संकेतक को बनाने के लिए प्रयुक्त अनुपात

आयाम	अनुपात			
वृद्धता	सीआरएआर #	टियर-1 पूंजी से टियर II पूंजी #	पूंजी और आरक्षित निधि के लिए कुल आस्ति के रूप में लीवरेज अनुपात	
आस्ति-गुणवत्ता	कुल अग्रिम के लिए निवल एनपीए	कुल अग्रिम के लिए सकल एनपीए	सकल एनपीए के लिए अवमानक अग्रिम #	मानक अग्रिमों के लिए पुनःसंचित - मानक अग्रिम
लाभप्रदता	आस्तियों पर प्रतिफल #	निवल ब्याज मार्जिन #	लाभ में संवृद्धि #	
चलनिधि	कुल आस्तियों के लिए चलनिधि आस्तियां #	कुल आस्तियों के लिए ग्राहक जमा राशियां #	ग्राहक की जमाराशियों के लिए गैर-बैंक अग्रिम	कुल जमाराशियों के लिए 1 वर्ष की अवधि के भीतर परिपक्व होने वाली जमाराशियां
कार्यकुशलता	आय की तुलना में लागत	स्टाफ व्यय के लिए कारोबार (क्रेडिट + जमाराशि) #		कुल खर्च के लिए स्टाफ व्यय

नोट : # नकारात्मक रूप से जोखिम से संबन्धित

बैंक की कार्यप्रणाली के आयाम का प्रतिनिधित्व करनेवाला प्रत्येक सम्मिश्रित सूचकांक शून्य और 1 के बीच का मान लेता है। प्रत्येक सूचकांक इसके निर्माण के लिए प्रयुक्त नमूना अवधि के दौरान एक संबंधित पैमाना होता है जिसमें उच्च मान का अर्थ होता है कि उस आयाम में जोखिम अधिक है। अतः किसी विशेष आयाम में सूचकांक का मान बढ़ना यह दर्शाता है कि उस आयाम में अन्य अवधियों की तुलना में संबंधित अवधि में जोखिम में वृद्धि हुई है। नमूना अवधि के लिए प्रत्येक सूचकांक का सामान्यीकरण निम्नलिखित फार्मूले का उपयोग करते हुए किया जाता है :

$$\frac{(X_t - \min(X_t))}{(\max(X_t) - \min(X_t))}$$

जिसमें X_t अनुपात के मूल्य को t समय पर प्रदर्शित करता है। प्रत्येक आयाम के सम्मिश्रित सूचकांक की गणना, उस आयाम के लिए प्रयुक्त सामान्यीकृत अनुपातों के भारित औसत के रूप में की जाती है जहां भार, कैमल रेटिंग के अनुमान हेतु निर्धारित अंकों पर आधारित होते हैं। इन पांच सम्मिश्रित सूचकांकों के सामान्य औसत के रूप में बैंकिंग स्थिरता संकेतक का निर्माण किया जाता है।

समष्टि दबाव परीक्षण

समष्टि-आर्थिक आघातों के प्रति बैंकों की आघात-सहनीयता पता करने हेतु क्रेडिट जोखिम के लिए एक समष्टि दबाव परीक्षण किया गया। इसके अंतर्गत, बैंकों (सिस्टम एवं बड़े बैंक समूह स्तर पर) के जीएनपीए अनुपात एवं अंततः उनकी पूंजी पर्याप्तता (बैंकवार एवं सिस्टम स्तर पर 55 बैंकों के नमूनों के लिए) पर समष्टि आघात का प्रभाव देखा जा सकता है।

जीएनपीए अनुपात का प्रभाव

यहाँ, गिरावट अनुपात (एसआर)¹ को समष्टि-आर्थिक चरों के एक फंक्शन के रूप में नमूने के तौर पर लिया गया था जिसमें विविध अर्थमितीय मॉडल का प्रयोग किया गया जिसमें चुनिंदा बैंकिंग प्रणालियों का समग्र समष्टि-आर्थिक चरों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया। इसमें प्रयुक्त समय-शृंखला अर्थमितीय मॉडल हैं: (i) नमूना प्रणाली स्तरीय गिरावट अनुपात की तुलना में मल्टीवेरिएट रिग्रेशन; (ii) नमूना प्रणाली स्तरीय गिरावट अनुपात की तुलना में वेक्टर ऑटोरिग्रेशन (वीएआर); (iii) नमूना प्रणाली स्तरीय गिरावट अनुपात की तुलना में क्वान्टाइल रिग्रेशन; (iv) नमूना बैंक समूह-वार गिरावट अनुपात की तुलना में मल्टीवेरिएट रिग्रेशन; और (v) नमूना बैंक समूह-वार गिरावट अनुपात की तुलना में वीएआर। समग्र बैंकिंग प्रणाली में गिरावट अनुपात के मौजूदा और पिछले मान शामिल होते हैं जबकि समष्टि-आर्थिक चरों में आधार कीमत पर सकल मूल्य वर्द्धित (जीवीए) संवृद्धि, भारित औसत उधार दर (डब्ल्यूएलआर), सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति, जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात $\left(\frac{EX}{GDP}\right)$, जीडीपी अनुपात की तुलना में चालू खाता शेष $\left(\frac{CAB}{GDP}\right)$, और जीडीपी अनुपात की तुलना में सकल राजकोषीय घाटा $\left(\frac{GFD}{GDP}\right)$ शामिल होते हैं।

जहां मल्टीवेरिएट रिग्रेशन, बैंकिंग प्रणाली की जीएनपीए पर चुनिंदा समष्टि-आर्थिक चरों के प्रभाव का मूल्यांकन करने की अनुमति देता है, वहीं वीएआर मॉडल फीडबैक प्रभाव को भी संज्ञान में लेता है। इन पद्धतियों में, गिरावट अनुपात¹ के सशर्त मध्यमान का अनुमान लगाया जाता है और यह माना जाता है कि क्रेडिट गुणवत्ता के स्तर में परिवर्तन होने के बावजूद क्रेडिट गुणवत्ता पर समष्टि-चरों का प्रभाव समान रहेगा, जो कि हमेशा सत्य नहीं रह सकता है। इस अनुमान में छूट देने के लिहाज से क्रेडिट गुणवत्ता का अनुमान लगाने के लिए क्वान्टाइल रिग्रेशन को अपनाया गया, जिसमें सशर्त मध्यमान के स्थान पर सशर्त क्वान्टाइल का अनुमान लगाया जाता है और इस प्रकार यह सामान्येतर जोखिमों का सामना कर सकता है और यह समष्टि-आर्थिक आघातों के गैर-रैखिक प्रभावों का भी ध्यान रखता है।

गिरावट अनुपात (एसआर) पर समष्टि-आर्थिक आघातों के प्रभावों का अनुमान लगाने के लिए निम्नलिखित अर्थमितीय नमूने अपनाए गए :

प्रणाली स्तरीय नमूने

प्रणाली स्तरीय जीएनपीए का अनुमान लगाने के लिए तीन भिन्न परंतु आपस में सम्पूरक अर्थमितीय नमूने: मल्टीवेरिएट रिग्रेशन, वीएआर और क्वान्टाइल रिग्रेशन का उपयोग किया गया। इन नमूनों से उत्पन्न अनुमानों के औसत को निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया।

• मल्टीवेरिएट रिग्रेशन

यह विश्लेषण संपूर्ण वाणिज्यिक बैंकिंग प्रणाली के लिए समग्र स्तर पर गिरावट अनुपात के संबंध में किया गया।

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EX}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_5 \Delta CPI_{t-4} + \beta_6 \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-2}$$

जहां, $\alpha_1, \beta_1, \beta_2, \beta_3, \beta_4, \beta_5$ and $\beta_6 > 0$.

• वीएआर मॉडल

नोशनल रूप में, ऑर्डर पी मध्यमान-समायोजित वीएआर (VAR(p)) को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

$$y_t = A_1 y_{t-1} + \dots + A_p y_{t-p} + u_t; t=0,1,2,3,\dots$$

जहां, $y_t = (y_{1t}, \dots, y_{kt})'$ समय t पर वेरिएबल का एक वेक्टर ($K \times 1$), A_i ($i=1,2,\dots,p$) निर्धारित ($K \times K$) कोएफिशिएंट मैट्रिक्स हैं और $u_t = (u_{1t}, \dots, u_{kt})'$ एक K -आयामी वाईट नॉइज या नवोन्मेषी प्रक्रिया है।

¹ गिरावट, एक अवधि के दौरान अनर्जक आस्तियों में नई अभिवृद्धि है। गिरावट अनुपात = अवधि की शुरुआत में नई अनर्जक आस्तियां/ मानक अग्रिम।

वीएआर मॉडल का अनुमान लगाने के लिए, गिरावट अनुपात, डब्ल्यूएलआर, सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति, आधारभूत कीमत संवृद्धि पर वास्तविक जीडीपी और जीडीपी अनुपात की तुलना में सकल राजकोषीय घाटे को चुना गया। न्यूनतम सूचना मानकों और अन्य उपचारों के आधार पर वीएआर के उपयुक्त क्रम का चुनाव किया गया और इसके लिए क्रमांक 2 उचित पाया गया। चुने गए वीएआर के संवेग अनुक्रिया प्रणाली का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के समष्टि-आर्थिक आघातों के प्रभावों का निर्धारण किया गया।

- **क्वान्टाइल रिग्रेशन**

0.8 पर गिरावट अनुपात के सशर्त क्वान्टाइल का अनुमान लगाने के लिए निम्नलिखित क्वान्टाइल रिग्रेशन का प्रयोग किया गया:

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EX}{GDP} \right)_{t-3} + \beta_5 \Delta CPI_{t-5}$$

बैंक समूह स्तरीय मॉडल

बैंक समूह-वार गिरावट अनुपात (एसआर) का अनुमान लगाने के लिए दो भिन्न परंतु आपस में सम्पूरक अर्थमितीय नमूनों-मल्टीवेरिएट रिग्रेशन, वीएआर और क्वान्टाइल रिग्रेशन का उपयोग किया गया। इन नमूनों से उत्पन्न अनुमानों के औसत को निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया।

- **मल्टीवेरिएट रिग्रेशन**

विभिन्न बैंक समूहों के गिरावट अनुपात का नमूना बनाने के लिए, विभिन्न बैंक समूहों के लिए निम्नलिखित मल्टीवेरिएट रिग्रेशन का उपयोग किया गया:

सरकारी क्षेत्र के बैंक:

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{CAB}{GDP} \right)_{t-3} + \beta_5 \Delta CPI_{t-1} + \beta_6 \left(\frac{GFD}{GDP} \right)_{t-2}$$

निजी क्षेत्र के बैंक :

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-1} + \beta_3 RWALR_{t-2} - \beta_4 \left(\frac{EX}{GDP} \right)_{t-1}$$

विदेशी बैंक:

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 WALR_{t-2} + \beta_3 \Delta CPI_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EX}{GDP} \right)_{t-5} + \beta_5 \text{Dummy}$$

- **वीएआर मॉडल**

विभिन्न बैंक समूहों के गिरावट अनुपात का नमूना बनाने के लिए, विविध क्रमों के विभिन्न वीएआर नमूनों के अनुसार अनुमान लगाया गया जो निम्नलिखित समष्टि चरों पर आधारित थे:

सरकारी क्षेत्र के बैंक: जीडीपी, सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति, डब्ल्यूएलआर, जीडीपी अनुपात की तुलना में सीएबी और क्रम 2 के जीडीपी अनुपात की तुलना में जीएफडी।

निजी क्षेत्र के बैंक: जीडीपी, वास्तविक डब्ल्यूएलआर और क्रम 1 के जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात।

विदेशी बैंक: सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति, डब्ल्यूएलआर और क्रम 2 के जीडीपी अनुपात की तुलना में सीएबी।

गिरावट से जीएनपीए का अनुमान

ऊपर उल्लिखित नमूनों के माध्यम से जब एक बार गिरावट अनुपात का अनुमान लगा लिया जाता है उसके बाद निम्नलिखित तादात्म्य के आधार पर जीएनपीए का अनुमान लगाया जाता है:

$$GNPA_{T+1} = GNPA_T + \text{Slippage}_{(T,T+1)} - \text{Recovery}_{(T,T+1)} - \text{Write-off}_{(T,T+1)} - \text{Upgradation}_{(T,T+1)}$$

गिरावट अनुपातों से निकाले गए जीएनपीए, जिनका अनुमान ऊपर उल्लिखित क्रेडिट जोखिम अर्थमितीय मॉडलों द्वारा प्रक्षेपित किया जाता था, निम्नलिखित अनुमानों पर आधारित थे: 13 प्रतिशत की क्रेडिट संवृद्धि, मार्च, जून, सितंबर और दिसंबर तिमाहियों में क्रमशः 3.1 प्रतिशत, 3.3 प्रतिशत, 2.6 प्रतिशत और 2.1 प्रतिशत की दर से सुधार; मार्च, जून, सितंबर और दिसंबर तिमाहियों में क्रमशः 5.9 प्रतिशत, 4.2 प्रतिशत, 3.7 प्रतिशत और 4.1 प्रतिशत की दर से बड़े खाते डालना; मार्च, जून, सितंबर और दिसंबर तिमाहियों में क्रमशः 2.4 प्रतिशत, 2.3 प्रतिशत, 1.7 प्रतिशत और 2.2 प्रतिशत की दर से उन्नयन (अप-ग्रेडेशन)।

पूंजी पर्याप्तता पर प्रभाव

बैंक में पूंजी पर्याप्तता पर समष्टि आघातों का प्रभाव निम्नलिखित चरणों के जरिए निकाला गया:

- भावी पूंजी संचयन पर प्रभाव को कल्पित समष्टि परिदृश्य के तहत लाभ का अनुमान कर किया गया, यह मानकर कि केवल 25 प्रतिशत कर पश्चात लाभ (पैट) (जो कि न्यूनतम विनियामक अपेक्षा है) बैंक की पूंजी में जाता है।
- भविष्य में अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता और समष्टि दबाव परिदृश्य का अनुमान आंतरिक मूल्यांकन आधारित (आईआरबी) सूत्र का उपयोग कर जोखिम-भारित आस्तियों (आरडबल्यूए) का आकलन कर किया गया।

पूंजी पर्याप्तता का अनुमान लगाने के लिए निम्नलिखित सूत्र का उपयोग किया गया:

$$CRAR_{t+1} = \frac{Capital_t + 0.25 * PAT_{t+1}}{RWAs(credit\ risk)_{t+1} + RWAs(others)_{t+1}}$$

$$Common\ Equity\ Tier\ 1\ Capital\ Ratio_{t+1} = \frac{CET1_t + 0.25 * PAT_{t+1}}{RWAs(credit\ risk)_{t+1} + RWAs(others)_{t+1}}$$

जहां पैट का पूर्वानुमान सेटेलैइट नमूनों का उपयोग कर किया गया है जिनकी व्याख्या आगे के खंड में की गई है। कुल आरडबल्यूए में से क्रेडिट जोखिम आरडबल्यूए को घटाकर मिले आरडबल्यूए (अन्य) का अनुमान पिछले एक वर्ष के दौरान देखी गई औसत वृद्धि दर पर आधारित पर था। नीचे दिए गए आईआरबी सूत्र का उपयोग करते हुए आरडबल्यूए (क्रेडिट जोखिम) का आकलन किया जाता है:

आईआरबी सूत्र: क्रेडिट जोखिम के लिए बैंकवार आरडबल्यूए आकलन निम्नलिखित आईआरबी सूत्र के आधार पर किया गया।

$$RWAs(credit\ risk) = 12.5 \times \left(\sum_{i=1}^n EAD_i \times K_i \right)$$

जहां EAD_i बैंक के सेक्टर i ($i=1,2,\dots,n$) का डिफॉल्ट जोखिम है।

K_i क्षेत्र i के लिए न्यूनतम पूंजी आवश्यकता है जिसकी गणना निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करते हुए की गई है:

$$= \left[LGD_i \times N \left[(1 - R_i)^{-0.5} \times G(PD_i) + \left(\frac{R_i}{1 - R_i} \right)^{0.5} \times G(0.999) \right] - PD_i \times LGD_i \right] \\ \times (1 - 1.5 \times b(PD_i))^{-1} \times (1 + (M_i - 2.5) \times b(PD_i))$$

जहां LGD_i क्षेत्र i की दी गई डिफॉल्ट हानि है, PD_i क्षेत्र i के डिफॉल्ट की संभाव्यता है, $N(\dots)$ मानक सामान्य वितरण का संचयी वितरण फंक्शन है, $G(\dots)$ मानक सामान्य वितरण के संचयी वितरण फंक्शन का व्युत्क्रम है, M_i क्षेत्र (इस मामले में सभी क्षेत्र के लिए 2.5 ली गई है) के ऋण की औसत परिपक्वता है, $b(PD_i)$ सुस्पष्ट परिपक्वता समायोजन है और R_i अर्थव्यवस्था की सामान्य स्थिति के साथ क्षेत्र i का सह-संबंध है। $b(PD)$ और R दोनों की गणना PD पर निर्भर है।

ऊपर आईआरबी सूत्र के लिए तीन प्रमुख इनपुट की आवश्यकता होती है, यथा क्षेत्र की PD, EAD और LGDI यहाँ बैंक डाटा का उपयोग कर संबंधित क्षेत्र की वार्षिक गिरावट से क्षेत्र की PD ली गई है। PD क्षेत्र विशेष में प्रत्येक के लिए चयनित 55 बैंकों के समान (अर्थात् प्रणालीगत आघात) नमूने से लिए गए थे, जबकि, EAD क्षेत्र विशेष के लिए बैंक का उस क्षेत्र विशेष में कुल बकाया ऋण था। इसके अतिरिक्त, LGD पर पूर्वानुमान इस प्रकार लिया गया था: आधाररेखा परिदृश्य के अंतर्गत, LGD = 60 प्रतिशत (मोटे तौर पर पूंजी पर्याप्तता पर आरबीआई दिशा निर्देशों के अनुसार - ऋण जोखिम के लिए पूंजी की आवश्यकता की गणना के लिए आईआरबी पद्धति) जो माध्यम समष्टि अर्थशास्त्र जोखिम परिदृश्य में बढ़कर 65 प्रतिशत और गंभीर समष्टि अर्थशास्त्र जोखिम परिदृश्य में 70 प्रतिशत हो जाता है।

चयनित क्षेत्र : निम्नलिखित 17 क्षेत्र (और अन्य) दबाब की जांच के लिए चयनित किए गए।

सारणी 2: चयनित क्षेत्रों की सूची

क्र.सं.	क्षेत्र	क्र.सं.	क्षेत्र
1	इंजिनियरिंग	10	मूलभूत धातु और धातु उत्पाद
2	ऑटो	11	खनिज
3	सीमेंट	12	कागज
4	रसायन	13	पेट्रोलियम
5	विनिर्माण	14	कृषि
6	कपड़ा	15	रिटेल - हाउसिंग
7	खाद्य प्रसंस्करण	16	रिटेल - अन्य
8	रत्न और आभूषण	17	सेवाएँ
9	बुनियादी संरचना	18	अन्य

क्षेत्रगत वार्षिक गिरावट अनुपात (अर्थात् क्षेत्रगत PD) का समष्टि परिवर्ती के साथ प्रसंभाव्य संबंध का अनुमान लगाने के लिए प्रत्येक क्षेत्र के लिए मल्टीवेरिएट रिग्रेशन का उपयोग किया गया था। इन अनुमानित रिग्रेशन का उपयोग कर प्रत्येक क्षेत्र के क्षेत्रगत पीडी की गणना कल्पित आधार-रेखा के साथ-साथ दो प्रतिकूल परिदृश्यों, यथा, मध्यम दबाब और गंभीर दबाब के अंतर्गत अगली चार तिमाहियों के लिए की गई थी। क्षेत्रगत रिग्रेशन के नमूने आगे के खंडों में प्रस्तुत किए गए हैं।

कल्पित समष्टि परिदृश्यों के अंतर्गत पूंजी पर्याप्तता की गणना करने के क्रम में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर क्रेडिट संवृद्धि का अनुमान लगाया गया जो कि पिछले दो वर्षों में देखी गई प्रवृत्ति पर आधारित था। निम्नलिखित चरणों का उपयोग कर बैंकवार पैट की गणना की गई:

- प्रत्येक बैंक-समूह के लिए पैट के घटकों (अर्थात् निवल ब्याज आय, अन्य परिचालन गत आय, परिचालन गत व्यय और प्रावधान तथा बड़े खाते डालना) की गणना आधार रेखा और प्रतिकूल परिदृश्यों के अंतर्गत आगे के खंडों में वर्णित विधि द्वारा की गई।
- प्रत्येक बैंक के पैट के घटकों के अंश (आयकर को छोड़कर) की गणना उनके संबंधित बैंक-समूह में की गई।
- संबंधित बैंक-समूह के पैट के घटक के अनुमानित मूल्य और पैट के घटक विशेष में उस बैंक के अंश की गणना कर प्रत्येक बैंक के पैट (आयकर को छोड़कर) के प्रत्येक घटक का अनुमान लगाया गया।

- अंत में, बैंकवार पैट का पूर्वानुमान पिछले चरण में अनुमानित उनके घटकों को उपयुक्त रूप से जोड़ते अथवा घटाते हुए लगाया गया और आयकर का दर 35 प्रतिशत प्रयोग में लिया गया।

उपर्युक्त सूत्रों, अनुमान और इनपुट का प्रयोग करते हुए, बैंक स्तर पर पूंजी पर्याप्तता पर अनुमानित समष्टि परिदृश्यों के प्रभाव का अनुमान लगाया गया और अद्यतन वास्तविक तथ्यात्मक आंकड़ों से आधार रेखा के अंतर्गत पूंजी पर्याप्तता में भावी बदलाव तथा आधार रेखा से प्रतिकूल समष्टि दबाव तक बैंक की पूंजी पर्याप्तता में बदलाव की गणना की गई। अंततः इन बदलावों को समुचित रूप से बैंकों में पाई गई अद्यतन पूंजी पर्याप्तता (स्टैंडर्डाइज्ड अप्रोच के अंतर्गत) पर लागू किया गया।

क्षेत्रगत पीडी का पूर्वानुमान

1. इंजीनियरिंग

$$\Delta PD_t = \alpha - \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 EXGDP_{t-2} - \beta_4 \Delta GVA(Industry)_{t-3} + \beta_5 Dummy_t$$

2. ऑटो

$$\Delta PD_t = \alpha - \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 WALR_{t-1} - \beta_3 EXGDP_{t-1} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 \Delta CPI_{t-2} + \beta_6 Dummy_t$$

3. सीमेंट

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 EXGDP_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

4. रसायन और रासायनिक उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

5. विनिर्माण

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 EXGDP_{t-1} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

6. कपड़ा

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 EXGDP_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 \Delta CPI_{t-3} + \beta_6 Dummy_t$$

7. खाद्य प्रसंस्करण

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-3} - \beta_3 EXGDP_{t-1} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

8. रत्न और आभूषण

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 EXGDP_{t-3} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

9. बुनियादी संरचना

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 WALR_{t-1} - \beta_3 \Delta GDP_{t-2} + \beta_4 Dummy_t$$

10. मूलभूत धातु और धातु उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1}$$

11. खनिज और उत्खनन

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 EXGDP_{t-1} - \beta_3 \Delta GDP_{t-2} + \beta_4 \Delta CPI_{t-3}$$

12. कागज और कागज उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-4} - \beta_3 EXGDP_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

13. पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 EXGDP_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

14. कृषि

$$PD_t = \alpha - \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 EXGDP_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

15. सेवाएँ

$$\Delta PD_t = \alpha - \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 WALR_{t-1} - \beta_3 EXGDP_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 \Delta CPI_{t-1}$$

16. रिटेल - आवास

$$\Delta PD_t = \alpha - \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 WALR_{t-2} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1}$$

17. रिटेल - अन्य

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 WALR_{t-2} - \beta_3 EXGDP_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

18. अन्य

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

बैंक-समूहवार कर पश्चात लाभ (पैट) का अनुमान

प्रमुख बैंकों-समूहों (यथा पीएसबी, पीवीबी, एफबी) के पैट के विभिन्न घटकों, जैसे कि ब्याज से आय, अन्य आय, परिचालन गत खर्च और प्रावधान का विभिन्न समय श्रृंखलाओं पर आधारित अर्थमितीय नमूनों (जैसा कि नीचे दिया गया है) के आधार पर अनुमान लगाया गया। अंततः निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करते हुए पैट का अनुमान लगाया गया:

$$PAT = NII + OOI - OE - Provisions \& writeoff - Income Tax$$

जहां, एनआईआई- निवल ब्याज आय, ओओआई- अन्य परिचालनगत आय और ओई- परिचालनगत खर्च है।

निवल ब्याज आय (एनआईआई): एनआईआई ब्याज से आय और ब्याज पर खर्च के बीच का अंतर है और निम्नलिखित रिग्रेशन मॉडल का प्रयोग कर उसकी गणना की जाती है:

$$LNII_t = -\alpha_1 + \beta_1 \times LNII_{t-1} + \beta_2 \times LNGDP_SA_{t-1} + \beta_3 \times Adv_Gr_{t-1} + \beta_4 \times Spread_t$$

एलएनआईआई, एनआईआई का लॉग है। एलएनजीडीपी_एसए सांकेतिक जीडीपी का मौसमी रूप से समायोजित लॉग है। एडीवी_जीआर अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष होने वाली संवृद्धि दर है। स्प्रेड, ब्याज कमाने वाली आस्तियों पर कमाए गए औसत ब्याज दर और ब्याज देने वाली देयताओं पर दिए गए औसत ब्याज के बीच का अंतर है।

अन्य परिचालनगत आय (ओओआई): अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की अन्य परिचालनगत आय को निम्नलिखित रिग्रेशन मॉडल का प्रयोग करते हुए अनुमानित किया गया:

$$LOOI_t = -\alpha_1 + \beta_1 \times LOOI_{t-1} + \beta_2 \times LNGDP_SA_t$$

एलओओआई, ओओआई का लॉग है।

परिचालनगत खर्च (ओई): अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के ओई को ऑटोरिग्रेसिव मूविंग एवरेज (एआरएमए) मॉडल का प्रयोग कर अनुमानित किया गया।

प्रावधान (बढ़े खाते सहित): निम्नलिखित रिग्रेशन का उपयोग कर अपेक्षित प्रावधानों का अनुमान लगाया गया:

$$P_Adv_t = \alpha_1 + \beta_1 \times P_Adv_{t-1} - \beta_2 \times RGDP_Gr_{t-2} + \beta_3 \times GNPA_{t-1} - \beta_4 \times Dummy$$

P_Adv, कुल अग्रिमों के अनुपात की तुलना में किया गया प्रावधान है। RGDP_Gr वास्तविक जीडीपी की वर्ष-दर-वर्ष संवृद्धि दर है। जीएनपीए कुल अग्रिमों की तुलना में सकल गैर-निष्पादन आस्ति अनुपात है और इसलिए कल्पित समष्टि दबाव के अंतर्गत आस्तियों की गुणवत्ता में हास का आय पर प्रभाव इस समीकरण से निकाला गया। डमी, समयावधि डमी है।

आयकर: लागू आयकर को कर पूर्व लाभ का 35 प्रतिशत माना गया है, जो आयकर की तुलना में कर पूर्व लाभ के पिछले अनुपात के रुझानों पर आधारित है।

एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण-दबाव जांच

तिमाही निगरानी के रूप में, क्रेडिट जोखिम, ब्याज दर जोखिम, चलनिधि जोखिम आदि को शामिल करते हुए दबाव परीक्षण किए जाते हैं और इन आघातों के प्रत्युत्तर में वाणिज्यिक बैंकों की आघात सहनीयता का अध्ययन किया जाता है। यह विश्लेषण व्यक्तिगत अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक के स्तर पर और प्रणाली के स्तर पर भी किया गया।

ऋण जोखिम (संकेंद्रण जोखिम सहित)

बैंकों की आघात सहनीयता का पता लगाने के लिए समस्त पोर्टफोलियो में जीएनपीए के स्तरों में बढ़ोतरी करके ऋण निवेश को आघात दिया गया। ऋण संकेंद्रण जोखिम की जांच करने के लिए उच्चतम व्यक्तिगत उधारकर्ता (कर्ताओं) और उधारकर्ता (कर्ताओं) के सबसे बड़े समूह को चूककर्ता के रूप में लिया गया। यह विश्लेषण समग्र स्तर पर और व्यक्तिगत बैंक दोनों ही स्तरों पर किया गया। जीएनपीए में कल्पित वृद्धि को मानक से कम (अवमानक), संदेहास्पद और हानि की श्रेणियों में उसी अनुपात में बांट दिया गया जिस अनुपात में एनपीए का मौजूदा स्टॉक उपलब्ध था। तथापि, ऋण संकेंद्रण जोखिम के लिए संभावित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए पर विचार किया गया ताकि उसे अवमानक श्रेणी में ही रखा जा सके। विभिन्न आस्ति श्रेणियों के लिए लागू मौजूदा औसत मानदंडों के आधार पर इन दबाव जांचों के लिए प्रावधानीकरण मानदंडों का उपयोग किया गया। अवमानक, संदेहास्पद और हानि अग्रिमों के लिए क्रमशः 25 प्रतिशत, 75 प्रतिशत और 100 प्रतिशत की प्रावधानीकरण आवश्यकताओं को संज्ञान में लिया गया। दबाव की परिस्थितियों के तहत गणना में लिए गए अतिरिक्त जीएनपीए पर इन मानदंडों को लागू किया गया। जीएनपीए में कल्पित वृद्धि के परिणामस्वरूप, एक तिमाही में अतिरिक्त जीएनपीए पर हुई आय में हानि को भी कुल हानियों में शामिल किया गया। इसके अलावा प्रावधानीकरण आवश्यकता में भी वृद्धि की गई। इस प्रकार प्राप्त की गई अनुमानित प्रावधानीकरण संबंधी अपेक्षाओं को बैंकों की पूंजी में से घटा दिया गया और दबावग्रस्त पूंजी पर्याप्तता अनुपातों की गणना की गई।

क्षेत्रगत जोखिम

एक बैंक के क्षेत्रगत ऋण जोखिम का पता लगाने के लिए क्षेत्र विशेष के जीएनपीए अनुपात को बढ़ाकर उस क्षेत्र के ऋण पोर्टफोलियो को आघात पहुंचाया गया। यह विश्लेषण समग्र स्तर पर और व्यक्तिगत बैंक दोनों ही स्तरों पर किया गया। एक क्षेत्र के जीएनपीए अनुपातों के मानक विचलन पर आधारित क्षेत्र विशेष आघात का प्रयोग व्यक्तिगत बैंक पर हुए प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। यह माना गया कि कल्पित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए अवमानक श्रेणी में ही आएंगे। जीएनपीए में कल्पित वृद्धि के परिणामस्वरूप, एक तिमाही में अतिरिक्त जीएनपीए पर हुई आय में हानि को भी कुल हानियों में शामिल किया गया। इसके अलावा प्रावधानीकरण आवश्यकता में भी वृद्धि की गई। इस प्रकार प्राप्त की गई अनुमानित प्रावधानीकरण संबंधी अपेक्षाओं को बैंकों की पूंजी में से घटा दिया गया और दबावग्रस्त पूंजी पर्याप्तता अनुपातों की गणना की गई।

ब्याज दर जोखिम

भारतीय रुपए के प्रतिफल वक्र में आने वाले अंतर के कारण कल्पित आघात के तहत, पोर्टफोलियो की कीमत में गिरावट या आय में होने वाली गिरावट के कारण हानि हो सकती है। बैंकों की पूंजी में से इन कल्पित हानियों को कम कर दिया गया ताकि दबावग्रस्त सीआरएआर को प्राप्त किया जा सके।

ट्रेडिंग पोर्टफोलियो (एचएफटी+एएफएस) में ब्याज दर जोखिम के मामले में मूल्यन प्रभाव (पोर्टफोलियो हानि) की गणना के लिए अवधि विश्लेषण पद्धति पर विचार किया गया। दिए गए आघातों के आधार पर, प्रत्येक कालावधि के लिए, इन निवेशों पर पोर्टफोलियो हानि की गणना की गई। इसके परिणामस्वरूप प्राप्त हानि/लाभ का प्रयोग इससे प्रभावित सीआरएआर ज्ञात करने के लिए किया गया। एचटीएम पोर्टफोलियो में ब्याज दर आघातों का प्रभाव देखने के लिए अलग से एक प्रक्रिया अपनाई गई, जिसमें अवधि पद्धति का उपयोग करते हुए, ब्याज वहन करने वाली आस्तियों पर प्रत्येक कालावधि के लिए हानियों के मूल्यांकन की गणना की गई। एचटीएम पोर्टफोलियो पर जांच के लिए मूल्यांकन प्रभाव की गणना यह मानते हुए की गई कि एचटीएम पोर्टफोलियो दैनिक बाजार मूल्य पर आधारित (मार्क-टू-मार्केट) है।

इक्विटी मूल्य जोखिम

इक्विटी मूल्य जोखिम के अंतर्गत इक्विटी मूल्य सूचकांक में निश्चित प्रतिशत अंकों की गिरावट के आघात का बैंक की पूंजी और एनपीए स्तर पर प्रभाव का परीक्षण किया गया। पोर्टफोलियो मूल्य में गिरावट या इक्विटी मूल्य में बदलाव के कारण आय की हानि को कल्पित आघात के कारण बैंक की कुल हानि के लिए गिना गया। इस प्रकार आंकलित कुल हानि को बैंक की पूंजी में से कम किया गया।

चलनिधि जोखिम

चलनिधि दबाव जांच का उद्देश्य चलनिधि के अप्रत्याशित बहिर्गमन पर बाहर से चलनिधि की कोई मदद लिए बगैर बैंक की उसे वहन करने की क्षमता का पता लगाना है। अचानक जमाकर्ताओं का विश्वास खो देने के कारण विभिन्न प्रकार की परिस्थितियां जमाराशि निकासी की विविध प्रकार की संभावनाएं (जमाराशि के प्रकार के अनुसार) सामने लाती हैं और साथ ही स्वीकृत/प्रतिबद्ध/गारंटीशुदा क्रेडिट (कार्यशील पूंजी की स्वीकृत अप्रयुक्त सीमा, प्रतिबद्ध क्रेडिट और क्रेडिट पत्रों तथा गारंटियों की अप्रयुक्त सीमा को ध्यान में रखते हुए) सीमाओं के अप्रयुक्त हिस्से के लिए मांग उत्पन्न करती हैं। दबाव परीक्षण इस बात को ध्यान में रखते हुए किया गया कि क्रेडिट के लिए अतिरिक्त और अप्रत्याशित मांग को बैंकों की केवल चलनिधि युक्त आस्तियों की सहायता से पूरा करने की उनकी क्षमता का पता लगाया जा सके।

चलनिधि दबाव परीक्षण के कल्पित बिंदु इस प्रकार हैं:

- यह माना गया कि बैंक केवल चलनिधियुक्त आस्तियों की बिक्री के जरिए जमाराशियों की दबावग्रस्त निकासी या क्रेडिट की अतिरिक्त मांग को पूरा कर लेंगे।
- किए गए निवेशों की बिक्री उनके बाजार मूल्य में दस प्रतिशत के हेयरकट पर कर ली जाएगी।
- दबाव परीक्षण "स्टैटिक मोड" के अंतर्गत किया गया।

बॉटम-अप दबाव परीक्षण : चुनिंदा बैंकों के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो

दबाव परीक्षण को शीर्ष 20 बैंकों के प्रतिनिधि नमूना समूह के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो के संबंध में केंद्रित किया गया और इसके लिए डेरिवेटिव पोर्टफोलियो का अनुमानित मूल्य लिया गया। इस नमूने में शामिल प्रत्येक बैंक से कहा गया कि वे अपने संबंधित डेरिवेटिव पोर्टफोलियो के संबंध में दबाव परिस्थितियों के प्रभाव का मूल्यांकन करें।

घरेलू बैंकों के मामले में, घरेलू और विदेशी दोनों प्रकार के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो को शामिल किया गया। विदेशी बैंकों के मामले में, इस प्रक्रिया में केवल घरेलू (भारतीय) स्थिति पर विचार किया गया। जिस डेरिवेटिव व्यापार में हेजिंग की प्रभावात्मकता साबित की जा चुकी थी उन्हें दबाव परीक्षण से छूट प्रदान की गई, जबकि अन्य सभी प्रकार के व्यापार को इसमें शामिल किया गया।

इस दबावग्रस्त परिदृश्य में चार संवेदनशीलता परीक्षणों को शामिल किया गया जिसमें स्पॉट यूएस डालर/ भारतीय रुपया दर और घरेलू ब्याज दरों को मानकों के रूप में शामिल किया गया था।

सारणी 3: संवेदनशीलता विश्लेषण के लिए आघात

घरेलू ब्याज दरें		
आघात 1	एक दिवसीय	+2.5 percentage points
	1 वर्ष तक	+1.5 percentage points
	1 वर्ष से अधिक	+1.0 percentage points

घरेलू ब्याज दरें		
आघात 2	एक दिवसीय	-2.5 प्रतिशत अंक
	1 वर्ष तक	-1.5 प्रतिशत अंक
	1 वर्ष से अधिक	-1.0 प्रतिशत अंक

विनिमय दरें		
आघात 3	यूएस डालर/ भारतीय रुपया	+20 प्रतिशत

विनिमय दरें		
आघात 4	यूएस डालर/ भारतीय रुपया	-20 प्रतिशत

2.2 अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक

एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण- दबाव परीक्षण

ऋण जोखिम

अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों के ऋण जोखिम पर दबाव परीक्षण किया गया। यह परीक्षण एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण पर आधारित था। ऐतिहासिक मानक विचलनों (एसडी) का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित चार विभिन्न परिदृश्यों के अंतर्गत सीआरएआर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया:

- परिदृश्य I: जीएनपीए पर 1 मानक विचलन (एसडी) का आघात (अवमानक अग्रिमों में वर्गीकृत).
- परिदृश्य II: जीएनपीए पर 2 मानक विचलन (एसडी) का आघात (अवमानक अग्रिमों में वर्गीकृत).
- परिदृश्य III: जीएनपीए पर 1 मानक विचलन (एसडी) का आघात (हानि वाले अग्रिमों में वर्गीकृत).
- परिदृश्य IV: जीएनपीए पर 2 मानक विचलन (एसडी) का आघात (हानि वाले अग्रिमों में वर्गीकृत).

चलनिधि जोखिम

1-28 दिन की कालावधि वाले नकदी प्रवाह पर आधारित एक चलनिधि दबाव परीक्षण भी किया गया जिसमें आउटफ़्लो के 20 प्रतिशत से अधिक असंतुलन [नकारात्मक अंतर (नकदी आउटफ़्लो की तुलना में इनफ़्लो का कम होना)] को दबावग्रस्त माना गया।

- परिदृश्य I: 1-28 दिन की कालावधि में नकदी निकासी 50 प्रतिशत तक बढ़ना (नकदी जमा आने में कोई परिवर्तन नहीं)
- परिदृश्य II: 1-28 दिन की कालावधि में नकदी निकासी 100 प्रतिशत तक बढ़ना (नकदी जमा आने में कोई परिवर्तन नहीं)

2.3 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों

एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण-दबाव परीक्षण

ऋण जोखिम

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (जमा स्वीकार करने वाली और जमा स्वीकार नहीं करने वाली-दोनों प्रकार की और प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण कंपनियां शामिल थीं) पर क्रेडिट जोखिम के संबंध में दबाव परीक्षण किया गया। ये परीक्षण एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण पर आधारित थे। ऐतिहासिक मानक विचलन के आधार पर तीन विभिन्न परिस्थितियों में सीआरएआर पर इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया:

- परिदृश्य I: मौजूदा स्तर से जीएनपीए में 0.5 मानक विचलन(एसडी) की वृद्धि।
- परिदृश्य II: मौजूदा स्तर से जीएनपीए में 1 मानक विचलन(एसडी) की वृद्धि।
- परिदृश्य III: मौजूदा स्तर से जीएनपीए में 3 मानक विचलन(एसडी) की वृद्धि।

जीएनपीए में परिकल्पित वृद्धि को अवमानक, संदेहास्पद और हानिगत श्रेणियों में उसी अनुपात में बांटा गया जिस अनुपात में वे जीएनपीए के मौजूदा स्टॉक में उपलब्ध थी। प्रावधानीकरण की अतिरिक्त अपेक्षाओं को मौजूदा पूंजी स्थिति से समायोजित किया गया। दबाव परीक्षण एकल एनबीएफसी स्तर के साथ ही साथ समग्र स्तर पर भी किया गया।

2.4 अंतर-संबद्धता- नेटवर्क विश्लेषण

नेटवर्क विश्लेषण के केन्द्र में मूलतः मैट्रिक्स अल्जेब्रा होता है, जिसमें वित्तीय क्षेत्र की संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजरों का उपयोग किया जाता है। वित्तीय प्रणाली में एक संस्था की सभी अन्य संस्थाओं को दी गई उधारियों अथवा ली गई उधारियों को स्कवायर मैट्रिक्स में रखा जाता है और उसके बाद उन्हें एक नेटवर्क ग्राफ में मैप किया जाता है। प्रणाली में अंतर-संबद्धता के स्तर को मापने के लिए नेटवर्क मॉडल में विभिन्न सांख्यिकीय तरीकों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण तरीके निम्नलिखित हैं :

संबद्धता: यह एक सांख्यिकी होती है जो एक पूर्ण ग्राफ में सभी संभव श्रृंखलाओं से संबंधित नोड्स के बीच श्रृंखलाओं की सीमा को मापती है। एक निर्देशित ग्राफ में $K = \sum_{i=1}^N k_i$ के बराबर बाहरी अंशों की कुल संख्या दर्शाती है और N नोड्स की कुल संख्या के रूप में है, ग्राफ की संबद्धता $\frac{K}{N(N-1)}$ के रूप में दी गई है।

क्लस्टर गुणांक: नेटवर्क में क्लस्टरिंग यह माप करती है कि प्रत्येक नोड आपस में किस प्रकार अंतर-संबद्ध है। विशेष रूप से, इस बात की प्रबल संभावना होती है कि किसी नोड के दो पड़ोसी (वित्तीय नेटवर्क के मामले में बैंक के प्रतिपक्षी) आपस में भी पड़ोसी होंगे। किसी नेटवर्क के लिए उच्च क्लस्टरिंग गुणांक का अर्थ यह होता है कि प्रणाली में उच्च स्थानिक अंतर-संबद्धता मौजूद है। k_i निकटवर्ती/पड़ोसियों वाले प्रत्येक बैंक हेतु उनके बीच सभी प्रकार के संभावित जुड़ावों की कुल संख्या $k_i(k_i-1)$ द्वारा दर्शायी जाती है। मान लेते हैं कि E_i एजेंट i बैंक के k_i निकटवर्तियों के बीच वास्तविक संबद्धता को प्रदर्शित करता है अर्थात जो i के k_i निकटवर्ती हैं वो आपस में भी निकटवर्ती हैं। i बैंक के लिए क्लस्टरिंग गुणांक C_i को इस सूत्र द्वारा व्यक्त गया है:-

$$C_i = \frac{E_i}{k_i(k_i - 1)}$$

समग्र रूप में नेटवर्क का क्लस्टरिंग गुणांक (सी) सभी C_i का औसत है:

$$C = \frac{\sum_{i=1}^N C_i}{N}$$

टियर नेटवर्क संरचना: विशिष्ट रूप से वित्तीय नेटवर्क में टियर संरचना की प्रवृत्ति देखी जाती है। टियर संरचना एक ऐसी व्यवस्था होती है जिसमें विभिन्न संस्थाओं की अन्य नेटवर्क के साथ विविध अंशों पर या स्तरों पर संबद्धता होती है। मौजूदा विश्लेषण में सर्वाधिक संबद्ध बैंक मूल कोर में हैं। उसके बाद बैंकों को उनकी परस्पर संबद्धता के आधार पर मध्य कोर, बाहरी कोर और बाहरी घेरे (रेखाचित्र में केंद्र के आस-पास संबंधित सांकेतिक वृत्त) में डाल दिया जाता है। बैंकों की संबद्धता की रेंज को प्रत्येक बैंक के इन-डिग्री और आउट-डिग्री अनुपात के अंश रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे सर्वाधिक संबद्ध बैंक के अंश से विभाजित किया जाता है। जो बैंक इस अनुपात के शीर्ष 10 प्रतिशत में आते हैं वे भीतरी कोर का निर्माण करते हैं। 90 और 70 प्रतिशत के बीच आने वाले बैंक मध्य कोर में आते हैं और 40 तथा 70 के बीच प्रतिशत वाले बैंकों की एक तीसरी परत होती है। 40 प्रतिशत से कम संबद्धता प्राप्त करने वाले बैंकों को बाहरी घेरे में वर्गीकृत किया जाता है।

नेटवर्क चार्ट में रंग संकेत: नेटवर्क चार्ट में नीली और लाल गेंदें क्रमशः निवल उधारदाता और निवल उधारकर्ता को निरूपित करती हैं। परतदार नेटवर्क चित्र में श्रृंखलाओं के रंग संकेत नेटवर्क में मौजूद विभिन्न परतों से ली गई उधारियों को निरूपित करती हैं (उदाहरण के लिए हरे रंग की श्रृंखलाएं मूल कोर में स्थिति बैंकों से ली गई उधारियों को निरूपित करती हैं)।

ऋण-शोधन क्षमता संक्रामकता का विश्लेषण

संक्रामकता विश्लेषण एक प्रकार का दबाव परीक्षण होता है जिसमें एक या अधिक बैंकों के असफल हो जाने के कारण उत्पन्न दूरगामी प्रभावों के चलते बैंकिंग प्रणाली को होने वाले सकल घाटे का पता लगाया जाता है। आभासी संक्रामकता के लिए हम राउंड बाई राउंड या सीक्वेंशियल अल्गोरिथम का उपयोग करते हैं जिसे अब फरफाइन् (2003) के नाम से जाना जाता है। हम 0 समय पर असफल होने वाले ट्रिगर बैंक i से प्रारंभ कर प्रत्येक चक्र या पुनरावृत्ति में परेशानी में आनेवाले बैंकों को Dq , $q = 1, 2, \dots$ के रूप में निरूपित करते हैं। इस विश्लेषण के लिए, किसी बैंक को दबावग्रस्त तब माना जाता है जब इसका कोर सीआरएआर 7 प्रतिशत से नीचे चला जाए। प्राप्तकर्ता बैंक के लिए निवल प्राप्तियों को घाटे के रूप में माना जाता है।

चलनिधि संक्रामकता विश्लेषण

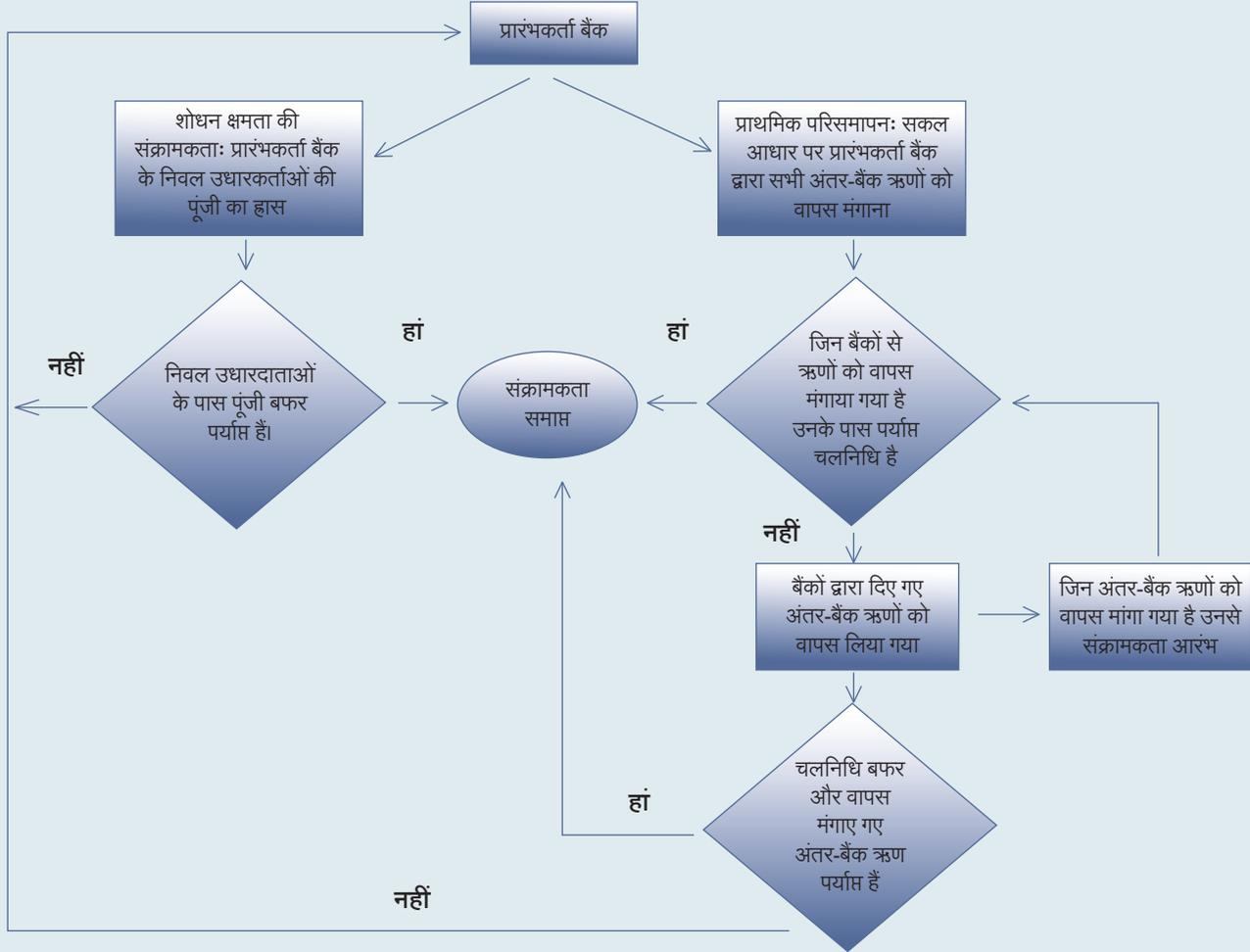
जहां ऋण शोधनक्षमता संक्रामकता विश्लेषण किसी निवल उधारकर्ता के विफल हो जाने की स्थिति में वित्तीय प्रणाली को होने वाली संभावित हानि का आकलन करता है वहीं चलनिधि संक्रामकता विश्लेषण किसी निवल उधारदाता के विफल हो जाने की स्थिति में इस प्रणाली को होने वाली संभावित हानि का अनुमान व्यक्त करता है। यह विश्लेषण बैंकों के बीच होने वाले सकल एक्सपोजर के संबंध में किया जाता है। एक्सपोजर में निधि आधारित और व्युत्पन्नी दोनों प्रकार के एक्सपोजर शामिल हैं। इस विश्लेषण की मूलभूत कल्पना यह है कि किसी बड़े निवल उधारदाता के विफल होने की स्थिति से उत्पन्न होने वाले चलनिधि दबाव से निपटने के लिए बैंक प्रारम्भ में अपनी चलनिधि भंडार या बफर का उपयोग करेंगे। चलनिधि आस्तियों के तहत विचार में ली जाने वाली मदें इस प्रकार हैं : (क) सीआरआर का अतिरिक्त अधिशेष; (ख) एसएलआर का अतिरिक्त अधिशेष और (ग) निवल मांग और मीयादी देयताओं का 11 प्रतिशत। यदि एक बैंक केवल चलनिधि बफर की मदद से ही दबाव से निपटने में सक्षम होता है तो ऐसी स्थिति में आगे कोई और संक्रमण नहीं होगा।

तथापि, यदि केवल चलनिधि बफर पर्याप्त नहीं होते हैं तो बैंक को उन सभी ऋणों को वापस लेना होगा जो 'वापस लिए जाने योग्य' हैं, जिसके परिणामस्वरूप संक्रामकता होगी। विश्लेषण के प्रयोजन से केवल अल्पावधि की आस्तियां जैसे कि कॉल मार्केट में उधार दी गई राशि और अन्य बहुत ही अल्पावधि के लिए दिए गए ऋणों को ही वापसी योग्य माना गया है। इसके पश्चात किसी बैंक का अस्तित्व या तो बना रह सकता है अथवा उसका परिसमापन किया जाना होगा। इस मामले में इस प्रकार के उदाहरण हो सकते हैं जहां ऋणों की वापसी होने से बैंक का अस्तित्व बच गया हो परंतु इसके परिणामस्वरूप इससे आगे संक्रामकता हो सकती है जिससे अन्य बैंकों की परेशानी बढ़ सकती है। दूसरी कल्पना यह की गई है कि जब किसी बैंक का परिसमापन किया जाता है तो उस बैंक द्वारा उधार दिए गए ऋणों को सकल आधार पर वापस मांगा जाता है, जबकि परिसमापन किए बगैर जब बैंक द्वारा दिए गए अल्पावधि ऋणों को वापस मांगा जाता है तो ऋण को निवल आधार पर वापस मांगा जाता है (यह मानकर कि प्रतिपक्षी अपने उसी प्रतिपक्षी के प्रति पहले अपनी अल्पावधि देयताओं को कम करना चाहेगा)।

संयुक्त ऋणशोधन-चलनिधि संक्रामकता विश्लेषण

आम तौर पर एक बैंक की कुछ बैंकों के प्रति धनात्मक निवल ऋण प्रदान करने की स्थितियां और कुछ अन्य बैंकों के प्रति ऋणात्मक निवल उधार की स्थितियां - दोनों ही होती हैं। ऐसे किसी बैंक के विफल हो जाने पर ऋणशोधन तथा चलनिधि संक्रामकता दोनों साथ-साथ उत्पन्न हो जाएंगी। इस प्रक्रिया को निम्नलिखित फ्लोचार्ट द्वारा दर्शाया गया है:

एक बैंक के दबाव में आने के कारण संयुक्त ऋणशोधन-चलनिधि संक्रामकता संबंधी फ्लोचार्ट



यह माना गया कि प्रारंभकर्ता बैंक कुछ अंतर्जात कारण से विफल हुआ अर्थात् दिवालिया हो जाता है और इस प्रकार सभी उधारकर्ता बैंकों को प्रभावित करता है। उसी समय, वह अपनी आस्तियों को भी बेचना प्रारंभ करता है ताकि जहां तक संभव हो अपने दायित्वों को पूरा कर सके। परिसमापन की यह प्रक्रिया एक चलनिधि संक्रामकता उत्पन्न करती है क्योंकि प्रारंभकर्ता बैंक अपने दिए गए ऋणों को वापस मंगाना प्रारंभ कर देता है।

उधारदाता/ उधारकर्ता बैंक जो कि भली प्रकार पूंजीकृत होते हैं, वे आघात सहन कर जाते हैं और वे दूसरों को संक्रमित नहीं करते। दूसरी तरफ, वे उधारदाता बैंक जिनकी पूंजी एक निश्चित सीमा से कम हो जाती है वो एक नई संक्रामकता प्रारंभ कर देते हैं। उसी तरह वे उधारकर्ता जिनका चलनिधि बफर पर्याप्त होता है वे आगे कोई संक्रामकता फैलाए बिना दबाव सहन कर लेंगे। परंतु कुछ बैंक अपनी अल्पावधि आस्तियों को वापस मँगवाने के बाद ही चलनिधि दबाव का सामना करने में सक्षम होंगे। अल्पावधि आस्तियों को वापस मँगवाने की यह प्रक्रिया पुनः एक नई संक्रामकता आरंभ कर देगी।

ऋणशोधन और चलनिधि दोनों ही ओर से संक्रामकता तभी रुक पाएगी/स्थिर हो पाएगी जब, प्रणाली द्वारा ऐसे हानि/आघातों को आगे और विफलताएं न उत्पन्न करते हुए पूर्णतः अवशोषित किया जा सके।